॥ श्रीः ॥

जातकाभरण ।

बाँसबरेलीस्थ गौडवंशावतंस श्रीबल्देवप्रसादात्मजगौरी-
राजज्यौतिषिक पंडित श्यामलालकृत-

श्यामसुन्दरीभाषाटीकासहित ।

॥ श्रीहरिः ॥

जातकाभरणं

श्यामसुंदरी-भाषाटीकासहितम् ।

अथ भाषाकारकृतं मंगलाचरणम् ।

नत्वा गणेशमथ पूषणमंबिकां च
सोमाधवौ च कृतसूरिनतिः प्रयत्नात् ।
श्रीढुण्ढिराजमुखनिर्गतजातकस्य
श्रीश्यामलाल उचितां वितनोति भाषाम् ॥ १ ॥

अब भाषाकार पंच देवकी स्तुति करता है—श्रीगणेशजी और सूर्य और दुर्गा और विष्णु और शिवजीको नमस्कार करके और वसिष्ठ गर्गादि पूर्वाचार्योंको मनसे नमस्कार करके श्रीढुंढिराजके मुखसे निकले हुए जातकाभरण नाम ग्रंथकी श्रीश्यामलाल योग्य भाषाको विस्तार करता है ॥ १ ॥

अथ ग्रंथकारकृतमङ्गलाचरणम् ।

श्रीदं सदाहं हृदयारविंदे पादारविंदं वरदस्य वन्दे ।
मंदोऽपि यस्य स्मरणेन सद्यो गीर्वाणवंद्योपमतां समेति ॥ १ ॥
उदारधीमन्दरभूधरेण प्रमथ्य होरागमसिंधुराजम् ।
श्रीढुंढिराजः कुरुते किलार्यां मार्यासपर्याममलोक्तिरत्नैः ॥ २ ॥

अब ग्रंथकर्ता गणेशजीकी वंदना करते हैं—हमेशा ऋद्धिसिद्धिके दाता ऐसे श्रीगणेशजीके चरणकमलको हृदयमें धारण करके वंदना करता हूं, जिन गणेशजीका स्मरण करके मूर्ख भी बहुत जल्दी बृहस्पतिके समान हो जाता है ॥ १ ॥ उदार बुद्धिरूप मंदराचलपर्वतसे इस होराशास्त्ररूपी समुद्रको मथ कर श्रीढुंढिराज, महर्षिप्रणीत ग्रन्थोंको देखकर इस जातकाभरण नामक ग्रन्थको करते हैं ॥ २ ॥

ज्ञानराजगुरुपादपङ्कजं मानसे खलु विचिन्त्य भक्तितः ।
जातकाभरणनाम जातकं जातकज्ञसुखदं विधीयते ॥ ३ ॥

शास्त्रप्रोक्तां जन्मपत्रीं करोति नानाग्रन्थालोकनात्तस्य चित्तम् ।
अत्युद्विग्नं स्यात्ततो जातकेऽस्मिन्कुर्वे व्यक्तां जातकोक्तिं च सर्वाम् ॥ ४ ॥

ज्ञानके देनेवाले श्रीगुरुजीके चरणारविंदोंको अपने हृदयमें निश्चय कर भक्तिसहित स्मरण कर यह जातकाभरण नाम जातक ग्रन्थ ज्योतिषियोंको सुखका देनेवाला विधान करता हूं ॥ ३ ॥ जो पंडितजन शास्त्रोक्त अनेक पद्धतियों करके जन्मपत्रीको बनाते हैं उन पंडितजनोंका चित्त बहुत ग्रन्थोंके देखनेसे उच्चाटनको प्राप्त हो जाता है इसवास्ते जातकाभरण ग्रन्थमें सब जातकर्मोंका कथन करता हूं ॥ ४ ॥

विचित्रपत्रीकरणादराणां श्रमं विनानुक्रमलेखनार्थम् ।
समर्थमेनं प्रकटार्थमेवात्यर्थं ततो नाम यथार्थमस्य ॥ ५ ॥
सन्मङ्गलाशीर्वचनान्वितानि पद्यानि चाग्रे समुदीरयन्ते ।
तान्येव पत्रीकरणे प्रवीणाः श्रेयस्कराणि प्रथमं लिखन्तु ॥ ६ ॥

विचित्र जन्मपत्र बनानेवाले पंडितजनोंको विना परिश्रमके यथार्थ लिखनेकी क्रमपूर्वक शक्ति हो उसको प्रकट करते हैं ॥ ५ ॥ श्रेष्ठ मंगलाचरणके श्लोक और आशीर्वादके श्लोक पद्यमें जो आगे कहेंगे उन्हीं श्लोकोंको जन्मपत्र बनानेवाले चतुर विद्वान् कल्याणकारक पहिले लिखें ॥ ६ ॥

शुण्डामण्डलसंभ्रमस्फुरणैर्मौलिस्थलान्दोलनै-
र्नेत्रोन्मीलनमीलितैरविरलश्रीकर्णतालक्रमैः ।
दानालिध्वनिभिर्विलासचरितैरूर्ध्वाननोद्गर्जितै-
र्जातानंदभरः करीन्द्रवदनो नः श्रेयसे कल्पताम् ॥ ७ ॥

अब मंगलाचरणके श्लोक कहते हैं—इन्हीं श्लोकोंको पहिले लिखना चाहिये सूंडको घुमाते हुए शिरको उठा आंखोंको खोल और बंद करते कर्णतालसे क्रम करके गजमदकी पंक्तिसे फूलते हुए भौंरोंकरके ऊपरको मुख करके गर्जते ऐसे श्रीगणेशजी मेरेको कल्याण दें ॥ ७ ॥

पुनःपुनर्मङ्गलमूर्तिस्मरणं मत्प्रत्यूहव्यूहनिवारणपरमेवेति पद्यांतरम्—

नानादानविधानयज्ञनिकरैरुग्रैस्तपोभिश्चिरात्
प्राप्ते कल्पतरौ प्रकल्पितफलप्राप्तिः कथंचिद्भवेत् ।

तूर्णं यच्चरणाम्बुजस्मरणतः संपूर्णकामः पुमान्।
सोऽयं वोऽभिमतं ददातु सततं हेरम्बकल्पद्रुमः ॥ ८ ॥

बारंबार श्रीगणेशजीको स्मरण करनेसे विघ्नोंके समूह निवारण करनेको और भी श्लोक जानो-अनेक दान और यज्ञ विधान करनेसे और बडे तप बहुत काल करनेसे और कल्पवृक्षकी प्राप्ति होनेसे मनोवांछित फल कभी प्राप्त हो जाते हैं, जिन गणेशजीके कमलरूपी चरणारविंदोंके स्मरण करनेसे शीघ्र ही मनुष्य सम्पूर्ण कामनाओंको प्राप्त होजाते हैं सो श्रीगणेशजी मनोवांछित फल निरंतर कल्पवृक्षके तुल्य दें ॥ ८ ॥

सन्मानसावासविलासहंसी कर्णावतंसीकृतपद्मकोशा।
तोषादशेषाभिमतं विशेषादेषापि भाषा भवतां ददातु ॥ ९ ॥

श्रेष्ठोंके मनरूप मानसमें वास करके विलास करनेवाली हंसी, कानोंमें कमलकोशरूप गहने पहिरे, ऐसी सरस्वती सन्तोष और विशेष रूपसे सब मनोरथोंकी सिद्धि आपको दे ॥ ९ ॥

कल्याणानि दिवामणिः सुललितां कान्तिं कलानां निधि-
र्लक्ष्मीं क्ष्मातनयो बुधश्च बुधतां जीवश्चिरंजीविताम्।
साम्राज्यं भृगुजोऽर्कजो विजयतां राहुर्बलोत्कर्षतां
केतुर्यच्छतु तस्य वाञ्छितमियं पत्री यदीयोत्तमा ॥ १० ॥

अब और आशीर्वादात्मक श्लोक लिखते हैं-सूर्य आपको कल्याण दे और चंद्रमा लालित्य और कांतिको दे, मंगल लक्ष्मीको दे, बुध वृद्धिको दे और बृहस्पति दीर्घायु करे और शुक्र साम्राज्यको दे, शनैश्चर विजयको दे, राहु बलकी वृद्धि करे और केतु मनोवांछित फल दे, जिसकी उत्तम पत्री मैं करता हूं ॥ १० ॥

ननु पूर्वजन्मोपार्जितानां सदसत्कर्मणां परिपाकोऽस्मिञ्ज-न्मनि शुभाशुभफलावाप्तिकालादेव व्यक्तोऽस्तीति जातका-गमोक्तप्रपञ्चेन किं प्रयोजनमिति चेत्सत्यम्। पूर्वोपार्जित-कर्मपरिपाकः शुभाशुभफलोपलब्धिदर्शनादेव ज्ञायते परम-भीष्टकाले ज्ञातुं न शक्यते तथा च भाग्यमखण्डितं खण्डितं रिष्टभंगोऽप्यायुर्मानमित्यादिविज्ञानार्थं जातकागम एवात्यर्थं समर्थस्तदेककारणत्वात्। तथाहि विप्राश्रिवि-

भागेन सूक्ष्मकालावयवसाधनोपायैस्तु यो ध्रुवभ्रमाविधि चित्रयंत्रैरुपलक्षितातिस्पष्टसमयोपात्तलग्नादिद्वादशराशिचक्रैः स्वोच्चादिगतानां ग्रहाणां सदसद्दशाद्युक्रमेणाभीष्टसमयेऽपि प्राक्कर्मपरिपाकोऽवगम्यते । रिष्टभंगः । प्रकृष्टं तु रिष्टस्यापि विनष्टिं विशिनष्टि । तद्वदायुर्दायानयनप्रकारेण वयःप्रमाणस्य च निर्णयः स्यात् । तस्माद्वेदाङ्गत्वेनाधुनिकाभावत्वेन प्रत्ययसिद्धत्वेनापि विनष्टिं विशिनष्टि । तद्वदायुर्दायानयनप्रकारेण वयःप्रमाणस्य च निर्णयः स्यात् । तस्माद्वेदाङ्गत्वेनाधुनिकाभावत्वेन प्रत्ययसिद्धं जातकस्कंधांगीकरणमुचितमेवति ॥ ११ ॥

निश्चय कर पहिले जन्मके इकठे किये हुए शुभाशुभ कर्मोंका परिपाक इस जन्ममें शुभाशुभफल प्राप्तिकालसे स्पष्ट है, जातकोक्त प्रपंच करके क्या प्रयोजन ? यह सत्य है, पूर्वजन्मार्जित कर्मपरिपाक शुभाशुभफलकी प्राप्ति देखनेसे जानते हैं, परन्तु इस कालमें नहीं जान सकते हैं. वैसे ही भाग्योदय क्षय या पूरा रिष्टभंग और आयु जाननेके लिये पंडितजन अत्यंत समर्थ नहीं होते हैं तथा दिनरात्रिका विभाग करके सूक्ष्मकालके साधन करनेका उपाय जो ध्रुव घूमनेवाले यन्त्रों करके जाना जाता है, स्पष्ट समय ज्ञात होता है, लग्नादि द्वादशराशिचक्रसे उच्चादिराशियोंमें प्राप्त ग्रहोंकी अच्छी बुरी दशा क्रम करके प्राप्त होनेका समय पहिले जन्मके कर्मोंको जानते हैं । रिष्टभंगादि उसी प्रकार आयुर्दाय प्रकार करके उमरका प्रमाण निर्णय होता है उस कारण ज्योतिषशास्त्रके कहे हुए भाव करके प्रत्ययसिद्धि करके उसी प्रकार आयुर्दाय लानेके प्रकारके उमरके प्रमाणका निर्णय होता है, उस कारणसे ज्योतिषके कहे हुए भाव करके प्रत्यय सिद्धि करके जातकस्कंधको अंगीकार करना यह उचित जानना चाहिये ॥ ११ ॥

उपार्जितं यत्सदसद्विमिश्रं जन्मांतरे कर्म नरैरिहाग्र्यम् ।
होरागमस्तस्य विपाकमुच्चैर्दशाक्रमेण प्रकटीकरोति ॥ १२ ॥

जो मनुष्य जन्मांतरोंके बीचमें मनुष्योंने अच्छे बुरे कर्म मिले हुए इकठे किये हैं उन पूर्वार्जित कर्मोंका शुभाशुभ फल ज्योतिषशास्त्रके द्वारा इस जन्ममें दशा-क्रम करके प्रकटकरते हैं अर्थात् प्रकट करते हैं ॥ १२ ॥

अथ

साक्षाद्भवेद्भाग्यनिरीक्षणाय सुनिर्मलादर्शतलं किलेदम्।
शास्त्रं विपद्वारिनिधिं च तर्तुं तरिस्तथार्थार्जनचारुमित्रम् ॥१३॥
आधानकाले कमलोद्भवेन वर्णावली भालतलांतराले।
या कल्पिता पश्यति दैववेत्ता होरागमज्ञानविलोचनेन ॥१४॥
होरागमव्योमचरानुसारस्तेषां विचारः सुतरामुदारः।
सिद्धान्तवादाकलनं तदा स्यान्न्यासो यदा स्याद्गणितद्वयस्य १५॥

मनुष्यके भाग्य देखनेके लिये यह होराशास्त्ररूपी निर्मल आईना साक्षात् है और यह होराशास्त्र आपत्तिरूपी समुद्रसे पार उतरनेकी नौका है और धन पैदा करनेमें सुंदर मित्र है ॥ १३ ॥ मनुष्यके गर्भाधानके समय अथवा माताओंके गर्भसे पैदा होनेके समय सुखदुःखके अक्षरोंकी माला जो मस्तकके बीचमें ब्रह्माने लिख दी है उसको ज्योतिष शास्त्रका ज्ञाता होराशास्त्ररूपी ज्ञाननेत्रोंसे देखता है ॥ १४ ॥ ज्योतिषशास्त्र ग्रहोंके अनुसार है, उसका विचार निरंतर उदार है, वह ज्योतिषशास्त्र सिद्धांत ग्रंथोंके पढनेसे और गणित जाननेसे होता है ॥ १५ ॥

अथ दैवज्ञलक्षणम्।

अपारहोरागमपारगामी पाट्यां च बीजे सुतरां प्रगल्भः।
सद्गोलविद्याकुशलः स एव भवेत्फलादेशविधौ समर्थः ॥१६॥

जिस शास्त्रका आदि अंत नहीं ऐसे ज्योतिषशास्त्रके आदिसे अंततकके जानने वाला, पाटी और बीजगणितमें अत्यंत प्रगल्भ और श्रेष्ठ गोलगणितमें कुशल इस प्रकारका ज्योतिषी फलादेश करनेमें समर्थ होता है ॥ १६ ॥

अथ जन्मपत्रप्रशंसामाह–

श्रीजन्मपत्रीशुभदीपकेन व्यक्तं भवेद्भावि फलं समस्तम्।
क्षपाप्रदीपेन यथालयस्थं घटादिजातं प्रकटत्वमेति ॥ १७ ॥

जो सब होनहार फल होनेवाले हैं सो संपूर्ण जन्मपत्ररूपी दीपकसे जान पडते हैं जैसे मकानमें दीपक करके रात्रिमें घटादिक सब पदार्थ भान पडते हैं ॥ १७ ॥

सा जन्मपत्री विमला न यस्य तज्जीवितं संततमंधकं स्यात्।
अनल्पमल्पे च ततोऽल्पके वा न कल्पते भाग्यमतीव हेतोः १८

इस प्रकार ऐसी निर्मल जन्मपत्री जिस मनुष्यकी नहीं है उस पुरुषका जीवन निरन्तर अन्धरूप होता है, बहुत थोड़ा भाग्य फल नहीं जान पड़ता है ॥ १८ ॥

जन्मकालतिथिवारतारकाश्चापि योगकरणाः क्षणाभिधाः ।
मंगलाय किल संतु पत्रिका यस्य शास्त्रविहिता विरच्यते १९॥
ये वक्ष्यमाणा इह राजयोगा रश्मिप्रभूता अपि नाभसाश्च ।
ये कारकाः पूर्णफला हि पूर्णं यच्छंतु पत्री क्रियते यदीया॥२०॥
यस्यामलेयं किल जन्मपत्री कुतूहलेन क्रियते यथोक्ता ।
तस्यालये सत्कमला सलीलं सुनिश्चला तिष्ठतु दीर्घकालम्२१
कृतं मया नोदकयंत्रसाधनं नृपेक्षणं चापि न शंकुसाधनम् ।
परोपरिष्टात्समयात्प्रयत्नतः शुभाशुभं जन्मफलं मयोच्यते २२

जन्मसमयका इष्ट और तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण और क्षणलग्न मंगलके अर्थ करो जिनकी यह जन्मपत्री शास्त्रविहित रचना करते हैं ॥ १९ ॥ जो राजयोग, प्रभूतरश्मियोंसहित नाभसयोग और पूर्णकारक योग कहेंगे, वे पूर्ण शुभ फलको दें जिसकी ये पत्री करते हैं ॥ २० ॥ जिस मनुष्यकी जन्मपत्री कौतुकसे शास्त्रोक्त करते हैं उस मनुष्यके घरमें श्रेष्ठ लक्ष्मी अचल बहुत काल-तक स्थिर हो ॥ २१ ॥ मैंने जलयंत्र साधन नहीं किया और न नृपेक्षण और न कोई सिद्धान्तोंसे शंकु जन्मसमयमें लगाकर इष्टसाधन किया, पराये बताये हुए समय करके यत्नपूर्वक अच्छा बुरा जन्मपत्रका फल मैं कहता हूं ॥ २२ ॥

अथ संहिताभिप्रायेण पञ्चाङ्गफलानि निरूप्यन्ते, तत्रादौ संवत्सरफलम् ।

अथ प्रभवसंवत्सरजातफलम् ।

सर्ववस्तुपरिसंग्रहे रतः पुत्रसंततिरतीव सन्मतिः ।
सर्वभोगयुतदीर्घजीवितो जायते प्रभवसंभवः पुमान् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रभव संवत्सर होता है वह मनुष्य संपूर्ण वस्तुओंके संग्रह करनेमें तत्पर, पुत्रसंतानवाला, श्रेष्ठबुद्धि, सर्वप्रकारके भोगसहित बड़ी उमरवाला होता है ॥ १ ॥

अथ विभवसंवत्सरजातफलम् ।

उत्पन्नभोक्ता विभवैः समेतः कलाविलासी चतुरः कलज्ञः ।
राजा ... सुशीलो विशालनेत्रो मनुजो विभवाब्दजन्मा॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विभवनाम संवत्सर हो वह मनुष्य उत्तम किये भोगोंको भोगनेवाला, प्यारा है दर्शन जिसका, अधिक बलवान्, चतुर, कलाओंका जाननेवाला, अपने कुलमें राजा शीलवान् और पंडित होता है ॥ २ ॥

अथ शुक्लसंवत्सरजातफलम् ।

सदा सहर्षोऽतितरामुदारः सत्पुत्रदारैर्विभवैः समेतः ।
सद्भाग्यविद्याविनयोपपन्नो नूनं शुभाच्छुक्लसमुद्भवः स्यात् ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्लसंवत्सर हो वह मनुष्य हमेशा हर्षयुक्त, निरंतर उदार, श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री तथा वैभवसहित, श्रेष्ठ भाग्य, विद्या और नम्रता सहित होता है ॥ ३ ॥

अथ प्रमोदसंवत्सरजातफलम् ।

दाता सुतानंदयुतोऽभिकान्तः सत्येन नित्यं सहितो गुणी स्यात् ।
दक्षश्च धूर्तः परकार्यकर्ता प्रमोदजन्मा मनुजोऽभिमानी ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रमोद संवत्सर हो वह मनुष्य दाता, पुत्रके आनंदसहित, सत्य करके युक्त, गुणवान्, चतुर, धूर्त, पराया कार्य करनेवाला, अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ प्रजाधीशसंवत्सरजातफलम् ।

दाराभिमानः सुतरां दयालुः कुलानुवृत्तः किल चारुशीलः ।
देवद्विजार्चाभिरतो विनीतो मर्त्यः प्रजाधीशसमुद्भवः स्यात् ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रजाधीश संवत्सर होता है वह मनुष्य स्त्रीका अभिमानी, निरंतर दयावान्, अपने कुलके समान चले, सुन्दर शीलवाला, देवता और ब्राह्मणोंके पूजनमें तत्पर नम्रतासहित होता है ॥ ५ ॥

अथाङ्गिरस्संवत्सरजातफलम् ।

कांतः सुखी भोगयुतश्च मानी प्रियप्रवक्ता बहुपुत्रयुक्तः ।
सुगुप्तबुद्धिः खलु दीर्घजीवी नरोऽङ्गिरोवत्सरसंभवः स्यात् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अंगिरा संवत्सर हो वह मनुष्य स्त्री करके सुखी, भोगसहित, मानी, प्यारी वाणी बोलनेवाला, बहुत पुत्रोंवाला, छिपी हुई बुद्धि और बड़ी उमरवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ श्रीमुखसंवत्सरजातफलम् ।

श्रीमान्प्रतापी बहुशास्त्रवेत्ता सुहृत्प्रियश्चारुमतिर्बलीयान् ।
सत्कीर्तियुक्तो नितरामुदारो भवेन्नरः श्रीमुखसंभवोऽसौ ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें श्रीमुख संवत्सर होता है वह मनुष्य लक्ष्मीवान्, बड़ा प्रतापी, बहुत शास्त्रोंको जाननेवाला, मित्रोंको प्यारा, सुंदर मति, बलवान्, श्रेष्ठ, कीर्तिसहित और निरंतर उदार होता है ॥ ७ ॥

अथ भावसंवत्सरजातफलम् ।

प्रशस्तचेताः सुतरां यशस्वी गुणान्वितो दानरतो विनीतः ।
सदा सहर्षोऽभिमतो बहूनां भावाभिधानोद्भवमानवः स्यात् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भाव संवत्सर होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ चित्त, निरंतर यशस्वी, गुणोंसहित, दान करनेमें तत्पर, नम्रतासहित, हमेशा आनंदसहित और बहुत जनोंका प्यारा होता है ॥ ८ ॥

अथ युवसंवत्सरजातफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिर्गुणवान्विनीतः शांतश्च दानाभिरतो नितान्तम् ।
सुधीश्चिरायुर्दृढदेहशाली जातो युवाब्दे पुरुषः सतोषः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें युवनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य प्रसन्नमूर्ति, गुणवान्, नम्रतासहित, शांतचित्त, दान करनेमें तत्पर, श्रेष्ठ बुद्धिवाला, दीर्घ उमर, मजबूत देहवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ धातृसंवत्सरजातफलम् ।

सर्वलोकगुणगौरवयुक्तः सुन्दरोऽप्यतितरां गुरुभक्तः ।
शिल्पशास्त्रकुशलश्च सुशीलो धातृवत्सरभवो हि नरः स्यात् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धातृनाम संवत्सर होता है वह सब मनुष्योंमें गुण और गौरवसहित, सुंदर स्वरूप, निरंतर गुरुका भक्त, शिल्पशास्त्रमें चतुर और श्रेष्ठ शीलवान् होता है ॥ १० ॥

अथ ईश्वरसंवत्सरजातफलम् ।

तत्कालसंजातमहाप्रकोपो हर्षाभियुक्तो गुणवान्प्रतापी ।
दक्षः कलाकौशलशीलशाली मर्त्यो भवेदीश्वरजातजन्मा ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ईश्वरनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य शीघ्र ही क्रोध करनेवाला, हर्षसहित, गुणवान्, प्रतापी, चतुर और कलाओंमें कुशलस्वभाववाला शीलवान् होता है ॥ ११ ॥

अथ बहुधान्यसंवत्सरजातफलम् ।

व्यापारदक्षः क्षितिपालमानी दानाभिमानी ननु शास्त्रवेत्ता ।
बहुप्रकारैर्बहुधान्यवित्तः स्यान्मानवो वै बहुधान्यजन्मा ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बहुधान्यसंवत्सर हो वह मनुष्य व्यापारमें चतुर, राजा करके मान पानेवाला, दानी, अभिमानी, शास्त्रका जाननेवाला, अनेक प्रकार करके बहुत अन्न और धनवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ प्रमाथिसंवत्सरजातफलम् ।

रथध्वजच्छत्रतुरङ्गमाद्यैर्युतश्च शास्त्राभिरतोऽरिहंता ।
मन्त्री नरेन्द्रस्य नरः श्रुतिज्ञः प्रमाथिसंवत्सरसंभवः स्यात् ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रमाथी संवत्सर होता है वह मनुष्य रथ, ध्वजा, छत्र, घोडे आदिकरके सहित, शास्त्रमें तत्पर, शत्रुओंका नाश करनेवाला, राजाका मंत्री और वेदका जाननेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ विक्रमसंवत्सरजातफलम् ।

अत्युग्रकर्माभिरतो नितांतमरातिचक्रक्रमणेऽतिदक्षः ।
शूरश्च धीरोऽतितरामुदारः पराक्रमी विक्रमवर्षजातः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विक्रमसंवत्सर होता है वह अत्यन्त उग्र कर्मोंमें तत्पर शत्रु दलका नाश करनेवाला, चतुर, वीर, धैर्यवान, अत्यन्त उदार और बडा बलवान् होता है ॥ १४ ॥

अथ वृषसंवत्सरजातफलम् ।

कार्यप्रलापी किल निद्यशीलः खलानुयातः परकर्मकर्ता ।
भर्ता बहूनां मलिनोऽलसश्च जातो वृषाब्दे मनुजोऽतिलुब्धः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषसंवत्सर होता है वह मनुष्य कार्यमें बोलनेवाला, निंद्यशील, दुष्ट जनों सहित, पराये कामका करनेवाला, बहुत जनोंका स्वामी, मलिन, आलसी और लोभी होता है ॥ १५ ॥

अथ चित्रभानुसंवत्सरजातफलम् ।

चित्रवस्त्रकुसुमैकमानसो मानसोद्भवचयान्वितः सदा ।
चारुशीलविलसत्कलान्वितश्चित्रभानुजननो हि पूरुषः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चित्रभानु संवत्सर होता है वह मनुष्य विचित्रवस्त्र, और पुष्पोंका धारण करनेवाला, मानसी चिन्ताके समूह करके सहित, सुंदर शील और प्रकाशवान कलाकरके सहित होता है ॥ १६ ॥

अथ सुभानुसंवत्सरजातफलम् ।

अरालकेशः सरलः सुकांतिर्जितारिपक्षो मतिमान्विनीतः ।
प्रसन्नमूर्तिर्विलसद्विभूतिः सुभानुसंवत्सरजातजन्मा ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सुभानु संवत्सर हो वह मनुष्य घूंघरवाले केशोंवाला, श्रेष्ठ कांतिवाला, शत्रुओंको जीतनेवाला, बुद्धिमान्, नम्रतासहित, प्रसन्नमूर्ति, शोभायमान और वैभवसहित होता है ॥ १७ ॥

अथ तारणसंवत्सरजातफलम् ।

धूर्तश्च शूरश्चपलः कलाज्ञः सुनिष्ठुरो गर्हितकर्मकर्ता ।
उत्पन्नभोक्ता द्रविणेन युक्तः स्यात्तारणाब्दोद्भवमानवोयः ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तारण संवत्सर होता है वह मनुष्य धूर्त शूरवीर और चपल, कलाओंका जाननेवाला, कठोरचित्त, निन्दित काम करनेवाला, पैदा कियेका भोगनेवाला और धनयुक्त होता है ॥ १८ ॥

अथ पार्थिवसंवत्सरजातफलम् ।

स्वधर्मकर्माभिरतो नितांतं सच्छास्त्रपारंगमतामुपेतः ।
कलाकलापे कुशलो विलासीयः पार्थिवाब्देकुलपार्थिवः स्यात् १९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पार्थिव संवत्सर हो वह मनुष्य अपने धर्मकर्ममें तत्पर, श्रेष्ठ शास्त्रोंके पारको जानेवाला, कलाओंके समूहमें कुशल और विलास करनेवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ व्ययसंवत्सरजातफलम् ।

सौख्येऽतिरक्तो व्यसनाभिभूतो भीतो न किंचिद्ग्रहणादृणी स्यात् ।
जातः पुमानस्थिरचित्तवृत्तिर्व्ययाभिधाने व्ययकर्मशीलः ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्ययनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य सौख्यमें आसक्त, व्यसनों करके सहित, भयको थोडा भी नहीं ग्रहण करनेवाला, कर्जवन्त, चित्तकी वृत्ति जिसकी स्थिर नहीं है और खर्च करनेवाला होता है ॥ २० ॥

अथ सर्वजित्संवत्सरजातफलम् ।

राजगौरवमहोत्सवः शुचिर्मानवः पृथुतनुर्महीपतिः ।
वैरिवर्गविजयोद्धतः सदा सर्वजिच्छरदि यस्य संभवः ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सर्वजित् संवत्सर होता है वह मनुष्य राजा करके गौरवको प्राप्त, बड़े उत्सव सहित, पवित्र, मोटी देहवाला, राजा और शत्रुओंका जीतनेवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ सर्वधारिसंवत्सरजातफलम् ।

भूरिभृत्यबहुभोगसंयुतः सुन्दरश्च मधुरान्नभुक्सदा ।
धीरतागुणयुतोऽतिधारणः सर्वधारिणि च यस्य संभवः ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सर्वधारी संवत्सर होता है वह मनुष्य बहुतसे नौकर और बहुत भोगसहित, सुन्दर, मीठा अन्न खानेवाला, धीरतासहित और गुणों करके युक्त होता है ॥ २२ ॥

अथ विरोधिसंवत्सरजातफलम् ।

वक्ता विदेशाटनतां प्रपन्नः कुटुंबसौख्याय च योऽतिधूर्तः ।
जनेन साकं गतसख्यवृत्तिर्विरोधिवत्सरप्रभवो नरः स्यात् ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विरोधी संवत्सर होता है वह मनुष्य बड़ा बोलनेवाला, परदेश घूमनेवाला, कुटुम्बके समूहसे युक्त, सौख्यके वास्ते बड़ा धूर्त और मनुष्यके साथ मित्रतारहित होता है ॥ २३ ॥

अथ विकृतिसंवत्सरजातफलम् ।

निर्धनः किल करालतां गतो दीर्घपूर्वबहुगर्वसंयुतः ।
चारुबुद्धिरहितोऽप्यसौहृदो मानवो विकृतिवर्षसंभवः ॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विकृतिनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य धनहीन, विकरालताको प्राप्त, पहिलेके बड़े अभिमानसहित, सुन्दर बुद्धि रहित और मित्रतारहित होता है ॥ २४ ॥

अथ खरसंवत्सरजातफलम् ।

कामातुरो धूसरकामकान्तिः कठोरदीर्घश्च न सारवाक्यः ।
क्लेशी च लज्जाविधिवर्जितःस्यान्नरःखराब्दप्रभवोऽतिदीर्घः॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें खरनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य कामातुर मलिन देहकी कांतिवाला, कठोर, दीर्घ, असार वाणी बोलनेवाला, क्लेशयुक्त लज्जा करके रहित और अत्यन्त दीर्घ होता है ॥ २५ ॥

अथ नन्दनसंवत्सरजातफलम् ।

तडागवापीगृहकूपकर्त्ता सदान्नपानाभिरुचिः शुचिः स्यात् ।
विलासिनीनंदनजातहर्षो नरो भवेन्नंदनवर्षजातः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नंदननाम संवत्सर होता है वह मनुष्य तालाब, बावड़ी, मकान, कुआँ बनानेवाला और हमेशा अन्नदानमें प्रीति करनेवाला, पवित्र और स्त्रियोंके साथ आनन्दको प्राप्त होता है ॥ २६ ॥

अथ विजयसंवत्सरजातफलम् ।

संग्रामधीरः सुतरां सुशीलो भूपालमान्यो वदतां वरेण्यः ।
दाता दयालुः किल वैरिहंता यस्य प्रसूतिर्विजयाभिधाने॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विजयनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य युद्धमें धीर, निरंतर श्रेष्ठ शीलवाला, राजा करके माननीय, बोलनेमें श्रेष्ठ, दाता, दयावान् और शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ २७ ॥

अथ जयसंवत्सरजातफलम् ।

शास्त्रप्रसंगे विदुषां विवादी मान्यो वदान्यो रिपुवर्गहंता ।
जयाभिलाषी विषयानुरक्तो जातो जयाब्दे मनुजो महौजाः॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जयनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य शास्त्रके प्रसंगमें विद्वानोंसे विवाद करनेवाला, माननीय, शत्रुओंको मारनेवाला, जयकी इच्छा रखनेवाला, विषयोंमें आसक्त और बड़ा पराक्रमी होता है ॥ २८ ॥

अथ मन्मथसंवत्सरजातफलम् ।

भूषाविशेषैः सहितश्च योषाविलासशीलोऽमृतवाक्कलाज्ञः ।
सद्गीतनृत्याभिरतश्च भोक्ता यो मन्मथाब्दे जननं प्रपन्नः॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मन्मथनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य विशेष आभूषणोंसहित, स्त्रीके साथ विलास करनेवाला, मीठी वाणी बोलनेवाला, कलाओंका जाननेवाला, श्रेष्ठ गीत नृत्योंमें तत्पर और भोगोंका भोगनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ दुर्मुखसंवत्सरजातफलम् ।

क्रूरोद्धतो निंद्यमतिश्च लुब्धो वक्रास्यबाहूरुशिरःप्रियःस्यात्।
विरुद्धभावो बहुदुष्टचेष्टो यो हायने दुर्मुखनाम्नि जातः॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दुर्मुखनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य क्रूरतासहित, दुष्ट बुद्धिवाला, लोभी और जिसके मुख, बाहैं और पैर टेढे, विरुद्ध शील और बड़ी दुष्ट चेष्टावाला होता है ॥ ३० ॥

अथ हेमलंबसंवत्सरजातफलम् ।

तुरंगहेमाम्बरधान्यरत्नैर्युतो नितांतं सुतदारसौख्यः ।
समस्तवस्तुग्रहणैकबुद्धिर्यो हेमलंबे पुरुषोऽभिजातः ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हेमलंबनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य घोडे और सोना, वस्त्र धान्य और रत्नोंसहित, निरंतर पुत्र और स्त्रीके सौख्यको प्राप्त सब चीजोंके ग्रहणमें एकबुद्धिवाला होता है ॥ ३१ ॥

अथ विलम्बसंवत्सरजातफलम् ।

धूर्तोऽतिलुब्धोऽलसतां प्रपन्नः श्लेष्माधिकः सत्त्वविवर्जितश्च ।
प्रारब्धकार्ये नितरां प्रलापी विलंबसंवत्सरसंभवः स्यात् ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विलंबनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य धूर्त, बडा लोभी, आलस्यसहित, कफप्रकृतिवाला, बलहीन और प्रारब्ध कार्य्योंमें निरंतर प्रलाप करनेवाला होता है ॥ ३२ ॥

अथ विकारिसंवत्सरजातफलम् ।

दुराग्रही सर्वकलाप्रवीणः सुसंग्रही चञ्चलधीश्च धूर्तः ।
अनल्पजल्पस्सुहृद्विकल्पो विकारिसंवत्सरजो नरः स्यात् ३३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विकारिसंवत्सर हो वह मनुष्य झूठा हठ करनेवाला, सब कलाओंमें प्रवीण, सब चीजोंका संग्रह करनेवाला, चञ्चलबुद्धि, धूर्त, बहुत बोलनेवाला और मित्रोंसे कल्पना करनेवाला होता है ॥ ३३ ॥

अथ शार्वरीसंवत्सरजातफलम् ।

वणिक्क्रियायां कुशलो विलासी नैवानुकूलश्च सुहृज्जनानाम् ।
अनेकविद्याभ्यसनानुरक्तः संवत्सरे शार्वरिनाम्नि जातः ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शार्वरी संवत्सर होता है वह मनुष्य व्यापारके काममें चतुर, विलास करनेवाला, मित्रोंका विरोधी और अनेक प्रकारकी विद्याओंका अभ्यास करनेवाला होता है ॥ ३४ ॥

अथ प्लवसंवत्सरजातफलम् ।

कामी प्रकामं धनवांश्च शश्वत्सेवादरो वारहृतार्थतमः ।
शुभस्तबुद्धिश्चपलस्वभावः प्लवाभिधानाब्दभवो नरः स्यात् ॥ ३५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्लवनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य अत्यन्त कामी, धनवान्, निरंतर सेवा करके आदर पानेवाला, किर्मसे संतापको प्राप्त, गुप्तबुद्धि और चपलस्वभाव होता है ॥ १५ ॥

अथ शुभकृत्संवत्सरजातफलम् ।

सौभाग्यविद्याविनयैः समेतः पुण्यैरगण्यैरपि दीर्घजीवी ।
स्यान्मानवः सुतधनोरुसंपद्यस्य प्रसूतिः शुभकृत्समासु ॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभकृत् संवत्सर हो वह मनुष्य सौभाग्य और विद्या नम्रता करके सहित, बहुत पुण्यों करके युक्त, बड़ी उमरवाला और वह पुत्र, धन और संपदासे सौख्य पाता है ॥ १६ ॥

अथ शोभनसंवत्सरजातफलम् ।

सर्वोन्नतश्चारुगुणो दयालुः सत्कर्मकर्ता विजयी विशेषात् ।
कांतो विनीतः शुभदृक्प्रवीणो यः शोभने वत्सरके हि जातः१७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शोभन नाम संवत्सर होता है वह मनुष्य ऊँचे शरीरवाला, सुंदर गुणोंसहित, दयावान्, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, विजयको प्राप्त, सुंदर, नम्रतासहित, श्रेष्ठ नेत्रोंवाला और प्रवीण होता है ॥ १७ ॥

अथ क्रोधिसंवत्सरजातफलम् ।

क्रूरेक्षणः क्रूरतरस्वभावः स्त्रीवल्लभः पर्वततुल्यगर्वः ।
स्यादन्तरायः परकार्यकाले क्रोधी भवेत्क्रोधिशरत्प्रसूतः १८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्रोधी संवत्सर हो वह मनुष्य क्रूर दृष्टिवाला, दुष्टस्वभाववाला, स्त्रीका प्यारा, पहाड़के समान अभिमानी, पराये कार्यका बिगाड़नेवाला और क्रोधी होता है ॥ १८ ॥

अथ विश्वावसुसंवत्सरजातफलम् ।

सपुत्रदारः सुतरामुदारो नरः सदाचाररतोऽतिधीरः ।
मिष्टान्नभुक्सर्वगुणाभिरामो विश्वावसौ यस्य भवेत्प्रसूतिः१९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विश्वावसु संवत्सर होता है वह मनुष्य पुत्र और स्त्रीसहित, निरंतर उदार, हमेशा आचारमें तत्पर, अतिधैर्यवाला, मिष्टान्न खानेवाला और सम्पूर्ण गुणोंकरके युक्त होता है ॥ १९ ॥

अथ पराभवसंवत्सरजातफलम् ।

धनस्य धान्यस्य च नैव किञ्चित्सुसंग्रहोऽप्यंतकठोरवाक्यः ।
आचारताल्पत्वशठत्वयुक्तो पराभवे यस्य भवेत्प्रसूतिः॥४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पराभव संवत्सर होता है वह मनुष्य धन धान्य करके रहित चाहे कितना संग्रह करे, कठोर वाक्य बोलनेवाला, आचारता और थोडी शठता सहित होता है ॥ ४० ॥

अथ प्लवङ्गसंवत्सरजातफलम् ।

भवेदलं चंचलचित्तवृत्तिर्न स्यात्प्रवृत्तः खलु साधुकार्ये ।
धूर्तः सदाचारविचारहीनः प्लवङ्गजो वै मनुजः कृशाङ्गः॥४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्लवङ्ग संवत्सर होता है वह मनुष्य परिपूर्णतासहित चंचल चित्तवृत्तिवाला, श्रेष्ठ कार्यमें प्रवृत्ति नहीं करे, धूर्त, हमेशा आचार विचार रहित और दुर्बलदेह होता है ॥ ४१ ॥

अथ कीलकसंवत्सरजातफलम् ।

कृपेणमध्यः प्रियवाग्दयालुर्जलाभिलाषी त्वनुवेलमेव ।
स्थूलाङ्घ्रिसन्मौलिरलंबलीयान्किलारिकीलःकिलकेप्रसूतः॥४२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कीलक संवत्सर होता है वह मनुष्य स्वरूपमें मध्यम, प्यारी वाणी बोलनेवाला, दयावान्, वारंवार जलकी इच्छा करनेवाला, स्थूलपैर, श्रेष्ठशिर और बल करके पूर्ण होता है ॥ ४२ ॥

अथ सौम्यसंवत्सरजातफलम् ।

पण्डितो हि धनवान्बहुभोगी देवतातिथिरुचिः शुचिरुच्चैः ।
सात्त्विकःकृशकलेवरयष्टिःसौम्यवत्सरभवो हि नरःस्यात्॥४३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सौम्य संवत्सर होता है वह मनुष्य पंडित, धनवान् बडा भोगी, देवता और अतिथिमें प्रीति करनेवाला, बडा पवित्र, सात्त्विक स्वभाव और दुर्बल देहवाला होता है ॥ ४३ ॥

अथ साधारणसंवत्सरजातफलम् ।

इतस्ततः संचलनानुरक्तो लिपिक्रियायां कुशलो विवेकी ।
क्रोधी क्षुधार्मौगविकृतचेताःप्राणीति साधारणजःप्रणीतः॥४४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें साधारण नाम संवत्सर होता है वह मनुष्य इधर उधर चलने फिरनेमें तत्पर, खेतीकियामें कुशल, विवेकी, क्रोधसहित और पवित्र भोगसे संतुष्टचित्तवाला होता है ॥ ५४ ॥

अथ विरोधकृत्संवत्सरजातफलम् ।

महेश्वराराधनतत्परः स्यात्क्रोधी विरोधी सततं बहूनाम् ।
पराङ्मुखस्तातवचस्यतीव विरोधकृन्नाम्नि च यस्य जन्म ॥ ५५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विरोधकृत्संवत्सर हो वह मनुष्य शिवजीकी आराधना करनेमें तत्पर, क्रोधयुक्त, बहुत जनोंसे विरोध करनेवाला और पिताकी आज्ञासे अत्यन्त विमुख होता है ॥ ५५ ॥

अथ परिधाविसंवत्सरजातफलम् ।

विद्वान्सुशीलश्च कलाप्रवीणः सुधीश्च मान्यो वसुधाधिपानाम् ।
व्यापारसंप्राप्तमहाप्रतिष्ठः पुमान्भवेद्वै परिधाविजन्मा ॥ ५६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिधावी संवत्सर होता है वह मनुष्य विद्वान्, सुन्दर शीलवाला, कलाओंमें प्रवीण, श्रेष्ठ बुद्धिवाला, राजा करके माननीय और व्यापारमें बडी प्रतिष्ठाको प्राप्त होता है ॥ ५६ ॥

अथ प्रमादिसंवत्सरजातफलम् ।

दुष्टोऽभिमानी कलहानुरक्तो लुब्धः कुटुंबाभिरतश्च दीनः ।
स्यादल्पधीर्गर्हितकर्मकर्ता प्रमादिजन्मा मनुजः प्रमादी ॥ ५७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रमादी संवत्सर होता है वह मनुष्य दुष्ट, अभिमानी, कलहमें आसक्त, लोभी, कुटुम्बमें तत्पर, दीन, थोडी बुद्धिवाला, बुरे कर्म करनेवाला और आलसी होता है ॥ ५७ ॥

अथ आनन्दसंवत्सरजातफलम् ।

स्याद्भूरिदारश्चतुरोऽतिदक्षः शश्वत्सुतानन्दभरप्रपूरः ।
प्राज्ञः कृतज्ञः सुतरां विनीतोऽप्यानंदजातो मनुजो वदान्यः ॥ ५८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आनंदनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य बहुत स्त्रियोंवाला, चतुर, अत्यन्त दक्ष, निरंतर पुत्रोंके आनंदसे भरपूर, पंडित, कृतज्ञ, नितांत नम्रतासहित और उदार होता है ॥ ५८ ॥

अथ राक्षससंवत्सरजातफलम् ।

क्रूरः स्वकर्मा कलहानुरक्तः संत्यक्तसद्धर्मविचारसारः ।
दयाविहीनश्च ससाहसोऽपि भवेन्नरो राक्षसजातजन्मा ॥ ५९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राक्षसनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य क्रूर खोटे कर्म करनेवाला, कलहमें तत्पर, श्रेष्ठ धर्म और श्रेष्ठ विचारोंको त्यागनेवाला, दयारहित और साहसी होता है ॥ ४९ ॥

समृद्धिशाली जलसस्यसंपद्वैश्यानुवृत्तौ कुशलः सुशीलः ।
स्यादल्पवित्तो बहुपालकश्च जातो नलाब्दे चपलो मनुष्यः ॥५०॥

अथ नलसंवत्सरजातफलम् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नलनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवाला खेती करके धन पैदा करनेवाला, वैश्यवृत्ति करनेमें चतुर, श्रेष्ठ, सुशील, थोड़े धनवाला, बहुत जनोंका पालन करनेवाला और चपल होता है ॥ ५० ॥

अथ पिंगलसंवत्सरजातफलम् ।

पिङ्गेक्षणो गर्हितकर्मकर्ता स्यादुद्धतश्चंचलवैभवाढ्यः ।
त्यागी शठोऽत्यंतकठोरवाक्यो जातो नरः पिंगलनामधेये ॥५१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पिंगलनाम संवत्सर हो वह मनुष्य पीले नेत्रोंवाला, निषिद्ध कर्म करनेवाला, उद्धत, चंचल, वैभव करके सहित, त्यागी, शठ और अत्यन्त कठोर वाक्यवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ कालयुक्तसंवत्सरजातफलम् ।

अनल्पजल्पः प्रियतामुपेतस्त्वसाधुबुद्धिर्विधिना वियुक्तः ।
कलिप्रसंगे किल कालरूपो यः कालयुक्तप्रभवः कृशांगः ॥५२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कालयुक्त संवत्सर होता है वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, प्रीतिसहित खोटी बुद्धिवाला, विधियों करके वियुक्त, कलह करनेवाला और विकरालरूप होता है ॥ ५२ ॥

अथ सिद्धार्थिसंवत्सरजातफलम् ।

उदारचेता विलसत्प्रसादो रणाङ्गणप्राप्तयशाः सुवंषः ।
नरेंद्रमंत्री बहुपूजितार्थो सिद्धार्थिजातो मनुजः समर्थः ॥५३॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें सिद्धार्थी संवत्सर हो वह मनुष्य उदारचित्त, दयावान्, संग्राममें यशको प्राप्त, सुन्दर वंशवाला, राजाका मंत्री और बहुत जनोंकरके पूजनीय होता है ॥ ५३ ॥

अथ रौद्रिसंवत्सरजातफलम् ।

भयंकरः पालयिता पशूनां शश्वत्परीवादपरोऽतिधूर्तः ।
जातापकीर्तिःखलचित्तवृत्तिर्नरोऽतिरौद्रः खलु रौद्रजन्मा ॥५४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रौद्रनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य भयंकर, पशुओंका पालनेवाला, निरंतर विवादतत्पर, अत्यन्त धूर्त, अधमजनका भागी, दुष्टचित्त वृत्तिवाला और रौद्र स्वरूप होता है ॥ ५४ ॥

अथ दुर्मतिसंवत्सरजातफलम् ।

स्ववाक्यनिर्वाहमहाभिमानः प्रसन्नताहीनतरो नरः स्यात् ।
कामी प्रकामं दुरितप्रवृत्तिर्यो दुर्मतिर्दुर्मतिवर्षजातः ॥ ५५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दुर्मति संवत्सर हो वह मनुष्य अपने वाक्यके पालनेमें बड़ा अभिमानी, प्रसन्नतारहित, कामी, यथेष्ट पापकर्ममें प्रवृत्त और दुष्टबुद्धि होता है ॥ ५५ ॥

अथ दुंदुभिसंवत्सरजातफलम् ।

नित्यं नरेन्द्रार्पितगौरवः स्याद्गजाश्वभूहेमसमन्वितश्च ।
तौर्यत्रिकप्रीतिरतीव जातश्चेन्मानवो दुंदुभिनामधेये ॥ ५६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दुंदुभिसंवत्सर हो वह मनुष्य राजा करके गौरवको प्राप्त, हाथी घोड़ा धरती सुवर्ण सहित, गीत वाद्य और नृत्यमें अतीव प्रीति करनेवाला होता है ॥ ५६ ॥

अथ रुधिरोद्गारिसंवत्सरजातफलम् ।

आरक्ताक्षः क्वचिदपि महाकामलाद्यामयानां
प्रादुर्भावादतिकृशतनुर्जायतेऽत्यंतरोषः ।
पादद्वंद्वे भवति कुनखो हस्तयुग्मेऽथवा स्या-
च्छश्वद्दुःखं व्रजति रुधिरोद्गारिजन्मा मनुष्यः ॥ ५७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रुधिरोद्गारी संवत्सर होता है वह मनुष्य लाल नेत्रोंवाला, बड़े २ कामला आदि रोगोंके प्रादुर्भावसे अत्यन्त दुर्बल देहवाला, बड़ा क्रोधी और दोनों पैरोंमें टेढ़े नख हों और हाथोंके भी काले नाखून हों तथा सबसे दुःखको प्राप्त होता है ॥ ५७ ॥

अथ रक्ताक्षिसंवत्सरजातफलम् ।

आचारधर्माभिरतो नितान्तं मनोभवोत्कर्षतरो नरः स्यात् ।
अन्याधिकत्वं सहते न किंचिद्रक्ताक्षिजातोऽक्षिरुजान्वितश्च ॥ ५८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रक्ताक्षि संवत्सर हो वह मनुष्य आचार धर्ममें तत्पर, कामी, बड़ी भारी पराधी अधिकता नहीं सहनेवाला और नेत्ररोगवाला होता है ॥ ५८ ॥ [illegible]

अथ क्रोधनसंवत्सरजातफलम्।

स्यादन्तरायो हि परस्य कार्ये तमोगुणाधिक्यभयंकरश्च।
परस्य बुद्धिं प्रहरेत्प्रकामं यो हायने क्रोधननाम्नि जातः ॥५९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्रोधननाम संवत्सर हो वह मनुष्य पराये कार्यमें विघ्न करनेवाला, अधिक क्रोधी, भयंकर स्वरूप और पराई बुद्धिका अत्यन्त हरनेवाला होता है ॥ ५९ ॥

अथ क्षयसंवत्सरजातफलम्।

उपार्जितार्थव्ययकृन्नितान्तं सेवारतो निष्ठुरचित्तवृत्तिः।
सत्कर्ममार्गेऽल्पमनःप्रवृत्तिः क्षयाभिधाने जननं हि यस्य ॥६०॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
संवत्सरजातफलाध्यायः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षयनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य पैदा किये हुए धनको व्यय करनेवाला, निरंतर सेवामें तत्पर, कठोरचित्त और श्रेष्ठ कर्म करनेमें थोड़ी मनकी वृत्तिवाला होता है ॥ ६० ॥

इति श्रीबरेलीनिवासिगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां षष्टिसंवत्सरजातफलवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ अयनजातफलमाह तत्र उत्तरायणजातफलम्।

शश्वत्प्रसन्नो ननु सूनुकान्तासंतोषयुक्तोऽतितरां चिरायुः।
नरः सदाचारपरोऽप्युदारो धीरश्च सौम्यायनजातजन्मा ॥ १ ॥

जो मनुष्य उत्तरायणसूर्यमें पैदा हो वह मनुष्य निरंतर प्रसन्न, निश्चय कर पुत्र और स्त्री करके सन्तोषको प्राप्त, बड़ी उमरवाला, हमेशा आचारमें तत्पर, उदार और धीरवान् होता है ॥ १ ॥

अथ दक्षिणायनजातफलम्।

अखर्वगर्वः कृषिकर्मकर्ता चतुष्पदाढ्योऽतिकठोरचित्तः।
शठोऽप्यसह्यो ननु मानवानां याम्यायने चाजननं प्रपन्नः ॥२॥

जो मनुष्य दक्षिणायनमें जन्मता है वह मनुष्य बड़ा अभिमानी, खेती करनेवाला, चतुष्पदोंसहित, अत्यंत कठोरचित्त और शठ तथा किसीकी बातको सहनेवाला नहीं होता है ॥ २ ॥

अथ ऋतुजातफलमाह—तत्रादौ वसन्तर्तुजातफलम् ।

कन्दर्परूपो मतिमान्प्रतापी सङ्गीतशास्त्रे गणिते प्रवीणः ।
शास्त्रप्रभूतामलचैलचेता वसंतजन्मा मनुजः प्रसन्नः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वसन्त हो वह मनुष्य कामदेवसमान रूपवाला, बुद्धिमान्, प्रतापी, गाने बजानेमें प्रवीण, गणितशास्त्रमें चतुर, बहुत शास्त्रोंका जाननेवाला, सुन्दर वस्त्र धारण करनेवाला और प्रसन्नचित्त होता है ॥ १ ॥

अथ ग्रीष्मर्तुजातफलम् ।

ऐश्वर्यविद्याधनधान्ययुक्तो वक्ता प्रलम्बामलकेशपाशः ।
भोगी भवेन्नीरविहारशीलो यो ग्रीष्मकालोद्भवतां प्रसन्नः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्रीष्मऋतु हो वह मनुष्य ऐश्वर्य और विद्या, धन, अन्न करके सहित, बहुत बोलनेवाला, बहुत बड़े लम्बे सुन्दर केशोंवाला, भोगी और जलमें विहार करनेमें शील जिसका, ऐसा होता है ॥ २ ॥

अथ वर्षर्तुजातफलम् ।

संग्रामधीरो मतिमान्प्रतापी तुरंगमप्रेमकरः सुरूपः
कफानिलात्मा ललनाविलासी वर्षोद्भवश्चापि विचित्रमंत्रः ॥ ३ ॥

जो मनुष्य वर्षाऋतुमें पैदा हो वह मनुष्य युद्धमें धैर्यवाला, बुद्धिमान्, प्रतापी, घोड़ेसे प्रीति करनेवाला, रूपवान्, कफ और वात करके सहित, स्त्रियोंमें विलास करनेवाला और विचित्र सलाहवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ शरदृतुजातफलम् ।

अपूर्णरोषः पुरुषोऽनिलात्मा मानी धनी कर्मरुचिः शुचिः स्यात् ।
रणप्रियो वाहनसंयुतश्च ऋतौ शरत्प्राप्ति च यस्य जन्म ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शरद् ऋतु हो वह मनुष्य क्रोधहीन, वातप्रकृतिवाला, अभिमानी, धनवान्, कर्मोंमें प्रीति करनेवाला, पवित्रदेह, संग्राम जिसको प्यारा और वाहनों करके सहित होता है ॥ ४ ॥

अथ हेमंतर्तुजातफलम् ।

नरेन्द्रमंत्री चतुरोऽप्युदारो नरो भवेच्चारुगुणोपपन्नः ।
सत्कर्मधर्मानुरतो मनस्वी हेमंतजातः सततं विनीतः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हेमन्त ऋतु होती है वह मनुष्य राजाका मंत्री चतुर, उदार, श्रेष्ठ गुणोंकरके सहित, श्रेष्ठ कर्म धर्मसहित और निरंतर नम्रतासहित होता है ॥ ५ ॥

अथ शिशिरऋतुजातफलम्।

मिष्टान्नपानानुरतो नितांतं क्षुधान्वितः पुत्रकलत्रसौख्यः।
सत्कर्मचेष्टः पुरुषः सरोषो बलाधिशाली शिशिरर्तुजन्मा ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शिशिरऋतु हो वह मनुष्य मिष्टान्नपानमें तत्पर, क्षुधासहित, पुत्र और स्त्री सहित सौख्यवान्, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, क्रोधसहित व बलवान् होता है ॥ ६ ॥

अथ मासजातफलमाह-तत्रादौ चैत्रजातफलम्।

सत्कर्मविद्याविनयोपपन्नो भोगी नरः स्यान्मधुरान्नभोजी।
सत्पात्रमित्रानुरतश्च मन्त्री चैत्रोद्भवश्चापि विचित्रमंत्रः ॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चैत्र मास होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म और विद्या विनयसहित, भोगी, मधुर अन्नका खानेवाला, सत्पुरुषोंसे मित्रता करनेवाला, राजाका मंत्री तथा विचित्र मन्त्रवाला होता है ॥ १ ॥

अथ वैशाखमासजातफलम्।

सुलक्षणः पुण्यगुणानुशीलः पुमान्बलीयान्द्विजदेवभक्तः।
कामी चिरायुर्जलपानशीलः स्यान्माधवे बांधवसौख्ययुक्तः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वैशाखमास होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ लक्षणवाला, पुण्य गुणोंमें शीलवाला, बलवान्, देवता और ब्राह्मणोंका भक्त, कामी, बड़ी उमरवाला, जलपानमें शील और भाइयोंके सौख्यसहित होता है ॥ २ ॥

अथ ज्येष्ठमासजातफलम्।

क्षमान्वितश्चञ्चलचित्तवृत्तिर्विदेशवासाभिरुचिश्च तीव्रः।
विचित्रबुद्धिः खलु दीर्घसूत्रो ज्येष्ठोद्भवः श्रेष्ठतरो नरः स्यात् ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ज्येष्ठमास होता है वह मनुष्य क्षमासहित, चंचल चित्तवाला, परदेशमें वास करनेवाला, तीव्र, विचित्र बुद्धिवाला, बहुत देरमें काम करनेवाला और श्रेष्ठ मनुष्य होता है ॥ ३ ॥

अथ आषाढमासजातफलम्।

बहुव्ययोऽनल्पवचोविलासः प्रमादशीलो गुरुवत्सलश्च।
सदाभिमानः शुभकर्मकृत्स्यादाषाढजो गाढतराभिमानः ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आषाढमास होता है वह मनुष्य बहुत खर्च करनेवाला, बहुत बोलनेवाला, आलस्य करनेवाला, गुरुका भक्त, हमेशा मन्दाग्निरोगवाला, शुभ कर्म करनेवाला और बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ श्रावणमासजातफलम् ।

पुत्रैश्च पौत्रैश्च कलत्रमित्रैः सुखी च तातस्य निदेशकर्ता ।
लोकप्रसिद्धः कफवान्वदान्यो गुणान्वितः श्रावणमासजन्मा ५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें श्रावण मास हो वह मनुष्य पुत्र पौत्र स्त्री और मित्रों करके सुखी और पिताकी आज्ञा पालन करनेवाला, संसारमें प्रसिद्ध, कफ सहित और गुणों करके युक्त होता है ॥ ५ ॥

अथ भाद्रपदमासजातफलम् ।

श्रीमान्भवेत्क्षीणकलेवरश्च दाता च कांताभृतजातसौख्यः ।
सुखे च दुःखेऽविकृतो हि मर्त्यो भवेन्नरो भाद्रपदासजन्मा ६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भाद्रपद मास होता है वह मनुष्य लक्ष्मीवान्, क्षीणशरीर, दानी, स्त्री और शय्यासे सौख्य पानेवाला तथा सुख और दुःखमें विकृत नहीं होता है ॥ ६ ॥

अथ आश्विनमासजातफलम् ।

विद्वान्धनी राजकुलप्रियश्च सत्कार्यकर्ता बहुभृत्ययुक्तः ।
दाता गुणज्ञो बहुपुत्रसंपत्स्यादाश्विनेऽश्वादिसमृद्धियुक्तः ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आश्विन मास हो वह मनुष्य विद्वान्, धनवान्, राजाका प्यारा, श्रेष्ठ कार्य करनेवाला, बहुत नौकरोंवाला, दानी, गुणका जाननेवाला, बहुत पुत्र-संपत्ति और अश्वादि समृद्धियुक्त होता है ॥ ७ ॥

अथ कार्तिकमासजातफलम् ।

सत्कर्मकर्ता बहुवाग्विलासी धनी लसत्कुंचितकेशपाशः ।
कामं सकामः क्रयविक्रयार्थी सत्कृत्यकृत्कार्तिकजातजन्मा ८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कार्तिक मास हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, बहुत बाणी बोलनेवाला, धनवान्, टेढे बालोंवाला, कामी, क्रय विक्रय अर्थी तथा अच्छे काम करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ मार्गशिरमासजातफलम् ।

सतीर्थयात्राभिरतः
परोपकारी [illegible] मनोज्ञवाग्वै विभवैः समेतः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मार्गशिरमास हो वह मनुष्य श्रेष्ठ, तीर्थोंकी यात्रा करनेमें तत्पर, श्रेष्ठ शीलवाला, कलाओंके समूहमें चतुर, पराया उपकार करनेवाला, श्रेष्ठ मार्गको धारण करनेवाला तथा वैभवसहित होता है ॥ ९ ॥

अथ पौषमासजातफलम्।

परोपकारी पितृवित्तहीनः कष्टार्जितार्थव्ययकृद्विधिज्ञः।
सुगुप्तमंत्रः कृतशास्त्रयत्नः पौषे विशेषात्पुरुषः कृशाङ्गः ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पौष मास हो वह मनुष्य पराया उपकार करनेवाला, पिताके धनसे रहित, कष्टसे धन पैदा करनेवाला, थोड़ा खर्च करनेवाला गुप्तमंत्र करनेवाला, शास्त्रमें यत्न करनेवाला तथा दुर्बलदेह होता है ॥ १० ॥

अथ माघमासजातफलम्।

सन्मंत्रविद्वैदिकसाधुयोगी योगोक्तविद्याव्यसनानुरक्तः।
बुद्धिविशेषान्निहतारिसंघो माघोद्भवः स्यादनघो मनुष्यः ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें माघमास होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ मंत्रोंका जाननेवाला, वेदका जाननेवाला, साधु योगवाला, योगशास्त्रोक्त विद्याके व्यसनमें तत्पर, बड़ी बुद्धिमत्तासे शत्रुदलका नाश करनेवाला, अपापी होता है ॥ ११ ॥

अथ फाल्गुनमासजातफलम्।

परोपकारी कुशलो दयालुर्बलान्वितः कोमलकायशाली।
विलासिनीकेलिविधानशीलो यःफाल्गुनेफल्गुवचोविलासः १२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें फाल्गुन मास हो वह मनुष्य पराये उपकार करनेमें कुशल, दयावान्, कोमल शरीरवाला, स्त्रियोंके साथ विलास करनेवाला और निःसार वचन बोलनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ मलमासजातफलम्।

विषहीनमतिः सुचरित्रयुग्विविधतीर्थकरश्च निरामयः।
सकलवल्लभ आत्महितंकरः खलु मलिम्लुचमाससमुद्भवः १३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मलमास होता है वह मनुष्य विषयमें हीनबुद्धिवाला, श्रेष्ठ चरित्रसहित, रोगरहित, अनेक तीर्थयात्रा करनेवाला, सबका प्यारा और अपने जनोंका हित करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ पक्षजातफलमाह तत्रादौ शुक्लपक्षजातफलम्।

चंचच्चिरायुः सुतरां सुशीलः श्रीपुत्रवान्कोमलकायकान्तिः।
सदा सहर्षश्च सितेतरस्थेजन्मकालस्तु शुक्लपक्षे ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्लपक्ष हो वह मनुष्य बडी उमरवाला, निरंतर भद्र शीलवाला, लक्ष्मी और पुत्रवान्, कोमलदेहकांतिमान्, हमेशा मार्गसहित तथा नम्रतासहित होता है ॥ १ ॥

अथ कृष्णपक्षजातफलम् ।

प्रतापशीलो विबलश्च लोलः कलिप्रियः स्वीयकुलोद्धतश्च ।
मनोभवाधिक्ययुतो नितांतं सितेतरे यस्य नरस्य जन्म ॥ २॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कृष्णपक्ष होता है वह मनुष्य प्रतापी, शीलवान्, निर्बल, चञ्चल, कलह जिसको प्रिय, अपने कुलसे विपरीत और अत्यन्त कामी होता है ॥ २ ॥

अथ दिनरात्रिजातफलमाह–तत्रादौ दिवाजातफलम् ।

तेजस्वी पितृसादृश्यश्चारुदृष्टिर्नृपप्रियः ।
बंधुपूज्यो धनाढ्यश्च दिवाजातो नरो भवेत् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यका जन्म दिनमें हो वह तेजवाला, पिताके तुल्य, सुंदर नेत्रवाला, राजाओंका प्यारा, भाइयों करके पूज्य और धनवान् होता है ॥ १ ॥

अथ रात्रिजातफलम् ।

रंध्रदृग्बहुकामार्तः क्षयरोगी मलीमसः ।
क्रूरात्मा छन्नपापश्च निशि जातो नरो भवेत् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यका जन्म रात्रिमें हो वह मनुष्य चुंधे नेत्रवाला, बहुत कामातुर, क्षयरोगवाला, मलिनचित्तवाला, दुष्टात्मा और पापोंसे आच्छादित होता है ॥ २ ॥

अथ तिथिजातफलमाह तत्रादौ प्रतिपदाजातफलम् ।

बहुजनपरिवारश्चारुविद्यो विवेकी
कनकमणिविभूषावेषशाली सुशीलः ।
अतिसुललितकांतिर्भूमिपालात्तवित्तः
प्रतिपदि यदि सूतिर्जायते यस्य जन्तोः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रतिपदा तिथि हो वह मनुष्य बहुत जन और परिवारवाला, सुंदर विद्यावान्, विवेकी, सोना मणि और आभूषण सहित, श्रेष्ठ शीलवाला, अति सुंदर कांतिवाला और राजासे धनको प्राप्त करता है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयाजातफलम् ।

दाता दयालुर्गुणवान्विवेकी चंचत्सदाचारविचारधन्यः ।
प्रसन्नमूर्तिर्बहुगीतकीर्तिर्मर्त्यो द्वितीयातिथिसंभवः स्यात् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें द्वितीया तिथि हो वह मनुष्य दानी, दयावान्, गुणवान् और विवेकी होता है और निरंतर श्रेष्ठ आचार और विचारोंमें धन्य, प्रसन्नमूर्ति और बहुत यशवाला होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयाजातफलम् ।

कामाधिकश्चाप्यनवद्यविद्यो बलान्वितो राजकुलाप्तवित्तः ।
प्रवासशीलश्चतुरो विलासी मर्त्यस्तृतीयाप्रभवोऽभिमानी ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीया तिथि हो वह मनुष्य अधिक कामी, निर्दोष विद्यावाला, बलवान्, राजा करके धन प्राप्त करनेवाला, परदेशमें रहनेवाला, चतुर, विलासयुक्त और अभिमानी होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थीजातफलम् ।

ऋणप्रवृत्तिर्बहुसाहसः स्याद्रणप्रवीणः कृपणस्वभावः ।
द्यूते रतिर्लोलमना मनुष्यो वादी यदि स्याज्जनने चतुर्थी ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थी तिथि हो वह मनुष्य ऋणमें प्रवृत्ति करनेवाला बडा साहसी, संग्राममें प्रवीण, जुआ खेलनेवाला, चंचलमन तथा विवाद करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमीजातफलम् ।

सम्पूर्णगात्रश्च कलत्रपुत्रमित्रान्वितो भूतदयान्वितश्च ।
नरेंद्रमान्यस्तु नरो वदान्यः प्रसूतिकाले किल पञ्चमी चेत् ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पञ्चमी तिथि हो वह मनुष्य पूर्णशरीर, स्त्री और पुत्र, मित्रों सहित, प्राणीमात्र पर दया करनेवाला, राजमान्य तथा दाता होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठीजातफलम् ।

सत्यप्रतिज्ञो धनसूनुसम्पद्दीर्घोरुजानुर्मनुजो महौजाः ।
प्रकृष्टकीर्तिश्चतुरो वरिष्ठः षष्ठ्यां प्रजातो व्रणकीर्णगात्रः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें षष्ठी तिथि हो वह मनुष्य सत्य प्रतिज्ञा करनेवाला, धन पुत्रोंकी संपदा सहित, बडी जंघा और जानुवाला, बडा पराक्रमी, बडी कीर्तिवाला, चतुर, श्रेष्ठ और व्रणयुक्त देहवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमीजातफलम् ।

ज्ञानी गुणज्ञो हि विशालनेत्रः सत्पात्रवेत्तार्पणचित्तवृत्तिः ।
कन्याप्रजो वै परवित्तहर्ता स्यात्सप्तमीजो मनुजोऽरिहंता ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमी तिथि हो वह मनुष्य ज्ञानी, गुणवान्, बड़े नेत्रोंवाला, श्रेष्ठ मनुष्य और देवताओंके पूजनमें चित्त लगानेवाला, कन्या संतान पैदा करनेवाला, पराया धन हरण करनेवाला और शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमीजातफलम् ।

नानासंपत्सुतसौख्यः कृपालुः पृथ्वीपालप्राप्तविद्याधिकारः ।
कान्ताप्रीतिश्चंचला चित्तवृत्तिर्यस्याष्टम्यां जन्म चेन्मानवस्य ८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमी तिथि हो वह मनुष्य अनेक पुत्र और संपत्तिका सौख्य पानेवाला, दयावान्, राजा करके विद्याके अधिकारको प्राप्त, स्त्रियोंसे प्रीति करनेवाला और चंचल चित्तवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमीजातफलम् ।

पराङ्मुखो बंधुजनस्य कार्ये कठोरवाक्यश्च सुधीविरोधी ।
नरः सदाचारगतादरः स्याद्यस्य प्रसूतौ नवमी तिथिश्चेत् ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमी तिथि हो वह मनुष्य अपने कुटुम्बियोंके कार्यसे विमुख, कठोर वाणी बोलनेवाला, पंडितोंका विरोधी और सदाचारमें आदरहीन होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमीजातफलम् ।

धर्मैकबुद्धिर्भववैभवाढ्यः प्रलंबकण्ठो बहुशास्त्रपाठी ।
उदारचित्तोऽतितरां विनीतो रम्यश्च कामी दशमीभवः स्यात् १०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमी तिथि हो वह मनुष्य धर्म करनेमें ही बुद्धि करनेवाला, कल्याण और वैभव करके सहित, लंबे कंठवाला, बहुत शास्त्रोंका पढ़नेवाला, उदारचित्त तथा अत्यन्त नम्रता सहित और कामी होता है ॥ १० ॥

अथैकादशीजातफलम् ।

देवद्विजार्चानिरतः प्रशीलः सुनिर्मलान्तःकरणः प्रवीणः ।
पुण्यैकचित्तोत्तमकर्मकृत्स्यादेकादशीजो मनुजः प्रसन्नः ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एकादशी तिथि हो वह मनुष्य देवता और ब्राह्मणोंका पूजन करनेवाला, व्रत और दान करनेमें है शील जिसका, कुशल और शुद्धान्तःकरणवाला, पुण्यमें ही है मन जिसका, उत्तम कर्म करनेवाला [illegible] चित्तवाला

अथ द्वादशीजातफलम्।

जलप्रियो वै व्यवहारशीलो निजालयावासविलासशीलः।
सदान्नदाता क्षितिपालवित्तः स्याद्द्वादशीजो मनुजः प्रतापवान् ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें द्वादशी तिथि हो वह मनुष्य जलकी प्रीति करे, व्यवहारमें शील जिसका, अपने मकानपर रहनेमें और विलास करनेमें शील रखनेवाला, हमेशा अन्नदान करनेवाला, राजासे धनको प्राप्त करनेवाला और प्रतापवान् होता है ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशीजातफलम्।

रूपान्वितः सात्त्विकताविमुक्तः प्रलम्बकंठश्च [illegible]।
नरोऽतिशूरश्चतुरः प्रकामं त्रयोदशीनामतिथौ प्रसूतः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें त्रयोदशी तिथि हो वह मनुष्य रूपवान्, सत्त्वगुणरहित, लम्बी गर्दनवाला, बड़ा शूर वीर और अत्यन्त चतुर होता है ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशीजातफलम्।

क्रूरोऽतिशूरश्चतुरः सहासः कंदर्पलीलाकुलचित्तवृत्तिः।
स्याद्दुःसहोऽत्यंतविरुद्धभाषी चतुर्दशीजः पुरुषः सरोषः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्दशी तिथि हो वह मनुष्य क्रूरस्वभाव, शूरवीर, चतुर, हास्ययुक्त, कामक्रीडाकरके व्याकुल चित्त, किसीसे सहा न जाय ऐसा दुष्ट वाणी बोलनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ पौर्णमासीजातफलम्।

अतिसुललितकामी न्यायसंप्राप्तवित्तो
बहुयुवतिसमेतो नित्यसंजातहर्षः।
प्रबलतरविलासोऽत्यंतकारुण्यपुण्यो
गुणगणपरिपूर्णः पूर्णिमाजातजन्मा ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्णमासी तिथि हो वह मनुष्य अत्यन्त सुन्दर देहवाला, न्यायसे धन पैदा करनेवाला व बहुत स्त्रियोंसहित हमेशा हर्षको प्राप्त अत्यन्त विलास करनेवाला, अत्यन्त दयावान्, पुण्यवान्, गुणोंके समूहसे पूर्ण होता है ॥ १५ ॥

अथ [illegible]।

[illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अमावस्या तिथि हो वह मनुष्य शांतचित्त, माता पिताका भक्त, क्लेशसे प्राप्त धनवाला, धनके प्राप्त करनेकी इच्छावाला, मनुष्योंमें माननीय, कांति रहित और दुर्बलदेह होता है ॥ १६ ॥

अथ वारजातफलमाह–तत्रादौ रविवारजातफलम् ।

शूरोऽल्पकेशो विजयी रणाग्रे श्यामारुणः पित्तचयप्रकोपः ।
दाता महोत्साहयुतो महौजा दिने दिनेशस्य भवेन्मनुष्यः ॥ १ ॥

जो मनुष्य रविवारके दिन पैदा होता है वह मनुष्य शूर वीर, थोडे केशोंवाला संग्राममें यशको प्राप्त होता है और श्यामता लिये लालवर्णवाला, पित्तके समूहसे कोपित, दानी, बडा उत्साहवाला व पराक्रमी होता है ॥ १ ॥

अथ सोमवारजातफलम् ।

प्राज्ञः प्रशांतः प्रियवाग्विधिज्ञः शश्वन्नरेंद्राश्रयवृत्तिवर्ती ।
सुखे च दुःखे च समस्वभावो वारे नरः शीतकरस्य जातः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यका जन्म चंद्रवारको होता है वह मनुष्य चतुर, शांतचित्त, प्यारी वाणी बोलनेवाला, विधियोंको जाननेवाला, निरंतर राजाके आश्रय करके आजीविका करनेवाला तथा सुख और दुःखमें एकसा स्वभाववाला होता है ॥ २ ॥

अथ भौमवारजातफलम् ।

वक्रोक्तिरत्यंतरणप्रियः स्यान्नरेंद्रमंत्री च धरोपजीवी ।
सत्त्वान्वितस्तीव्रतरस्वभावो दिने भवेन्नावनिनंदनस्य ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका जन्म मंगलवारको होता है वह मनुष्य टेढी वाणी बोलनेवाला, संग्राम जिसको प्यारा, राजाका वजीर, पृथिवी करके आजीविका करनेवाला, बलवान्, और अति तीव्र स्वभाववाला होता है ॥ ३ ॥

अथ बुधवारजातफलम् ।

सद्रूपशाली मृदुवाग्विलासः श्रीमान्कलाकौशलतासमेतः ।
वणिक्क्रियायां हि भवेदभिज्ञः प्राज्ञो गुणज्ञो बुधदिनोद्भवो यः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधवार होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ रूपवाला, मीठी वाणी बोलनेवाला, श्रीमान् कलाओंमें कुशल, वणिज् व्यवहारमें निपुण, विद्वान् और गुणोंका जाननेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ गुरुवारजातफलम् ।

विद्वान्धनी सर्वगुणोपपन्नो मनोरमः क्ष्मापतिलब्धकामः ।
आचार्यवर्यश्च जनप्रियः स्याद्वारे सुरेज्यस्य नरस्य जन्म ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यका जन्म शुक्रवारको होता है वह मनुष्य विद्वान्, धनवान्, सम्पूर्ण लोकहित, मनका हरनेवाला, राजा करके सम्मानोंको प्राप्त, श्रेष्ठ आचार्य और मनुष्योंका प्यारा होता है ॥ ६ ॥

अथ भृगुवारजातफलम्।

सुनीलसत्कुंचितकेशपाशः प्रसन्नवेषो मतिमान्विशेषात्।
शुक्लांबरः प्रीतिधरो नरः स्यात्सन्मार्गगो भार्गववारजन्मा॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भृगुवार होता है वह मनुष्य सुंदर, नीलवर्णके घूंघरवाले बालोंवाला, प्रसन्नचित्त, विशेष बुद्धिमान्, सफेद वस्त्रोंको धारण करनेवाला, प्रीति करनेवाला और श्रेष्ठ मार्गपर चलनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ शनिवारजातफलम्।

अकालसंप्राप्तजराप्रवृत्तिर्बलोज्झितो दुर्बलदेहयष्टिः।
तमोगुणी कार्यचयाभिभूतः शनैर्दिने जातजनुर्मनुष्यः॥ ७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनिवार होता है वह मनुष्य विना समयके आये बुढ़ापेको प्राप्त, बलहीन, दुर्बल देहवान्, तमोगुणी और क्रूरस्वभाववाला होता है ॥ ७ ॥

अथ नक्षत्रजातफलमाह तत्रादावश्विनीनक्षत्रजातफलम्।

सदैव सेवाभ्युदितो विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसंपत्।
योषाविभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य॥१॥

जिस मनुष्यका जन्म अश्विनी नक्षत्रमें हो वह मनुष्य हमेशा सेवा करनेवाला, नम्रतासहित, सत्ययुक्त, सम्पूर्ण प्रकारकी संपत्तियोंको प्राप्त, स्त्री और आभूषण तथा पुत्रादिकों करके बड़े सन्तोषको प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अथ भरणीनक्षत्रजातफलम्।

सदापकीर्तिर्हि महापवादैर्नानाविनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरुश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतो भरणीभजातः॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भरणी नक्षत्र होता है वह मनुष्य सदा अपयशभागी, बड़ी निंदा करके युक्त, अनेक विनोदों करके समयको व्यतीत करनेवाला, जलसे अधिक डरनेवाला, चपल और खलस्वभाववाला होता है ॥ २ ॥

अथ कृत्तिकानक्षत्रजातफलम्।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीनो वृथाटनोत्पन्नमतिः कृतघ्नः।
कठोरवाग्गर्हितकर्मकृत्स्यात्चेत्कृत्तिका जन्मनि यस्य जंतोः॥३॥

जिस मनुष्यका जन्म कृत्तिका नक्षत्रमें होता है वह मनुष्य अधिक भूखवाला, सत्य और धन रहित, विनाकार्य घूमनेवाला, कृतघ्न और कठोर वाणी बोलनेवाला तथा निन्दित कर्म करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ रोहिणीनक्षत्रजातफलम् ।

धर्मकर्मकुशलः कृषीवलश्चारुशीलविलसत्कलेवरः ।
वाग्विलासकलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्य जन्मभम् ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रोहिणी नक्षत्र हो वह मनुष्य धर्मकर्ममें कुशल खेती करनेवाला, सुन्दर शीलवाला, सुन्दर शरीर, वाणियोंसे सभी आशयोंका प्रकट करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ मृगशिरनक्षत्रजातफलम् ।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गुणेषु ।
भोक्ता नृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृत्तो मृगजातजन्मा ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यका जन्म मृगशिर नक्षत्रमें होता है वह मनुष्य धनुर्विद्याके अभ्यासमें तत्पर, नम्रतासहित, गुणियोंके गुणोंमें हमेशा तत्पर, भोग करनेवाला, राजाके स्नेहसे पूर्ण व श्रेष्ठमार्गकी वृत्ति करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ आर्द्रानक्षत्रजातफलम् ।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्तिर्बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः ।
प्रसूतिकाले च भवेत्किलार्द्रा दयार्द्रचेता न भवेन्मनुष्यः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आर्द्रानक्षत्र हो वह मनुष्य अधिक भूखवाला, रूखे शरीरवाला, कोपसहित, भाइयोंका प्यारा, कृतघ्न और निर्दय चित्त होता है ॥ ६ ॥

अथ पुनर्वसुनक्षत्रजातफलम् ।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः ।
दाता [illegible] समेतः पुनर्वसुर्यस्य भवेत्प्रसूतौ ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पुनर्वसु नक्षत्र होता है वह मनुष्य बहुत मित्रोंवाला, शास्त्रका यत्न करनेवाला, श्रेष्ठ रत्न और सोनेके आभूषणोंकरके सहित, दानी, [illegible] और धनोंसे युक्त होता है ॥ ७ ॥

अथ पुष्यनक्षत्रजातफलम् ।

प्रसन्नगात्रः [illegible]
[illegible] ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पुष्य नक्षत्र होता है वह मनुष्य सुरूपदेह, पिता और माताका भक्त, अपने धर्ममें आसक्त, विनयसहित, सम्मान और अनेक प्रकारके धन-वाहनोंवाला होता है ॥ ८ ॥

अथाश्लेषानक्षत्रजातफलम् ।

वृथाटनः स्यादतिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदश्चापि वृथा जनानाम् ।
सार्पे सदर्थो हि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आश्लेषा नक्षत्र हो वह मनुष्य व्यर्थ भ्रमण करनेवाला, अत्यन्त दुष्टचित्त, वृथा ही मनुष्योंको कष्ट देनेवाला, धनको वृथा खर्च करनेवाला और कामकला करके दुःखचित्त होता है ॥ ९ ॥

अथ मघानक्षत्रजातफलम् ।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्रस्वभावस्त्वनवद्यविद्यः ।
चेज्जन्मभं यस्य मघानघः सन्मतिः सदारातिविघातदक्षः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मघा नक्षत्र हो वह मनुष्य कठोर चित्तवाला, पिताकी भक्तिसहित, तीव्रस्वभाववाला और अनवद्यविद्य-अर्थात् अनिन्द्य विद्यावाला, पापरहित, श्रेष्ठ बुद्धिवाला, हमेशा शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रजातफलम् ।

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्ता कामार्तोऽपि स्याच्चिकुरालोऽतिदक्षः ।
धूर्तः क्रूरोऽत्यंतसंजातगर्वः पूर्वाफल्गुन्यस्ति चेज्जन्मकाले ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो वह मनुष्य शूरवीर, त्यागी, साहसी, बहुत नौकरोंवाला, काम करके दुःखी, श्रेष्ठ केशोंवाला, अत्यंत चतुर, धूर्त, उग्र तथा अभिमानी होता है ॥ ११ ॥

अथ उत्तराफल्गुनीनक्षत्रजातफलम् ।

दाता दयालुः सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपतेः प्रधानः ।
धीरो नरोऽत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो वह मनुष्य दानी, दयालु, अत्यन्त सुशील, बड़ी कीर्तिवाला, राजाका वजीर, धैर्यवान् और अत्यन्त कोमल होता है ॥ १२ ॥

अथ हस्तनक्षत्रजातफलम् ।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी देवद्विजाभ्यर्चनकृत्प्रधानात् ।
प्रसूतिकाले भवति यस्य हस्तो हस्तोद्यता तस्य समस्तसंपत् ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हस्त नक्षत्र हो वह मनुष्य दानी, उद्यमवान, अत्यन्त बलवाला, ब्राह्मण और देवताओंकि पूजनमें यत्न करनेवाला होता है और उसके हाथसे सब तरहकी संपत्ति होती है ॥ १३ ॥

अथ चित्रानक्षत्रजातफलम् ।

प्रतापसंतापितशत्रुपक्षो नयेऽतिदक्षश्च विचित्रवासाः ।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिर्विचित्रा खलु तस्य शास्त्रे १४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चित्रा नक्षत्र हो उस मनुष्यके प्रतापसे शत्रुगन संतापको प्राप्त होता है, नीतिमें चतुर, विचित्र वस्त्र पहिरनेवाला और शास्त्रोंमें विचित्र बुद्धिवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ स्वातीनक्षत्रजातफलम् ।

कंदर्परूपः प्रभया समेतः कांतापरप्रीतिरतिप्रसन्नः ।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपतिप्राप्तविभूतियुक्तः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें स्वाती नक्षत्र हो वह मनुष्य कामदेवके समान रूपवाला, कांतिसहित, स्त्रियोंसे अधिक प्रीति करनेवाला, अत्यंत प्रसन्न और राजा करके वैभवको प्राप्त होता है ॥ १५ ॥

विशाखानक्षत्रजातफलम् ।

सदानुरक्तोऽग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसौम्यः ।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विशाखा नक्षत्र हो वह मनुष्य अग्निहोत्र और देवताओंकी क्रियामें तत्पर और धातु क्रियाओंका जाननेवाला, उग्र और सौम्य-स्वभाव होता है और वह किसीका मित्र नहीं होता है ॥ १६ ॥

अथ अनुराधानक्षत्रजातफलम् ।

सत्कांतिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेता रिपूणां च कलाप्रवीणः ।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा संपद्विशाला विविधा च तस्य १७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अनुराधा नक्षत्र हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कांति और कीर्ति और सदा उत्सवसहित शत्रुओंका जीतनेवाला, कलाओंमें प्रवीण होता है और विशाल संपत्तिवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ ज्येष्ठानक्षत्रजातफलम् ।

सत्कांतिकीर्तिर्विभुतासमेतो विद्यान्वितोऽत्यंतलसत्प्रतापः
श्रेष्ठप्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोद्भवः स्यात्सुकृतो विरोधात्१८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ज्येष्ठा नक्षत्र हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कांति और कीर्ति तथा वैभवसहित, धनवान्, प्रताप करके शोभित, श्रेष्ठ प्रतिष्ठावाला, बोलनेवालोंमें श्रेष्ठ होता है ॥ १८ ॥

अथ मूलविचार।

मूलं विरुद्धावयवं समूलं कुलं हरत्येव वदंति संतः।
चेदन्यथा सत्कुरुते विशेषात्सौभाग्यमायुश्च कुलाभिवृद्धिम् ॥१९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अभुक्तमूल हो वह बालक जडसे कुलका नाश करता है और अभुक्तमूल न हो तो वह सौभाग्य और आयुका बढानेवाला तथा कुलकी वृद्धि करता है ऐसा विद्वानोंका कथन है ॥ १९ ॥

अथ अभुक्तमूलमाह।

ज्येष्ठांत्यघटिकैका च मूलस्याद्यघटीद्वयम्।
अभुक्तमूलमित्युक्तं तत्रोत्पन्नशिशोर्मुखम् ॥ २० ॥
अष्टवर्षाणि नालोक्यं तातेन शुभमिच्छता।
तद्दोषपरिहारार्थं शांतिकं प्रोच्यतेऽधुना ॥२१॥

अब अभुक्तमूल कहते हैं-ज्येष्ठा नक्षत्रके अंतकी एक घडी और मूल नक्षत्रके आदिकी दो घडी अभुक्तमूल कहाती है, इनमें पैदा हुए बालकका मुख शुभकी इच्छा करनेवाला पिता आठ वर्षतक न देखे। अब उस अभुक्तमूलजात दोषको दूर करनेकी शांति कहते हैं ॥ २० ॥ २१ ॥

अथ मूलशांतिप्रकारः।

रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत्।
शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥ २२ ॥
बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति।
जपहोमप्रदाने च कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम् ॥ २३ ॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः।
मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥ २४ ॥

अब मूलजातशांति कहते हैं नवरत्न, सौ औषधियोंकी जड, सात मृत्तिकाओंसे पूर्ण और सौ छेदके घडेमेंसे निकलते हुए जलकरके ॥ २२ ॥ पैदा हुआ बालक और माता पिता स्नान करें, ब्राह्मणोंके कहे हुए वाक्यसे जप, होम, दान करके निश्चय मंगल होता है ॥ २३ ॥ विरुद्ध मूलोंकी यह विधि पंडितजनोंने कही है।

कल्याणका इच्छावाले पुरुष मुनीश्वरोंके वचनको सत्य माने ॥ २४ ॥ (और विधिपूर्वक मूल, आश्लेषा और ज्येष्ठा-शांति भाषामें बनाये हुए ग्रन्थ बृहज्जातकमें सविधि वर्णित हैं जिसको आवश्यकता हो वह बृहज्जातकमें देख ले. वह बृहज्जातक खेमराज श्रीकृष्णदासके यहां बम्बईमें छपा है ॥)

अथ मूलपादजातफलम् ।

मूलस्य पादत्रितये क्रमेण पितुर्जनन्याश्च धनस्य रिष्टम् ।
चतुर्थपादः शुभदो नितांतं सार्पे विलोमं परिकल्पनीयम् ॥ २५ ॥

जिस बालकका जन्म मूलनक्षत्रके पहिले चरणमें हो वह पिताको कष्ट, दूसरे चरणमें माताको कष्ट, तीसरे चरणमें धननाश कहना चाहिये और चतुर्थ पाद हमेशा शुभ है । इसी तरह आश्लेषा नक्षत्रका उलटा फल जानना चाहिये अर्थात् चतुर्थचरणमें पिताका नाश, तीसरे चरणमें माताका नाश, दूसरे चरणमें धनका नाश करता है और आश्लेषा नक्षत्रका पहिला चरण शुभ है ॥ २५ ॥

अथ विशेषमूलमाह ।

कृष्णे तृतीया दशमी वलक्षे भूतो महीजार्किबुधैः समेतः ।
चेज्जन्मकाले किल यस्य मूलमुन्मूलनं तत्कुरुते कुलस्य ॥ २६ ॥
दिवा सायं निशि प्रातस्तातस्य मातुलस्य च ।
पशूनां मित्रवर्गस्य क्रमान्मूलमनिष्टदम् ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यका जन्म कृष्णपक्षकी तृतीया, मंगलवार और दशमी शनैश्चरवार और शुक्लपक्षकी चतुर्दशी, बुधवार सहित हो और मूल नक्षत्र हो ऐसे समयमें जन्मा बालक समग्र कुलका नाश करता है ॥ २६ ॥ दिन, सन्ध्या, रात्रि प्रातःकालमें जन्म हो तो क्रमकरके पिता, माता, पशु और मित्रवर्गोंको मूल अनिष्ट फल देते हैं ॥ २७ ॥

अथ पुरुषाकृतौ मूलाश्लेषाफलमाह ।

मूर्ध्नि पञ्च मुखे पञ्च स्कंधयोर्घटिकाष्टकम् ।
गजाश्च भुजयोर्युग्मं हस्तयोर्हृदयेऽष्टकम् ॥ २८ ॥
युग्मं नाभौ दिशो गुह्ये षट् जान्वोः षट् च पादयोः ।
विन्यस्य पुरुषाकारे मूलस्य फलमादिशेत् ॥ २९ ॥

अथ पुरुषाकृतिमें मूल और आश्लेषा नक्षत्रका फल कहते हैं—मनुष्याकार स्वरूप बनावे और शिरमें पांच घड़ी, मुखमें पांच, दोनों कन्धोंमें आठ, दोनों

बांहोंमें आठ और हाथोंमें दो, हृदयमें आठ ॥ २८ ॥ नाभीमें २, कमरमें दस, जांघोंमें ६, पैरोंमें ६ इस तरह पुरुषाकृति मूलकी घड़ियें स्थापन करे ॥ २९ ॥

अथ पुरुषाकृतिमूलघटीफलम् ।

छत्रलाभः शिरोदेशे वदने पितृघातकम् ।
स्कंधयोर्भारवत्त्वे च बाहुयुग्मे त्वकर्मकृत् ॥ ३० ॥
हत्याकरः करद्वंद्वे राज्याप्तिर्हृदये भवेत् ।
अल्पायुर्नाभिदेशे च गुह्ये च सुखमद्भुतम् ॥ ३१ ॥
जंघायां भ्रमणप्रीतिः पादयोर्जीविताल्पता ।
घटीफलं किल प्रोक्तं मूलस्य मुनिपुंगवैः ॥ ३२ ॥

अब पुरुषाकृतिमूलोंकी घटीका फल कहते हैं-शिरकी घड़ियोंमें पैदा हो तो छत्रलाभ करावे, मुखकी घटी पिताका नाश करे और दोनों कंधोंकी घटीमें पैदा हो तो भार वहन करनेवाला हो, दोनों बांहोंकी घटीमें जन्मे तो खोटे कर्म करे ॥ ३० ॥ और दोनों हाथोंकी घटीमें हो तो हत्या करनेवाला हो और हृदयकी घटीमें पैदा हो तो राज्यकी प्राप्ति करावे और नाभिकी घटीमें पैदा हो तो थोड़ी उमर करे और कमरकी घड़ीमें पैदा हो तो अद्भुत सुख करावे ॥ ३१ ॥ और जांघोंकी घटीमें पैदा हो तो भ्रमण करनेवाला हो और पैरोंकी घड़ीमें थोड़ा जीवे यह मूलकी घड़ियोंका फल श्रेष्ठ मुनियोंने कहा है ॥ ३२ ॥

॥ चक्रम् ॥

शिर	मुख	कंधा	भुजा	हाथ	हृदय	नाभि	कमर	जांघ	पैर	अंग
५	५	८	८	२	८	२	१०	६	६	घटी

विज्ञेय विबुधैः सर्वं सार्पे तस्य विपर्ययात् ॥ ३३ ॥

जो पहिले पुरुषाकृति मूलनक्षत्रकी घड़ी वर्णन की हैं और उनका फल कहा है वह आश्लेषा नक्षत्रमें घड़ी तथा उनका फल उलटा मानना चाहिये ॥ ३३ ॥

अथ मूलाश्लेषामुहूर्तस्वामिन आह ।

राक्षसो यातुधानश्च सोमशुक्रफणीश्वराः ।
पिता माता यमः कालो विश्वेदेवा महेश्वरः ॥ ३४ ॥
शशीन्द्रश्च कुबेरश्च शुक्रो मेघो दिवाकरः
गंधर्वो [illegible] विष्णुर्यमस्तथा ॥ ३५ ॥

ईश्वरो विष्णुरुद्रो च पवनो मुनयस्तथा ।
षण्मुखो भृङ्गिरीटी च गौरीनाम्नी सरस्वती ॥ २६ ॥
प्रजापतिश्च मूलस्य त्रिंशद्वै क्षणनामकाः ।
विपरीता पुनर्ज्ञेया आश्लेषाजातबालके ॥ २७ ॥

एक नक्षत्रके तीस मुहूर्त होते हैं, एक मुहूर्त दो घड़ीका होता है, उन मुहूर्तोंके स्वामी कहते हैं-राक्षस १ यातुधान २ सोम ३ शुक्र ४ कर्णाश्वर ५ पिता ६ माता ७ यम ८ काल ९ विश्वेदेवा १० महेश्वर ११ ॥ २४ ॥ शर्व १२ कुबेर १३ शुक्र १४ मेघ १५ दिवाकर १६ गंधर्व १७ यम १८ ब्रह्मा १९ विष्णु २० यम २१ ॥ २५ ॥ ईश्वर २२ विष्णु २३ रुद्र २४ पवन २५ मुनि २६ स्वामी कार्तिक २७ भृंगिरीटी २८ गौरी सरस्वती २९ ॥ २६ ॥ प्रजापति ३० ये मूलनक्षत्रके ३० तीस मुहूर्तोंके स्वामी कहे हैं और आश्लेषानक्षत्रमें इनके विपरीत (उलटे) मुहूर्तोंके स्वामी जानने चाहिये ॥ २७ ॥

अथ मुहूर्तजातफलम् ।

प्रथमे द्वितीये षष्ठे चाष्टमेऽष्टादशे तथा ।
त्रयोविंशे च नवमे परिवारभयंकरः ॥ २८ ॥

अब मूल और आश्लेषानक्षत्रके मुहूर्तोंमें उत्पन्न बालकका फल कहते हैं-पहिले, दूसरे, छठे, आठवें, अठारहवें, तेईसवें, नवमें, मुहूर्तमें जो बालक पैदा हो तो परिवारका नाश करता है ॥ २८ ॥

॥ अथ मुहूर्तेशचक्रम् ॥

मुहूर्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मुहूर्तेश	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मुहूर्त	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मुहूर्तेश	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥ अथाश्लेषानक्षत्रस्य मुहूर्तेशचक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	मुहूर्त.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	मुहूर्त
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ मूलवृक्षः ।

वेदाः४मन७गजाः८काष्ठाः १० नेटा९बाणाश्च५षट्६शिवाः ।
११ मूलस्तंभस्त्वचः शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ॥ ३९ ॥

अथ मूलवृक्ष कहते हैं—मूल वृक्षकी जड़में ४ चार स्तंभमें ७ सात छालमें ८ आठ शाखाओंमें दश १० पत्तोंमें ९ नौ फूलोंमें ५ पांच फलोंमें ६ छ और शिखामें ११ ग्यारह घड़ियोंका स्थापन करना चाहिये ॥ ३९ ॥

अथ मूलवृक्षफलम् ।

मूलवृक्षविभागेषु मंगलं हि फले दले ।
अमंगलं फलं विद्याच्छेषभागेषु निश्चितम् ॥ ४० ॥

अब मूल वृक्षकी घड़ियोंका फल कहते हैं—मूलवृक्षके अंगविभागोंमें फल और पुष्पोंकी घड़ियोंमें पैदा हो तो श्रेष्ठ फल जानो और अन्य अंगोंकी घड़ियोंमें पैदा हो तो नष्ट फल कहना चाहिये ॥ ४० ॥

अथ मूलस्य शुभाशुभम् ।

पादे मुहूर्ते वेलायां वृक्षे च पुरुषाकृतौ ।
अनिष्टमशुभाधिक्ये शुभाधिक्ये शुभं फलम् ॥ ४१ ॥

जो मूल नक्षत्रमें चरण मुहूर्त वेला और मूल वृक्षमें और पुरुषाकृतिचक्रोंके विचारसे जो अधिकपनेमें शुभ फल आवे तो शुभफल कहना चाहिये और नष्ट जो फल अधिक पाया जाय तो नेष्ट ही कहना चाहिये ॥ ४१ ॥

अथ पितृनक्षत्रजातफलम्।

तातस्य जन्मभं यस्य प्रसूतिर्यदि जायते।
तातं वा भ्रातरं ज्येष्ठं रिष्टं स कुरुते ध्रुवम् ॥ ४२ ॥

जो मनुष्य पिताके नक्षत्रमें पैदा हो वह बालक पिताको अथवा भ्राताको अवश्य रोगी करता है, अथवा पिता वा ज्येष्ठभ्राताका नाश करता है ॥ ४२ ॥

तस्य शांतिमाह।

मूलवच्छांतिकं तत्र विधेयं हि विचक्षणैः।
भूमिरत्नानि हेमान्नं देयं विप्रेषु भक्तितः ॥ ४३ ॥

जो बालक अपने पिताके नक्षत्रमें पैदा हो तो मूलनक्षत्रके समान कही हुई शांति करनी चाहिये तथा धरती रत्न सोना और अन्न ब्राह्मणको दान करके देवे ॥ ४३ ॥

अथ मूलनक्षत्रजातफलम्।

सुखेन युक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रो बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारातिजनो मनुष्यो मूले कृती स्याज्जननं प्रपन्नः ॥ ४४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मूल नाम नक्षत्र होता है वह मनुष्य सुखसहित धन और वाहन सहित, हिंसा करनेवाला बलसहित, स्थिर कर्म करनेवाला, शत्रुगणोंको संताप देनेवाला और चतुर होता है ॥ ४४ ॥

अथ पूर्वाषाढानक्षत्रजातफलम्।

भूयोभूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं संपज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः ॥ ४५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्वाषाढा नाम नक्षत्र हो वह मनुष्य वारंवार जल पीनेमें आसक्त, भोग करनेवाला, निरन्तर वाणीका विलास करनेवाला, सुशील और बहुत धनवाला होता है ॥ ४५ ॥

अथ उत्तराषाढानक्षत्रजातफलम्।

दाता दयावान्विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विसुतासमेतः।
प्रसूतो नितरां वैश्वे सुवेषः पुरुषोऽभिमानी ॥ ४६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तराषाढा नक्षत्र हो वह मनुष्य दानी, दयावान्, सुंदर जयको प्राप्त, विनयसहित, अच्छे कर्म करनेवाला, ऐश्वर्यसहित, धनी और पुत्रोंसे पूर्ण, सुखको प्राप्त और अभिमानी होता है ॥ ४६ ॥

अथ अभिजिज्जातफलम्।

अतिसुललितकान्तिः संमतः सज्जनानां
ननु भवति विनीतश्चारुकीर्तिः सुरूपः।
द्विजवरसुरभक्तिर्व्यक्तवाङ्मानवः स्या-
दभिजिति यदि सूतिर्भूपतिः स स्ववंशे ॥ ४७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अभिजित् नक्षत्र हो वह मनुष्य अत्यन्त शोभायमान कान्तिवाला, सत्पुरुषोंका सम्मत, नम्रतासहित, कीर्तिमान्, रूपवान्, देवता और ब्राह्मणोंकी भक्ति करनेवाला, पंडितोंकीसी वाणी बोलनेवाला और अपने वंशमें राजा होता है ॥ ४७ ॥

अथ श्रवणनक्षत्रजातफलम्।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्तिर्विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवणप्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य ॥४८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें श्रवण नक्षत्र हो वह मनुष्य शास्त्रोंमें तत्पर, बहुत पुत्र और मित्रोंवाला, सत्पुरुषोंका भक्त, शत्रुओंका जीतनेवाला और पुराण श्रवण करनेमें प्रवीण होता है ॥ ४८ ॥

अथ धनिष्ठानक्षत्रजातफलम्।

आचारयुक्तादरचारुशीलो धनाधिशाली बलवान्कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठासहितो नरः स्यात् ॥४९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनिष्ठा नक्षत्र हो वह मनुष्य आचारयुक्त, आदरका देनेवाला, सुन्दर शीलवाला, अधिक धनवान्, बलवान्, दयालु और बड़ी प्रतिष्ठा-वाला होता है ॥ ४९ ॥

अथ शतभिषानक्षत्रजातफलम्।

शीतभीरुरतिसाहसिदाता निष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारुणो वारुणोडुनि च यस्य संभवः ॥५०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शतभिषा नक्षत्र हो वह मनुष्य शीतसे डरनेवाला, साहसी, दाता, कठोरचित्त, चतुर और शत्रुओंको अतिशय करके दारुण होता है ॥ ५० ॥

अथ पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रजातफलम्।

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र हो वह मनुष्य इंद्रियोंका जीतनेवाला, सब कलाओंमें चतुर, शत्रुओंका जीतनेवाला और निरंतर अपूर्व बुद्धिवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ उत्तराभाद्रपदानक्षत्रजातफलम् ।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता ।
यस्योत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः ५२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र हो वह मनुष्य अपने कुलमें अधिक आभूषण स्वरूप, न अत्यन्त ऊंची देहवाला, श्रेष्ठ कर्मका करनेवाला धन्य होता है ॥ ५२ ॥

अथ रेवतीनक्षत्रजातफलम् ।

चारुशीलविभवो जितेंद्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः ।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्॥५३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रेवती नक्षत्र हो वह मनुष्य सुन्दर शीलवाला, इंद्रियोंका जीतनेवाला, श्रेष्ठ धनवाला और बड़ा बुद्धिमान् होता है ॥ ५३ ॥

अथ वृद्धजातकोक्तनवांशफलमाह-तत्रादौ प्रथमनवांशजातफलम् ।

विनीतो धर्मशीलश्च सत्यवादी दृढव्रतः ।
विद्याध्ययनशीलश्च जायते प्रथमांशके ॥ १ ॥

जो मनुष्य पहिले नवांशमें पैदा हो वह मनुष्य नम्रतासहित, धर्ममें शीलवाला, सत्य बोलनेवाला, दृढ प्रतिज्ञावाला और विद्याको पढनेवाला होता है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयनवांशजातफलम् ।

उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामेषु पराजितः ।
गंधर्वप्रमदासक्तो जायते द्विनवांशके ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें द्वितीय नवांश हो वह मनुष्य उत्पन्न किये हुए वैभवोंका भोगनेवाला, युद्धमें हारनेवाला और वेश्याओंमें आसक्त होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयनवांशजातफलम् ।

स्त्रीजितश्चानपत्यश्च मायायुक्तोऽल्पवीर्यवान् ।
वीरविद्याविचारज्ञो जायते त्रिनवांशके ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका जन्म तीसरे नवांशमें हो वह मनुष्य स्त्रियों करके जीता हुआ, पुत्रहीन, इंद्रजाली करनेवाला, थोडे बलवाला, शूर वीर और विद्याके विचारको जाननेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थनवांशजातफलम् ।

बहुस्त्रीसुभगः पूज्यो जलसेवी धनान्वितः ।
नृपसेव्यथवामात्यश्चतुर्थांशे प्रजायते ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यका जन्म चतुर्थ नवांशमें हो वह मनुष्य बहुत स्त्रियोंवाला, श्रेष्ठ भाग-वाला, पूजनीय, जलसेवामें तत्पर, धनवान्, राजसेवी, अथवा राजाका मंत्री होता है ४

अथ पंचमनवांशजातफलम् ।

बहुमित्रनृपामात्यो बन्धुमित्रसुखान्वितः ।
महत्प्रतिष्ठामाप्नोति संजातः पंचमांशके ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमनवांश हो वह मनुष्य बहुत मित्रोंवाला, राजाका मंत्री, कुटुंबीजन और मित्रोंसे सुखसहित बडी प्रतिष्ठाको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठनवांशजातफलम् ।

जितवैरिगणो वीरो दृढसौहृदकारकः ।
जायते मण्डलाधीशो नरः षष्ठांशकोद्भवः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठा नवांश हो वह मनुष्य वैरियोंको जीतनेवाला, शूरवीर, पक्की मित्रता करनेवाला और देशका स्वामी होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमनवांशजातफलम् ।

अभ्याहताङ्गः सर्वत्र पृथ्वीनाथकलायुतः ।
सेनापतित्वमाप्नोति संजातः सप्तमांशके ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यका जन्म सातवें नवांशमें होता है वह मनुष्य सब जगह निर्भय होकर विचरनेवाला, राजाओंकी कलासहित और सेनाका मालिक होता है ॥ ७ ॥

अथ अष्टमनवांशजातफलम् ।

उदारधीः क्षितिख्यातो धनधान्यव्ययोद्धितः ।
क्रोधी दुर्जनसंसर्गो नरो जातोऽष्टमांशके ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यका जन्म अष्टमनवांशमें हो वह मनुष्य उदार बुद्धिवाला, धरती पर प्रसिद्ध, धन और अन्नको दूर करनेवाला, क्रोधी और खोटे आदमियोंसे संगतको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमनवांशजातफलम् ।

दीर्घजीवी प्रसन्नात्मा विद्याभ्यासी सदासुखी ।
ज्ञाता धर्मी धनी मान्यो जायते नवमांशके ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यका जन्म नवम नवांशमें हो वह मनुष्य बड़ी उमरवाला, प्रसन्न देह विद्याका पढनेवाला, हमेशा सुखी, ज्ञाता, धर्म करनेवाला, धनवान् और माननीय होता है ॥ ९ ॥

अथ योगजातफलमाह—तत्रादौ विष्कंभयोगजातफलम्।

शश्वत्कांतापुत्रमित्रादिसौख्यं स्वातंत्र्यं स्यात्सर्वकार्यप्रसक्ते।
चंचद्देहोत्पादने मानसं चेद्विष्कंभे वै संभवो यस्य जंतोः ॥१॥

जिस मनुष्यका जन्म विष्कंभयोगमें हो वह मनुष्य निरन्तर स्त्री, पुत्र और मित्रादिकोंसे सौख्यको प्राप्त, सब कामोंमें स्वाधीनताको प्राप्त और शोभायमान देहवाला होता है ॥ १ ॥

अथ प्रीतियोगजातफलम्।

वक्ता चंचद्रूपसंपत्तियुक्तो दातात्यन्तं स्यात्प्रसन्नाननश्च।
जातानंदः सद्विनोदप्रसक्तो धर्मे प्रीतिः प्रीतिजन्मा मनुष्यः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रीतिनाम योग होता है वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, सुंदरस्वरूप और संपत्तिवाला, प्रसन्नमुख, बड़ा दानी, आनंदको जाननेवाला, श्रेष्ठ विनोदयुक्त और धर्ममें प्रीति करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ आयुष्मद्योगजातफलम्।

अर्थाद्यर्थं साहसैरन्वितश्च नानास्थानोद्यानयानप्रवृत्तिः।
यस्यायुष्मत्संभवः संभवेद्धि स्यादायुष्मान्मानवो मानयुक्तः ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आयुष्मान् योग हो वह मनुष्य धनसे पूर्ण, साहस करके सहित, अनेक स्थान और जंगलमें जानेकी इच्छा रखनेवाला, मानसहित और बड़ी उमरवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ सौभाग्ययोगजातफलम्।

ज्ञानी धनी सत्यपरायणः स्यात्सदाचारशीलो बलवान्विवेकी।
सुश्लाघ्यसौभाग्यविराजमानः सौभाग्यजन्मा हि महाभिमानी ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सौभाग्ययोग हो वह मनुष्य ज्ञानवान्, धनवान्, सत्यमें तत्पर, श्रेष्ठ आचारवाला, बलवान्, चतुर, मनुष्योंसे प्रशंसाको प्राप्त, सौभाग्ययुक्त और बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ शोभनयोगजातफलम्।

सत्स्वरोऽतिचतुरः सुचतुरश्चारुगौरवयुतश्च सन्मतिः।
नित्यशोभनविभूषणाम्बरः शोभनो भवति शोभनोद्भवः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शोभन नाम योग होता है वह मनुष्य बहुत पुत्रोंवाला, चतुरतासंयुक्त, ठीक जवाब देनेवाला, सुन्दर, गौरवसहित श्रेष्ठ बुद्धिवाला और नित्य ही शुभकार्यमें तत्पर होता है ॥ ५ ॥

अथातिगण्डयोगजातफलम्।

सदामदोऽथो गलरुक्सरोषो विशालहस्ताङ्घ्रिरतीव धूर्तः।
कलिप्रियो दीर्घहनुर्मनुष्यः पाखण्डिकः स्यादतिगण्डजातः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अतिगण्डनाम योग हो वह मनुष्य हमेशा अभिमान सहित, गलेकी बीमारीवाला, क्रोधसहित, विशाल हाथ पैरोंवाला, अत्यन्त धूर्त, कलहप्रिय, बडी ठोडीवाला और पाखंडी होता है ॥ ६ ॥

अथ सुकर्मयोगजातफलम्।

हृष्टः सदा सर्वकलाप्रवीणः ससाहसोत्साहसमन्वितश्च।
परोपकारी सुतरां सुकर्मा भवेत्सुकर्मा परिसूतिकाले ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सुकर्मनाम योग हो वह मनुष्य हमेशा प्रसन्नचित्त, सब कलाओंमें प्रवीण, श्रेष्ठ पराक्रमी, पराये उपकारमें तत्पर और अतिश्रेष्ठ कर्म करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ धृतियोगजातफलम्।

प्राज्ञो वदान्यः सततं प्रहृष्टः श्रेष्ठः सभायां चपलः सुशीलः।
नयेन युक्तो नियमेन धृत्या धृत्याह्वये यस्य नरस्य जन्म ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धृति योग हो वह मनुष्य चतुरतायुक्त, दानी, निरंतर प्रसन्न, सभामें श्रेष्ठ, चपल, श्रेष्ठ शीलवाला और नीतिसहित नियमका धारण करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ शूलयोगजातफलम्।

नरो दरिद्रामयसंयुतश्च सत्कर्मविद्याविनयैर्विरक्तः।
यस्य प्रसूतौ यदि शूलयोगो शूलव्यथा तस्य भवेत्कदाचित् ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शूलनाम योग होता है वह मनुष्य दरिद्र और रोगसहित, श्रेष्ठ कर्म और विद्या विनयसे रहित हो तथा उसको कभी कभी शूलरोगकी व्यथा होती है ॥ ९ ॥

अथ गण्डयोगजातफलम्।

धूर्तो गुरुत्वगर्वपरश्च क्लेशी शिरोगलरुक्स्वभावः।
[illegible] यस्य [illegible] गण्डः प्रचण्डकोपः [illegible] ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें गंडनाम योग होता है वह मनुष्य धूर्त मित्रोंके कामसे विमुख, क्लेशका पानेवाला, विशेष रूपसे कठोरस्वभाववाला और बड़े क्रोधका करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ वृद्धियोगजातफलम्।

सुसंग्रहप्रीतिरतीव दक्षो धनान्वितः स्यात्क्रयविक्रयाभ्याम्।
प्रसूतिकाले यदि यस्य वृद्धिर्भाग्याभिवृद्धिर्नियमेन तस्य ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य सब चीजोंके संग्रह करनेमें रत, अत्यंत चतुर, क्रय और विक्रय करनेसे धनवान् और नियम करके भाग्यकी वृद्धिवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ ध्रुवयोगजातफलम्।

निश्चला हि कमला सदालये संभवेच्च वदने सरस्वती।
चारुकीर्तिरपि स ध्रुवं तदा चेद् ध्रुवो भवति यस्य संभवे॥१२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ध्रुवनाम योग हो उस मनुष्यके घरमें अचल लक्ष्मी सदा रहती है और उसके मुखमें सरस्वती वास करे तथा निश्चित सुन्दर कीर्तिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ व्याघातयोगजातफलम्।

क्रूरोऽल्पदृष्टिः कृपया विहीनो महाहनुः स्यादपवादवादी।
असत्यताप्रीतिरतीव मर्त्यो व्याघातजातःखलु घातकर्ता १३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्याघात नाम योग होता है वह मनुष्य क्रूरस्वभाववाला, थोडी दृष्टिवाला, दयारहित, ऊँची ठोडीवाला झूठी निंदा करनेवाला, असत्यतामें अत्यंत प्रीति करनेवाला और घात करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ हर्षणयोगजातफलम्।

सुस्निग्धगात्रः कृतशास्त्रयत्नः सुरक्तभूषावसनानुरक्तः।
प्रसूतिकाले यदि हर्षणश्चेत्स मानवो वै रिपुकर्षणः स्यात् १४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हर्षणनाम योग होता है वह मनुष्य चिकनी देहवाला शास्त्रका यत्न करनेवाला रंगीन वस्त्रोंका पहिरनेवाला सुंदर आभूषणों सहित शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ वज्रयोगजातफलम्।

सुधीः सुबन्धुर्गुणवान्महौजाः सत्यान्वितो रत्नपरीक्षकः स्यात्।
प्रसूतिकाले यदि वज्रयोगः स वज्रयुक्तोत्तमभूषणाढ्यः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वज्रनाम योग होता है वह मनुष्य सुन्दर बुद्धिवाला सुन्दर, बन्धुओंवाला, गुणवान महापराक्रमी, सत्यसहित रत्नोंकी परीक्षा करनेवाला और हीरोंसे जडे हुए आभूषणोंसे पूर्ण होता है ॥ १५ ॥

अथ सिद्धियोगजातफलम्।

उदारचेताश्चतुरः सुशीलः शास्त्रान्वितः सारविराजमानः।
प्रसूतिकाले यदि सिद्धियोगो भाग्याभिवृद्धिः सततं हि तस्य १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य उदारचित्त, चतुर, श्रेष्ठ शीलवाला, शास्त्रका जाननेवाला, बल करके युक्त और निरंतर उसके भाग्यकी वृद्धि होती है ॥ १६ ॥

अथ व्यतीपातयोगजातफलम्।

उदारबुद्धिः पितृमातृवाक्ये गदार्तमूर्तिश्च कठोरचित्तः।
परस्यकार्येऽपतिपाततुल्यो नरः खलु स्याद्व्यतिपातजन्मा १७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्यतीपातनाम योग हो वह मनुष्य पिता माताके वचनमें उदार बुद्धि रखनेवाला, रोगयुक्त देहवाला, कठोरचित्त और पराये कार्यको बिगाड़नेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ वरीयान्योगजातफलम्।

उत्पन्नभोक्ता विनयोपपन्नो द्रव्याल्पतासद्व्ययतासमेतः।
सुकर्मसौजन्यतया वरीयान्भवेद्वरीयान्प्रभवे हि यस्य ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वरीयान् नाम योग हो वह मनुष्य उत्पन्न किये भोगोंका भोगनेवाला, नम्रतासहित, थोड़े धनवाला, श्रेष्ठ कार्यमें खर्च करनेवाला, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, श्रेष्ठजन होता है ॥ १८ ॥

अथ परिघयोगजातफलम्।

असत्यसाक्षी प्रतिभूर्बहूनां व्यक्तात्मकर्मा क्षमया विहीनः।
दक्षोऽल्पभक्षी विजितारिपक्षस्त्वधर्मितो वै परिघोद्भवः स्यात् १९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिघ योग होता है वह मनुष्य झूठी गवाही देनेवाला, बहुतोंकी जमानत करनेवाला, प्रकट कर्मोंवाला, क्षमारहित, चतुर, थोडा भोजन करनेवाला, शत्रुओंका जीतनेवाला और निर्भय होता है ॥ १९ ॥

अथ शिवयोगजातफलम्।

सन्मंत्रशास्त्राभिरतो नितांतं जितेंद्रियश्चारुशरीरयष्टिः।
योगः शिवो जन्मनि यस्य जंतोः सदा शिवं तस्य शिवप्रसादात् २०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शिवनाम योग होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ मन्त्रशास्त्रमें तत्पर, अत्यन्त जितेन्द्रिय, सुन्दर देहवाला और हमेशा शिवजीकी कृपासे कल्याणको प्राप्त होता है ॥ २० ॥

अथ सिद्धियोगजातफलम् ।

जितेन्द्रियः सत्यपरोऽतिगौरः सर्वेषु कार्येष्वतिकोविदश्च ।
भवेत्प्रसूतौ यदि सिद्धियोगः सिद्ध्यंति कार्याणि कृतानि तस्य २१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धियोग हो वह मनुष्य इंद्रियोंका जीतनेवाला सत्यमें तत्पर, अत्यन्त गौर, सब कार्योंमें अत्यन्त चतुर होता है और जिन कामोंको करे वे सब कार्य उसके सिद्ध होते हैं ॥ २१ ॥

अथ साध्ययोगजातफलम् ।

नूनं विनीतश्चतुरः सुहासः स्वकार्यदक्षो जितशत्रुपक्षः ।
सन्मंत्रविद्याविधिनैव सर्वं संसाधयेत्साध्यभवो हि दक्षः ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें साध्यनाम योग होता है वह मनुष्य निश्चय करके नम्रतासहित, चतुर, हास्ययुक्त, अपने कार्यमें कुशल, शत्रुओंका जीतनेवाला और श्रेष्ठ मंत्रविद्यासे सब कार्योंका साधनेवाला होता है ॥ २२ ॥

अथ शुभयोगजातफलम् ।

शुभप्रचारः शुभवाग्विलासः शुभस्य कर्ता शुभलक्षणश्च ।
शुभोपदेशं कुरुते नराणां यस्य प्रसूतौ शुभनामयोगः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभयोग होता है वह मनुष्य शुभकार्यका प्रचार करनेवाला, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, शुभ करनेवाला और शुभ लक्षणोंसहित श्रेष्ठ उपदेशोंका करनेवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ शुक्लयोगजातफलम् ।

जितेन्द्रियः सत्यवचा महौजा वाग्वादसंग्रामजयाभ्युपेतः ।
सन्मानशुक्लाम्बरधारणेच्छुः शुक्लोद्भवो वैभवसंयुतः स्यात् ॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्लनाम योग हो वह मनुष्य इन्द्रियोंका जीतनेवाला, सत्य बोलनेवाला, बडा पराक्रमी, शास्त्रार्थ करने तथा युद्धमें जयको प्राप्त, सम्मानको प्राप्त और सफेद वस्त्र धारण करनेकी इच्छावाला होता है ॥ २४ ॥

अथ ब्रह्मयोगजातफलम् ।

विद्याभ्यासेऽधिकप्रीतिः सदैव [illegible] ।
शान्तो दान्तो [illegible] ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ब्रह्मनाम योग हो वह मनुष्य विद्याके पानेमें अत्यन्त प्रीति करनेवाला, सुचित्त, हमेशा सत्य भाषणमें आदर करनेवाला, शान्त, तप करनेवाला और सुन्दर कर्म करनेवाला होता है ॥ २५ ॥

अथ ऐन्द्रयोगजातफलम् ।

प्राज्ञो बलीयान्विपुलामलश्रीर्युक्तः कफात्मा हि भवेन्महौजाः ।
निजान्वये वै मनुजो नरेन्द्रस्त्वैन्द्रोद्भवश्चाद्भुतसत्प्रभावः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ऐन्द्रनाम योग होता है वह मनुष्य चतुर, बलवान्, बहुत धनवाला, कफकी प्रकृतिवाला, बडा पराक्रमी और अपने वंशमें राजा होता है ॥ २६ ॥

अथ वैधृतियोगजातफलम् ।

चंचलश्च कुटिलः खलमैत्रः शास्त्रभक्तिरहितो हतचित्तः ।
साध्वसे मनसि तस्य नो धृतिर्वैधृतिर्भवति यस्य जन्मनि ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वैधृतिनाम योग हो वह मनुष्य चंचल, कुटिल दुष्टोंसे मित्रता करनेवाला, शास्त्रभक्तिसे रहित, हतचित्त और भयमें अधीर होता है ॥ २७ ॥

अथ करणफलमाह—तत्रादौ बवकरणजातफलम् ।

कामी दयालुर्बलवान्सुशीलो विचक्षणः शीघ्रगतिः सभाग्यः ।
बवाभिधाने जननं हि यस्य नानाविधा तस्य भवेत्सुसंपत् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बवकरण हो वह मनुष्य कामी, दयावान्, बलवान्, श्रेष्ठ शीलवाला, बडा चतुर, जल्दी चलनेवाला, भाग्यवान् हो और उसके अनेक प्रकारकी सम्पत्ति होती है ॥ १ ॥

अथ बालवकरणजातफलम् ।

शूरतातिविलसद्बलवत्तासंयुतो भवति बालवविलासः ।
काम्यकृत्सुरतदानरतश्चेद्बालवेऽमलमतिश्च कलाज्ञः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बालव करण हो वह मनुष्य शूर वीर, अत्यन्त बलवान्, सुन्दर विलास करनेवाला, काम्य करनेवाला, दान करनेमें तत्पर, बडा बुद्धिमान् और कलाओंका जाननेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ कौलवकरणजातफलम् ।

कामी प्रगल्भोऽभिमतो महद्भिः शूरः स्वतंत्रो बहुमित्रसख्यः ।
बलान्वितो कोमलवाग्विलासः नरोऽत्र कौलवजातजन्मा ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कौलवनाम करण हो वह मनुष्य कामी, बुद्धिमान्, बहुतोंको प्यारा, स्वाधीनताको प्राप्त, बहुत मित्रोंसे मित्रता करनेवाला, कलासहित, कोमलवाणी बोलनेवाला और अपने कुलमें श्रेष्ठ होता है ॥ ३ ॥

अथ तैतिलकरणजातफलम् ।

चारुकोमलकलेवरशाली केलिलाससुमनाश्च कलाज्ञः ।
वाग्विलासकुशलोऽतिसुशीलस्तैतिले विमलधीश्चलदेहस्स्यात् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तैतिलकरण हो वह मनुष्य सुन्दर कोमल देहवाला, केलि विलासमें प्रीति करनेवाला, कलाप्रवीण, वाणीविलासमें चतुर, अतिश्रेष्ठ शील-वाला, निर्मल बुद्धि और चंचल शरीरवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ गरकरणजातफलम् ।

परोपकारे विहितादरश्च विचारसारश्चतुरो जितारिः ।
शूरोऽतिधीरः सुतरामुदारो गरे नरश्चारुकलेवरश्च ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें गरकरण हो वह मनुष्य पराया उपकार करनेवाला विचार करनेवालोंमें उत्तम, चतुर, शत्रुओंका जीतनेवाला, शूर वीर, अति धैर्यवान्, अत्यन्त उदार और सुन्दर शरीरवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ वणिजकरणजातफलम् ।

कलाप्रवीणः सुतरां सहासः प्राज्ञो हि सन्मानसमन्वितश्च ।
प्रसूतिकाले वणिजो हि यस्य वाणिज्यतोऽर्थागमनं हि तस्य ६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वणिजनाम करण हो वह मनुष्य कलाओंमें प्रवीण अत्यंत हास्ययुक्त, चतुर, सन्मानसहित और व्यापारसे धन पैदा करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ विष्टिकरणजातफलम् ।

चारुवक्रचपलो बलशाली हेलयासिदलितारिकुलश्च ।
जायते खलमतिर्बहुनिद्रो यस्य जन्मसमये खलु भद्रा ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विष्टिकरण हो वह मनुष्य सुंदर मुखवाला, चपल बलवान्, अनायास ही तलवारसे शत्रुओंके कुलका नाश और बहुत सोनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ शकुनिकरणजातफलम् ।

अतिसुललितबुद्धिर्मंत्रविद्याविधाने
गुणगणसमवेतः सर्वदा सावधानः ।

नतु जनकृतसख्यः सर्वसौभाग्ययुक्तो
भवति शकुनिजन्मा शाकुनज्ञानशीलः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शकुनिनाम करण हो वह मनुष्य अत्यंत सुन्दर बुद्धिवाला, मंत्रविद्याके विधानमें चतुर, गुणोंके दलसहित, हमेशा सावधान, मनुष्योंसे मित्रता करनेवाला, संपूर्ण सौभाग्य पदार्थोंसहित और शकुनका जाननेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ चतुष्पदकरणजातफलम्।

नरः सदाचारपराङ्मुखः स्यादसंग्रहः क्षीणशरीरयष्टिः।
चतुष्पदे यस्य भवेत्प्रसूतिश्चतुष्पदाप्तसत्त्वयुतो मनुष्यः॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुष्पद नाम करण हो वह मनुष्य हमेशा सदाचारसे रहित, किसी वस्तुका संग्रह नहीं करे, क्षीण शरीरवाला और चौपायों के बलवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ नागकरणजातफलम्।

दुःशीलवक्रचलनो बलवान्खलात्मा
कोपानलाहतमतिः कलिकृत्कुलार्यैः।
द्रोहात्कुलक्षयभवादतिदीर्घकाले
जातो हि नागकरणे रणरंगधीरः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नागकरण हो वह मनुष्य खोटे स्वभाववाला, उलटा चलनेवाला, बलवान्, दुष्टात्मा, कोधाग्निसे नष्ट बुद्धिवाला कुलके श्रेष्ठ पुरुषोंसे कलह करनेवाला, कुलका शत्रु, वैरसे कुलका नाश करनेवाला और संग्राममें धीर होता है ॥ १० ॥

अथ किंस्तुघ्नकरणजातफलम्।

धर्मेऽप्यधर्मे समता मतेः स्यादङ्गेऽप्यनङ्गे निबलत्वमुच्चैः।
मैत्र्याममैत्र्यां स्थिरता न किंचित्किंस्तुघ्नजातस्य हि मानवस्य ११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें किंस्तुघ्न करण होता है वह मनुष्य धर्म और अधर्ममें बराबर होता है, देहमें और काम-क्रीडामें निर्बल, मित्रता और शत्रुता उसकी स्थिर कभी न रहे ॥ ११ ॥

अथ गण्डांतजातफलम्।

पौष्णाश्विगंडांतभवो हि मर्त्यः क्रमेण पित्रोरशुभोऽग्रजस्य।

तथा च सर्वं त्रिविधे प्रजातः सर्वाभिघातं कुरुते वदंति॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नक्षत्रगंडांत हो वह मनुष्य माता पिताका नाश करेगा और तिथिगंडांतमें उत्पन्न हुआ अपने ज्येष्ठ भ्राताका नाश करता है और लग्नगंडांतमें पैदा हुआ आप नष्ट होता है और तीनों गंडांत कालमें पैदा हो तो सबका नाश करता है ॥ १ ॥

अथ गणजातफलमाह—तत्रादौ देवगणजातफलम् ।

सुस्वरश्च सरलोक्तिमतिः स्यादल्पभोजनकरो हि नरश्च ।
जायते सुरगणेऽन्यगुणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः ॥१॥

जो बालक देवगणमें पैदा हो वह श्रेष्ठ शब्दवाला, सीधी उक्ति बुद्धिवाला थोड़ा भोजन करनेवाला और गुणोंका जाननेवाला, विद्वानोंसे वर्णनीय गुणवाला और धनी होता है ॥ १ ॥

अथ मनुष्यगणजातफलम् ।

देवद्विजार्चाभिरतोऽभिमानी धनी दयालुर्बलवान्कलाज्ञः ।
प्राज्ञः सुकांतिः सुखदो बहूनां मर्त्यो भवेन्मर्त्यगणे प्रसूतः॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मनुष्यगण हो वह मनुष्य देवता और ब्राह्मणोंके पूजनमें तत्पर, अभिमानी, धनवान्, दयालु, बलवान्, कलाओंका जाननेवाला, चतुर, श्रेष्ठ—कांतिवाला और बहुत जनोंको सुख देनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ राक्षसगणजातफलम् ।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च ।
दुःशीलवृत्तः कलिकृद्बलीयान्रक्षोगणोत्पन्ननरो विरोधी ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राक्षसगण हो वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, कठोरचित्त, साहसी, क्रोधवाला, बुरे शीलवाला, कलह करनेवाला, बलवान् और विरोध करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ लग्नजातफलम्—तत्रादौ मेषलग्नजातफलम् ।

चंडाभिमानी गुणवान्सकोपः सुहृद्विरोधी च सखा परेषाम् ।
पराक्रमप्राप्तयशोविशेषो मेषोदये यः पुरुषोऽतिरोषः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष लग्न हो वह मनुष्य बड़ा अभिमानी गुणवान्, क्रोधी, मित्रोंका वैरी होता है और अन्यजनोंका मित्र होता है, पराक्रमसे विशेष प्रशंसावाला और अन्यजनोंका मित्र होता है ॥ १ ॥

अथ वृषलग्नजातफलम् ।

गुणाग्रणीः स्याद्द्रविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रणप्रियश्च ।
धीरश्च शूरः प्रियवाक्प्रशान्तः स्यात्पूरुषो यस्य वृषो विलग्ने ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषभ लग्न हो वह मनुष्य गुणवानोंमें अग्रणी धनसे पूर्ण, गुरुओंका भक्त, संग्रामप्रिय, धैर्यवान, शूर वीर, प्यारी वाणी बोलने-वाला और शांतस्वरूप होता है ॥ २ ॥

अथ मिथुनलग्नजातफलम् ।

भोगी वदान्यो बहुपुत्रमित्रः गुप्तमन्त्रः सुधनः सुशीलः ।
तस्य स्थितिः स्यान्नृपसंनिधाने लग्ने भवेद्वै मिथुनाभिधाने ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका जन्म मिथुन लग्नमें हो वह मनुष्य भोगी, दाता, बहुत पुत्र और मित्रोंवाला, छिपे हुए मंत्रवाला, धनी, श्रेष्ठ शीलवाला होता है और उसका रहना राजाके पास होता है ॥ ३ ॥

अथ कर्कलग्नजातफलम् ।

मिष्टान्नभुक्साधुरतो विनीतो विलोमबुद्धिर्जलकेलिशीलः ।
प्रकृष्टसारो निरतमुदारो लग्ने कुलीरे हि नरो भवेद्यः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क लग्न हो वह मनुष्य मिष्टान्नका खानेवाला, साधुओंमें तत्पर, नम्रतावाला, उलटी बुद्धिवाला, जलमें विहार करनेवाला, अनेक चीजोंके सारको जाननेवाला निरंतर उदार होता है ॥ ४ ॥

अथ सिंहलग्नजातफलम् ।

कृशोदरश्चारुपराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोऽल्पभक्षः ।
संजातबुद्धिर्मनुजोऽभिमाने पञ्चानने संजनने विलग्ने ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंह लग्न हो वह मनुष्य दुर्बल पेटवाला, सुन्दर पराक्रमवाला भोगी और थोड़े पुत्रोंवाला, थोड़ा भोजन करनेवाला और अभिमानमें उसकी बुद्धि होती है ॥ ५ ॥

अथ कन्यालग्नजातफलम् ।

कामक्रीडासद्गुणज्ञानसत्त्वकौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः ।
लग्नं कन्या यस्य जन्यां जघन्यां कन्यां क्षीराब्धेरवाप्नोति नित्यम् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या लग्न हो वह मनुष्य अधिक कामी, श्रेष्ठ गुणवाला और ज्ञान तथा बलसहित चतुरता आदिमें युक्त, श्रेष्ठ, प्रसन्न और अंतमें लक्ष्मीको प्राप्त करता है ॥ ६ ॥

अथ तुलालग्नजातफलम्।

गुणाधिकस्याद्द्रविणोपलब्धिर्वाणिज्यकर्मण्यतिनिपुणत्वम्।
पद्मालया तन्निलये न लोला लग्ने तुला चेत्स कुलावतंसः॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुला लग्न हो वह मनुष्य गुणोंमें अधिक धनको प्राप्त करनेवाला, व्यवहार कार्यमें अत्यन्त निपुण तथा उसके स्थानसे लक्ष्मी नहीं हटती और अपने कुलमें प्रकाशवान् होता है ॥ ७ ॥

अथ वृश्चिकलग्नजातकफलम्।

शूरो नरोऽत्यंतविचारसारोऽनवद्यविद्याधिकतासमेतः।
प्रसूतिकाले किल लग्नशाली भवेदलिस्तस्य कलिः सदैव॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिक लग्न हो वह मनुष्य शूर वीर, अच्छा विचार करनेवाला, श्रेष्ठ विद्याओंकी अधिकतासे युक्त और हमेशा क्लेशको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ धनुर्लग्नजातफलम्।

प्राज्ञश्च राज्ञः परिसेवनज्ञः सत्यप्रतिज्ञः सुतरां मनोज्ञः।
सुज्ञः कलाज्ञश्च धनुर्विधिज्ञश्चेन्नु धनुर्यस्य जनुस्तनुः स्यात्॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनुर्लग्न हो वह मनुष्य चतुर, राजाकी सेवा करनेवाला, सत्यप्रतिज्ञावाला, निरंतर मनको जाननेवाला, विद्वान्, कलाओंका जाननेवाला और धनुर्विद्याको जाननेवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ मकरलग्नजातफलम्।

कठिनमूर्तिरतीव शठः पुमान्निजमनोगतकृद्बहुसन्ततिः।
सुचतुरोऽपि च लुब्धतरो वरो यदि नरो मकरोदयसंभवः॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर लग्न हो वह कठोरमूर्ति, अत्यन्त शठ, अपने मनका काम करनेवाला, बहुत पुत्रोंवाला, अच्छी चतुरतासहित, अधिक लोभी और श्रेष्ठ होता है ॥ ९ ॥

अथ कुम्भलग्नजातफलम्।

लोलस्वान्तोऽत्यंतसंजातकामश्चारुदेहः स्नेहकृन्मित्रवर्गे।
सत्स्वारम्भः संभवैर्युक्तादम्भश्चेत्स्यात्कुंभसंभवो यस्य लग्ने॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भ लग्न हो वह मनुष्य चंचल, अपने हृदयमें कामको प्राप्त, सुन्दर देह, मित्रगणोंसे प्रीति करनेवाला, अच्छा आरंभ करनेवाला और लोभी होता है ॥ ११ ॥

अथ मीनलग्नजातफलम्।

दक्षोऽल्पभक्षोऽल्पमनोभवश्च मद्रत्नहेमा चपलोऽतिधूर्तः।
स्यान्ना च नानारचनाविधाने मीनाभिधाने जनने विलग्ने ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनलग्न हो वह मनुष्य चतुर, थोड़ा भोजन करनेवाला तथा अल्पकामवाला, श्रेष्ठ रत्न और सुवर्णवाला, चपल, अत्यन्त धूर्त और अनेक तरहकी रचना करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

भवेद्बलं लग्नबलं यथोक्तं विलग्नकाले प्रबले प्रसूतौ।
तस्मिन्बलोने यदि वा विलग्ने युक्तेक्षिते क्रूरखगैस्तथाल्पम् ॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न बलवान् हो तो कहा हुआ पूरा फल होता है और जो लग्न निर्बल हो अथवा पापयुक्त हो अथवा पापग्रह देखता हो तो थोड़ा फल करता है ॥ १३ ॥

नन्वेवमुदाहृतानां संवत्सरादिफलानां समयनियमाभावात्
निराधारकत्वेन फलादेशः कथं सम्यग्घटतीति व्यर्थमेव,
किमर्थमुक्तमिति चेन्न समयनियमोऽप्यस्ति तथा हि–

निश्चयकर संवत्सरादिका फल निराधार कहा है और उसके प्राप्त होनेका समय भी नहीं कहा है तो वह निराधार फल किस प्रकार घट सकता है, तो पूर्वोक्त फलका कहना व्यर्थ है, किस वास्ते कहा ऐसा तो न कहो क्योंकि समयनियम भी है इसलिये कहते हैं–

उक्तानि संवत्सरपूर्वकाणां फलानि तत्प्राप्तिरिति प्रकल्प्या।
सांवत्सरं सावनवर्षपस्य पाकेऽयनर्तुप्रभवं स्वराशेः ॥ १४ ॥

जो पहिले कहा संवत्सरादिका फल कहा है उसके प्राप्त होनेके समयकी कल्पना करते हैं, संवत्सरका फल सावन वर्षपतिकी दशामें कहना चाहिये और अयनऋतुका फल सूर्यकी दशामें कहना चाहिये ॥ १४ ॥

अथ पूर्वोक्तसंवत्सराणां फलप्राप्तिसमयमाह–

मासोद्भवं मासपतेस्तथैव द्रेष्काणोडुपक्षप्रभवं च यत्स्यात्।
तिथिप्रभूतं करणोद्भवं च चन्द्रान्तरेऽर्कस्य दशाविभागे ॥१५॥
वारोद्भवं वारविभोर्विचिन्त्य योगोत्थमिन्द्वर्कबलान्वितस्य।
लग्नोद्भवं लग्नपतेर्दशायां दृग्भावपुंराशिजमेवमूह्यम् ॥ १६ ॥

और महीनेका फल मासपतिकी दशामें कहना चाहिये और गण तथा नक्षत्रफल और पक्षफल भी चंद्रमाकी दशामें कहना चाहिये और तिथिजात और करणजात फल चंद्रमाके अन्तरमें सूर्यकी दशामें कहना चाहिये ॥ १५ ॥ और वारजात फल वारके स्वामीकी दशामें कहना चाहिये और योगजातफल सूर्य चंद्रमामें जो अधिक बली हो उसकी दशामें कहना और लग्नजात फल लग्नपतिकी दशामें कहना चाहिये और दृष्टिभाव राशि इनका फल इनके स्वामीकी दशामें कहो ॥ १६ ॥

अथ डिंभाख्यचक्रम् ।

डिंभाख्यचक्रं रविभाच्च भानां त्रयं न्यसेन्मूर्ध्नि मुखे त्रयं च ।
द्वे स्कंधयोर्द्वे भुजयोर्द्वयं च पाणिद्वये वक्षसि पञ्च भानि ॥१॥
नाभौ च लिंगे च तथैकमेकं द्वे जानुनोः पादयुगे भषट्कम् ।
पुंसां सदा वै परिकल्पनीयं मुनिप्रवर्यैः फलमुक्तमत्र ॥ २ ॥

अथ डिंभाख्यचक्र कहते हैं—डिंभाख्यचक्रके विषयमें सूर्यके नक्षत्रसे नक्षत्रोंका न्यास करे, वे शिरपर तीन, मुखमें तीन, दोनों कन्धोंपर एक एक और दोनों बांहों-पर एक एक, दोनों हाथोंपर एक एक, छातीपर पांच नक्षत्र स्थापित करे ॥ १ ॥ नाभिमें एक, लिंगपर एक और दोनों जांघोंमें दो दो और तीन तीन दोनों पैरोंपर पुरुषोंके हमेशा कल्पना करे, यहां मुनीश्वरोंके कहे हुए फलको कहा है ॥ २ ॥

अथ डिंभाख्यचक्रे नक्षत्रन्यासफलमाह—

सद्रत्नचामीकरचारुवस्त्रविचित्रबालव्यजनातपत्रैः ।
विराजमानो मनुजो नितांतं मौलिस्थले भं नलिनीप्रभोश्चेत् ॥३॥
मिष्टाशनानां शयनासनानां भोक्ता च वक्ता सततं प्रसन्नः ।
स्मिताननो ना वदनानुयातं भानोर्भवेद्धं जनने हि यस्य ॥४॥
स्कंधांशको वंशविभूषणश्च महोत्सवार्थं प्रथितः प्रतापी ।
नरोऽतिशूरोऽतितरामुदारो दिवाकरोडुस्थितमंशके चेत् ॥५॥

जो बालक शिरके नक्षत्रोंमें पैदा हो तो श्रेष्ठ रत्न और सोना सुन्दर वस्त्र व्यजन छत्रोंसे शोभित वह मनुष्य शोभाको प्राप्त होता है, जो सूर्यके शिरके नक्षत्रमें पैदा हो ॥ ३ ॥ और जो सूर्यके मुखके नक्षत्रमें पैदा हो तो वह बालक मीठे भोजन, उत्तम शय्या और आसनोंका भोग करनेवाला और बोलनेवाला तथा निरंतर प्रसन्न रहता है और हँसमुखवाला होता है ॥ ४ ॥ और जो कंधाके

नक्षत्रमें पैदा हो तो वह मनुष्य वंशमें आभूषणके समान, बडे उत्सवों सहित अग्रणी, प्रतापवाला, प्रबल वीर और अत्यन्त उदार होता है ॥ ५ ॥

त्यक्तस्वदेशः पुरुषो विशेषाद्गर्वोद्धतः शौर्ययुतो नितांतम् ।
विदेशवासाप्तमहत्प्रतिष्ठो मार्तंडभे बाहुगते प्रसूतौ ॥ ६ ॥
वदान्यतासद्गुणवर्जितश्च पण्यादिरत्नादिपरीक्षकश्च ।
सत्यानृताभ्यांसहितो हि मर्त्यो दिवामणेर्भे यदि पाणिसंस्थम् ७
भूपालतुल्यः स्वकुले सुशीलो बालो विशालोत्तमकीर्तिशाली ।
शास्त्रे प्रवीणः परिसूतिकाले वक्षस्थले चेन्नलिनीशभे स्यात् ८

जो बालक बाहोंके नक्षत्रोंमें पैदा हो वह मनुष्य अपने देशको विशेष करके त्याग देता है और बडा अभिमानी, अत्यन्त वीरतामें युक्त और परदेशमें वास कर बडी प्रतिष्ठाको प्राप्त होता है और जो सूर्यके हाथोंके नक्षत्रमें पैदा हो ॥ ६ ॥ वह बालक उदार, श्रेष्ठ गुणसे रहित, व्यापारमें रत्नोंकी परीक्षा करनेवाला, सत्य और झूठसहित होता है ॥ ७ ॥ और जो बालक सूर्यकी छातीके नक्षत्रोंमें पैदा हो वह मनुष्य राजाके समान अपने कुलमें होता है और श्रेष्ठ शीलवाला, विशाल, श्रेष्ठ यशवाला और शास्त्रमें प्रवीण होता है ॥ ८ ॥

क्षमासमेतो रणकर्मभीरुः कलाकलापाकलनैकशीलः ।
धर्मप्रवृत्तिः सुतरामुदारो नाभीसरोजेऽम्बुजबंधुतारा ॥ ९ ॥
कंदर्पधुर्योज्झितसाधुकर्मा सङ्गीतनृत्याभिरुचिः कलाज्ञः ।
चेज्जन्मकाले नलिनीशभं स्याद्गुह्यस्थले सोऽतुलकीर्तियुक्तः ॥ १० ॥ नानादेशानेकधा संप्रचारः कार्योत्साहश्चंचलक्षामगात्रः ।
धर्मो मर्त्यः सत्यहीनश्च नूनं जानुस्थानेभानुभं जन्मनि
स्यात् ॥ ११ ॥ कृषिक्रियायां निरतोऽल्पधर्मः शत्रूज्झितः
सेवनकर्मकर्ता । तारा यदि स्यादरविंदबन्धोः पादारविंदे
प्रभवस्य सूतौ ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्यके नाभिका नक्षत्र हो वह मनुष्य क्षमासंयुक्त, संग्राममें डरपोक, कलाओंके समूहमें रचना करनेमें चतुर, शास्त्रमें प्रवीण धर्ममें रुचि रखनेवाला निरन्तर उदार होता है ॥ ९ ॥ और जिसके जन्मकालमें सूर्यके गुह्यस्थलका नक्षत्र हो वह मनुष्य बडा कामी, साधुकर्मोंसे रहित, श्रेष्ठ गीत औ

नृत्यमें प्रीति करनेवाला, कलाओंको जाननेवाला होता है और बड़े यशवाला होता है ॥ १० ॥ और जिसके जन्मकालमें सूर्यके जानुके नक्षत्र हों वह मनुष्य अनेक देशमें अनेक तरहका प्रचार करनेवाला, कार्यमें उत्साही, चंचल, दुर्बल देहवाला, धूर्ततायुक्त, सत्यसे रहित होता है ॥ ११ ॥ जिसके जन्मकालमें सूर्यके पैरोंका नक्षत्र हो वह मनुष्य स्वर्गकी क्रियामें कुशल, थोड़ा धर्म करनेवाला, शत्रुरहित और सेवाका काम करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ ह्रस्वदीर्घाङ्गज्ञानमाह ।

ह्रस्वामीनवृषाजघटा मिथुनधनुः कर्किमृगतुलाश्च समाः ।
वृश्चिककन्यामृगपतिवणिजा दीर्घाः समाख्याताः ॥ १ ॥
एभिर्लग्नादिगण्यैः शीर्षप्रभृति नृशरीराणि । सदृशानि
विजायंतेस्थितगगनचरैश्चैव तुल्यानि ॥ २ ॥ इदं लग्नतः
सकाशात्कालपुरुषाकारचक्रं द्रष्टव्यम् ॥

अब ह्रस्व दीर्घ राशि कहते हैं—मीन, वृष, मेष, कुंभ, ये राशि छोटी हैं और मिथुन, धन, कर्क, मकर ये सम अर्थात् न छोटी हैं न बड़ी हैं और वृश्चिक, कन्या, सिंह, तुला ये राशि बड़ी हैं ॥ १ ॥ ये राशि लग्नसे लेकर शिर आदिसे लेकर मनुष्यके शरीरके अंगोंका छोटा बड़ा समान जानना चाहिये ॥ २ ॥ ये लग्नके सकाशसे लेकर काल पुरुषके शरीरका आकार चक्रमें छोटा बड़ा जान लेना चाहिये ॥

अथ द्वादशभावानां फलानि ।

भिन्नं द्वादशधा विधाय विलसच्चक्रं च तत्र न्यसेत्
लग्नाद्द्वादश राशयोऽतिविशदा वामाङ्कमार्गक्रमात् ।
अङ्क्या तत्र नभश्चरा स्फुटतरा राशौ च यत्र स्थिता-
स्तेभ्यः साधुफलं त्वसाधुसुधिया वाच्यं हि होरागमात् ॥१॥

पहिले बारह स्थान बनावे वहां चक्र करके न्यास कर फिर लग्नसे लेकर बारहों राशियोंको बायें अंगसे क्रम करके अंक स्थापित कर उन राशिके अंकोंमें ग्रह स्थापित करे, उसको जन्मकुण्डली कहते हैं, उससे अच्छा बुरा फल ज्योतिषशास्त्रके जाननेवाले विचार करें ॥ १ ॥

अथ तनुभावे किं विचारणीयम् ।

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसःप्रमाणम् ।
सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलुसर्वमेतत् ॥२॥

अब तनुभावका विचार करते हैं-उस तनुभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये। उससे रूप और वर्णोंका निर्णय, देहके चिह्न, अवस्थाका प्रमाण, सुख और दुःख और साहस ये सब लग्नसे विचार करने चाहिये ॥ २ ॥

अथ तनुभावविचारः ।

विलोकिते सर्वखगैर्विलग्ने लीलाविलासैः सहितो बलीयान् ।
कुले नृपालो विपुलायुरेव भयेन मुक्तोऽरिकुलस्य हंता ॥३॥

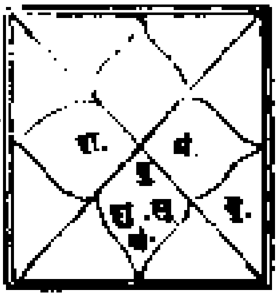

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सम्पूर्ण ग्रह लग्नको देखते हों तो वह मनुष्य हास्यविलास युक्त और बलवान् होता है कुलमें राजा हो, बड़ी उमरवाला, भयरहित, शत्रुओंके कुलको नाश करता है ॥ ३ ॥

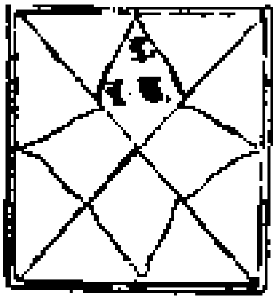

सौम्यास्त्रयो लग्नगता यदि स्युः कुर्वंति जातं नृपतिं विनीतम् । पापास्त्रयो दुःखदरिद्रशोकैर्युतं नितांतं बहुभक्षकंच ॥ ४ ॥

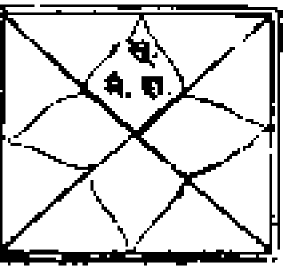

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीन शुभग्रह लग्नमें बैठे हों तो वह मनुष्य नम्रतायुक्त राजा होता है और जो तीन पापग्रह लग्नमें बैठे हों तो वह मनुष्य दुःख दरिद्र शोक करके सहित अत्यंत भोजन करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

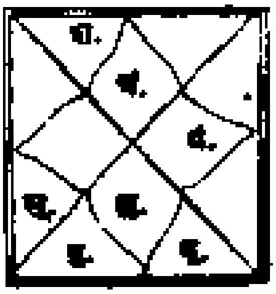

लग्नाद्द्यूनखबन्धकेऽपि च शुभाः पापेन युक्तेक्षिता
मंत्री दण्डपतिः क्षितेरधिपतिः स्त्रीणां बहूनां पतिः ।
दीर्घायुर्गदवर्जितो गतभयः सौंदर्यसत्त्वान्वितः
सच्छीलो यवनेश्वरैर्निगदितो मर्त्यः प्रसन्नः सदा॥५॥

जो जन्म लग्नसे सातवें, छठें, आठवें, शुभग्रह बैठे हों और पापग्रहोंसे युक्त न हों और न दृष्ट हों तो वह मनुष्य राजाका मंत्री, फौजका मालिक, धरतीका स्वामी, बहुत स्त्रियोंका पति, बड़ी उमरवाला, रोगरहित, भयहीन, सुंदरता और मित्रता सहित श्रेष्ठ शीलवाला और हमेशा प्रसन्न होता है यह यवनाचार्यने कहा है ॥ ५ ॥

अथार्कादिग्रहाणां तु गुणवर्णविनिर्णयः ।
आकारोऽपि शरीरस्य प्रोच्यते मुनिसंमतः ॥ ६ ॥

अब मुनिमतानुसार सूर्यादि ग्रहोंके गुण वर्णोंका निर्णय और शरीरके आकार कहते हैं ॥ ६ ॥

अथ सूर्यस्वरूपम् ।

शूरो गभीरश्चतुरः सुरूपः श्यामारुणश्चाल्पककुंतलश्च ।
सुवृत्तगात्रो मधुपिंगनेत्रो मित्रोऽहि पित्तास्थ्यधिको न तुंगः ॥ ७ ॥

अब सूर्यका स्वरूप कहते हैं—शूर, वीर, गम्भीर, चतुर, श्रेष्ठ रूप, श्याम, लाल वर्ण, थोड़े बाल, सुडौल शरीर, शहदके समान पीले नेत्र, पित्तप्रकृति, अस्थिमें सार न बहुत लंबा न बहुत छोटा ऐसा सूर्यका स्वरूप है ॥ ७ ॥

अथ चंद्रस्वरूपम् ।

सद्वाग्विलासोऽमलधीः सुकायो रक्ताधिकः कुंचितकेशकृष्णः ।
कफानिलात्माम्बुजपत्रनेत्रो नक्षत्रनाथः सुभगोऽतिगौरः ॥ ८ ॥

अब चन्द्रमाका स्वरूप कहते हैं—श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, निर्मल बुद्धिवाला, अधिक रुधिरवाला, घुंघराले काले बालवाला, कफ वायुकी प्रकृतिवाला कमलपत्र समान नेत्रवाला सुन्दर और अत्यंत गौर होता है ॥ ८ ॥

अथ भौमस्वरूपम् ।

मज्जासारो रक्तगौरोऽत्युदारो हिंस्रः शूरः पैत्तिकस्तामसश्च ।
चंडः पिंगाक्षो युवाऽखर्वगर्वः सर्वक्षोणीसूनुरग्निप्रभः स्यात् ॥ ९ ॥

अब मंगलका स्वरूप कहते हैं—मेदामें सार, लाल गौरवर्ण, अत्यंत उदार, हिंसा करनेवाला, शूरवीर, पित्तप्रकृतिवाला, क्रोधी, प्रचंड, पीले नेत्रवाला, जवान, बड़ा अभिमानी, अग्निके समान कांतिवाला ऐसा शरीर होता है ॥ ९ ॥

अथ बुधस्वरूपम् ।

श्यामः शिरालश्च कलाविधिज्ञः कुतूहली कोमलवाक्त्रिदोषी ।
रजोधिको मध्यमरूपधृक्स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराजपुत्रः ॥ १० ॥

अथ बुधका स्वरूप कहते हैं–काले बाल, अनेक कलाओंकी विधि जानने-वाला, हास्य करनेवाला, मिष्टभाषी, त्रिदोषयुक्त, अधिक रजोगुणवाला, मध्यम रूप और लाल नेत्रवाला होता है ॥ १० ॥

अथ गुरुस्वरूपम् ।

ह्रस्वाकारश्चारुचामीकराभः सम्यक्सारः सुस्वरोदारबुद्धिः ।
वृत्तः पिंगाक्षः कफी चातिमांसः प्राज्ञः सूरिः कीर्तितो जीवसंज्ञः ॥ ११ ॥

अथ बृहस्पतिका स्वरूप कहते हैं–छोटा आकार, सुन्दर सोनेके समान कांति-वाला, मेदामें सार, श्रेष्ठ शब्दवाला, उदार, बुद्धिवाला, चतुर, पीले नेत्रवाला, कफप्रकृतिवाला, मोटी देहवाला और बुद्धिमान् होता है ॥ ११ ॥

अथ भृगुस्वरूपम् ।

सजलजलदनीलः श्लेष्मलश्चानिलात्मा
कुवलयदलनेत्रो वक्रनीलालकश्च ।
सुसरलभुजशाली राजसश्चातिकामी
मदयुतगजगामी भार्गवः शुक्रसारः ॥ १२ ॥

अथ शुक्रका स्वरूप कहते हैं–मेघके समान नीलवर्णवाला, कफयुक्त, वात-प्रकृति, कमलपत्रसे नेत्रवाला, टेढे नीले बाल, सीधी बांहोंवाला, राजसी प्रकृतिका, तथा अत्यन्त कामी, अभिमानसहित, हाथीकीसी चाल चलनेवाला और वीर्यमें सारवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ शनिस्वरूपम् ।

श्यामलोऽतिमलिनश्च शिरालः सालसश्च जटिलः कृशदीर्घः ।
स्थूलदंतनखपिंगलनेत्रो रूक्षतनुश्च खलानिलकोपैः ॥ १३ ॥

अथ शनैश्चरका स्वरूप कहते हैं–काला वर्ण, मलिन अति स्वरूप रोमोंसहित आलस्ययुक्त, जटाओंको धारण करनेवाला, दुर्बल और लम्बा देह मोटे दांत, मोटे नख तथा पीले नेत्रवाला, रूक्षतासहित, और वातविकारवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ शरीराकारादिज्ञानम् ।

लग्नस्य नवांशपतेर्हि मूर्त्या मूर्तिः समाना बलशालिनो वा ।
स्यादिंदुनवांशपतेस्तु वर्णः परं विचार्याः कुलजातिदेशाः ॥ १४ ॥

अथ शरीराकारादि वर्णन करते हैं–लग्नमें जिस नवांशका उदय हो उस नवांशपतिके समान मनुष्यका स्वरूप कहना चाहिये अथवा जो ग्रह बलवान् हो उसके समान मूर्ति कहनी चाहिये और चंद्रमा जिस नवांशमें बैठा हो उसके स्वामीके समान वर्ण कहना चाहिये और कुल जाति, देश, विचार कर कहना

करना चाहिये। यथा काश्मीरदेशमें तथा विलायतमें सब गौर ही पैदा होते हैं तो उस देशमें सबको श्याम मत कहना और जातिके अनुसार विचार करना, जैसे नागरजाति, खत्री जातिके लोग बहुधा गौर होते हैं, जैसे भील किरात कोल्हा-दिके लोग काले होते हैं उन लोगोंको काला ही कहना चाहिये ॥ १४ ॥

अथ अंगन्यासः ।

सत्त्वं भवेयुः शशिसूर्यजीवास्तमो यमारौ च रजोज्ञशुक्रौ ।
त्रिंशल्लवे यस्य गतो दिनेशो वाच्योगुणस्तस्य खगस्य नूनम् १५
शिरोऽक्षिणी कर्णनसा कपोलौ हनुर्मुखं च प्रथमे दृकाणे ।
कंठांसदोर्दण्डककुक्षिवक्षः क्रोडं च नाभिस्त्रिलवे द्वितीये ॥१६॥
बस्तिस्ततो लिंगगुदे तथाण्डावूरू च जानू चरणौ तृतीये ।
क्रमेण लग्नात्परपूर्वषट्के वामं तथा दक्षिणमंगमत्र ॥ १७ ॥

चंद्रमा, सूर्य और बृहस्पति ये सत्त्वगुणके स्वामी हैं और शनैश्चर, मंगल तमोगुणके स्वामी हैं, बुध शुक्र रजोगुणके स्वामी होते हैं। सूर्य जिस २ त्रिंशांशमें बैठा हो उस २ त्रिंशांशका स्वामी जो ग्रह हो उसीके गुणकी अधिकता मनुष्यमें कहनी चाहिये ॥१५॥ शरीरके तीन भाग कहना जो लग्नमें पहिले द्रेष्काणका उदय हो शिर, आँख, कान, नासिका, गाल, ठोडी, मुखपर्यंत बारहों अंगोंका एकभागमें जानना चाहिये, द्वितीय द्रेष्काणका उदय हो तो कंठ, कंधा, बाहु, पार्श्व, वक्षस्थल, पेट, नाभि द्वितीय भाग हैं और जो तीसरे द्रेष्काणका उदय हो ॥ १६ ॥ तो पेडू, लिंग गुदा, जाँघ, चरण दोनों तृतीय भाग हैं यह क्रम करके दः दः अंगोंके भाग वाम दहिने अंग चक्रमें कल्पना करनी चाहिये ॥ १७ ॥

प्रथमद्रेष्काणचक्रम् ।

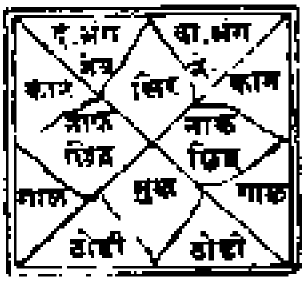

द्वितीयद्रेष्काणचक्रम् ।

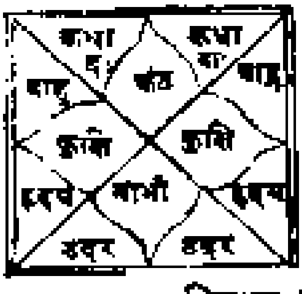

तृतीयद्रेष्काणचक्रम् ।

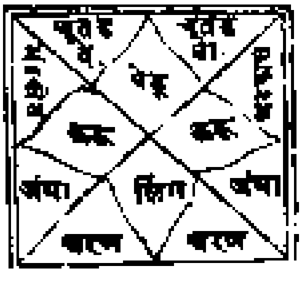

अथ व्रणमशकादिविज्ञानम् ।

मत्स्यं तिलं लक्ष्म बलानुसारं कुर्वन्ति सौम्या व्रणमत्र पापाः ।
स्वांशस्थभागस्थिरगाश्च लक्ष्मयुक्तेक्षिताः सौम्यनभश्चरैश्च १८

मच्छी, तिल लक्षण, ग्रहोंके बलके समान कहना चाहिये, जो शुभग्रह हो तो पूर्वोक्त चिह्न कहना चाहिये और जो पापग्रह जिस अंगमें व्रणकारक हो तो

व्रण कहना चाहिये, जो ग्रह अपने नवांश वा अपने द्रेष्काणमें स्थिरराशिमें हो तो पूर्वोक्त, चिह्न स्थिर कहना चाहिये, जो शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट अंग हो तो मस्सा, तिल, लहसन कहना चाहिये ॥ १८ ॥

अथ व्रणकारणमाह ।

रवेर्व्रणः काष्ठचतुष्पदोत्थं शृंग्यम्बुचारिप्रभवः शशाङ्कात् ।
कुजाद्विषाग्न्यस्त्रकृतश्च चान्द्रैर्भौमः शनैश्चापिमरुद्दृषद्भ्याम् ॥१९॥

जो पूर्वोक्त व्रणकारक सूर्य हो तो काष्ठसे और चौपायोंसे कहना चाहिये और चंद्रमा व्रणादिकारक होतो शींगके मारनेसे वा जलचर जीवके काटनेसे चिह्न कहना चाहिये और मंगलमें विष अग्नि अस्त्रकृत चिह्न कहना चाहिये और बुध, मंगल, शनैश्चरोंमे मनुष्यकृत वा पत्थरके लगनेमें चिह्न कहना चाहिये ॥ १९ ॥

अथ व्रणनिश्चयज्ञानम् ।

कुर्याद्व्रणं क्रूरखगो रिपुस्थो युक्तः शुभैर्लक्ष्म तिलं च दृष्टः ।
ग्रहत्रयं यत्र बुधान्वितं स्यात्तत्र व्रणोऽङ्के खलु राशितुल्यः ॥२०॥

जो पापग्रह छठे बैठे हों तो व्रणका चिह्न करते हैं और शुभग्रह बैठे हों तो लहसन वा तिल करते हैं अथवा छठे पापग्रह बैठे हों और उनको शुभग्रह देखते हों तो भी पूर्वोक्त फल कहना यानी लहसन वा तिल कहना और जिस अङ्गमें तीन ग्रह बुधके सहित बैठे हों तो जरूर ही उस अंगमें राशिके तुल्य संख्यक व्रणके चिह्न कहने चाहिये ॥ २० ॥

स्वबाहुवीर्येण भाग्यवान् योगः

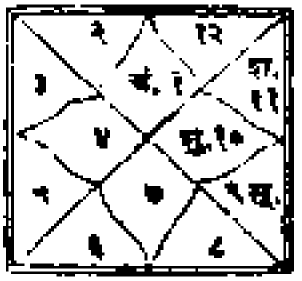

मेषे शशाङ्कः कलशे शनिश्चेद्भानुर्धनुस्थश्च भृगुर्मृगस्थः । तातस्य वित्तं न कदापि भुंक्ते स्वबाहुवीर्येण नरो वरेण्यः ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालकी मेषराशिमें चन्द्रमा, कुम्भराशिमें शनैश्चर, धनराशिमें सूर्य और मकरराशिमें शुक्र बैठा हो तो वह पिताके धनको कभी नहीं भोगता है अर्थात् अपनी भुजाके बलसे श्रेष्ठताको प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

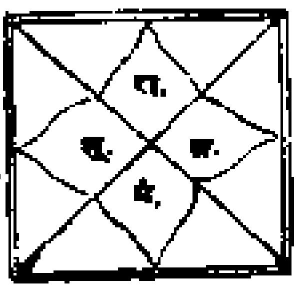

चतुर्षु केन्द्रेषु भवंति पापा वित्तस्थिताश्चापि च पापखेटाः । नरो दरिद्रोऽतितरां निकृष्टो भयंकरः स्यात्स्वकुलेश्वरामाम् ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके चारों केन्द्रोंमें पापग्रह बैठे हों और धनभावमें भी पापग्रह बैठे हों तो वह मनुष्य दरिद्री होता है और अपने कुलके मनुष्योंके वास्ते भयंकर होता है ॥ २२ ॥

राजसी बुद्धियोगः २३

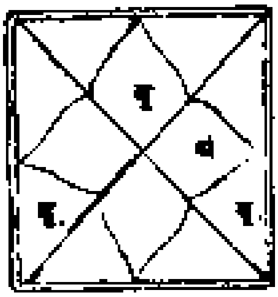

सुतस्थितो वा यदि मूर्तिवर्ती बृहस्पती राज्यगतः शशांकः। नरस्तपस्वी विजितेन्द्रियश्च स्याद्राजसो बुद्धिविराजमानः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें वा लग्नमें बृहस्पति बैठा हो और दशमें चन्द्रमा बैठा हो तो वह मनुष्य तपस्वी, इंद्रियोंका जीतनेवाला और राजसी बुद्धिसे शोभायमान होता है ॥ २३ ॥

धनवान् योगः २४

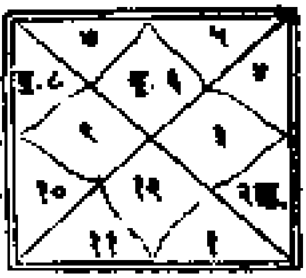

कन्यायां च तुलाधरे सुरगुरुर्मेषे वृषे वा भृगुः सौम्यो वृश्चिकराशिगः शुभखगैर्दृष्टः कुलश्रेष्ठताम्। नूनं याति नरो विचारचतुरोऽप्यौदार्यजातादरो नित्यानंदभरो गुणैर्वरतरो निष्ठापरो वित्तवान् ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या वा तुलाराशिमें बृहस्पति, मेष वा वृषराशिमें शुक्र और बुध वृश्चिक राशिमें बैठे हों और शुभग्रहोंसे दृष्ट हों तो कुलकी श्रेष्ठताको प्राप्त होता है तथा वह मनुष्य विचारमें चतुर, संसारमें उदारताके मानको प्राप्त होकर हमेशा आनंदसहित और गुणोंमें श्रेष्ठ तथा निष्ठावान् और धनवान् होता है ॥ २४ ॥

चौर्ययोगः २५

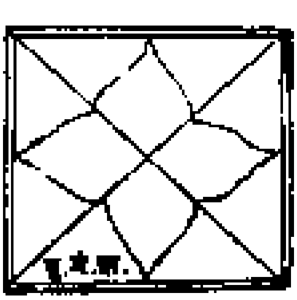

षष्ठे ससौरी भवतो बुधारौ नरो भवेच्चौर्यपरो नितांतम्। स्वकर्मसामर्थ्यविधेर्विशेषात्पराङ्घ्रिपाणीन्कुगुणी छिनत्ति ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें शनैश्चर सहित बुध और मंगल बैठे हों तो मनुष्य चौर्यमें तत्पर होता है और अपने कर्मके सामर्थ्यमें हीन होता है, पराये हाथ पैर काटनेवाला कुगुणी होता है ॥ २५ ॥

चौर्यदंडकुयोगः २६

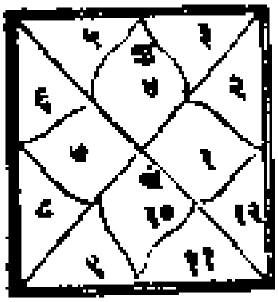

प्रसूतिकाले किल यस्य जंतोः कर्केऽर्कजश्चेन्म-करे महीजः। चौर्यप्रसंगोद्भवचंडदण्डाच्छा-खाविखण्डानि भवंति नूनम् ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालकी कर्कराशिमें शनैश्चर और मकर राशिमें मंगल बैठा हो तो वह मनुष्य चोरीके संगसे पैदा हुआ जो बडा भारी दंड उस दण्डके द्वारा उसके हाथ पैरके खंड होते हैं ॥ २६ ॥

वज्रेण मृत्युयोगः २७

अथ वज्रेण मृत्युयोगः।

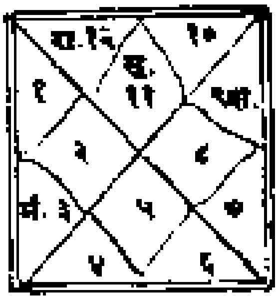

कुंभे च मीने मिथुनाभिधाने शरासने स्यु-र्यदि पापखेटाः। कुचेष्टितः स्यात्पुरुषो नितांतं वज्रेण मूनं निधनं हि तस्य ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभ,मीन, मिथुन, धनुराशिमें सब पापग्रह बैठे हों तो वह मनुष्य अत्यंत बुरी चेष्टावाला, वज्रपतनसे उसका मरण होता है ॥ २७ ॥

अनेकतीर्थकृद्योगः २८

अथ अनेकतीर्थकृद्योगः।

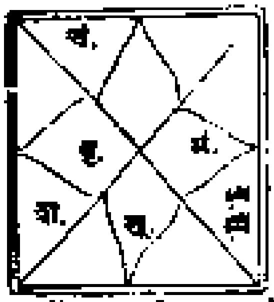

यस्य प्रसूतौ खलुनैधनस्थः सौम्यग्रहः सौम्य-निरीक्षितश्च। तीर्थान्यनेकानि भवंति तस्य नरस्य सम्यङ्मतिसंयुतस्य ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें शुभग्रह बैठे हों और उनको शुभग्रह देखते हों तो वह मनुष्य अनेक तीर्थोंका करनेवाला और बुद्धिसे युक्त होता है ॥ २८ ॥

नीचकर्मकृद्योगः २९

अथ नीचकर्मकृद्योगः।

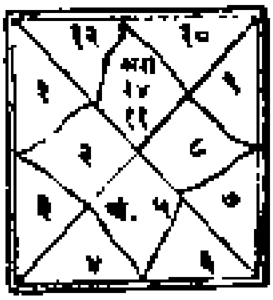

बुधत्रिभागेन युते विलग्ने केंद्रस्थचन्द्रेण निरीक्षिते च। शिष्टान्वये यद्यपि जातजन्मा स्यान्नीचकर्मा मनुजः प्रकामम् ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधके द्रेष्काणमें लग्नका उदय हो और केन्द्रस्थ १ । ४ । ७ । १० चन्द्रमासे रहित हो तो वह मनुष्य चाहे उत्तमवंशमें ही पैदा क्यों न हो तो भी नीच ही कर्म करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

हीनदेहयोगः १०

अथ हीनदेहयोगः ।

भानौ द्वितीये भवने शनिश्चेन्निशाधिनीशो गगनाश्रितश्च । भूनन्दने वै भवने तथानीं स्यान्मानवो हीनकलेवरः सः ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य शनिश्चर दूसरे बैठे हों और चन्द्रमा दशमें मंगल सातवें बैठा हो तो वह मनुष्य हीनदेह होता है ॥ ३० ॥

अथ श्वासक्षयप्लीहगुल्मरोगयोगः ।

श्वासक्षयप्लीहगुल्मरोगयोगः ३१

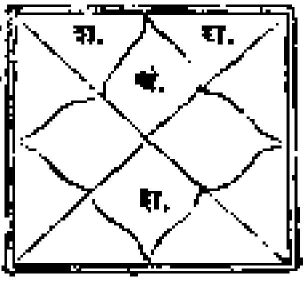

पापान्तराले च भवेत्कलावांस्तथार्कसूनुर्मदनालयस्थः । कलेवरं स्याद्विकलं च तस्य श्वासक्षयप्लीहकगुल्मरोगैः ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें बैठा हो और शनिश्चर सातवें बैठा हो तो उस मनुष्यका देह श्वास, क्षय, तापतिल्ली और गुल्मरोगसे विकल होता है ॥ ३१ ॥

लक्ष्मीविहीनयोगः १२

अथ लक्ष्मीविहीनयोगः ।

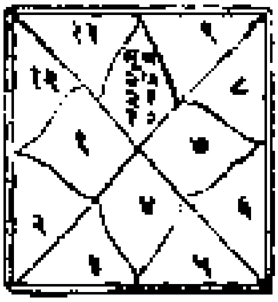

शशी दिनेशस्य यदा नवांशे भवेद्दिनेशः शशिनो नवांशे । एकत्र संस्थौ यदि तौ भवेतां लक्ष्मीविहीनो मनुजः स नूनम् ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा सूर्यके नवांशमें बैठा हो और सूर्य चन्द्रमाके नवांशमें, एक राशिमें, दोनों बैठे हों तो वह मनुष्य धनहीन होता है ॥ १२ ॥

अथ तेजोहीननेत्रयोगः ।

तेजोहीननेत्रयोगः ३३

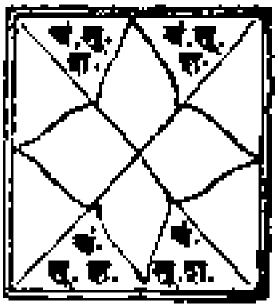

व्ययेऽरिभावे निधने धने च निशाकरारार्कशनैश्वराः स्युः । बलान्वितास्ते त्वनिलाधिकत्वात्तेजोविहीने नयने प्रकुर्युः ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें, छठे, अष्टम और द्वितीय स्थानोंमें चन्द्रमा, सूर्य, शनैश्चर बलसहित हों तो वह मनुष्य तेजसे हीन नेत्रोंवाला और वातकी अधिकतावाला होता है ॥ ३३ ॥

अथ कर्णनाशयोगः ।

कर्णनाशयोगः ३४

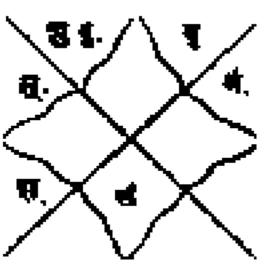

पापास्त्रिपुत्रायगता भवन्ति विलोकिता नैव शुभैर्नभोगैः । कुर्वन्ति ते कर्णविनाशनं च गामित्रयाताः खलु कर्णघातम्

कर्णनाशयोगः ३४

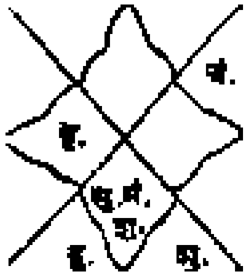

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह तीसरे, पंचम, ग्यारहवें हों और उनको शुभ ग्रह नहीं देखते हों तो उसके कानोंका नाश होता है और जो सप्तममें पापग्रह बैठे हों तो भी निश्चयसे उसके कानोंका नाश होता है ॥ ३४ ॥

अथ नेत्रदोषयोगः ।

नेत्रदोषयोगः ३५

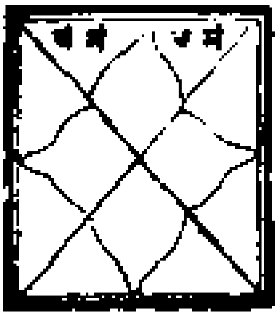

धनव्ययस्थानगतश्च शुक्रो वक्रोऽथवा कर्णहगं करोति । नक्षत्रनाथो यदि तत्र संस्थो दृग्दोषकारी कथितो मुनीन्द्रैः ॥ ३५ ॥

नेत्रदोषयोगः ३५

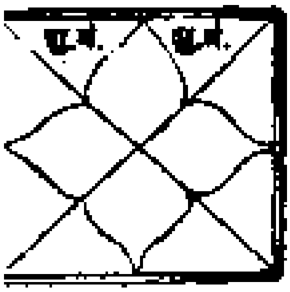

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दूसरे बारहवें शुक्र वा मंगल बैठा हो तो उसके नेत्रोंमें रोग होता है और जो चन्द्रमा दूसरे वा बारहवें बैठा हो. तो भी नेत्रदोष होता है ॥ ३५ ॥

एते हि योगाः कथिता मुनीन्द्रैः साकल्यमेतद्यस्य नभश्चरस्य ।
कल्प्यं फलं तस्य च पाककाले सुनिर्मला यस्य मतिस्तु तेन ॥ २६ ॥

ये योग मुनीश्वरोंसे कहे गये हैं । सम्पूर्ण ग्रहोंके बलसे कहा हुआ फल उन ग्रहोंकी दशामें श्रेष्ठ बुद्धिमान् पुरुष कहे ॥ २५ ॥

अथ धनभावविचारमाह—तत्र धनभवनात्किं किं चिन्तनीयम् ।

स्वर्णादिधातुक्रयविक्रयश्च रत्नादिकोशोऽपि च संग्रहश्च ।
एतत्समस्तं परिचिन्तनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ १ ॥

अब धनभावका विचार कहते हैं—धनभावसे सुवर्ण आदि धातुओंका क्रय विक्रय, रत्न और खजानाका विचार एवं उनका संग्रह करना, यह सम्पूर्ण धनभावसे पंडितजन विचार करें ॥ १ ॥

धनहीनयोगः २

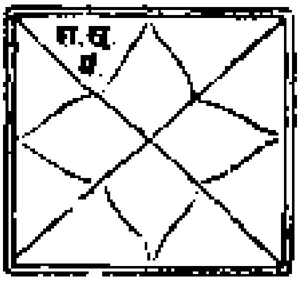

अथ धनहीनयोगः

भानुभूतनयभानुतनूजैर्वीक्षितं धनस्य भवनं युतहृष्टम् ।
जायते च मनुजो धनहीनः किं पुनः कृशशशीक्षितयुक्तम् ॥ २ ॥

धनहीनयोगः २

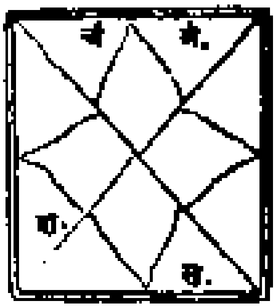

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल और शनैश्चर धनभावमें बैठे हों वा देखते हों तो वह मनुष्य धनहीन होता है और जो क्षीण चन्द्रमा भी देखता हो अथवा युक्त हो तो क्या कहना है ? अर्थात् अवश्य ही धनहीन होता है ॥ २ ॥

धनवान्योगः ३

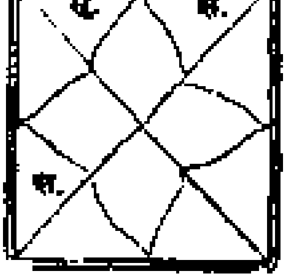

अथ धनवान्योगः ।

धने दिनेशोऽतिधनानि नूनं करोति मन्देन न चेक्षितश्च । शुभाभिधाना धनभावसंस्था नानाधनाभ्यागमनानि कुर्युः ॥ ३ ॥

धनवान्योगः ३

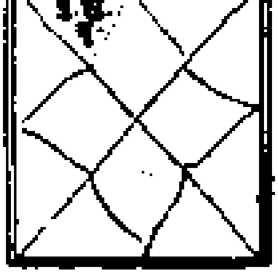

जिसके धनभावमें सूर्य बैठा हो और शनि देखता हो तो वह अधिकधनवान् होता है और जो धनभावमें शुभग्रह बैठे हों तो वे अनेक प्रकारका धन प्राप्त करते हैं ॥ ३ ॥

धनवत्तायोगः ४

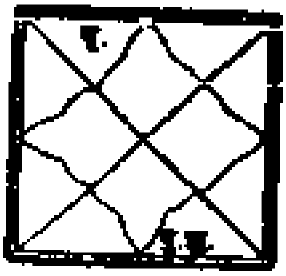

धनहीनयोगः

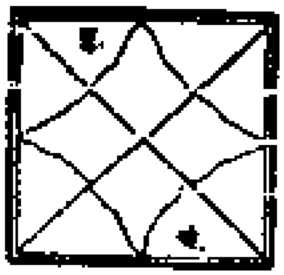

गीर्वाणवंद्यो द्रविणोपयातः सौम्येक्षितश्चेद्रविणं करोति । सोमेन दृष्टो धनभावसंस्थः सोमस्य सूनुर्धनहानिदः स्यात् ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति धनभावमें बैठा हो और शुभग्रह देखते हों तो धनवान् करते हैं और जो धनभावमें बुध बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो धनकी हानि करता है ॥ ४ ॥

धनप्रतिबन्धकयोगः ५

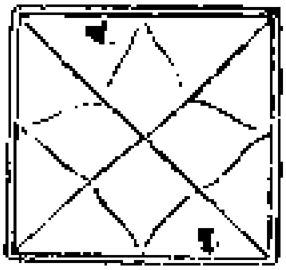

अथ धनप्रतिबन्धकयोगः ।

धनस्थितो ज्ञेन विलोकितश्च कृशः शशांकोऽपि धनादिकानाम् । पूर्वार्जितानां कुरुते विनाशं नवीनवित्तप्रतिबंधनं च ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें क्षीण चन्द्रमा बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो पहिलेका इकट्ठा किया हुआ धनादि वस्तुओंका नाश करता है और नये धनादिकोंका प्रतिबन्धक होता है ॥ ५ ॥

धनप्राप्तियोगः ६

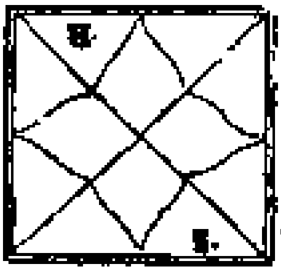

धनप्राप्तियोगः ६

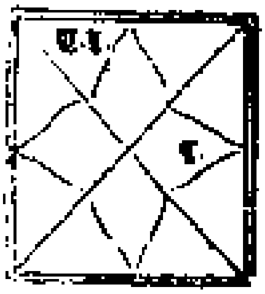

वित्तस्थितो दैत्यगुरुः करोति वित्तागमं सोमसुतेन दृष्टः । स एव सौम्यग्रहयुक्तदृष्टः प्रकृष्टवित्तातिकरो नराणाम् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें शुक्र बैठा हो और बुध देखता हो तो धनकी प्राप्ति करता है और जो शुक्रको सब शुभग्रह देखते हों तो वह मनुष्यको बहुत धनकी प्राप्ति करानेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ सहजभावविचारस्तत्र सहजभावात्किं किं चिन्तनीयम् ।

सहोदराणामथ किंकराणां पराक्रमाणामुपजीविनां च ।
[illegible] ...कशास्त्रविद्भिस्तृतीयः ॥

सहज भावसे क्या विचार करना चाहिये सो कहते हैं-वह सगे भाई और नौकर तथा पराक्रम और आजीविकाको ज्योतिषशास्त्रके जाननेवाले नियम करके विचार करें ॥ १ ॥

भ्रातृहीनयोगः २   भ्रातृवद्योगः २

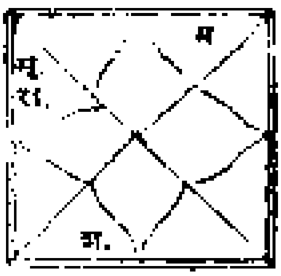

पापालयं चेत्सहजं समस्तैः पापैः समेतं प्रविलोकितं च । भवेदभावः सहजोपलब्धेस्तद्वैपरीत्येन तदाप्तिरेव ॥ २ ॥

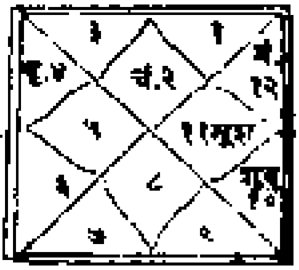

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें पापग्रह बैठे हों और तीसरे भावको सब पापग्रह देखते हों तो उसके भ्राताओंका अभाव होता है और तीसरे भावमें शुभग्रहकी राशि हो और शुभग्रह देखते हों तो वह भ्रातृवान् होता है ॥ २ ॥

भ्रातृनाशकयोगः । क्षेपकः ।

अग्रे जातं रविर्हन्ति पृष्ठे जातं शनैश्चरः ।
अग्रजं पृष्ठजं हंति सहजस्थो धरासुतः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके तीसरे भावमें सूर्य बैठा हो तो बड़े भ्राताओंका नाश करता है और शनैश्चर तीसरे हो तो कनिष्ठ भ्राताका नाश करता है और मंगल तीसरे बैठा हो तो अगाड़ी पिछाड़ी दोनों तरफके भ्राताओंका नाश करता है ॥ ३ ॥

नवांशका ये सहजालयस्थाः कलानिधिः क्षोणिसुतेन दृष्टः ।
तावन्मिताः स्युः सहजा भगिन्यस्त्वन्यैक्षिता वै परिकल्पनीयाः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमय तृतीय भावमें जितनी संख्याका नवांश उदय हो और चंद्रमा मंगल देखते हों उतनी संख्याके बहिन भाई कहना चाहिये और जो अन्य ग्रह देखते हों तो भी कल्पना करनी चाहिये ॥ ४ ॥

भ्रातृनाशयोगः ४   भ्रातृसौख्ययोगः ५

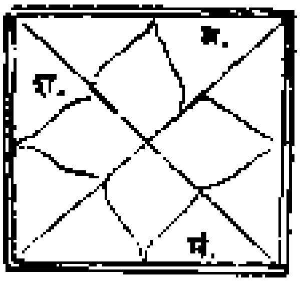

कुजेन दृष्टे रविजेऽनुजस्थे नश्यंति जाताः सहजाश्च तस्य । दृष्टे च तस्मिन्गुरुभार्गवाभ्यां शश्वच्छुभं स्यादनुजेषु नूनम् ॥

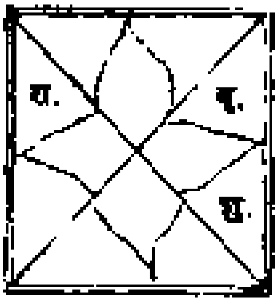

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें शनैश्चर बैठा हो और मंगलसे दृष्ट हो तो भ्राताओंका नाश होता है और जो शुक्र बृहस्पति देखते हों तो भ्राताओंका सौख्य निरन्तर होता है ॥ ५ ॥

भ्रातृनाशयोगः ६   भ्रातृणां रोगकारकयोगः ६

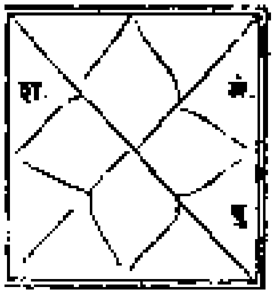

सौम्येन भूमितनयेन दृष्टः करोति नाशं रविजोऽनुजानाम् । शशांकवर्गे सहजे कुजेन दृष्टे सरोगाः सहजा भवेयुः ॥ ६ ॥

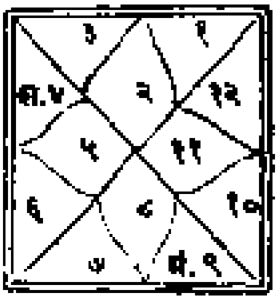

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें बैठा हो और बुध मंगलसे दृष्ट हो तो भ्राताओंका नाश करता है और चन्द्रमाकी राशिमें शनैश्चर तीसरे बैठा हो और मंगलसे दृष्ट हो तो भ्राताओंको रोगी करता है ॥ ६ ॥

दिवामणौ पुण्यगृहे स्वगेहे संदेह एवानुजजीवितस्य ।
एकः कदाचिच्चिरजीवितश्च भ्राता भवेद्भूपतिना समानः ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य स्वक्षेत्री होकर नवमभावमें बैठा हो तो भाईके जीनेमें संदेह है और जो एक भाई कदाचित् दीर्घ आयुको प्राप्त भी हो तो वह भ्राता राजाके समान होता है ॥ ७ ॥

चन्द्रमा यदि पापानां त्रितयेन प्रदृश्यते ।
भ्रातृनाशो भवेत्तस्य यदि नो वीक्षितः शुभैः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा तीन पापग्रहोंसे देखा गया हो और शुभग्रहसे दृष्ट न हो तो उसके भ्राताओंका नाश होता है ॥ ८ ॥

अथ सुहृद्भावविचारस्तत्रादौ चतुर्थभावात् किं किं विचारणीयम् ।

सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदानां क्षेत्रोद्यमालोकनके चतुर्थे ।

दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रसूतिर्नियमेन तेषाम् ॥१॥

अथ चतुर्थभावसे क्या विचार करना चाहिये यह कहते हैं—मित्र और ग्राम, चौपाये और खेतीका उपज इनका चतुर्थ भावसे विचार करना, चतुर्थभावको शुभग्रह देखते हों अथ वा शुभग्रहोंका योग हो तो पूर्वोक्त पदार्थोंकी अधिकता होती है ॥ १ ॥

परिवारक्षयकारकयोगः २

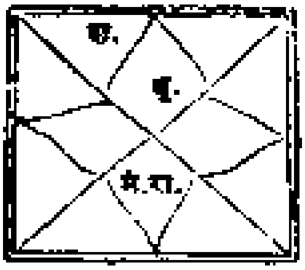

अथ परिवारक्षयकारकयोगः ॥

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिश्च संस्थितः। सप्तमे भवनेपापाः परिवारक्षयंकराः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें बृहस्पति, धनभावमें शनैश्चर बैठा हो और सातवेंमें पापग्रह बैठे हों तो ये परिवारका नाश करते हैं ॥ २ ॥

परिवारनाशयोगः ३

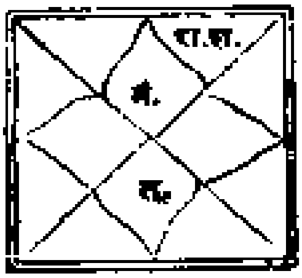

माननाशयोगः ३

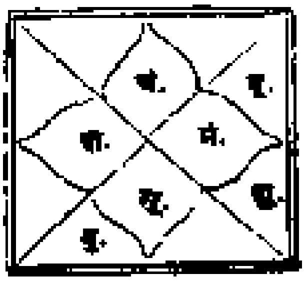

पापैस्त्रिभिश्चंद्रमसि प्रदृष्टे स्यान्माननाशः शुभदृष्टिहीने। व्ययास्तलग्नेष्वशुभाः स्थिताश्चेत्कुर्वंति ते वै परिवारनाशम् ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीन पापग्रहोंसे चन्द्रमा दृष्ट हो और शुभग्रह न देखते हों तो मानका नाश होता है। एको योगः। जो बारहें सातवें लग्नके बिषे पापग्रह बैठे हों तो परिवारका नाश करते हैं ॥ ३ ॥

अथ मातृहा योगः।

शनिर्धने सप्तगते यदि स्याल्लग्नें विलग्ने सुरराजमंत्री। सिंहीसुतः सप्तमभावयातो जातस्य जन्तोर्जननी न जीवेत् ॥ ४ ॥

मातृहा योगः ४

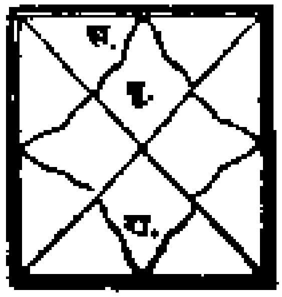

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर दूसरे और लग्नमें बृहस्पति, सातवें राहु बैठा हो तो उस मनुष्यकी माता जीवित नहीं रहती है ॥ ४ ॥

अथ सुतभावविचारः। अथ सुतभावे किं किं चिन्तनीयम्।

बुद्धिप्रबंधात्मजमंत्रविद्या विनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्थाः।
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः परिचिंतनीयाः॥ १॥

अब पंचमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये वह कहते हैं—बुद्धिका प्रबंध, पुत्र, मंत्र, विद्या, नम्रता, गर्भस्थिति और नीति ये सब बातें मनुष्योंके जन्मकालमें पंचमभावसे ज्योतिषी लोग विचार करें॥ १॥

लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथः प्रथमः सुतः स्यात्।
तुर्यस्थितेऽस्मिंश्च सुतो द्वितीयः पुत्री सुतो वेति पुरः प्रकल्प्यम्॥२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नेश लग्न, द्वितीय वा तृतीयस्थानमें बैठा हो तो पहिले पुत्र पैदा होता है और जो लग्नेश चतुर्थ बैठा हो तो पहिले कन्या, पीछे पुत्र पैदा होता है, इसी तरहसे पुत्र कन्या, कन्या, पुत्रोंका विचार करना चाहिये॥ २॥

सुताभिधानं भवनं शुभानां योगेन दृष्टा सहितं विलोक्य।
संतानयोगं प्रवदेन्मनीषी विपर्ययत्वे हि विपर्ययः स्यात्॥ ३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचभावमें शुभग्रहोंकी राशि हो और उसमें शुभग्रह बैठे हों और शुभग्रह देखते हों तो सन्तानवान् करता है। जो पञ्चमभाव पापग्रहसे युक्त और दृष्ट हो तो सन्तानहीन होता है॥ ३॥

सन्तानभावो निजनाथदृष्टः संतानलब्धिं शुभदृष्टियुक्तः।
करोति पुंसामशुभैः प्रदृष्टः स्वस्वाम्यदृष्टो विपरीतमेव॥ ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पञ्चमभाव पञ्चमेशसे दृष्ट हो और शुभग्रहसे दृष्ट हो तो संतानकी प्राप्ति होती है और पञ्चमभाव पापग्रहोंसे दृष्ट हो अथवा युक्त हो और अपने स्वामीसे भी दृष्ट हो तो संतानहीन होता है॥ ४॥

लग्ने वित्ते तृतीये वा लग्नेशोऽपत्यमग्रिमम्।
तुर्ये जन्म द्वितीयस्य पुरः पुत्र्यादिजन्म च॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, द्वितीय अथवा तृतीय भावमें लग्नेश बैठा हो तो पहले पुत्र पीछे कन्या पैदा होती है और लग्नेश चतुर्थमें हो तो पहिले कन्या पीछे पुत्र होता है। १। ३। २। ५। ९। ११। भावस्थित लग्नेश हो तो पहिले पुत्र पीछे कन्या और चतुर्थ ६। ८। १०। १२ इन भावोंमें हो तो पहिले कन्या पीछे पुत्र पैदा होता है॥ ५॥

बाल्ये सन्तानयोगः ६

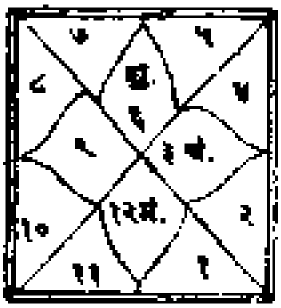

द्विदेहसंस्था भृगुभौमचन्द्राः सन्तानमादौ जनयंति नूनम् । एते पुनर्धन्विगता न कुर्युः पश्चात्तथादौ गदितं महद्भिः ॥ ६ ॥

सन्तानहीनयोगः ६

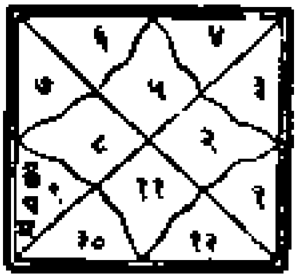

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र, मंगल, चन्द्रमा मिथुन, कन्या, मीन राशिमें बैठे हों तो पहिले पुत्रसंतानको पैदा करें और पूर्वोक्त ग्रह धनमें बैठे हों तो आदि अन्तमें संतान नहीं होती है ॥ ६ ॥

संतानभावे गगनेचराणां यावन्मितानामिह दृष्टिरस्ति ।
स्यात्संततिस्तत्प्रमिता नृसंज्ञैर्नराश्च कन्याः प्रमदाभिधानैः ७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें जितने ग्रहोंकी दृष्टि हो उतनी संख्याकी सन्तान होती है, पुरुष ग्रह देखते हों तो उतने पुत्र होते हैं और स्त्रीसंज्ञक ग्रह देखते हों तो उतनी ही कन्या उत्पन्न होती हैं ॥ ७ ॥

संतानभावांकसमानसंख्या स्यात्संततिर्वेति वदंति केचित् ।
नीचोच्चमित्रादिगृहस्थितानां दृष्ट्या शुभं वा शुभमर्भकानाम् ८

पंचमभावमें जितनी संख्याकी राशि हो उतने प्रमाणकी संतान होती है यह किसी किसीका मत है और जो नीच उच्च मित्रक्षेत्रीय स्वक्षेत्रीय गृहमें बैठे हों अथवा उनको शुभग्रह देखते हों तो शुभ सन्तति होती है ॥ ८ ॥

नवांशतुल्यं भवनात्र संख्या दृष्ट्या शुभानां द्विगुणावगम्या ।
क्लिष्टा च पापग्रहदृष्टियोगा मिश्रा च मिश्रग्रहदृष्टितोऽत्र ॥९॥

पंचमभावमें जितनी संख्याका नवांश हो उतनी संख्याकी सन्तानें होती हैं यह और उस नवांशको पापग्रह देखते हों तो सन्तानको द्विगुणा कहना चाहिये और उस नवांशको पापग्रह देखते हों वा युक्त हों तो दुःखसे सन्तान होती है और जो शुभ पाप दोनों तरहके ग्रह बैठे हों तो मिश्रित फल मिलता है ॥ ९ ॥

सुताभिधाने भवने यदि स्यात्स्वल्पस्य राशिः खलखेटयुक्तः ।
सौम्यग्रहालोकनवर्जितश्च संतानहीनो मनुजस्तदानीम् ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालके पंचमभावमें पापग्रहोंकी राशि हो और पापग्रहयुक्त हो और शुभग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य संतानहीन होता है ॥ १० ॥

(संतानहीनयोगः ११)

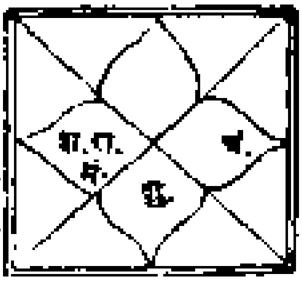

कविः कलत्रे दशमे मृगांकः पातालयाताश्च खला भवंति । प्रसूतिकाले यदि मानवं ते संतानहीनं जनयंति नूनम् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र सातवें और दशवें चंद्रमा और चतुर्थ भावमें पापग्रह बैठे हों तो वह मनुष्य संतानहीन होता है ॥ ११ ॥

सुते सितांशे च सितेन दृष्टे बहून्यपत्यानि विधोरपीदम् । दासीभवान्यात्मजभावनाथेयावन्मितेंशे शिशुसंमतिःस्यात १२

जिस मनुष्यके जन्मकालके पंचमभावमें शुक्रका नवांश हो और शुक्र देखता हो तो बहुत संतानें होती हैं और चंद्रमाका नवांश हो तो भी विशेष संतानवाला होता है और पंचम भावका स्वामी जितनी संख्याके नवांशमें हो उतनी संख्याके दासीजातपुत्र कहना चाहिये ॥ १२ ॥

शुक्रेन्दुवर्गेण युते सुताख्ये युक्तेक्षिते वा भृगुचन्द्रमोभ्याम् । भवंति कन्याः समराशिवर्गे पुत्राश्च तस्मिन्विषमाभिधाने॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शुक्र वा चंद्रमाका वर्ग हो और शुक्र वा चंद्रमासे युक्त वा दृष्ट हो तो समराशिके वर्ग होनेसे कन्यासंतान होती है और विषमसंज्ञक राशि हो तो पुत्रसंतान होती है ॥ १३ ॥

क्रीतपुत्रप्राप्तियोगः १४

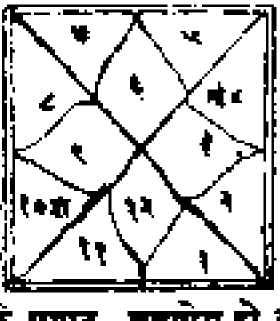

मंदस्य राशिः सुतभावसंस्थो मंदेन युक्तः शशिनेक्षितश्च । दत्तप्रजातिः शशिवद्बुधे-ऽपिक्रीतःसुतस्तस्य नरस्य वाच्यः ॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर वा कुंभ राशि पंचम हो और शनैश्चरसे युक्त हो एवं उसको चंद्रमा देखता हो तो उस मनुष्यको दत्तकपुत्रकी प्राप्ति होती है और चंद्रमाके समान बुधयोग हो तो उसको मोल लिया पुत्र प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

सुतजन्मायोगः १५

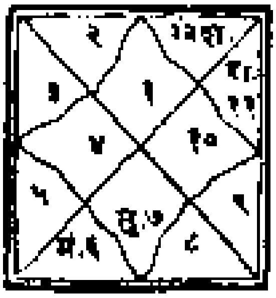

संतानाधिपतेः पञ्चषष्ठरिःफस्थिते खले ।
पुत्राभावो भवेत्तस्य यदि जातो न जीवति ॥ १५ ॥

मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभवनका स्वामी जहां बैठा हो वहांसे पंचम छठे अथवा बारहें पापग्रह बैठे हों तो उस मनुष्यके पुत्रका अभाव होता है. कदाचित् पैदा भी हो तो जीवे नहीं ॥ १५ ॥

अथ पुनर्भूपुत्रलाभयोगः ।

पुनर्भूपुत्रलाभयोगः १६

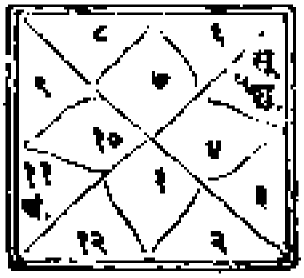

मंदस्य वर्गे सुतभावसंस्थे निशाकरस्थेऽपि च वीक्षितेऽस्मिन्दिवाकरेणोशनसा नरस्य पुनर्भवासंभवसूनुलब्धिः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शनैश्चरका वर्ग हो, उसमें चंद्रमा बैठा हो और उसको सूर्य और शुक्र देखते हो तो उस मनुष्यको द्वितीय औरतसे पुत्रलाभ होता है ॥ १६ ॥

अथ क्षेत्रजपुत्रलाभयोगः ।

शनैर्गणः सद्मनि पुत्रभावे बुधेक्षिते यो रविभूमिजाभ्याम् ।
पुत्रो भवेत्क्षेत्रभवोऽथ बौधे गणेऽपि गेहे रविजेन दृष्टः ॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शनैश्चरका षड्वर्ग हो और बुध देखता हो और सूर्य, मंगल देखते हों तो उस मनुष्यके वीर्यमें अन्य करके पुत्र पैदा होता है और जो पंचमभावमें बुधका षड्वर्ग हो उसको शनिश्चर देखता हो तो भी पूर्वोक्त फल कहना चाहिये ॥ १७ ॥

नवांशकाः पञ्चमभावसंस्था यावन्मितैः पापखगैः प्रदृष्टाः ।
नश्यंति गर्भाःखलु तत्प्रमाणाश्चेद्वीक्षितं नो शुभखेचराणाम्॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जो नवांश पंचमभावमें हो और उसको जितने पापग्रह देखते हों उस मनुष्यके उतने ही गर्भ नाशको प्राप्त होते हैं परन्तु जो शुभग्रह न देखते हों तो ॥ १८ ॥

भूनन्दनो नन्दनभावयातो जातं च जातं तनयं निहंति ।
दृष्टो यदा चित्रशिखण्डिजेन भृगोः सुतेन प्रथमोपपन्नम्॥१९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल पांचवें बैठा हो उसके जितने पुत्र पैदा होते हैं वे सब नाशको प्राप्त होते हैं और जो केतु देखता हो अथवा शुक्र देखता हो तो पहिले पैदा हुआ ही पुत्र नष्ट होता है ॥ १९ ॥

अथ रिपुभावविचारः।

वैरिव्रातः क्रूरकर्मामयानां चिंता शंका मातुलानां विचारः।
होरापारावारपारं प्रयातैरेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिंत्यम् ॥ १ ॥

छठे भावसे क्या क्या विचार करना चाहिये सो कहते हैं:—दुश्मन, क्रूर कर्म रोग, चिंता और शंका एवं मामाका विचार करना चाहिये ऐसा ज्योतिषशास्त्रके पार जानेवाले पंडित विचार करें ॥ १ ॥

दृष्टिर्युतिर्वा खलखेचराणामरातिभावेऽरिविनाशनं स्यात्।
शुभग्रहाणां प्रतिदृष्टितोऽत्र शत्रूद्गमोऽप्यामयसंभवः स्यात् ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठा भाव पापग्रहों करके दृष्ट वा युक्त हो तो शत्रुओंका तथा रोगोंका नाश होता है और जो छठा भाव शुभग्रहों करके युक्त वा दृष्ट हो तो शत्रुओंकी उत्पत्ति और रोगोंकी प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

अथ जायाभावविचारः।

रणाङ्गणे चापि वणिक्क्रियाश्च जायाविचारागमनप्रमाणम्।
शास्त्रप्रवीणैर्हि विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत् ॥१॥

अब सप्तमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये उसे कहते हैं—संग्राम, स्त्री, व्यापार, यात्राका प्रमाण इन सब बातोंको सातवें भावसे ज्योतिषी लोग विचार करें ॥ १ ॥

स्त्रीलाभयोगः।

मूर्तौ कलत्रस्य नवांशको वा द्विषड्भागस्त्रिलवः शुभानाम्।
अनेन योगेन हि मानवानां स्यादङ्गनानामचिरादवाप्तिः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न और सप्तमभावमें शुभग्रहोंका नवांश वा द्वादशांश वा द्रेष्काणका उदय हो उस मनुष्यको शीघ्र ही स्त्रीका लाभ होता है ॥ २ ॥

स्त्रीप्राप्तियोगः ३

स्त्रीहीनयोगः ३

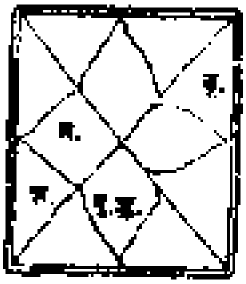

सौम्यैर्युक्तं सौम्यमसौम्यदृष्टं जायागेहं देहिनामङ्गनाप्तिम् ॥ कुर्य्यान्नूनं वैपरीत्यादभावो मिश्रत्वेन प्राप्तिकाले प्रलापः ॥ ३ ॥

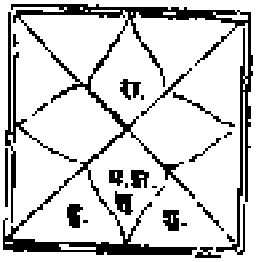

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमभाव शुभग्रहों करके युक्त हो और शुभग्रह पाप ग्रहों करके दृष्ट हो, उस मनुष्यको स्त्रीप्राप्ति होती है और जो सप्तमभाव पापग्रहों करके युक्त हो और मिश्र ग्रहों करके दृष्ट हो तो स्त्रीकी प्राप्ति होनेके समय स्त्री नहीं प्राप्त होती है ॥ ३ ॥

एकस्त्रीएकपुत्रयोगः ४

लग्नाद्व्यये वा रिपुमंदिरे वा दिवाकरेंदू भवतस्तदानीम् ॥ स्यान्मानवस्यात्मज एक एक भार्यापि चैकेति वदंति संतः ॥ ४ ॥

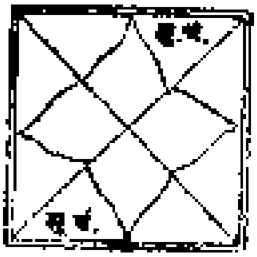

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे बारह वा छठे भावमें सूर्य चंद्रमा बैठे हों तो उस मनुष्यको एक ही स्त्री, एवं एक ही पुत्र प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

वन्ध्यापतियोग. ५

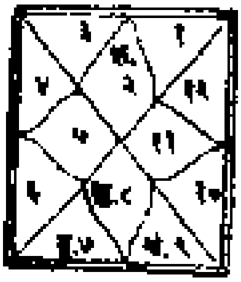

गंडांतकालेऽपि कलत्रभावे भृगोः सुते लग्नगतेऽर्कजाते । वंध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं शुभेक्षितं नो भवनं खलेन ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमभावमें गण्डान्त लग्न हो और शुक्र सातवें बैठा हो और लग्नमें शनैश्चर बैठा हो तथा सप्तमभाव शुभग्रहों करके दृष्ट न हो और सप्तमभावमें पापग्रहोंकी राशि हो तो वह मनुष्य वंध्या स्त्रीका पति होता है ॥ ५ ॥

स्त्रीपुत्रहीनयोगः ६

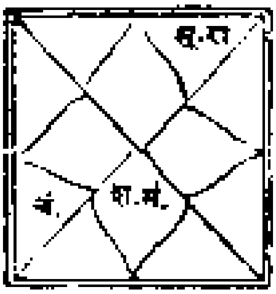

व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु पुत्रालयगे हिमांशौ । कलत्रहीनो मनुजस्तनूजैर्विवर्जितः स्यादिति वेदितव्यम् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें, सातवें स्थानमें पापग्रह बैठे हों और पंचमभावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य स्त्रीपुत्र करके हीन होता है ॥ ६ ॥

प्रसूतिकाले च कलत्रभावे यमस्य भूमीतनयस्य वर्गे ।
ताभ्यां प्रदृष्टे व्यभिचारिणी स्याद्भर्तापि तस्या व्यभिचारकर्ता ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमभावमें शनैश्चर वा मंगलका षड्वर्ग हो और शनैश्चर मंगल करके दृष्ट हो तो उसकी स्त्री व्यभिचारिणी होती है और उसका पति भी व्यभिचारी होता है ॥ ७ ॥

कलत्रहीनयोगः ८

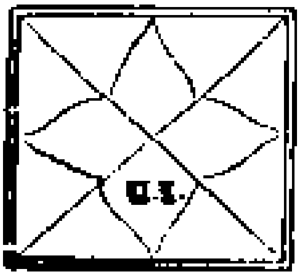

शुक्रेंदुपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ कलत्रहीनं कुरुतो नरं तौ । शुभेक्षितौ तौ वयसो विरामे कामं च रामां लभते मनुष्यः ॥८॥

स्त्रीलाभयोगः ८

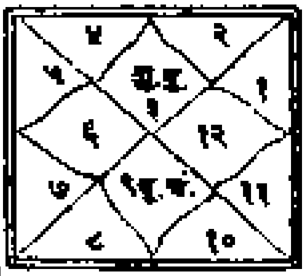

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र और बुध सातवें बैठे हों उसका विवाह नहीं होता है और पूर्वोक्त योग हो एवं शुभग्रह देखते हों तो उसको अन्त्य (वृद्ध) अवस्थामें स्त्रीका लाभ होता है ॥ ८ ॥

स्त्रीभवयोगः ९

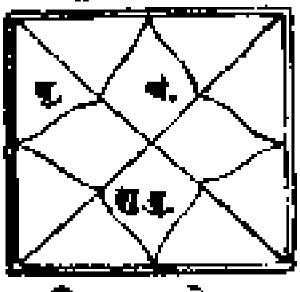

शुक्रेंदुजीवशशिजैः सकलैस्त्रिभिर्वा द्वाभ्यां कलत्रभवने च तथैककेन । एषां गृहे विषमभैरवलोकिते वा संति स्त्रियो भवनवर्गखग-स्य भावाः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र, चन्द्र, बृहस्पति और बुध चारों वा तीन, दो वा एक ग्रह सातवें बैठे हों और इन्हीं ग्रहोंकी राशि विषम सातवें बैठी हो और वही ग्रह सातमभावको देखते हों तो उतनी स्त्री कहनी चाहिये ॥ ९ ॥

कलत्रभावे च नवांशतुल्या नरस्य नार्यो ग्रहवीक्षणाद्वा ।
एकैकभौमार्कनवांशके च जामित्रभावस्थबुधार्कयोर्वा ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें जितनी संख्याके नवांशका उदय हो और जितने ग्रह देखते हों उस पुरुषके उतने ही विवाह कहना और मंगल सूर्यका नवांश सातवें हो और सूर्य बुध बैठे हों तो एक ही विवाह कहना चाहिये ॥ १० ॥

शुक्रस्य वर्गेण युते कलत्रे बह्वंगनासिर्भृगुवीक्षणेन ।
शुभान्विते सौम्यगणेऽङ्गनानां बाहुल्यमेवाशुभवीक्षणान्न ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तम भावमें शुक्र ग्रहका वर्ग हो और शुक्र देखता हो वह बहुत स्त्रियोंवाला होता है और शुभ ग्रहका वर्ग सातवें हो और शुक्र देखता हो तो भी बहुत स्त्रियोंवाला होता है और जो पापग्रह देखते हों तो विवाह नहीं होता है ॥ ११ ॥

महीसुते सप्तमभावयाते कांताविमुक्तः पुरुषस्तदा स्यात् ।
मन्देन दृष्टे म्रियतेऽपि लब्धाशुभग्रहालोकनवर्जितेऽस्मिन् ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें मंगल बैठा हो वह मनुष्य स्त्रीहीन होता है और सातवें भावको शनैश्चर देखता हो वह भी शुभग्रह नहीं देखता हो तो स्त्री प्राप्त होनेके बाद मर जाती है ॥ १२ ॥

पत्नीस्थाने यदा राहुः पापयुग्मेन वीक्षितः ।
पत्नीयोगस्तदा न स्याद्भूतापि म्रियते चिरात् ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तम भावमें राहु बैठा हो और दो पापग्रह देखते हों तो स्त्री नहीं प्राप्त होती और जो प्राप्त भी हो तो बहुत दिनोंतक नहीं जीती है ॥ १३ ॥

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमो राहुसंभवः ।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ १४ ॥

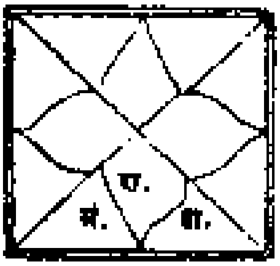

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें मंगल और सातवें राहु और आठवें शनैश्चर बैठे हों उसकी औरत नहीं जीती है ॥ १४ ॥

अथ संक्षिप्तोऽष्टमभावविचारः ।

नद्युत्तारात्यंतवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः संकटे चेति सर्वम् ।
रंध्रस्थाने सर्वदा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः ॥ १ ॥

अब अष्टम स्थानसे क्या क्या विचारना चाहिये उसे कहते हैं:–नदीका पार उतरना, अत्यन्त भयंकर स्थान, किला, शस्त्र, आयु, संकट ये सब बातें अष्टमभावसे हमेशा ज्योतिषी लोग विचारें, यह प्राचीन आचार्योंने कहा है ॥ १ ॥

अथ मरणयोगः ।

मरणयोगः २

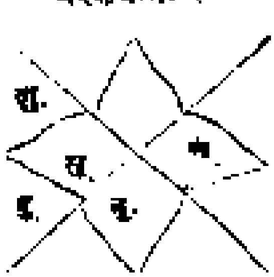

मृत्युस्थाने यदा भानुः शनिना च विलोकितः ।
यदि नो वीक्षितः सौम्यैर्मरणं तत्र निर्दिशेत् ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमस्थानमें सूर्य बैठा हो उसको शनैश्चर देखता हो और कोई शुभग्रह नहीं देखते हों तो मनुष्यका मरण कहना चाहिये ॥ २ ॥

होराविद्भिश्चाष्टमस्थानपाते नानाभेदैर्यत्फलं तत्प्रदिष्टम् ।
रिष्टाध्यायश्चापि निर्याणके वा यत्नान्नूनं प्रोच्यते तच्च सर्वम् ॥ ३ ॥

ज्योतिषशास्त्रवेत्ताओंने अष्टमस्थानके अनेक भेदों करके जो फल कहे हैं वे सब रिष्टाध्यायके विषे वा निर्याणके विषे यत्नसे निश्चय करके कहेंगे ॥ ३ ॥

अथ भाग्यभावविचारः ।

धर्मक्रियायां हि भवेत्प्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्विमलं च शीलम् ।
तीर्थप्रयाणं प्रणयः पुराणैः पुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ॥ १ ॥

अब नवमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये उसे कहते हैं:–धर्मके कामोंमें प्रवृत्ति और भाग्योदय, श्रेष्ठ शील, तीर्थोंकी यात्रा, नीति और पुराण ये सब नवमभावसे विचारने चाहिये ॥ १ ॥

विहाय सर्वं गणकैर्विचिन्त्यं भाग्यालयं केवलमत्र यत्नात् ।
आयुश्च माता च पिता च वंशो भाग्यान्वितेनैव भवंति धन्याः ॥ २ ॥

ज्योतिषी लोग सब विषयोंको छोड़कर यहां यत्नसे पहले भाग्यका विचार करें, क्योंकि भाग्यसंपन्न होनेसे मनुष्य दीर्घायु होता है और माता पिता एवं समस्त कुलवाले धन्यवाद पात्र होते हैं ॥ २ ॥

मूर्तेश्चापि निशापतेश्च नवमं भाग्यालयं कीर्तितं
तत्तत्स्वामियुतेक्षिते प्रकुरुते भाग्यस्य देशोद्भवम् ।

चेदन्यैर्विषयान्तरेऽत्र शुभदाः स्वोच्चाधिपाः सर्वदा
कुर्युर्भाग्यमलाघवेति विबला दुःखोपलब्धिं पराम् ॥ ३ ॥

जन्मलग्नसे वा चन्द्रमासे जो नवमस्थान है वह भाग्यभाव कहाता है । जो नवम भाव अपने स्वामी करके युक्त वा दृष्ट हो तो उसका अपने देशमें भाग्योदय होता है और जो नवमभावको शुभग्रह देखते हों और अपना स्वामी न देखता हो तो उसका भाग्य परदेशमें उदय होता है और जो भाग्येश अपने उच्चमें हो तो उसका हमेशा भाग्योदय होता है और जो भाग्यका स्वामी निर्बल हो और भाग्यभावको पापी ग्रह देखते हों तो दुःखसे भाग्यकी प्राप्ति होती है ॥ ३ ॥

भाग्येश्वरो भाग्यगतोऽस्ति किं वा सुखायगःसारविराजमानः।
भाग्याश्रितः कोऽस्ति विचार्य सर्वमस्त्यल्पमल्पंपरिकल्पनीयम्॥४॥

जो नवमभावका स्वामी नवममें बैठा हो अथवा केंद्र १ । ४ । ७ । १० वा त्रिकोण ५ । ९ में बैठा हो तो वह भाग्यवान् होता है, नवमेशके बलाबलसे अधिक कमन्यून भाग्य कहना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ भाग्ययोगः ।

भाग्ययोगः ५

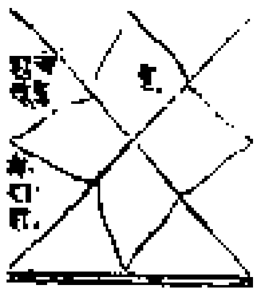

तनुत्रिसूनुपगतो ग्रहश्चेद्यो वाधिवीर्यो नवमं प्रपश्येत् । यस्य प्रसूतौ स तु भाग्यशाली विलासशीलो बहुलार्थयुक्तः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, पंचम, तीसरे ग्रह बैठे हों और अधिक बल करके नवम भावको देखते हों तो वह मनुष्य भाग्यवान्, विलासमें शीलवाला एवं बहुतधनसे सम्पन्न होता है ॥ ५ ॥

कुलावतंसयोगः ६

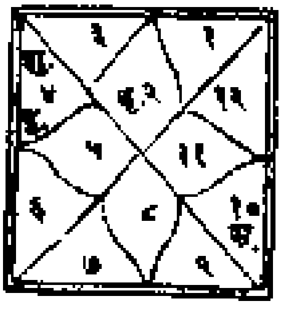

चेद्भाग्यगामी खचरः स्वगेहे सौम्येक्षितो यस्य नरस्य सूतौ । भाग्याधिशाली स्वकुलावतंसो हंसो यथा मानसराजमानः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जो भाग्यभवनमें अपने घरका ग्रह बैठा हो और शुभग्रह करके दृष्ट हो तो वह मनुष्य भाग्यवान् अपने कुलमें प्रकाशमान होता है, जैसे हंस मानससरोवरमें शोभा पाता है ॥६॥

मंत्रयोग: ७

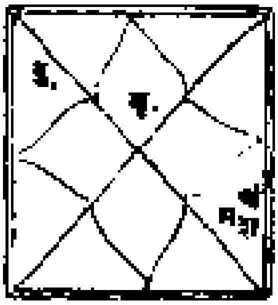

पूर्णेन्दुयुक्तौ रविभूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्त्वसमन्वितौ च । वंशानुमानात्सचिवं नृपं वा कुर्वंति ते सौम्यदृशा विशेषात् ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्ण चंद्रमा युक्त सूर्य मंगल नवममें बलसहित बैठे हों वह मनुष्य अपने वंशके समान राजाका मंत्री या राजा होता है जो नवमभावको शुभग्रह देखते हों ॥ ७ ॥

लक्ष्मीयोग: ८

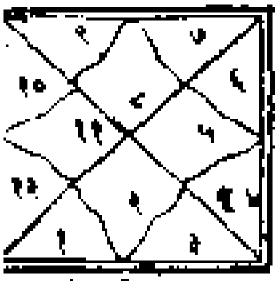

स्वोच्चोपगो भाग्यगृहे नभोगो नरस्य योगः कुरुते सुलक्ष्म्याः । सौम्येक्षितोऽसौ यदि सौम्यपालं दंतावलोत्कृष्टविलासशीलः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उच्चराशिगत कोई ग्रह नवमभावमें बैठा हो तो उस मनुष्यका लक्ष्मीयोग करता है और नवमभावको शुभग्रह देखते हों तो वह मनुष्य हाथियोंके विलासको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ दशमभावविचारः ।

व्यापारमुद्रानृपमानराज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव ।
महत्पदाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥ १ ॥

अब दशमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये सो कहते हैं—व्यापार, रुपया, राजमान और राजकीय प्रयोजन और पिता और बड़े पदकी प्राप्ति ये सब निश्चय करके दशमभावसे विचारने चाहिये ॥ १ ॥

समुदितमृषिवर्यैर्मानवानां प्रयत्ना-
दिह हि दशमभावे सर्वकर्मप्रकामम् ।
गगनगपरिदृष्ट्या राशिखेटस्य भावैः
सकलमपि विचिन्त्यं सत्त्वयोगात्सुधीभिः ॥ २ ॥

प्राचीन ऋषियोंने कहा है—दशमभावसे यत्नपूर्वक सम्पूर्ण कर्मोंका साधन ग्रहोंकी दृष्टि राशिग्रहके भाव करके सम्पूर्ण बलाबलसे पंडितजन विचार करें ॥ २ ॥

तनोः सकाशाद्दशमे शशांके वृत्तिर्भवेत्तस्य नरस्य नित्यम् ।
नानाकलाकौशलवाग्विलासैः सर्वोद्यमैः साहसकर्मभिश्च ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे चंद्रमा दशमभावमें बैठा हो तो उस मनुष्यकी वृत्ति अनेक कलाओंकी कुशलता करके और वाग्विलास और सर्वोत्तम साहस कर्म करके धन पैदा करनेकी होती है ॥ ३ ॥

तनोः शशांकाद्दशमे बलीयान्स्याज्जीवनं तस्य खगस्य वृत्त्या।
बलान्विताद्वर्गपतेस्तु यद्वा वृत्तिर्भवेत्तस्य खगस्य पाके ॥ ४ ॥

और जन्मलग्नसे वा चंद्रमासे जो दशममें ग्रह बलवान् बैठा हो तो उस मनुष्यकी वृत्ति और आजीविका उसी ग्रहके समान कहना अथवा षड्वर्गपति जो बलवान् हो तो उसी ग्रहकी वृत्तिको उसकी दशामें कहना चाहिये ॥ ४ ॥

दिवामणिः कर्मणि चन्द्रतन्वोर्द्रव्याण्यनेकोद्यमवृत्तियोगात्।
सत्त्वाधिकत्वं नरनायकत्वं पुष्टत्वमङ्गे मनसः प्रसादः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा वा लग्नसे दशममें सूर्य बैठा हो तो वह मनुष्य अनेक उद्यम करके अनेक योगोंमें अनेक धनोंको प्राप्त करता है और जो सूर्य बलवान् हो तो वह राजा पुष्टशरीर और प्रसन्नमन होता है ॥ ५ ॥

लग्नेन्दुतः कर्मणि चेन्महीजः स्यात्साहसः क्रौर्यनिषादवृत्तिः।
नूनं नराणां विषयाभिसक्तिर्दूरे निवासः सहसा कदाचित् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे वा चंद्रमासे दशमभावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य साहस करके क्रोधसे निषादवृत्ति करके धनलाभ करता है और वह मनुष्य विषयोंमें आसक्त, परदेशमें वास करनेवाला साहसी होता है ॥ ६ ॥

लग्नेन्दुभ्यां कर्मगो रौहिणेयः कुर्याद्द्रव्यं नायकत्वं बहूनाम्।
शिल्पेऽभ्यासः साहसं सर्वकार्ये विद्वद्वृत्त्या जीवितं मानवानाम् ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमासे दशमभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य अनेक धन और अनेक पुरुषोंका स्वामी, शिल्पविद्यामें अभ्यास करनेवाला, साहसी, सब कामोंमें विद्वानोंकी वृत्ति करके आजीविका करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

विलग्नतः शीतमयूखतो वा माने मघोनः सचिवो यदा स्यात्।
नानाधनाभ्यागमनानि पुंसां विचित्रवृत्त्या नृपगौरवं च ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमासे दशमभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य अनेक प्रकारसे धनका लाभ करनेवाला, विचित्र वृत्ति करके राजगौरवको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

होरायाश्च निशाकराद्भृगुसुतो मेषूरणे संस्थितो
नानाशास्त्रकलाकलापविलसद्वृत्त्या हि सोऽजीवनम्।
दाने साधुमतिं तथा विनयतां कामं धनाभ्यागमं
मानं मानवनायकादविरलं शीलं विशालं सदा॥ ९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमासे दशममें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य अनेक शास्त्रकी कलाओंके समूहकी विलासवृत्तिसे आजीविका करनेवाला, दान करनेमें साधुबुद्धि, उत्तम शील, काम करके धनको प्राप्त, राजासे प्रतिष्ठा पानेवाला, श्रेष्ठ और विशाल शीलयुक्त होता है ॥ ९ ॥

होरायाश्च सुधाकराद्रविसुतः सूतौ खमध्यस्थितो
वृत्तिं हीनतरां नरस्य कुरुते कार्श्यं शरीरे सदा।
खेदं वादभयं च धान्यधनयोर्हीनत्वमुच्चैर्मन-
श्चित्तोद्वेगसमुद्भवेन चपलं शीलं च नो निर्मलम्॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे वा चन्द्रमासे शनैश्चर दशम बैठा हो वह मनुष्य हीनवृत्ति करनेवाला, दुर्बल रहे, खेदयुक्त, विवाद करनेवाला, धन धान्य करके हीन, चित्तमें अत्यन्त उद्वेग पैदा होनेसे चपल और शील निर्मल नहीं होता है ॥ १० ॥

सूर्यादिभिर्व्योमचरैर्विलग्नादिंदोः स्वपाके क्रमशो विकल्प्या।
अर्थोपलब्धिर्जनकाज्जनन्याः शत्रोर्हिताद्भ्रातृकलत्रभृत्यात् ११

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चन्द्रमासे सूर्य दशममें बैठा हो तो पितासे धनलाभ कहना और चन्द्रमा दशममें हो तो मातासे धनलाभ कहना चाहिये और मंगल दशममें बैठा हो तो शत्रुसे धनलाभ कहना, बुध दशममें बैठा हो तो मित्रसे धनलाभ कहना और बृहस्पति हो तो भाईसे धनलाभ कहना, शुक्र दशममें हो तो नौकरसे धनलाभ कहना चाहिये ॥ ११ ॥

रवीन्दुलग्नास्पदसंस्थितांशे पतेस्तु वृत्त्या परिकल्पयेत्ताम्।
सदौषधोर्णादितृणैः सुवर्णैर्दिवामणिर्वृत्तिविधिं विदध्यात्॥ १२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्रमा, लग्न इन तीनोंमें जो बली हो उस दशमभावमें जो नवांशका उदय हो उस नवांशपतिसे वृत्तिका विचार करना चाहिये जो दशमस्थित नवांशपति सूर्य हो तो श्रेष्ठ औषधी और ऊर्णा, तृण, सुवर्ण करके वृत्ति कहना ॥ १२ ॥

नक्षत्रनाथोऽत्र कलत्रतश्च जलाशयोत्पन्नकृषिक्रियाद्यैः ।
कुजोऽग्निसत्साहसधातुशस्त्रैः सोमात्मजः काव्यकलाकलापैः १३

जो दशमनवांशपति चन्द्रमा हो तो स्त्रीकरके, जलाशय करके उत्पन्न खेती करके आजीविका कहनी चाहिये और जो मंगल नवांशपति हो तो साहस और धातु शस्त्र करके आजीविका कहनी और बुध नवांशपति हो तो काव्यकी कलाओंके समूह करके आजीविका करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

जीवो द्विजान्मोचितदेवधर्मैः शुक्रो महिष्यादिकरौप्यरत्नैः ।
शनैश्चरो नीचतरप्रकारैः कुर्यान्नराणां खलु कर्मवृत्तिम् ॥ १४ ॥
कर्मस्वामी ग्रहो यस्य नवांशोपरि वर्तते ।
तत्तुल्यकर्मणो वृत्तिं निर्दिशंति मनीषिणः ॥ १५ ॥

और जो दशमनवांशपति बृहस्पति हो तो ब्राह्मणों करके श्रेष्ठ धर्म और देवाराधन करके वृत्ति कहना और शुक्र नवांशपति हो तो महिषी, चांदी तथा रत्नों करके आजीविका करनेवाला होता है और शनैश्चर हो तो नीचकर्मोंसे धनकी आजीविका करता है ॥ १४ ॥ दशमभावका स्वामी जिस नवांशमें बैठा हो उसीके समान कर्मोंकरके अपनी आजीविका करनेवाला होता है यह बुद्धिमानोंने कहा है ॥ १५ ॥

मित्रारिगेहोपगतैर्नभोगैस्ततस्ततोऽर्थः परिकल्पनीयः ।
तुंगे पतंगे स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात् ॥ १६ ॥
लग्नार्थलाभोपगतैः सवीर्यैः शुभैर्भवेद्बहुधनसौख्यमुच्चैः ।
इतीरितं पूर्वमुनिप्रवर्यैर्बलानुमानात्परिचिंतनीयम् ॥ १७ ॥

जो मित्र शत्रुके घरमें ग्रह बैठे हों तो उन्हींसे धनलाभ कहना और उच्चमें वा स्वक्षेत्र मूलत्रिकोणमें सूर्य हो तो अपने बाहुबलसे धन पैदा करता है ॥ १६ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, धन लाभस्थानोंमें शुभग्रह बलसहित बैठे हों वह मनुष्यके धनी सौख्यसहित होता है यह पूर्वाचार्योंने कहा है, ग्रहोंके बलसे विचार कर फल कहना १७

अथ लाभभावविचारः ।

गजाश्वहेमांबररत्नजालमान्दोलिकामंगलमण्डनानि ।
लाभः किलैषामखिलं विचार्यमेतत्तु लाभस्य गृहे ग्रहज्ञैः ॥ १ ॥

अब ग्यारहवें भावसे क्या क्या विचार करना चाहिये—हाथी, घोड़ा, सोना, वस्त्र, रत्न, पालकी, मंगल, मकान और लाभ ये सब बातें निश्चय कर ग्यारहवें घरमें ज्योतिषी विचारे ॥ १ ॥

सूर्येण युक्ते च विलोकिते वा लाभालये तस्य गणोऽत्र चेत्स्यात् ।
भूपालतश्चोरकुलात्कलेर्वा चतुष्पदादेर्बहुधा धनाप्तिः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य करके युक्त वा दृष्ट ग्यारहवां भाव हो अथवा ग्यारहवें भावके षड् वर्गमें हो तो राजा वा चोर कलहसे चौपायों करके बहुत प्रकार करके धनकी प्राप्ति कहना चाहिये ॥ २ ॥

चंद्रेण युक्तं च विलोकितं वा लाभालयं चंद्रगणाश्रितं चेत् ।
जलाशयस्त्रीगजवाजिवृद्धिः पूर्णे भवेत्क्षीणतरे विलोमम् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवां भाव चंद्रमा करके युक्त वा दृष्ट हो और चंद्रमाका षड्वर्ग हो तो वह मनुष्य जलाशय, स्त्री, गज (हाथी), घोडोंकी वृद्धि करता है, जो पूर्णचंद्रमा हो तो और क्षीणचंद्रमासे पूर्वोक्त पदार्थोंका नाश कहना ॥ ३ ॥

लाभालयं मङ्गलयुक्तदृष्टं प्रकृष्टभूषामणिहेमलब्धिः ।
विचित्रयात्रा बहुसाहसं स्यान्नानाकलाकौशलबुद्धियोगैः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवां भाव मङ्गल करके युक्त वा दृष्ट हो और मंगलका षड्वर्ग हो तो आभूषण, सोनाकी प्राप्ति और विचित्र यात्रा, बहुत साहस और अनेक कलाओंमें कुशलता बुद्धि करके होती है ॥ ४ ॥

लाभे सौम्यगणाश्रिते सति युते सौम्येन संवीक्षिते
नानाकाव्यकलाकलापविधिना शिल्पेन लिप्या सुखम् ।
युक्तिर्द्रव्यमयी भवेद्धनचयः सत्साहसैरुद्यमैः
सख्यं चापि वणिग्जनैर्बहुतरं क्लीबैर्नृणां कीर्तितम् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें बुध बैठा हो वा युक्त हो और बुधका षड्वर्ग हो तो वह मनुष्य अनेक काव्योंके समूहसे और शिल्प करके लिखनेसे बहुत सुख बन जाता है, मिले हुए पदार्थों करके धनका संग्रह करनेवाला, श्रेष्ठ साहस और उद्यम करके बनियोंसे मित्रता करके अथवा नपुंसकोंसे धनके लाभवाला कहना चाहिये ॥ ५ ॥

यज्ञक्रियासाधुजनानुयातो राजाश्रितोत्कृष्टरूपो नरः स्यात् ।
द्रव्येण हेमप्रचुरेण युक्तो लाभे गुरोर्वर्गयुगीक्षितं चेत् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति ग्यारहवें भावमें बैठा हो वा युक्त हो और बृहस्पतिका षड्वर्ग हो तो वह मनुष्य यज्ञक्रियासे, सत्पुरुषोंके संगसे, राजाके

आपससे बहुत धन पैदा करनेवाला, अत्यन्त कृपालु और द्रव्य सुवर्ण करके सहित होता है ॥ ६ ॥

लाभालये भार्गववर्गयातं शुक्रेक्षितं वा यदि भार्गवेण ।
वेश्याजनैर्वापि गमागमैर्वा सद्रौप्यमुक्ताप्रचुरस्वलब्धिः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें शुक्रका षड्वर्ग हो और शुक्र करके युक्त वा दृष्ट हो तो उसको स्त्रियों करके परदेश जाने व आनेसे श्रेष्ठ चांदी, मोती और बहुत धन प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

लाभवेश्मनि शनीक्षितयुक्ते तद्गणेन सहिते सति पुंसाम् ।
नीललोहमहिषीगजलाभो ग्रामवृन्दपुरगौरवमिश्रः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें शनैश्चरका षड्वर्ग हो, शनैश्चर करके युक्त वा दृष्ट हो तो उस मनुष्यको नील, लोहा, महिषी, हाथी (घोड़ों) का लाभ और ग्रामोंके समूहसे बड़े गौरव और धनका लाभ कहना चाहिये ॥ ८ ॥

युक्तेक्षिते लाभगृहे सुखाल्ये वर्गे शुभानां समवस्थितेऽपि ।
लाभो नराणां बहुधाथवास्मिन्सर्वग्रहैर्युक्तनिरीक्ष्यमाणे ॥ ९ ॥

जो लाभस्थान शुभ ग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट हो और शुभग्रहोंका षड्वर्ग हो और सब ग्रह लाभ भावमें बैठे हों अथवा देखते हों तो बहुत प्रकारसे धनलाभ होता है ॥ ९ ॥

अथ व्ययभावविचारः ।

हानिर्दानं व्ययश्चापि दण्डो निर्बंध एव च ।
सर्वमेतद्व्ययस्थाने चिंतनीयं प्रयत्नतः ॥ १ ॥

व्ययभावसे क्या क्या विचारना चाहिये–हानि और दान, खर्च, दंड, बंधन यह सब बारहें स्थानसे विचारना चाहिये ॥ १ ॥

द्रव्यहरणयोगः २

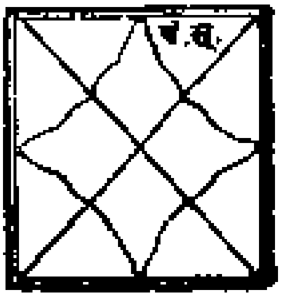

व्ययालये क्षीणकरः कलावान्सूर्योऽथवा द्वाव-
पि तत्र संस्थौ । द्रव्यं हरेद्भूमिपतिस्तु
तस्य व्ययालये वा कुजदृष्टियुक्ते ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें घरमें क्षीण चंद्रमा अथवा सूर्य चंद्रमा दोनों बैठे हों और मंगल देखता हो तो उसका धन राजा हरण करता है ॥ २ ॥

धननाशयोगः १

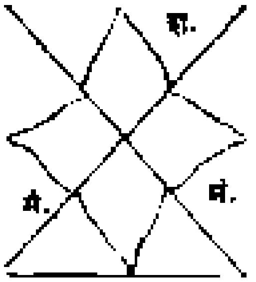

पूर्णेन्दुसौम्येज्यसिता व्ययस्थाः कुर्वन्ति संस्था धनसंचयस्य । प्रान्त्यस्थिते सूर्यसुते कुजेन युक्तेक्षिते वित्तविनाशनं स्यात् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें भावमें पूर्ण चंद्रमा और बुध, बृहस्पति, शुक्र, बारहें बैठे हों तो वह धनका संग्रह करनेवाला होता है और जो बारहें शनैश्चर बैठा हो और मंगल करके दृष्ट हो, वा युक्त हो तो धनका नाश कहना चाहिये ॥ १ ॥

अथ भावफलोपयुक्तत्वेन रिष्टाध्यायो निरूप्यते ।

पुत्रस्त्रीनाशयोगः १

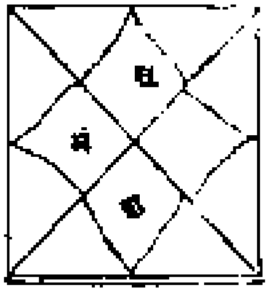

लग्नेन्द्वोश्च कलत्रपुत्रभवने स्वस्वामिसौम्यैर्ग्रहैर्युक्ते वाथ विलोकिते खलु तदा तत्प्राप्तिरावश्यकी । लग्ने चेत्सविता स्थितो रविसुतो जायाश्रितो मृत्युकृज्जायायाश्च महीसुतः सुतगतः कुर्यात्सुतानां क्षतिम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे वा चंद्रमासे सातवां पंचमभाव अपने स्वामी करके वा शुभग्रह करके युक्त वा दृष्ट हों तो पुत्र वा स्त्रीप्राप्ति अवश्य कहना चाहिये और जो लग्नमें सूर्य बैठा हो और शनैश्चर सातवें बैठा हो तो स्त्रीकी मृत्यु कहना चाहिये और जो पंचमभावमें मंगल बैठा हो तो पुत्रोंका नाश करता है ॥ १ ॥

स्त्रीनाशयोगः २

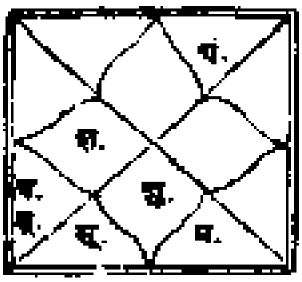

असौम्यमध्यस्थितभार्गवश्चेत्पातालरंध्रे खलखेटयुक्ते । सौम्यैरदृष्टे भृगुजे च पत्नीनाशो भवेत्पाशहुताशनाद्यैः ॥ २ ॥

जो पापग्रहोंके बीचमें शुक्र बैठा हो और चतुर्थ और अष्टम भावमें पापग्रह बैठे हों और शुभग्रहों करके शुक्र अदृष्ट हो तो उसकी स्त्री फांसी करके वा अग्नि आदि करके मरती है ॥ २ ॥

दंपतीकाणयोगः २ — स्त्रीहीनयोगः ३

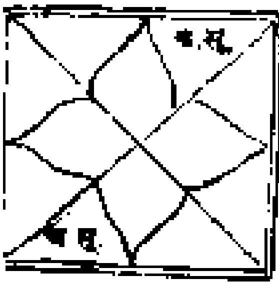

दिवाकरेन्दू व्ययवैरियातौ जायापती चैकविलोचनौ स्तः ॥ कलत्रधर्मात्मजगौ सिताकौं पुमान्भवेत्क्षीणकलत्र एव ॥३॥

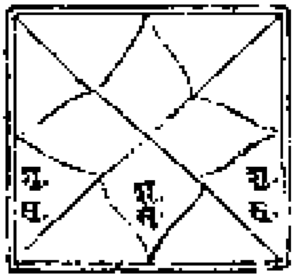

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा बारह या छठे बैठे हों वह स्त्री पति दोनों काणे होते हैं और जो सप्तम, नवम, पंचम भावोंमें शुक्र सूर्य बैठे हों तो वह मनुष्य स्त्रीहीन होता है ॥ ३ ॥

भसंधियाते च सिते स्मरस्थे तनौ प्रयत्नेन तु भानुसूनौ ।
वंध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं सुतालयं नो शुभदृष्टयुक्तम् ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र राशिकी संधिमें बैठा हो और लग्नमें शनैश्चर बैठा हो और पंचमभावमें कोई शुभग्रह नहीं बैठा हो, न देखता हो तो वह मनुष्य वांझस्त्रीका पति होता है ॥ ४ ॥

स्त्रीपुत्रहीनयोगः ५

क्रूराश्च होरास्मररिःफयाताः सुतालये हीनबलः कलावान् । एवं प्रसूतौ किल यस्य योगो भवेत्स भार्यातनयैर्विहीनः ॥ ५ ॥

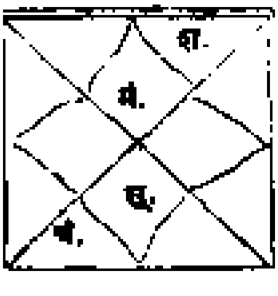

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह लग्न, सप्तम, व्ययभावमें बैठे हों और पंचममें हीनबली चंद्रमा बैठा हो ऐसे योगमें उत्पन्न मनुष्य स्त्री पुत्र करके हीन होता है ॥ ५ ॥

पुत्रभार्याहीनयोगः ६ — स्त्रीसौख्ययोगः ६

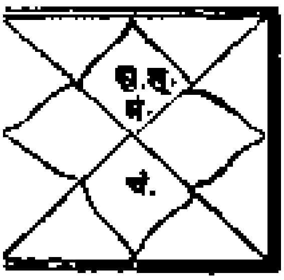

द्यूनेऽर्कजारौ सभृगू शशांकादपुत्रभार्यं कुरुतो नरं तौ । स्यातां नृनार्योश्च सगौ स्मरस्थौ सौम्ये सितौ तौ शुभदौ नृनार्योः ६

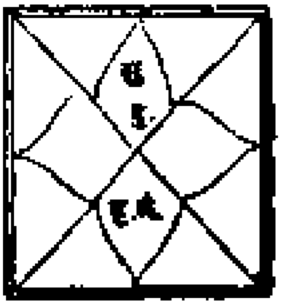

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमासे सातवें स्थानमें सूर्य, मंगल, शुक्र बैठे हों वह मनुष्य स्त्री पुत्र करके हीन होता है, जो सप्तम भावमें पुरुषग्रह बैठे हों और शुभग्रह देखते हों तो पुरुषको स्त्रीका सौख्य कहना और जो स्त्रीके सातवें स्त्रीग्रह बैठे हों और शुभग्रह देखते हों तो स्त्रीको पुरुषका सुख होता ॥ ६ ॥

अथ व्यभिचारियोगः ।

परस्त्रीरतयोगः ७ | उभयव्यभिचारियोगः ७

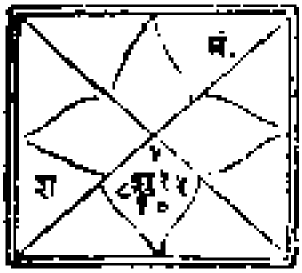

सितेऽस्तयाते शनिभौमवर्गे भौमार्कदृष्टे परदारगामी । मंदारचन्द्रा यदि संयुताः स्युः पौंश्चल्यसक्तौ रमणीनरौ स्तः ॥७॥

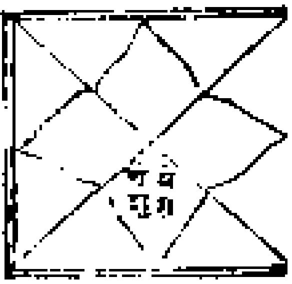

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र सातवें बैठा हो, मकर, कुंभ, मेष, वृश्चिकराशिमें और उसको मंगल शनि देखते हों तो वह मनुष्य पराई स्त्रीमें रत रहता है और जो सातवें भावमें शनैश्चर, चंद्रमा, मंगल बैठे हों और शुक्र करके युक्त हों तो वे स्त्री पुरुष दोनों व्यभिचारी होते हैं ॥ ७ ॥

परस्परांशोपगतौ रवीन्दू रोषामयं तौ कुरुतो नराणाम् ।
एकैकगेहोपगतौ तु तौ वा तमेव रोगं कुरुतो नितान्तम् ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा परस्पर नवांशमें बैठे हों तो वे स्त्री पुरुष दोनों क्रोधी होते हैं और केवल सूर्य चंद्रमाके नवांशमें बैठा हो तो पुरुष रोगी, क्रोधी होता है और केवल चन्द्रमा सूर्यके नवांशमें बैठा हो तो स्त्री रोगिणी होती है ॥ ८ ॥

अन्धयोगः ९ | अन्धयोगः ९

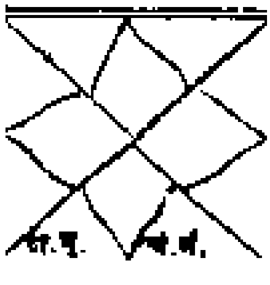

मंदावनीसुनुरवीन्दवश्चेद्रन्ध्रारिवित्तव्ययभावसंस्थाः । आंध्यं भवेत्सारसमन्वितस्य खेदस्य दोषात्सुकृतस्य मुक्त्वा ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर, मंगल, सूर्य, चंद्रमा सातवें, छठे, दूसरे, बारहवें बैठे हों वह मनुष्य अन्धा होता है और बलसहित हों तो ग्रहके योगसे पुरुष अन्धा होता है ॥ ९ ॥

मृगालिगोकर्कटकास्त्रिकोणे प्रसूतिकाले खलखेटयुक्ताः ।
निरीक्षिता वा जनयंति जातं कुष्ठेन युक्तं प्रवदंति संतः ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर, वृश्चिक, कर्क, वृष यह राशि नवम, पंचममें बैठे हों वा पापग्रह देखते हों वा युक्त हों तो वह मनुष्य कुष्ठरोगवाला होता है ॥ १० ॥

कर्णनाशयोगः १०

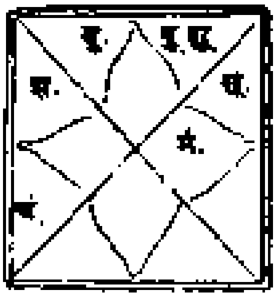

मंदार्कचंद्रा
वीक्षिताश्चेत् कर्णप्रणाशं जनयंति नूनं स्मर-
स्थितास्ते दशनाभिघातम् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर सूर्य चन्द्रमा तीसरे, पंचम, ग्यारहें, नवममें बैठे हों और कोई शुभग्रह न तो साथ हो न देखता हो तो उस मनुष्यके कर्ण नष्ट होते हैं और पूर्वोक्त योग सातवें हो तो उसके दांतोंका नाश होता है ॥ ११ ॥

पिशाचग्रस्तभावयोगः १२

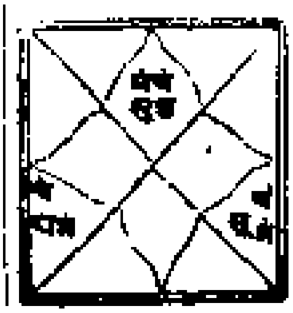

ग्रस्ते विधौ लग्नगताश्च पापास्त्रिकोणगा जन्मपि शाचकस्य । ग्रस्ते विधौ लग्नगते तथैव नेत्रोपघा- तः खलु कल्पनीयः ॥१२॥

नेत्रोपघातयोगः १२

मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा पापग्रहोंके साथ बैठा हो और लग्न, पंचम, नवममें पा[illegible] बैठे हों तो वह पिशाचग्रस्तभावाला होता है और जो पापग्रहयुक्त चन्द्रमा लग्नमें बैठा हो तो नेत्रोंका विनाश कहना चाहिये ॥ १२ ॥

वातरोगयोगः ११ शीर्षविकारयोगः १२

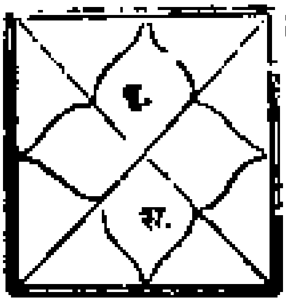

लग्नस्थिते देवगुरौ द्युनेऽस्ते शनौ च वाताधिकता मिताऽलम् । जीवे विलग्ने ऽवनिनन्दनेऽस्ते महोद्धतः स्यात्पुरुषो विशेषात् ॥१३॥

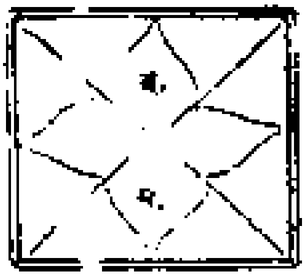

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें बृहस्पति व सातवें शनैश्चर बैठा हो तो उस मनुष्यके शरीरमें वातरोग होता है और बृहस्पति लग्नमें और मंगल सातवें बैठा हो तो वह मनुष्य शीर्षविकारवाला होता है ॥ १३ ॥

वाताधिक्ययोगः १४ [illegible]धिक्ययोग १४

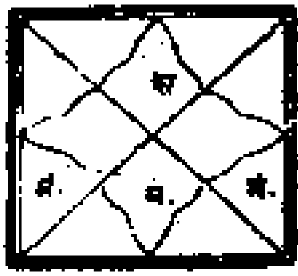

स्मरे त्रिकोणे धरणी-भूजे शनौ तनौ वा पवन-प्रकोपः । क्षीणेन्दुमन्दौ व्ययभावयातौ तदापि वाताधिकतां [illegible] ॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें, नवम, पंचममें मंगल बैठा हो और शनैश्चर लग्नमें बैठा हो तो वातविकार मनुष्यको कहना और क्षीणचन्द्रमा शनैश्चर बारहवें बैठा हो तो भी वातरोगकी अधिकता कहनी चाहिये ॥ १४ ॥

[illegible]योग १५ [illegible]योग १५

[illegible]

[illegible] ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा शुक्र पापग्रहों सहित द्वितीय सप्तम चतुर्थमें बैठे हों वह मनुष्य वंशनाश करनेवाला होता है और केंद्रमें शनैश्चर बैठा हो, बुधके द्रेष्काणमें और बुध करके दृष्ट हो तो शिल्पी होता है, जिसके बारहें बृहस्पति सूर्यके नवांशमें बैठा हो वह दासी करके सहित होता है और जिसके सातवें सूर्य, चन्द्रमा बैठे हों और शनिश्चर करके दृष्ट हों तो वह मनुष्य नीच होता है ॥ १५ ॥

वयो राशिं स्वनक्षत्रमेकीकृत्य पृथक्पृथक् ।
द्विचतुस्त्रिगुणं कृत्वा सप्ताष्टरसभाजितम् ॥ १६ ॥
आद्यन्तयोर्भवेद्दुःखी मध्यशून्ये धनक्षयः ।
स्थानत्रयेऽशेषं तु मृत्युः सशेषे वै जयः ॥ १७ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भावो-
पयोगिरिष्टाध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥

उमर, राशि और जन्मनक्षत्र इन तीनोंके अंकोंको एकत्रित कर अलग अलग तीन जगह स्थापित करना । पहिली जगहमें दोसे गुणे, दूसरी जगहमें चारसे गुणे और तीसरी जगहमें तीनसे गुणे । पहिली जगहके गुणे अंकोंमें सातका भाग देवे, दूसरी जगहके अंकोंमें आठका भाग देवे और तीसरी जगहके अंकोंमें छः का भाग देवे ॥ १६ ॥ जो पहिले और अन्तके गुणे हुए अंकोंमें शून्य आवे तो दुःख कहना चाहिये, बीचके अंकमें शून्य आवे तो धनका क्षय कहना चाहिये और जो तीन स्थानोंमें शून्य आवें तो उसी वर्षमें मृत्यु कहना चाहिये और तीनों जगह अंक शेष रहे तो उस वर्षमें जय कहना चाहिये ॥ १७ ॥

इति श्रीबरेलीनिवासिज्योतिर्विद्पण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटी-
कायां भावोपयुक्तारिष्टाध्यायः ॥ २ ॥

श्रीः ।

अथ रव्यादिग्रहभावफलाध्यायप्रारंभः ।

अथ लग्नभावस्थितफलम् ।

लग्नेऽर्केऽल्पकचः क्रियालसतनुः क्रोधी प्रचण्डोन्नतः
मानी लोचनरूक्षरुक्कर्कशतनुः शूरोऽक्षमी निर्घृणः ।
पुष्पाक्षः शशिभे क्रिये स्थितिहरः सिंहे निशान्धः पुमा-
न्दारिद्र्योपहतो विनष्टतनयः संस्थस्तुलासंज्ञिके ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य थोड़े केशवाला, काम करनेमें आलसी, बड़ा क्रोधी, ऊंचा शरीर, खुजली रोगसहित नेत्रोंका रोगी, कर्कश शरीरवाला, शूर वीर, क्षमारहित और निर्दय होता है। जिसके कर्कराशिवर्ती सूर्य लग्नमें हो उसके कमल सरीखे नेत्र होते हैं और मेषराशिवर्ती सूर्य हो तो न्यायमार्गकी स्थितिका हरण करता है और सिंहराशिवर्ती सूर्य हो तो उसको रतौंधी आती है और तुलाराशिवर्ती सूर्य हो तो वह मनुष्य दरिद्री व पुत्रहीन होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितसूर्यफलम् ।

धनसुतोत्तमवाहनवर्जितो हतमतिः सुजनोज्झितसौहृदः ।
परगृहोपगतो हि नरो भवेद्दिनमणौ द्रविणे यदि संस्थितः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य धन, पुत्र और अच्छी सवारी करके रहित, बुद्धिनष्ट, मित्रतासे हीन और पराये घरमें वास करता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितसूर्यफलम् ।

प्रियंवदः स्याद्धनवाहनाढ्यः सुकर्मचित्तोऽनुचरान्वितश्च ।
मितानुजः स्यान्मनुजो बलीयान्दिनाधिनाथे सहजेऽपि संस्थे ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य मीठी वाणी बोलनेवाला, धन और वाहनों करके सहित, अच्छे कामोंमें मनको लगानेवाला, नौकरों करके सहित, थोड़े भाइयोंवाला और अधिक बलवान् होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितसूर्यफलम् ।

सौख्येन यानेन धनेन हीनं गतस्य चित्तोपहतप्रसूतम् ।
बहुप्रवासं कुरुते कुवासं पातालयाती नलिनीविलासी ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें सूर्य स्थित हो वह मनुष्य सौख्य और सवारी तथा धनकरके हीन, चित्तमें भ्रम करनेवाला और एक जगह नहीं वास करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितसूर्यफलम् ।

स्वल्पापत्यं शैलदुर्गेशभक्तं सौख्यैर्मुक्तं सत्क्रियार्थैर्वियुक्तम् ।
भ्रान्तस्वान्तं मानवं हि प्रकुर्यात्सूनुस्थाने भानुमान्वर्तमानः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य थोडी सन्तानवाला, पार्वती और शिवका भक्त, सौख्यरहित, अच्छे कर्मों तथा धन करके हीन और भ्रमित चित्तवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावस्थितसूर्यफलम् ।

शश्वत्सौख्येनान्वितः शत्रुहंता सत्त्वोपेतश्चारुयानो महौजाः ।
पृथ्वीभर्तुः स्यादमात्यो हि मर्त्यः शत्रुक्षेत्रे मित्रसंस्था यदि स्यात् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य निरन्तर सौख्यसहित, वैरियोंको मारनेवाला, बलवान्, अच्छे रथ वा सवारी करके सहित, बहुत तेजवान् और राजाका मंत्री होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितसूर्यफलम् ।

श्रिया विमुक्तो हतकायकान्तिर्भयामयाभ्यां सहितः कुशीलः ।
नृपप्रकोपातिकृशो मनुष्यः सीमंतिनीसद्मनि पद्मिनीशे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें सूर्य बैठा हो तो वह मनुष्य धनहीन देहकी शोभा करके रहित भय और रोगों करके सहित, दुष्ट स्वभाववाला, राजाके कोपकरके दुःखको प्राप्त और कृश होता है ॥ ७ ॥

अथ अष्टमभावस्थितसूर्यफलम् ।

नेत्राल्पत्वं शत्रुवर्गाभिवृद्धिर्बुद्धिभ्रंशः क्रुद्धस्यातिरोषः ।
अर्थाल्पत्वं कार्श्यमङ्गे विशेषादायुःस्थाने पद्मिनीप्राणनाथे ॥८॥

जिस मनुष्यके अष्टमभावमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य छोटे नेत्रवाला वा मन्द दृष्टिवाला, शत्रुवर्गकी वृद्धिसहित, भ्रष्टबुद्धि, बडा क्रोधी, थोडे धनवाला और विशेषकरके दुर्बल देहवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितसूर्यफलम् ।

धर्मकर्मविरतश्च सन्मतिः पुत्रमित्रजसुखान्वितः सदा ।
मातृवर्गविषमो भवेन्नरस्त्रित्रिकोणभवने दिवामणौ ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य धर्मकर्ममें तत्पर, श्रेष्ठ बुद्धिवाला, पुत्र और मित्रोंके द्वारा हमेशा सुखी और मातृपक्षी लोगोंसे वैर करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितसूर्यफलम् ।

सद्बुद्धिवाहनधनागमनानि नूनं भूपप्रसादसुतसौख्यसमन्वि-
तानि । साधूपकारकरणं मणिभूषणानि मेषूरणे दिनमणिः
कुरुते नराणाम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके दशमभावमें सूर्य बैठा हो तो यह निश्चय जानिये कि वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवाला, श्रेष्ठवाहन और धनसे संपन्न, राजाकी कृपा और पुत्रोंके सौख्यसहित, साधुओंका उपकार करनेवाला और मणियोंकरके युक्त आभूषणोंवाला होता है॥१०॥

अथ एकादशभावस्थितसूर्यफलम् ।

गीतिप्रीतिं चारुकर्मप्रवृत्तिं पंचत्कीर्तिं वित्तपूर्तिं नितान्तम् ।
भूपात्प्राप्तिं नित्यमेव प्रकुर्यात्प्राप्तिस्थाने भानुमान्मानवानाम् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य गानेमें प्रीति करनेवाला, श्रेष्ठ कर्मोंमें प्रवृत्त होनेवाला, बडे यशवाला, नितांत धनकरके पूर्ण और राजाकरके नित्य ही धनलाभ करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितसूर्यफलम् ।

तेजोविहीने नयने भवेतां तातेन साकं वैरान्वितवृत्तिः ।
विरुद्धबुद्धिर्व्ययभावयाते कांते नलिन्याः फलमुक्तमार्यैः ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्ययभावमें सूर्य बैठा हो तो पण्डितोंने कहा है कि वह मनुष्य नेत्रोंके तेजसे रहित, पितासे वैर करनेवाला और सबसे विरुद्ध बुद्धि-वाला होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नभावस्थितचन्द्रफलम् ।

दाक्षिण्यरूपधनभोगगुणैर्वरेण्य-
श्चन्द्रे कुलीरवृषभाजगते विलग्ने ।

उन्मत्तनीचबधिरो विकलोऽथ मूकः ।
शेषेषु ना भवति हीनतनुर्विशेषात् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क, वृष, मेष राशिवर्ती चंद्रमा लग्नमें बैठा हो वह मनुष्य चतुर, रूपवान् धन और भोगमें श्रेष्ठ, गुणोंकरके सहित होता है और जो कर्क, वृष, मेष राशिके विना अन्य राशियोंमें चंद्रमा लग्नमें बैठा हो तो वह मनुष्य उन्मत्त यानी मतवाला, नीच, बहिरा, विकलदेह और गूंगा होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितचंद्रफलम् ।

सुखात्मजद्रव्ययुतो विनीतो भवेन्नरः पूर्णविधौ द्वितीये ।
क्षीणे स्खलद्वाग्विधनोऽल्पबुद्धिर्न्यूनाधिकत्वे फलतारतम्यम् २

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्ण चंद्रमा धनभावमें बैठा हो वह मनुष्य सुख और पुत्र धन करके सहित, नम्रताकरके युक्त श्रेष्ठ होता है और जो क्षीणचंद्रमा धनभावमें हो तो वह मनुष्य तोतला, धनरहित, थोड़ी बुद्धिवाला होता है और जो चंद्रमा न तो पूर्णबली हो और न हीनबली हो पूर्ण और हीनके अंतर्गतका हो तो उसका फल कमवढती विचार करके कहना चाहिये ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितचंद्रफलम् ।

हिंस्रः सगर्वः कृपणोऽल्पबुद्धिर्भवेन्मनो बन्धुजनाश्रयश्च ।
दयाभयाभ्यां परिवर्जितश्च द्विजाधिराजे सहजे प्रसूतौ ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य हिंसा करनेवाला, बड़ा, अभिमानी, कृपण, अल्पबुद्धि, बंधुजनोंका आश्रय करनेवाला दया और भयसे हीन होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितचंद्रफलम् ।

जलाश्रयोत्पन्नधनोपलब्धिं कृष्यंगनावाहनसूनुसौख्यम् ।
प्रसूतिकाले कुरुते कलावान्पातालसंस्थो द्विजदेवभक्तिम् ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थभावमें चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य जलाश्रयसे उत्पन्न धनको प्राप्त करनेवाला, खेती और स्त्री तथा सवारी और पुत्रों सहित, ब्राह्मण और देवताओंका भक्त होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थचंद्रफलम् ।

जितेन्द्रियः सत्यवचाः प्रसन्नो धनात्मजाप्तासमस्तसौख्यः ।
सुसंग्रही स्यात्सकुजः सुशीलः प्रसूतिकाले तनयालयेऽब्जे ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य इंद्रियोंका जीतनेवाला, सत्यवादी, प्रसन्न, धन और पुत्रोंकरके सब सुखको प्राप्त, श्रेष्ठ संग्रह करनेवाला और शीलवान् होता है ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितचन्द्रफलम् ।

मंदाग्निः स्यान्निर्दयः क्रौर्ययुक्तोऽत्यल्पालस्यो निष्ठुरो दुष्टचित्तः ।
रोषावेशोऽत्यंतसंजातशत्रुः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथे नरः स्यात् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य मंदाग्निरोगवाला, दयारहित, क्रूरतासहित, बड़ा आलसी, कठोर, दुष्टचित्त, क्रोधवान् और बहुत शत्रुओंवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितचंद्रफलम् ।

महाभिमानी मदनातुरश्च नरो भवेत्क्षीणकलेवरश्च ।
धनेन हीनो विनयेन चैव चन्द्रेऽगनास्थानविराजमाने ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य बड़ा अभिमानी, कामातुर, दुर्बल देहवाला, धन और नम्रतारहित होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितचंद्रफलम् ।

नानारोगैः क्षीणदेहोऽतिनिस्वश्चौराराातिक्षोणिपालाभितप्तः ।
चित्तोद्वेगव्याकुलो मानवः स्यादायुःस्थाने वर्त्तमाने हिमांशौ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आठवें भावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य अनेक रोगों करके दुर्बल देहवाला, धनहीन चोर और शत्रु तथा राजा करके सन्ताप प्राप्त और मनके उद्वेग करके व्याकुल होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितचन्द्रफलम् ।

कलत्रपुत्रद्रविणोपपन्नः पुराणवार्ताश्रवणानुरक्तः ।
सुकर्मसत्तीर्थपरो नरः स्याद्यदा कलावान्नवमालयस्थः ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा नवम भावमें बैठा हो वह मनुष्य स्त्री पुत्र धन करके सहित, पुराणकथाके सुननेमें तत्पर, अच्छे कर्म और श्रेष्ठतीर्थ करनेमें युक्त होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितचन्द्रफलम् ।

क्षोणीपालादर्थलब्धिर्विशाला कीर्तिर्मूर्तिस्सत्त्वसंतोषयुक्ता ।
चंचल्लक्ष्मीभोक्तसंशालिनी स्यान्मानस्थाने यामिनीनायकश्चेत् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य राजाओं करके धन प्राप्त करनेवाला, बड़े यशवाला, सुन्दर रूप और बल संतोष करके सहित बड़ी लक्ष्मी और शीलवती स्त्रियोंवाला होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितचन्द्रफलम् ।

सन्मानमानाधनवाहनानि कीर्तिश्च सद्भोगगुणोपलब्धिः ।
प्रसन्नतालाभविराजमाने ताराधिराजे मनुजस्य नूनम् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य अनेक प्रकारके सन्मान और धन वाहनको प्राप्त करनेवाला, यश और श्रेष्ठभोग तथा गुणोंको प्राप्त करनेवाला और प्रसन्नताको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितचन्द्रफलम् ।

हीनत्वं वै चारुशीलेन मित्रैर्वैकल्यं स्यान्नेत्रयोः शत्रुवृद्धिः ।
रोषावेशः पूरुषाणां विशेषात्पीयूषांशौ द्वादशे वेश्मनीह ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठशील और मित्रों करके रहित और आंखोंमें विकलताको प्राप्त, शत्रुओंकी वृद्धिको प्राप्त और क्रोधित होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नभावस्थितभौमफलम् ।

अतिमतिभ्रमतां च कलेवरं क्षतयुतं बहुसाहससंयुताम् ।
तनुभृतां कुरुते तनुसंस्थितोऽवनिसुतो गमनागमनानि च ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य बुद्धिमें भ्रम और घावयुक्त देहवाला, साहस करके सहित, जाने आनेका काम करता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितभौमफलम् ।

अधनतां कुजनाश्रयतां तथा विमतितां कृपयातिविहीनताम् ।
तनुभृतो विदधाति विरोधतां धननिकेतनगोऽवनिनंदनः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दूसरे भावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य धनहीन, दुष्टजनोंका आश्रय करनेवाला, दुर्बुद्धि और कृपारहित होता है ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितभौमफलम् ।

भूपप्रसादोत्तमसौख्यमुच्चैरुदारता चारुपराक्रमश्च ।
धनानि च भ्रातृसुखोज्झितत्वं भवेन्नराणां सहजे महीजे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य राजाकी कृपासे उत्तम सौख्यको प्राप्त, उदारतासहित, श्रेष्ठ पराक्रमवाला, धनवान् और भाइयोंके सुख से हीन होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितफलम् ।

दुःखं सुहृद्वाहनतः प्रवासो कलेवरे रुग्बहुताऽबलत्वम् ।
प्रसूतिकाले किल मंगलाख्ये रसातलस्थे फलमुक्तमार्यैः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य मित्रजनों-करके और सवारीसे दुःखको प्राप्त, परदेशमें रहनेवाला, अधिक रोगों करके निर्बल देह होता है यह श्रेष्ठ जनोंने कहा है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थभौमफलम् ।

कफानिलाभ्याकुलता कलत्रान्मित्राच्च पुत्रादपि सौख्यहानिः ।
मतिर्विलोमा विपुलात्मजेऽस्मिन्प्रसूतिकाले तनयालयस्थे ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य कफ और वातरोग करके पीडित, स्त्री, मित्र, पुत्रोंके सुखको नहीं प्राप्त और उलटी बुद्धिवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावस्थितभौमफलम् ।

प्राबल्यं स्याज्जाठराग्नेर्विशेषात्क्रोधावेशः शत्रुवर्गोपशान्तिः ।
सद्भिः संगो नंगबुद्धिर्नराणां गोत्रापुत्रे शत्रुसंस्थे प्रसूतौ ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें मंगल बैठा हो उस मनुष्यकी जठराग्नि अधिक प्रबल होती है, क्रोधितस्वरूप, शत्रुओंका नाश करनेवाला, सज्जनपुरुषोंका संग करनेवाला और कामकन्यामें अधिक इच्छा रखता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितभौमफलम् ।

नानानर्थैर्व्यर्थचिन्तोपसर्गैर्वैरिव्रातैर्गात्रकं क्षीणदेहम् ।
दारागारात्यंतदुःखप्रतप्तं दारागारे क्ष्मात्मजोऽयं करोति ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें मंगल बैठा हो तो वह मनुष्य अनेक अनर्थोंकरके व्यर्थ चिन्ता करके और शत्रुसमूहकरके पीडित होता है और स्त्रीजनित दुःखकरके संतापित होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितभौमफलम् ।

वैकल्यं स्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वं रक्तात्पीडा नीचकर्मप्रवृत्तिः ।
बुद्धेरांध्यं सज्जनानां च निन्दा रंध्रस्थाने मेदिनीनंदनेऽस्मिन् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें मंगल बैठा हो उस मनुष्यकी आंखोंमें विकलता होती है और दुर्भगताको प्राप्त वह रक्तविकारकरके पीडित नीचकर्मोंमें उसकी प्रवृत्ति और बुद्धिका अंधा होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितभौमफलम् ।

हिंसाविधाने मनसः प्रवृत्तिं भूमीपतेर्गौरवतोऽल्पलब्धिम् ।
क्षीणं च पुण्यं द्रविणं नराणां पुण्यस्थितः क्षोणिसुतः करोति ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य हिंसा करनेमें मनकी प्रवृत्ति करनेवाला, राजाकरके अल्प गौरवताको प्राप्त और पुण्य और धनको नाश करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितभौमफलम् ।

विश्वंभरापतिसमत्वमतीव तोषं
सत्साहसं परजनोपकृतौ प्रयत्नम् ।
चंचद्विभूषणमणीन्विविधागमांश्च
मेषूरणे धरणिजः कुरुते नराणाम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य राजाके समान अत्यंत आनन्दको प्राप्त, श्रेष्ठ साहस करनेवाला, पराया उपकार यत्नसे करे, सुन्दर आभूषण, मणि और अनेक प्रकारसे लाभ करता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितभौमफलम् ।

ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरत्नभागं मुखं सुललितानि च वाहनानि ।
भूपप्रसादसुकुतूहलमंगलानि ददाति भवने हि सदावनेयः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य तांबा और मूंगा, सोना और रत्नोंको प्राप्त और सुंदर सवारी सहित, राजाकी कृपासे श्रेष्ठ कौतुक मंगलोंको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावस्थितभौमफलम् ।

स्वमित्रवैरं नयनातिबाधां क्रोधाभिभूतं विकलत्वमंगे ।
धनव्ययं बन्धनमल्पतेजो व्यये धराजो विदधाति नूनम् ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें मंगल बैठा हो वह मनुष्य अपने मित्रोंसे वैर करनेवाला, नेत्रोंकी पीडासे सहित, क्रोधयुक्त, शरीरमें विकलताको प्राप्त, धनका नाश करनेवाला, बंधनका भागी और थोडे तेजवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नभावस्थितबुधफलम् ।

शान्तो विनीतः सुतरामुदारो नरः सदाचारपरोऽतिधीरः ।
विद्वान्कलाज्ञो विपुलात्मजश्च शीतांशुसूनौ जनने तनुस्थे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य शांत और नम्रता-सहित, अत्यन्त उदार, हमेशा आचारमें तत्पर, धैर्यवान, विद्वान् कलाओंको जाननेवाला और बहुत पुत्रोंवाला होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितबुधफलम् ।

विमलशीलयुतो गुरुवत्सलः कुशलताकलितार्थमहत्सुखः ।
विपुलकांतिसमुन्नतिसंयुतो धननिकेतनगे शशिनन्दने ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य निर्मल शीलवाला, बडोंका प्यारा, कुशलतासहित, बडे सुखको प्राप्त और बडी शोभा करके उन्नतिको प्राप्त होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितबुधफलम् ।

साहसान्निजजनैः परियुक्तश्चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः ।
मानवः कुशलितेप्सितकर्त्ता शीतभानुतनयेऽनुजसंस्थे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीयभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य हठकरके अपने सम्बन्धियोंके साथ रहता है चित्तशुद्धिविहीन, सौख्यरहित और अपने दिलके माफिक काम करनेमें चतुर होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितबुधफलम् ।

सद्वाहनैर्धान्यधनैः समेतः संगीतनृत्याभिरुचिर्मनुष्यः ।
विद्याविभूषागमनाधिशाली पातालगे शीतलभानुसूनौ ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहन और अन्न धन सहित, गानविद्या और नृत्यमें रुचि रखनेवाला तथा विद्या और भूषणोंको प्राप्त करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितबुधफलम् ।

पुत्रसौख्यसहितं बहुमित्रं मन्त्रवादकुशलं च सुशीलम् ।
मानवं किल करोति सलीलं शीतदीधितिसुतः सुतसंस्थः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके पंचम भावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य पुत्रोंके सौख्यसहित, बहुत मित्रोंवाला, मन्त्रवादमें चतुर, श्रेष्ठ शीलवाला लीला करके सहित होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावस्थितबुधफलम्।

वादप्रीतिः सामयो निष्ठुरात्मा नानारातिव्रातसंतप्तचित्तः।
नित्यालस्यव्याकुलः स्यान्मनुष्यः शत्रुक्षेत्रे रौहिणेया-
त्मजेऽस्मिन् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य झगडा करनेमें प्रीतिवाला, रोगयुक्त, कठोरस्वभाव, अनेक शत्रुओंके उपद्रव करके संतप्तचित्त, हमेशा आलसी और व्याकुल होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितबुधफलम्।

चारुशीलविभवैरलंकृतः सत्यवाक्यनिरतो नरो भवेत्।
कामिनीकनकसूनुसंयुतः कामिनीभवनगामिनीन्दुजे ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ शीलवाला, वैभव करके शोभित, सत्य बोलनेमें तत्पर और स्त्री सुवर्ण पुत्र करके सहित होता है ७

अथाष्टमभावस्थितबुधफलम्।

भूतप्रसादात्समस्तसंपद्विरोधी सुतरां सुगर्वः।
सर्वप्रयत्नान्यकृतापहर्ता रन्ध्रे भवेच्चन्द्रसुतः प्रसूतौ ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य भूत प्रेतोंकी कृपासे सम्पूर्ण सम्पत्तियोंको प्राप्त, बहुत विरोध करनेवाला, अभिमान सहित सम्पूर्ण यत्नोंकरके अन्यके किये कर्मको हरनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितबुधफलम्।

उपकृतिकृतिविद्या चारुजातादरः स्या-
दनुचरधनसूनुप्राप्तहर्षो विशेषात्।
वितरणकरणोत्कमानसो मानवश्चे-
दमृतकिरणजन्मा पुण्यधामस्थितोऽयम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवम भावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य उपकार करनेवाला, श्रेष्ठ विद्याको जाननेवाला और आदर करनेवाला, नौकर धनपुत्रों करके हर्षको प्राप्त और संसारसे अनेक उपाय करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितबुधफलम्।

ज्ञानप्रधानः श्रेष्ठकर्मा मनुष्यो [illegible]।
[illegible]

जिस मनुष्यके दशमभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य ज्ञानमें चतुर, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, अनेक प्रकारकी संपत्तियोंकरके संयुक्त, राजमान्य, सुंदरलीलाओंकरके सहित और वाणीके विलासमें श्रेष्ठ होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितबुधफलम् ।

भोगासक्तोऽत्यंतवित्तो विनीतो नित्यानंदश्चारुशीलो बलिष्ठः ।
नानाविद्याभ्यासकृन्मानवःस्याल्लाभस्थाने नंदने शीतभानोः ११

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहे भावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य भोगमें आसक्त, अत्यंत धनवाला, नम्रतासहित, नित्य ही आनंदको प्राप्त, श्रेष्ठ शीलवाला बलवान् और अनेक विद्याओंका अभ्यास करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितबुधफलम् ।

दयाविहीनः स्वजनोज्झितश्च स्वकार्यदक्षो विजितात्मपक्षः ।
धूर्तो नितांतं मलिनो नरः स्याद्व्ययोपपन्ने द्विजराजसूनौ ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें बुध बैठा हो वह मनुष्य दयारहित अपने जनोंकरके रहित और अपने कार्यमें चतुर और अपने पक्षको जीतनेवाला, अत्यंत धूर्त और मलिन होता है ॥ १२ ॥

अथ तनुभावस्थितगुरुफलम् ।

विद्यासमेतोऽभिमतो हि राज्ञां प्राज्ञः कृतज्ञो नितरामुदारः ।
नरो भवेच्चारुकलेवरश्च तनुस्थिते चित्रशिखंडिसूनौ ॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य विद्या करके सहित, राजाओंका प्यारा, चतुर, कृतज्ञ, अत्यंत उदार और सुंदर शरीरवाला होता है ॥१॥

अथ धनभावस्थितगुरुफलम् ।

सद्रूपविद्यागुणकीर्तियुक्तः संत्यक्तवैरोऽपि नरो गरीयान् ।
त्यागी सुशीलो द्रविणेन पूर्णो गीर्वाणवंद्ये द्रविणोपयाते ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ रूप विद्या गुण यश करके सहित, वैरको छोडनेवाला, श्रेष्ठ, त्यागी, शीलवान् और धन करके पूर्ण होता है ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितगुरुफलम् ।

सौजन्यहीनः कृपणः कृतघ्नः कांतासुतप्रीतिविवर्जितश्च ।
नरोऽग्निमांद्याबलतासमेतः पराक्रमे शक्रगुरौ स्थितेऽस्मिन् ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य मित्रता करके रहित, कृपण, कृतघ्न, स्त्री तथा पुत्रकरके प्रीतिरहित और मंदाग्नि रोगकरके बलहीन होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितगुरुफलम् ।

सन्माननानाधनवाहनाद्यैः संजातहर्षः पुरुषः सदैव ।
नृपानुकंपासमुपात्तसंपद्दंभोलिभृन्मंत्रिणि भूतलस्थे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य सम्मान और अनेक प्रकारके धनवाहनादिकों करके हमेशा आनन्दको प्राप्त, राजाकी कृपाकरके संपदाको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावस्थितगुरुफलम् ।

सन्मित्रमंत्रोत्तममंत्रशास्त्रसुख्यानि नानाधनवाहनानि ।
दद्याद्गुरुः कोमलवाग्विलासं प्रसूतिकाले तनयालयस्थः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ मित्र और श्रेष्ठ मंत्रशास्त्र और अनेक प्रकारके धन वाहनोंको प्राप्त और कोमलवाणी बोलनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ शत्रुभावस्थितगुरुफलम् ।

सद्गीतविद्याहतचित्तवृत्तिः कीर्तिप्रियोऽरातिजनप्रहर्ता ।
प्रारब्धकार्य्यालसकृन्नरः स्यात्सुरेंद्रमन्त्री यदि शत्रुसंस्थः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत और श्रेष्ठविद्याकरके हीन अर्थात् दुष्ट गान और खोटी विद्याओंमें तत्पर, अपना यश जिसको प्यारा, शत्रुओंका नाश करनेवाला, प्रारब्ध कार्यमें आलसी होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितगुरुफलम् ।

शास्त्राभ्यासासक्तचित्तो विनीतः कान्तावित्तात्यंतसंजातसौख्यः ।
मंत्री मर्त्यः काव्यकर्ता प्रसूतौ जायाभावे देवदेवाधिदेवे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य शास्त्रमें अभ्यास करनेवाला, नम्रतासहित, स्त्री और धनकरके अत्यंत सौख्यको प्राप्त, राजाका मंत्री और काव्य करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितगुरुफलम् ।

प्रेष्यो मनुष्यो मलिनोऽतिदीनो विवेकहीनो विनयोज्झितश्च ।
नित्यालसः क्षीणकलेवरः स्यादायुर्विशेषे वचसामधीशे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य दूत अर्थात् हलकारेकी वृत्ति करनेवाला, मलिन, अत्यन्त दीन, विवेकरहित, नम्रताहीन हमेशा आलसी और दुर्बलदेह होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितगुरुफलम् ।

नरपतेः सचिवः सुकृती कृती सकलशास्त्रकलाकलनादरः ।
व्रतकरो हि नरो द्विजतत्परः सुरपुरोधसि वै तपसि स्थिते ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवम भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य राजाका मंत्री श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, चतुर, सर्वशास्त्रोंके विचारमें मनको लगानेवाला, व्रत करनेवाला और ब्राह्मणोंकी सेवामें तत्पर होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितगुरुफलम् ।

सद्राजचिह्नोत्तमवाहनानि मित्रात्मजश्रीरमणीसुखानि ।
यशोभिवृद्धिं बहुधा विधत्ते राज्ये सुरेज्ये विजये नराणाम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ राजाके चिह्न छत्रचामरादि और उत्तम वाहनों करके सहित, मित्र, पुत्र, लक्ष्मी और स्त्रीके सुखसहित तथा बहुधा यशकी वृद्धिको धारण करता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितगुरुफलम् ।

सामर्थ्यमर्थागमनानि नूनं सद्रत्नोत्तमवाहनानि ।
भूपप्रसादं कुरुते नराणां गीर्वाणवन्द्यो यदि लाभसंस्थः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य सामर्थ्यसहित धनका निश्चय लाभ करनेवाला श्रेष्ठवस्त्र, उत्तम रत्न और वाहनोंको प्राप्त करनेवाला और राजाकी कृपासहित होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितगुरुफलम् ।

नानाचिन्तोद्वेगसंजातकोपं
पापात्मानं सालसं त्यक्तलज्जम् ।
बुद्ध्या हीनं मानवं मानहीनं
वागीशोऽयं द्वादशस्थः करोति ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य अनेक प्रकारके चित्तके उद्वेगों करके क्रोधसहित, पापी, आलसी, त्याग की है लज्जा जिसने, दुष्क्रियाके हीन और मानरहित होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नभावस्थितशुक्रफलम् ।

बहुकलाकुशलो विमलोक्तिकृत्सुवदनामदनानुभवः पुमान् ।
अवनिनायकमानधनान्वितो भृगुसुते तनुभावगते सति ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य बहुत कलाओंमें चतुर, सुन्दरवाणीवाला, श्रेष्ठ स्त्रीके साथ कामकलासहित, राजा करके मान और धन सहित होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितशुक्रफलम् ।

सदन्नपानाभिरतं नितांतं सद्वस्त्रभूषाधनवाहनाढ्यम् ।
विचित्रविद्यं मनुजं प्रकुर्याद्धनोपपन्नो भृगुनन्दनोऽयम् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ अन्न और पान करनेमें तत्पर, श्रेष्ठ वस्त्र, भूषण, धन, वाहनोंसे युक्त और विचित्र-विद्याका जाननेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितशुक्रफलम् ।

कृशांगयष्टिः कृपणो दुरात्मा द्रव्येण हीनो मदनानुतप्तः ।
सतामनिष्टो बहुदुष्टचेष्टो भृगोस्तनूजे सहजे नरः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीयभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य दुर्बल अंगोंवाला, कृपण, दुष्टात्मा, धनहीन, कामदेवसे सन्तापित, सत्पुरुषोंको दुःख देनेवाला और बहुत दुष्ट चेष्टावाला होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितशुक्रफलम् ।

मित्रक्षेत्रग्रामसद्वाहनानां नानासौख्यं वंदनं देवतानाम् ।
नित्यानंदं मानवानां प्रकुर्याद्दैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थितोऽयम् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य मित्र और खेत ग्राम और वाहनोंका अनेक सौख्य पानेवाला, देवताओंकी वंदना करनेवाला तथा हमेशा आनंदको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितशुक्रफलम् ।

सकलकाव्यकलाभिरलंकृतस्तनयवाहनधान्यसमन्वितः ।
नरपतेर्बहुमौरवभाङ्नरो भृगुसुते सुतसद्मनि संस्थिते ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शुक्र बैठा हो वह सम्पूर्ण काव्य कलाओं सहित, पुत्र, वाहन और धन करके सहित और राजा करके बड़े गौरवको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ शत्रुभावस्थितशुक्रफलम् ।

अभिमतो न भवेत्प्रमदाजने ननु मनोभवहीनतरो नरः ।
विबलताकलितः किल संभवे भृगुसुतेऽरिगतेऽरिभयान्वितः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य स्त्रियोंका प्यारा नहीं, निश्चय करके कामदेवसे हीन, निर्बलतासहित और शत्रुओंके भय से युक्त होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितशुक्रफलम् ।

बहुकलाकुशलो जलकेलिकृद्रतिविलासविधानविचक्षणः ।
अतितरां नटिनीकृतसौहृदः सुनयनाभवने भृगुनन्दने ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य बहुत कलाओंमें चतुर, जलक्रीडा करनेवाला, विषय करनेमें बड़ा चतुर और अत्यन्त चंचल स्त्रियोंसे मित्रता करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितशुक्रफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिर्नृपमानलब्धः शठोऽतिनिःशंकतरः सगर्वः ।
स्त्रीपुत्रचिंतासहितः कदाचिन्नरोऽष्टमस्थानगते सितास्ये ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य प्रसन्नरूप, राजा करके मानको प्राप्त, शठ, अति निर्भय, अभिमानी और कभी स्त्री पुत्रोंकी चिंता करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितशुक्रफलम् ।

अतिथिगुरुसुरार्चातीर्थयात्रार्पितार्थः
प्रतिदिनधनयानात्यंतसंजातहर्षः ।
मुनिजनसमवेषः पूरुषस्त्यक्तरोषो
भवति नवमभावे संभवे भार्गवेऽस्मिन् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य अतिथि गुरु देवताओंका पूजन करनेवाला, तीर्थयात्रामें खर्च किया है धन जिसने, हर एक दिन धन और वाहनों करके हर्षको प्राप्त, मुनीश्वरोंके समान वेष धारण करनेवाला और क्रोधरहित होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितशुक्रफलम् ।

सौभाग्यसम्मानविराजमानः स्नानार्चनध्यानमना धनाढ्यः ।
कांतासुतप्रीतिरतीव नित्यं भृगोः सुते राज्यगते नरस्य ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र दशममें बैठा हो वह मनुष्य सौभाग्य और सम्मानसे विराजमान, स्नान-पूजन-ध्यानमें मनको लगानेवाला, धनवान् और स्त्री पुत्रोंमें नित्य ही अत्यन्त प्रीति करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितशुक्रफलम् ।

सङ्गीतनृत्यादिरतो नितांतं नित्यं च चिंतागमनानि नूनम् ।
सत्कर्मधर्मागमचित्तवृत्तिर्भृगोः सुतो लाभगतो यदि स्यात् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके एकादशभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत और नृत्यमें अत्यन्त प्रीति करनेवाला, नित्य ही यात्राकी चिंता करनेवाला, श्रेष्ठ कर्म और धर्ममें चित्तको लगानेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितशुक्रफलम् ।

सन्त्यक्तसत्कर्मगतिर्विरोधी मनोभवाराधनमानसश्च ।
दयालुतासत्यविवर्जितश्च काव्ये प्रसूतौ व्ययभावयाते ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्ययभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्मके मार्गको त्यागनेवाला, कामदेवके विषे चित्तको लगानेवाला, दया और सत्यरहित होता है ॥ १२ ॥

अथ तनुभावस्थितशनिफलम् ।

प्रसूतिकाले नलिनीशसूनुः स्वोच्चे त्रिकोणर्क्षगते विलग्ने ।
कुर्यान्नरं देशपुराधिनाथं शेषेष्वभद्रं सरुजं दरिद्रम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नभावमें तुला, मकर, कुंभ राशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य देश नगरका स्वामी (राजा) होता है और अन्यराशिगत शनैश्चर लग्नमें बैठा हो तो वह मनुष्य दुःखी और रोगसहित दरिद्री होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितशनिफलम् ।

अन्यालयस्थो व्यसनाभिभूतो जनोज्झितः स्यान्मनुजश्च पश्चात् ।
देशांतरे वाहनराजमानो धनाभिधाने भवनेऽर्कसूनौ ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य व्यसनों सहित और मनुष्योंसे त्यागा हुआ होता है। जो उच्चस्वक्षेत्रके विना अन्यराशियोंमें शनि बैठा हो तो और जो तुला मकर कुम्भराशिका शनैश्चर हो तो वह मनुष्य परदेशमें वाहन और राजमान्यताको प्राप्त होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितशनिफलम् ।

राजमान्यशुभवाहनयुक्तो ग्रामपो बहुपराक्रमशाली ।
पालको भवति भूरिजनानां मानवो हि रविजे सहजस्थे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीयभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य राजासे माननीय, श्रेष्ठ वाहनोंकरके सहित, ग्रामपति, बड़ा बलवान् और बहुत आदमियोंका पालनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितशनिफलम् ।

पित्तानिलक्षीणबलं कुशीलमालस्ययुक्तं कलिदुर्बलांगम् ।
मालिन्यभाजं मनुजं विदध्याद्रसातलस्थो नलिनीशजन्मा ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर चतुर्थभावमें बैठा हो वह मनुष्य पित्तवातसे क्षीणबलवाला, दुष्टशीलवान्, आलस्यसहित, झगड़ेसे दुर्बल देहवाला और मलिनताका भागी होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितशनिफलम् ।

सदा गदक्षीणतरं शरीरं धनेन हीनत्वमनंगहानिम् ।
प्रसूतिकाले नलिनीशपुत्रः पुत्रस्थितः पुत्रभयं करोति ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य हमेशा रोगसे दुर्बलदेहवाला, धनहीन और कामदेवकी हानिवाला तथा पुत्रोंके भयवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितशनैश्चरफलम् ।

विनिर्जितारातिगणो गुणज्ञः सुज्ञाभ्यनुज्ञापरिपालकः स्यात् ।
पुष्टाङ्गयष्टिः प्रबलोदराग्निर्नरोऽर्कपुत्रे सति शत्रुसंस्थे ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य शत्रुदलको जीतनेवाला, गुणोंका जाननेवाला, ज्ञानी जनोंकी आज्ञा माननेवाला, पुष्टदेहवाला और बलवान् है जठराग्नि जिसकी ऐसा होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितशनिफलम् ।

आमयेन बलहीनतां गतो हीनवृत्तिजनचित्तसंस्थितिः ।
कामिनीभवनधान्यदुःखितः कामिनीभवनगे शनैश्चरे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य रोगसे निर्बलताको प्राप्त और दुराचारी मनुष्योंसे मित्रता करनेवाला, स्त्री, घर और अन्नसे दुःखित होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितशनिफलम् ।

कृशतनुर्ननु दद्रुविचर्चिकाभयभवतो भयशोकविवर्जितः ।
अलसतासहितो हि नरो भवेन्निधनवेश्मनि मन्दसुते स्थिते ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य दुर्बलदेह, विचर्चिका दाद रोग और कृमियोंकी बीमारीवाला, भय और सन्तोषसे हीन, आलस्यसहित होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितशनिफलम् ।

धर्मकर्मसहितो विकलाङ्गो दुर्मतिर्हि मनुजोऽतिमनोज्ञः ।
संभवस्य समये किल कोणस्त्रित्रिकोणभवने यदि संस्थः ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य धर्मकर्म सहित, विकलदेह, दुष्टबुद्धि और अत्यन्त सुन्दर होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितशनिफलम् ।

राज्ञः प्रधानमतिनीतियुतं विनीतं सद्ग्रामवृन्दपुरभेदनकाधिकारम् ।
कुर्य्यान्नरं सुचतुरं द्रविणेनपूर्णं मेषूरणेहितरणेस्तनुजः करोति ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य राजाका मंत्री, नीतियुक्त बुद्धिवाला, नम्रतासहित, श्रेष्ठ ग्रामोंके समूह और नगरका अधिकारी, चतुर और धनकरके सहित होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितशनिफलम् ।

कृष्णाश्वानामिन्द्रनीलोर्णकानां नानाचंचद्दन्तुदंतावलानाम् ।
प्राप्तिं कुर्य्यान्मानवानां बलीयान्प्राप्तिस्थाने वर्तमानोऽर्कसूनुः ११

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य काले घोड़े और इन्द्रनील मणि, ऊर्ण वस्त्र और बड़े हाथियोंके लाभको प्राप्त होता है ११

अथ द्वादशभावस्थितशनिफलम् ।

दयाविहीनो विधनो व्ययार्तः सदालसो नीचजनानुयातः ।
नरोऽङ्गभंगोज्झितसर्वसौख्यो व्ययस्थिते भानुसुते प्रसूतौ ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें भावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य दयासे रहित, धनहीन, खर्च करके दुःखी हमेशा आलसी, नीच मनुष्योंका साथी और अंगभंगसे सर्व सौख्यरहित होता है ॥ १२ ॥

तन्वादिस्थशनेः प्रोक्तं यच्च भावोद्भवं फलम् ।
राहोस्तदेव विज्ञेयं मुनीनामपि संमतम् ॥ १३ ॥

जो तन्वादिभावस्थ भावजनित फल शनैश्चरका कहा है वही अर्थात् शनैश्चरके समान राहुका भी फल जानना चाहिये। यह निश्चयकर मुनिवरोंकी सम्मति है ॥ १३ ॥

अथ फलमानमाह ।

स्वोच्चस्थितः पूर्णफलं हि धत्ते स्वर्क्षे हितर्क्षे हि फलार्द्धमेव ।
फलांघिमात्रं रिपुमंदिरस्थश्चास्तं प्रयातः खचरो न किंचित् १४

जो ग्रह अपने उच्चमें बैठा हो वह पूर्ण फल देता है, जो ग्रह स्वक्षेत्र वा मित्रराशिमें बैठा हो वह ग्रह आधा फल देता है, जो ग्रह शत्रु क्षेत्रमें बैठा हो वह चतुर्थांश फल देता है, जो ग्रह अस्तंगत है वह कुछ भी फल नहीं देता है ॥ १४ ॥

अथ तनुभावस्थितराहुफलम् ।

लग्ने तमो दुष्टमतिस्वभावं नरं च कुर्यात्स्वजनानुवंचकम् ।
शीर्षव्यथाकामरसेन संयुतं करोति वादे विजयं सरोगम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें राहु बैठा हो वह मनुष्य दुष्टबुद्धि, खोटे स्वभाववाला, अपने संबंधियोंको ठगनेवाला, शिरका रोगी, एवं वीर्य करके सहित, झगडेमें जीतनेवाला और रोगसहित होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितराहुफलम् ।

धनगतो रविचन्द्रविमर्दनो मुखरतांकितभावरतो भवेत् ।
धनविनाशकरो हि दरिद्रतां खलु तदा लभते मनुजोऽटनम् २

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें राहु बैठा हो तो वह मनुष्य अप्रिय वाणी बोलनेवालेके भावको प्राप्त, धनका नाश करनेवाला, दरिद्री और भ्रमण करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितराहुफलम् ।

दुश्चिक्येरिभवं भयं परिहरँल्लोके यशस्वी नरः
श्रेयो वादिभवं तदा हि लभते सौख्यं विलासादिकम् ।
भ्रातॄणां निधनं पशोश्च मरणं दारिद्र्यभावैर्युतं
नित्यं सौख्यगणैः पराक्रमयुतं कुर्याच्च राहुः सदा ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे राहु बैठा हो तो वह मनुष्य शत्रुओंसे होने-वाले भयको नाश करनेवाला, संसारमें यश व कल्याण और ऐश्वर्यको प्राप्त और सौख्यविलासादिकोंका लाभ करनेवाला, भ्राताओंकी मृत्युकर्ता, पशुओंकी मृत्यु करनेवाला, दरिद्रतासहित, एवं नित्य ही सौख्य-समूह व बलसे सम्पन्न होता है ॥ ३॥

अथ चतुर्थभावस्थितराहुफलम्।

सुखगते रविचन्द्रविमर्दने सुखविनाशनतां मनुजो लभेत्।
स्वजनतां सुतमित्रसुखं नरो न लभते च सदा भ्रमणं नृणाम् ॥४॥

जिस मनुष्यके चतुर्थभावमें राहु बैठा हो तो वह मनुष्य दुःखी कुटुम्ब और पुत्र मित्रों करके सुखको नहीं प्राप्त और हमेशा भ्रमण करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितराहुफलम्।

गतसुखो नहि मित्रविवर्धनं झुदरशूलविलासनिपीडनम्।
खलु तदा लभते मनुजो भ्रमं सुतगते रविचन्द्रविमर्दने ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें राहु बैठा हो वह मनुष्य सुखहीन, मित्ररहित, पेटमें दर्दको प्राप्त, विलासकी हानिको प्राप्त और निश्चय करके भ्रमको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितराहुफलम्।

शत्रुक्षयं द्रव्यसमागमं च पशुप्रपीडां कटिपीडनं च।
समागमं म्लेच्छजनैर्महाबलं प्राप्नोति जन्तुर्यदि षष्ठगस्तमः ६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें राहु बैठा हो वह मनुष्य वैरियोंका नाश करनेवाला, धनवान्, पशुओंको पीड़ा करनेवाला, कमरमें दर्दको प्राप्त, म्लेच्छोंकी संगति करनेवाला और बड़ा बलवान् होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितराहुफलम्।

जायाविरोधं खलु वा प्रणाशं प्रचण्डरूपामथ कोपयुक्ताम्।
विवादशीलामथ रोगयुक्तां प्राप्नोति जन्तुर्मदने तमे च ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें राहु बैठा हो तो वह मनुष्य स्त्रीसे विरोध करनेवाला अथवा स्त्रीका नाश करनेवाला होता है और उसे प्रचण्डरूप, क्रोधसहित, झगड़ा करनेवाली एवं रोगिणी मिलती है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितराहुफलम्।

अनिष्टनाशं खलु गुह्यपीडां प्रमेहरोगं वृषणस्य वृद्धिम्।
प्राप्नोति जन्तुर्विकलारिलाभं सिंहीसुते वा खलु मृत्युगेहे ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें राहु बैठा हो तो वह मनुष्य अभिलाषको प्राप्त, निश्चय करके लिंग गुदा आदि गुप्त स्थानोंमें पीडाको प्राप्त, प्रमेहरोगवाला, अंडवृद्धिसहित और विकलताको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितराहुफलम् ।

धर्मार्थनाशः किल धर्मगे तमे सुखाल्पता वै भ्रमणं नरस्य ।
दरिद्रता बन्धुसुखाल्पता च भवेच्च लोके किल देहपीडा ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें राहु बैठा हो तो वह मनुष्य धर्म अर्थके नाशको प्राप्त, अल्प सुखवाला, भ्रमण करनेवाला, दरिद्री और थोडा भाइयोंके सुखको पाता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितराहुफलम् ।

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य राहुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति ।
रुजो वाहने वातपीडा च जंतोर्यदा सौख्यगो मीनगः कष्टभाजम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें राहु बैठा हो तो उसे पिताका सुख नहीं प्राप्त होता आप भी दुष्ट भाग्यवाला, वैरियोंका नाश करनेवाला, वाहनोंको रोगकारक, वातकी पीडा सहित होता है और जो वृष वा मीनराशिमें राहु हो तो सौख्य और कष्टका भागी होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितराहुफलम् ।

लाभे गते यदि तमे सकलार्थलाभं सौख्याधिकं नृपगणाद्विविधं च मानम् ॥
वस्त्रादिकांचनचतुष्पदसौख्यभावं प्राप्नोति सौख्यविजयौ च मनोरथं च ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें राहु बैठा हो वह मनुष्य सब प्रकारके धनको लाभ करनेवाला, अधिक सौख्यको प्राप्त, राजाओंके समूहके अनेक प्रकारके मानसहित, वस्त्रादिक सुवर्ण चौपायोंके सौख्यका भागी, सौख्य, विजय और मनोरथको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितराहुफलम् ।

नेत्रे च रोगं किल पादघातं प्रपंचभावं किल वत्सलत्वम् ।
दुष्टे रतिं मध्यमसेवनं च करोति जातं व्ययगे तमे वा ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्यय भावमें राहु बैठा हो वह मनुष्य नेत्रोंका रोगी, पैरोंमें घाव, प्रपंच करनेवाला, प्रीतियुक्त, दुष्ट जनोंमें रति जिसकी और मध्यम पुरुषोंकी सेवा करता है ॥ १२ ॥

अथ तनुभावस्थितकेतुफलम् ।

यदा लग्नगश्चेच्छिखी दुःखकर्ता सरोगादियोगो भयव्यग्रता च ।
कलत्रादिचिंता महोद्वेगता च शरीरे प्रबाधा व्यथा मारुतस्य ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें केतु बैठा हो वह मनुष्य दुःखकर्ता होता है, रोगादिकों करके सहित भयसे व्यग्रचित्त, स्त्रियोंकी चिन्ता उद्वेगसहित और वात-विकारयुक्त शरीर होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितकेतुफलम् ।

धने चेच्छिखी धान्यनाशो धनं च कुटुंबाद्विरोधो नृपाद्रव्यचिंता ।
मुखे रोगतासंततं स्यात्तथा च यदा स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम् २

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें राहु बैठा हो वह मनुष्य धन धान्यका नाश करनेवाला, कुटुम्बसे विरोध करनेवाला, राजासे धनकी चिन्ता करनेवाला, मुखमें रोग हमेशा होवे और जो केतु अपनी राशिमें वा शुभ ग्रहकी राशिमें वा धनभावमें बैठा हो तो अत्यन्त सौख्यको पाता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं च वादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च ।
भवेद्बन्धुनाशः सदा बाहुपीडा सुखं स्वोच्चगेहे भवोद्वेगता च ३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीय भावमें केतु बैठा हो वह मनुष्य शत्रुओंका नाश करनेवाला, शत्रुओंसे झगड़ा करनेवाला, धनभोग ऐश्वर्यके तेजको अधिक प्राप्त, भ्राताओंका नाश करनेवाला, हमेसा बाहोंमें पीड़ा करनेवाला होता है और अपने उच्चमें केतु बैठा हो तो सुखको करता वा उद्वेग देता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितकेतुफलम् ।

चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचित्सुहृद्वर्गतः पितृतो नाशमेति ।
शिखी बंधुहीनः सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नैति सर्वैः सदाव्यग्रता च ४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें केतु बैठा हो वह मनुष्य माताका सुख कभी नहीं पाता, मित्रवर्ग और पितासे नाशको प्राप्त, भ्राताहीन होता है और उच्चराशिमें केतु बैठा हो तो वह पूर्वोक्त सब प्रकारके सौख्योंको प्राप्त, थोड़ा सुखी, हमेशा व्यग्रचित्त होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितकेतुफलम् ।

यदा पंचमे यस्य केतुश्च जातः स्वयं स्वोदरे वातघातादिकष्टम् ।
स बंधुप्रियः संततिः स्वल्पपुत्राः सदा स्वं भवेद्दीर्घबुद्धिको नरश्च ५

जिस मनुष्यके पंचमभावमें केतु बैठा हो वह मनुष्य अपने उदरमें वात और गिरनेसे कष्टको प्राप्त और भाइयोंसे प्यार करनेवाला थोड़े पुत्रवाला और हमेशा बलरहित होता है ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी यस्य षष्ठे स्थिते वैरिनाशो
भवेन्मातृपक्षाच्च तन्मानभंगः ।
चतुष्पात्सुखं द्रव्यलाभो नितांतं
न रोगोऽस्य देहे सदा व्याधिनाशः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें केतु बैठा हो वह मनुष्य शत्रुओंका नाश करनेवाला और मामाके पक्षसे मानभंगको प्राप्त, चौपायोंसे सुखी, हमेशा धनका लाभ करनेवाला, निरोगी और सदा देहव्याधिका नाश करता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी सप्तमे मार्गतश्चित्तवृत्तिः सदा वित्तनाशोऽथवा वारिभूतः ।
भवेत्कीटगे सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता च ॥७॥

जिस मनुष्यके सातवें भावमें केतु बैठा हो तो वह मनुष्य मार्गकी चिन्तामें चित्तकी वृत्ति रखनेवाला, हमेशा धनका नाश शत्रुओंकरके होता है और वृश्चिकराशिवर्ती केतु हो तो हमेशा लाभ करनेवाला, कलत्रादिकोंको पीड़ा, व्यय और चित्तकी व्यग्रता होती है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितकेतुफलम् ।

गुदे पीडनं वाहनैर्द्रव्यलाभो यदा कीटगे कन्यके युग्मगे वा ।
भवेच्छिद्रगे राहुछाया यदा स्यादजे गोलिगे जायते चातिलाभः ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें केतु बैठा हो उस मनुष्यकी गुदामें पीड़ा होती है और जो केतु कर्क, कन्या, मिथुनराशिका हो तो वाहन और धनका लाभ करता है और जो वृश्चिक, मेष, वृष, राशिवर्ती हो तो अत्यन्त लाभ कराता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितकेतुफलम् ।

यदा धर्मगः केतवः क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः ।
सहेत व्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिं करोति ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें केतु बैठा हो वह मनुष्य

नाश करनेवाला, पुत्रकी इच्छा रखनेवाला, म्लेच्छोंसे जिसकी भाग्यवृद्धि होती है और म्लेच्छोंसे पीडा भी होती है और पावोंमें रोगवाला, तप और दानसे हास्य वृद्धिको प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितकेतुफलम्।

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति।
रुजो वाहने वातपीडां च जन्तोर्यदा कन्यकास्थः सुखी कष्टभाक्च॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें केतु बैठा हो तो उस मनुष्यको पिताका सौख्य नहीं होता, किन्तु दुर्भाग्यवाला, वैरियोंका नाश करनेवाला, रोगयुक्त, वाहनोंकी पीडा प्राप्त, वातरोग सहित होता है और जो वही केतु कन्याराशिवर्ती हो तो सुख और दुःख दोनोंका भागी होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितकेतुफलम्।

सुभाषी सुविद्याधिको दर्शनीयः सुभोगः सुतेजाः सुवस्त्रोऽपि यस्य। गुदे पीड्यते सन्ततेर्दुर्भगस्तं शिखी लाभगः सर्वकालं करोति ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एकादशभावमें केतु बैठा हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, श्रेष्ठ विद्यावाला, अधिक दर्शनीय स्वरूपवाला, श्रेष्ठ भोगों करके युक्त श्रेष्ठ तेजवाला, सुन्दर वस्त्रोंसहित और गुदामें रोगवाला तथा दुष्ट पुत्रोंवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितकेतुफलम्।

शिखी रिष्फगः पादनेत्रेषु पीडां स्वयं राजतुल्यो व्ययं वै करोति।
रिपोर्नाशनं मानसे नैव शर्मक्वा पीड्यते बस्तिगुह्ये सरोगम्॥१२॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते लग्नादिद्वादशभावस्थित-
ग्रहभावफलाध्यायः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केतु बारहवें बैठा हो तो वह मनुष्य पैर और नेत्रोंमें पीडावाला, राजतुल्य वैभवको खर्च करनेवाला, शत्रुओंका नाश करनेवाला, मनमें दुःखी, एवं बस्ति और गुदाके रोग करके पीडित होता है ॥ १२ ॥

इति श्रीबरेलीनिवासिगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिक-पंडितश्यामलाल-कृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां लग्नादिभावस्थितग्रहभावफलाध्यायः ॥ ३ ॥

श्रीः ।

श्रीगोवर्द्धनधारिणे नमः ।

अथ दृष्टिशिलाध्यायप्रारंभः ।

अथ ग्रहाणां दृष्टिमाह ।

दृष्टिर्दिक् १० त्रितये ३ गृहे नव ९ शरे ५ वेदा ४ ष्टके ८ कामभे
७ पश्यंत्यर्कविधुज्ञदैत्यगुरवः पादाभिवृद्ध्या क्रमात् ।
मंदेज्यक्षोणिभुवां चरणद्विचरणा वह्निपादं तथैव ।
पूर्णाः पश्यंति भावं मुनिवरभणितिः सर्वतन्त्रेषु धीराः ॥ १ ॥

अथ ग्रहोंकी दृष्टि कहते हैं—सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र क्रमसे चरण वृद्धिद्वारा इन स्थानोंको देखते हैं अर्थात् ३ । १० एक चरण ९ । ५ दो चरण ४ । ८ तीन चरण ७ पूर्ण चारों चरणसे देखते हैं । इसी तरह शनैश्चर, मंगल और बृहस्पति एक चरण, दो चरण, तीन चरण, चारों चरण देखते हैं ऐसा सब ग्रन्थोंमें धीर मुनीश्वर कहते हैं । अर्थात् शनैश्चर १० । ३ पूर्ण ९ । ५ एक चरण ४ । ८ दो चरण ७ तीन चरण । बृहस्पति ९ । ५ पूर्ण ४ । ८ एक चरण । ७ । दो चरण १० । ३ तीन चरण । मंगल ४ । ८ पूर्ण ७ एक चरण १० । ३ दो चरण ९ । ५ तीन चरणसे देखता है ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां दृष्टिचक्रम् ।

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सू.चं.बु.शु.	०	०	१	३	२	०	४	३	२	१	०	०
श.	०	०	४	२	१	०	१	२	३	४	०	०
बृ.	०	०	३	१	४	०	२	१	४	३	०	०
मं.	०	०	२	४	३	०	१	४	३	२	०	०

अथ भौमादिगृहे रवौ ग्रहदृष्टिफलमाह,

तत्र—भौमगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

दानधर्मबहुभृत्यसंयुतः कोमलामलतनुर्नरेश्वरः ।
आग्नेयभवने विरोचने शीतदीधितिनिरीक्षिते ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषवृश्चिक राशिमें स्थित सूर्यको चंद्रमा देखता हो तो वह मनुष्य दान और धर्म सहित, बहुत नौकरोंवाला, कोमल और निर्मल देहवाला और अपना घर उसको बड़ा प्यारा होता है ॥ २ ॥

अथ भौमगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

क्रूरो नरः संगरकर्मधीरश्चारक्तनेत्रोऽतिरलं बलीयान् ।
भवेदवश्यं कुजगेहसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिक राशिमें बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य क्रूर, संग्राममें धीर और उसकी आंखें पैर लाल वर्ण और पूर्ण बलवान् होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

सुखेन सत्त्वेन धनेन हीनः प्रेष्यः प्रवासी मलिनः सदैव ।
भवेदवश्यं परवान्मनुष्यः सहस्ररश्मौ कुजभे ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिक राशिमें बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य सुख और पराक्रम तथा धनकरके हीन, दूतोंका काम करनेवाला, हमेशा परदेशमें वास करनेवाला, मलिन और परायेके वशमें रहनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

दाता दयालुर्बहुलार्थयुक्तो नृपालमन्त्री कुलधुर्यवर्यः ।
स्यान्मानवो भूतनयालयस्थे पत्यौ नलिन्याः किल जीवदृष्टे ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिक राशिमें बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, दाता, दयावान्, बहुत धनवाला और अपने कुलमें श्रेष्ठ अग्रणी होता है ॥ ५ ॥

अथ भौमगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम् ।

हीनाङ्गनाप्रीतिरतीव दीनो धनेन हीनो मनुजः कुमित्रः ।
त्वग्दोषयुक्तः क्षितिपुत्रगेहे मित्रेऽधिसंस्थे भृगुपुत्रदृष्टे ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिकराशिमें बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य हीनवर्णकी स्त्रीके साथ प्रीति करनेवाला, अत्यंत दीन, दुष्टमित्रोंवाला और उसकी त्वचामें विकार होता है ॥ ६ ॥

अथ भौमगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

उत्साहहीनो मलिनोऽतिदीनो दुःखान्वितो वै विमतिर्नरः स्यात् ।
कांते नलिन्याः क्षितिजालयस्थे प्रसूतिकाले रविजेन दृष्टे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिक राशिमें बैठा हो और उसको शनि देखता हो तो वह मनुष्य उत्साहरहित, मलीन, अत्यन्त दीन, दुःख सहित और बुद्धि-हीन होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

वराङ्गनाप्रीतिकरो नितांतं स्याद्भूरिभार्यः सलिलोपजीवी ।
दिनाधिराजे भृगुजालयस्थे कलानिधिप्रेक्षणतां प्रयाते ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुला राशिमें बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठस्त्रियोंसे अति प्रीति करनेवाला, बहुत स्त्रियों-वाला और जलके व्यापारसे आजीविका करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

संग्रामधीरोऽतितरां महौजाः सुसाहसप्राप्तधनोरुकीर्तिः ।
क्षीणो नरः स्याद्भृगुमंदिरस्थे सहस्ररश्मौ कुसुतेन दृष्टे ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुलाराशिमें बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य संग्राममें धैर्यवाला, अत्यन्त तेजवाला श्रेष्ठ साहस करके धनको प्राप्त करनेवाला और यशस्वी होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

संगीतसत्काव्यकलाकलापे लेखक्रियायां कुशलो नरः स्यात् ।
प्रसन्नमूर्तिर्भृगुवेश्मयाते प्रद्योतने सोमसुतेन दृष्टे ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुलाराशिमें बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य संगीत, विद्या और सत्काव्यकी कलाओंके समूहको जाननेवाला और लेखक्रियामें कुशल, प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

वंशानुमानं नृपतिप्रधानः सद्रत्नभूषाद्रविणान्वितो वा ।
भीरुर्नरः शुक्रगृहं प्रयाते दृष्टे रवौ देवपुरोहितेन ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुलाराशिमें बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य अपने वंशके समान राजाका प्रधान मंत्री, श्रेष्ठ रत्न और भूषण धन सहित, एवं डरपोक होता है ॥ ११ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ शुक्रदृष्टिफलम् ।

शुक्रेक्षणः कान्ततनुः प्रधानो मित्रैर्विचित्रैः सहितः सचिन्तः ।
भवेन्नरो दैत्यगुरोर्गृहेऽर्के संवीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य सुन्दरनेत्रोंवाला, शोभायमान देह व प्रधान होता है और बहु मित्रोंकरके सहित, तथा चिन्तायुक्त होता है ॥ १२ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

दीनोऽर्थहीनोऽलसतां प्रयातो भार्यापरो वृत्तिविभिन्नवृत्तः ।
असत्कुलस्तस्य मनुजो नरः स्याच्छुक्रालयेऽर्केऽर्कसुतेन दृष्टे ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य दीन, धनहीन, आलस्ययुक्त और स्त्रीके साथ भिन्न मनवाला, दुष्ट आचरण करनेवाला और रोगयुक्त होता है ॥ १३ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

मित्रैररिभिः परिपीडितश्च विदेशयातोऽपि धनेन हीनः ।
नितान्तशोकं समवाप्तो नरः स्यात्सौम्यालयेऽर्के हरिणाङ्कदृष्टे ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्या राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको चंद्रमा देखता हो तो वह मनुष्य मित्र और शत्रुओं करके परिपीडित, परदेश जानेपर भी धनहीन, एवं हमेशा उदास रहनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

संयुतोऽत्यंतदीनो
स्यात्सत्यविधिहीनोऽत्यंतसंजातलज्जः ।
भवति ननु मनुष्यः साहसश्चापि हंसे
बुधभवननिवासे लोहिताङ्गेन दृष्टे ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य शत्रुओं करके भयभीत, कलहादिकनके युक्त, अत्यन्त दीन, सेवकर्में हारनेवाला; अत्यन्त लज्जावाले मन और आलसी होता है ॥ १५ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

सुगन्धसप्तोक्तिविलासकलानां संगीति नो साहसनाशमित्रः ।
प्रशान्तिमानो मलिनीमितो से बुधालयस्थे च बुधेन दृष्टे ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिगत सूर्य बुधकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य राजाकी कृपासे पुत्रोंके ऐश्वर्यसे उसके मित्र और शत्रु हमेशा देखनेको [illegible] होते हैं ॥ १६ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

सुशुभमन्त्रोऽतितरां स्वतन्त्रः कलत्रपुत्रादिजने सगर्वः ।
[illegible]: शीतकरात्मजर्क्षे दिवाकरे देवगुरुप्रदृष्टे ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य शुभ मन्त्रवाला, अत्यन्त स्वतन्त्र और स्त्री पुत्रादिकोंके होनेसे गर्ववाला होता है ॥ १७ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ शुक्रदृष्टिफलम् ।

विदेशवासी चपलो विलासी विषाग्निशस्त्रांकितमूर्तिवर्ती ।
पृथ्वीपतेर्दौत्यकरो नरः स्यादर्के बुधर्क्षे भृगुसूनुदृष्टे ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य परदेशका वास करनेवाला, चपल, विलास करनेवाला और उसका देह विष, अग्नि, शस्त्रकरके अंकित और राजाका दूत होता है ॥१८॥

अथ सौम्यगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

[illegible] मनुष्यः ।
दिवाकरे शीतकरात्मजर्क्षे निरीक्षिते भास्करिणा प्रसूतौ ॥१९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य मूर्ख, बहुत नौकरोंवाला, इन्द्रियहीन और उद्विग्न चित्त होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

पण्यैश्च पानीयभवैर्महार्घ्यो पृथ्वीपतिर्वा सचिवश्च [illegible] ।
[illegible] ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य जलकी चीजोंका व्यापार करके बड़ा धनवान् राजा वा राजाकी तरह बड़ा [illegible] ([illegible]) होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

[illegible] ।
[illegible] ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य अपने बंधुवर्गोंसे विरुद्ध दूर करनेवाला और सूजनके रोग वा भगन्दर रोग करके पीडित होता है ॥ २१ ॥

अथ चन्द्रगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

विद्यायशोमानविराजमानो भूपालुकंपा मनोऽभिलाषः ।
निरस्तशत्रुश्च बुधेन दृष्टे कर्काटकस्थे द्युमणौ नरः स्यात् ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें स्थित सूर्यको बुध देखता हो तो वह मनुष्य विद्या और यश तथा मानकरके विराजमान राजाकी कृपासे मनकी अभिलाषको प्राप्त और शत्रुओंकरके रहित होता है ॥ २२ ॥

अथ चन्द्रगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

कुलाधिकश्चामलकीर्तिशाली भूपालसम्प्राप्तमहापदार्थः ।
भवेन्नरः शीतकरर्क्षयाते दिवामणौ वाक्पतिवीक्ष्यमाणे ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें स्थित सूर्यको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य अपने कुलमें श्रेष्ठ, निर्मलयशवाला एवं राजाकरके बड़े पदको प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

अथ चन्द्रगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम् ।

स्त्रीसंश्रयाद्वस्त्रधनोपलब्धिः परस्य कृत्ये हृदये विषादः ।
निशाकरागारकृताधिकारे दिवाकरे शुक्रनिरीक्ष्यमाणे ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य स्त्रीके आश्रयसे वस्त्र और धनको प्राप्त करनेवाला और पराये कामसें हृदयसे विषाद करनेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ चन्द्रगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

कफानिलार्तः पिशुनोऽन्यकार्ये स्यादन्तरायश्चपलस्वभावः ।
क्लेशी नरः शीतकरर्क्षसंस्थे दिवामणौ मंदनिरीक्ष्यमाणे ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य कफ वातकरके दुःखी और पराये कार्यमें विघ्न डालनेवाला चपल स्वभाववाला और क्लेशी होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहराशिगते रवौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

धूर्तो गभीरः क्षितिपालमान्यो धनोपलब्ध्यार्थयुतः प्रसिद्धः ।
सिंहे स्थितेऽब्जसखे मनुष्यो नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य धूर्त और गम्भीर राजासे मानको पानेवाला, धनकी प्राप्तिसे शक्तिशाली, एवं प्रसिद्ध होता है ॥ २६ ॥

अथ निजागारगते रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

नानाङ्गनाप्रीतिरतीव धूर्तः कफात्मकः क्रूरतरश्च शूरः ।
महोद्यमः स्यान्मनुजः प्रधानः सिंहस्थितेऽर्के कुसुतेन दृष्टे ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य अनेक स्त्रियोंमें प्रीति करनेवाला, अत्यन्त धूर्त, कफ प्रकृतिवाला और अत्यन्त क्रूर तथा शूरवीर, उद्यमी होता है ॥ २७ ॥

अथ निजागारगते रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

धूर्तो नृपानुव्रजनः ससत्त्वो विद्वत्प्रियो लेखनतत्परश्च ।
भवेन्नरः केसरिणि प्रयाते दिवामणौ सौम्यनिरीक्ष्यमाणे ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य धूर्त, राजाकी आज्ञामें चलनेवाला, बलवान्, पंडितोंमें प्रीति करनेवाला और लेखक होता है ॥ २८ ॥

अथ निजागारगते रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

देवालयारामतडागवापीनिर्माणकर्ता स्वजने प्रियश्च ।
भवेन्नरो देवपुरोहितेन निरीक्षितेऽर्के मृगराजसंस्थे ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य देवताओंके स्थान, बागीचा और तालाब बावड़ीका बनानेवाला तथा अपने जनोंसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ निजागारगते रवौ भृगुदृष्टिफलम् ।

त्वग्दोषरोषप्रयशोऽभिभूतो गतोत्सवः स्वीयजनोज्झितश्च ।
स्यान्मानवः सत्यदयाविहीनः पञ्चाननेऽर्के भृगुजेन दृष्टे ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य त्वचाके दोषवाला, क्रोधसहित, अपयशका भागी उत्सव रहित अपने जनों करके त्यागा हुआ, सत्य और दयारहित होता है ॥ ३० ॥

अथ निजागारगते रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

शठो नरः कार्यविघातकर्ता संतापयेदात्मजनांश्च नूनम् ।
नरो मृगेन्द्रोपगते दिनेशे दिनेशपुत्रेण निरीक्ष्यमाणे ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य शठ, कामका बिगाड़नेवाला, अपने कुटुम्बोंको संताप देनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

कान्ताकान्तिसुतसौख्यसमेतो वाग्विलासचतुरः कुलशाली ।
पुरोहितभवने भास्करे हिमकरेण

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य धन मीन राशिमें बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य शोभायमान देहवाला, पुत्रसौख्यसहित, वाणीके विलासमें कुशल एवं कुटुम्बवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

संग्रामसंप्राप्तयशोविशेषो वक्ता विमुक्तानुजनानुसंगः ।
स्थिराश्रमोजीवगृहस्थितेऽर्के भौमेन दृष्टे पुरुषः प्रचण्डः ॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य संग्राममें विशेष यशको पानेवाला तथा वक्ता होता है और अपने मनुष्यके संगसे रहित स्थिर आजीविका करनेवाला और प्रचण्ड होता है ॥ १३ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

धातुक्रियाकाव्यकलाकथाज्ञः सद्वाक्यमंत्रादिविधिप्रवीणः ।
सतां मतः स्यात्पुरुषो दिनेशे सौम्येक्षिते जीवगृहोपयाते ॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन और मीन राशिमें बृहस्पति बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य धातुक्रिया और काव्य, कला और कथाओंका जाननेवाला, श्रेष्ठ वाक्य और श्रेष्ठ मंत्रादिकी विधिमें चतुर तथा सत्पुरुषोंसे पूजित होता है ॥ १४ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

नृपालमन्त्री कुलभूमिपालः कलाविधिज्ञो धनधान्ययुक्तः ।
विद्वान्पुमान्भानुमतीज्यगेहे संदृष्टदेहेऽमरपूजितेन ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें सूर्य बैठा हो और बृहस्पति उसके दृष्ट हो तो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, अपने कुलमें राजा, कलाकी विधि जाननेवाला धन धान्य सहित विद्वान् होता है ॥ १५ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम् ।

सुगंधमाल्यांबरचारुयोषाभूषाविशेषाप्तमनाप्तसौख्यः ।
भवेन्नरो देवपुरोहितर्क्षे प्रद्योतने दानवपूज्यदृष्टे ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन और मीन राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य सुगंधवाली माला और सुगंधित वस्त्र धारण करनेवाला सुन्दर स्त्री और आभूषणोंका सौख्य भोगता है ॥ ३६ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

पराञ्जभुङ्नीचनरैः प्रवृत्तश्चतुष्पदप्रीतिकरो नरः स्यात् ।
सूर्ये सुराचार्यगृहे प्रयाते निरीक्षिते भानुसुतेन सूतौ ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन और मीनराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शनैश्वर देखता हो तो वह मनुष्य पराये अन्नको भोजन करनेवाला, नीचपुरुषोंमें प्रवृत्ति करनेवाला और चौपायोंसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ ३७ ॥

अथ शनिगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

नारीप्रसङ्गेन गतार्थसौख्यो मायापटुश्चंचलचित्तवृत्तिः ।
भवेन्मनुष्यः शनिवेश्मयाते सहस्ररश्मौ हिमरश्मिदृष्टे ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर और कुंभ राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य स्त्रीके संगमें धन और सौख्यका नाश करनेवाला, माया करनेमें चतुर और चञ्चलचित्तवाला होता है ॥ ३८ ॥

अथ शनिगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

परकलहहृतार्थो व्याधिवैरप्रतप्तस्त्वतिविकलशरीरोऽत्यंतचि-
न्तामेतः । भवति ननु मनुष्यः संभवे तिग्मरश्मौ गतवति
सुतगेहे दृष्टदेहे कुजेन ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य शत्रुओंसे झगडा करके धनको नाश करनेवाला और व्याधि वैर करके दुःखी, अत्यन्त व्याकुल देहवाला और बहुत चिन्तावाला होता है ॥ ३९ ॥

अथ शनिगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

क्लीबस्वभावः परवित्तहारी साधुज्झितः क्रूरतरो नरः स्यात् ।
दिवाकरे शीतकरात्मजेन दृष्टे प्रसूतौ शनिमंदिरस्थे ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर व कुम्भ राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको

बुध देखता हो तो वह मनुष्य स्त्रियोंसे रमनेवाला, पराये वित्तको हरण कर-नेवाला, साधुओं करके रहित और शूरवीर होता है ॥ ७० ॥

अथ शनिगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्।

सत्कर्मकर्त्ता मतिमान्बहूनां समाश्रयश्चाढ्ययशा मनस्वी।
स्यान्मानवो भानुसुतालयस्थे भानौ च वाचस्पतिना प्रदृष्टे॥७१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर अथवा कुम्भराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, बुद्धिमान्, बहुत पुरुषोंका पालनेवाला और श्रेष्ठ यशवाला, मनस्वी होता है ॥ ७१ ॥

अथ शनिगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम्।

शङ्खप्रवालामलरत्नवित्तं वराङ्गनाभ्योऽपि धनोपलब्धिम्।
करोति भानुर्ननु मानवानां शन्यालयस्थो भृगुजेन दृष्टः॥७२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर, कुम्भ राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य शंख, मूंगा, निर्मल रत्न धनसे संपन्न और सुन्दर स्त्रियोंके द्वारा धनकी प्राप्ति करनेवाला होता है ॥ ७२ ॥

अथ शनिगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्।

प्रौढप्रतापाद्विजितारिपक्षः क्षोणीपतिप्रीतिमहाप्रतिष्ठः।
प्रसन्नमूर्तिः प्रभवेन्मनुष्यः शन्यालयेऽर्के शनिना प्रदृष्टे॥७३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य बड़े प्रतापसे शत्रुओंको जीतनेवाला और राजाकी प्रीतिसे बड़ी प्रतिष्ठाको प्राप्त प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ ७३ ॥

इति मेषादिगृहे रवौ दृष्टिफलम्।

अथ मेषादिगृहे चन्द्रमसि ग्रहदृष्टिफलम्। तत्रादौ
मेषे शशाङ्के सूर्यदृष्टिफलम्।

उग्रस्वभावोऽपि मृदुर्नतानां धीरो धराधीश्वरगौरवाढ्यः।
नरो भवेत्सङ्गरभीरुरेव मेषे शशाङ्के नलिनीशदृष्टे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चन्द्रमा बैठा हो और उसको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य उग्रस्वभाववाला, नम्र जनोंसे नम्र, धैर्यवान्, राजा करके संमानित और संग्राममें डरपोक होता है ॥ १ ॥

अथ मेषगृहे चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्।

विषाग्निशस्त्राद्भयं कदाचित्स्यान्मूत्रकृच्छ्रं महदाश्रयश्च।
दन्ताक्षिपीडा निविडा जडांशौ मेषस्थिते भूमिसुतेन दृष्टे ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य विष, अग्नि, वात वा हथियारसे भयको पानेवाला, कभी कभी मूत्र-कृच्छ्र रोगवाला, बड़े लोगोंसे आश्रय पानेवाला, दांत और नेत्रोंकी पीड़ा करके सहित होता है ॥ २ ॥

अथ मेषराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

विलसदमलकीर्तिः सर्वविद्याप्रवीणो द्रविणगुणगणाढ्यः
संमतः सज्जनानाम् । भवति ननु मनुष्यो मेषराशौ शशांके
शशधरसुतदृष्टे श्रेष्ठसंपत्प्रतिष्ठः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य प्रकाशवान्, निर्मल यशको प्राप्त करनेवाला, सर्व विद्याओंमें प्रवीण और धन तथा गुणोंके समूहकरके युक्त, सज्जनपुरुषोंकी सम्मति सहित और श्रेष्ठ संपत्ति करके प्रतिष्ठित होता है ॥ ३ ॥

अथ मेषराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा कुलानुमानाद्बहुसंपदाढ्यः ।
भवेन्नरः कैरविणीवनेशे मेषस्थिते गीष्पतिना प्रदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य राजाका मंत्री अथवा फौजका स्वामी होता है और अपने कुलके समान बहुत संपदाओं करके युक्त होता है ॥ ४ ॥

अथ मेषराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

योषाविभूषाधनसूनुसौख्यभोक्ता सुवक्ता परिमुक्तरोषः ।
स्यात्पूरुषो मेषगतेऽमृतांशौ निरीक्ष्यमाणे भृगुणा गुणज्ञः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य स्त्री, आभूषण, धन और पुत्रके सौख्यको भोगनेवाला, श्रेष्ठ वक्ता, क्रोधरहित और गुणोंका जाननेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ मेषराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

गदयुतं हतचित्तसमुन्नतिं विगतवित्तमसत्यमसत्सुतम् ।
क्रियगतोऽर्कसुतेन निरीक्षितो हिमकरो हि नरं कुरुते खलम् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य रोगसहित, चित्तकी उन्नति करके रहित, धनहीन, झूंठ बोलनेवाला एवं दुष्टसन्त-तिवाला और दुष्टस्वभाववाला होता है ॥ ६ ॥

अथ वृषराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम् ।

कृषिक्रियायां निरतो विधिज्ञः स्यान्मंत्रिको वाहनवान्नयुक्तः ।
नरो नितान्तं चतुरः स्वकार्ये दृष्टे दिनेशेन वृषे शशांके ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य खेतीके काम करनेमें तत्पर और खेतीकी विधिको जाननेवाला, मंत्री एवं वाहन और नय कार्य युक्त होता है ॥ ७ ॥

अथ वृषराशिगते भौमदृष्टिफलम् ।

कामातुरश्चित्तहरोऽङ्गनानां स्यात्साधुमित्रः सुतरां पवित्रः ।
प्रसन्नमूर्तिश्च नरो वृषस्थे शीतद्युतौ भूमिसुतेन दृष्टे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य कामातुर स्त्रियोंके चित्तको हरनेवाला, सत्पुरुषोंका मित्र, अतिशय पवित्र और प्रसन्न [illegible] होता [illegible] ॥ ८ ॥

अथ वृषराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञं विधिज्ञं कृपया समेतं हर्षान्वितं भूतहिते रतं च ।
गुणाभिरामं मनुजं प्रकुर्याद्वृषे शशांकः शशिजेन दृष्टः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चन्द्रमाको बुध देखता हो तो वह मनुष्य चतुर, विधियोंका जाननेवाला, कृपालु, हर्षयुक्त, जीवोंके हित करनेमें तत्पर और गुणों करके सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ वृषराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

आयात्मजानन्दयुतं सुकीर्तिं धर्मक्रियायां निरतं च पित्रोः ।
भक्तं प्रसन्नं मनुजं प्रकुर्याद् वृषस्थितेन्दुर्गुरुणा प्रदृष्टः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चन्द्रमाको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य श्री और पुत्रोंके आनंद सहित, श्रेष्ठ कीर्तिवाला, धर्म क्रियामें तत्पर और माता पिताकी भक्तिमें आसक्तचित्तवाला होता है ॥ १० ॥

अथ वृषराशिगते चन्द्रे शुक्रदृष्टिफलम् ।

भूषणाम्बरगृहासनशय्यायानवाहनचतुरंगसुखानि ।
आतनोति सततं मनुजानां चन्द्रमा वृषगतो भृगुदृष्टः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य आभूषण वस्त्र गृह भोजन सुगंधिवाला और चौपायोंके सुखसहित होता है ॥ ११ ॥

अथ वृषराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम् ।

कलानिधिः पूर्वदले वृषस्य शनीक्षितो मातृनिधनं जनन्याः ।
करोति सत्यं मुनिभिर्यदुक्तं तथापरार्धे खलु तातघातम् ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिके पूर्वभागमें चन्द्रमा बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो उस मनुष्यकी माता मृत्युको प्राप्त होती है और जो वृषराशिके परार्द्धभागमें चन्द्रमा बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो उसके पिताका नाश करता है यह मुनिश्वरोंने कहा है ॥ १२ ॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञं सुशीलं द्रविणेन हीनं क्लेशाभिभूतं सततं करोति ।
नरं च सर्वोत्सवदं प्रसूतौ द्वन्द्वे स्थितो भानुमता च दृष्टः ॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य चतुर, श्रेष्ठ शीलवाला, धनहीन, निरन्तर क्लेशसहित और सम्पूर्ण उत्सवोंको प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम् ।

उदारदारं चतुरं च शूरं प्राज्ञं च शुभ्रं धनवाहनाद्यैः ।
युक्तं प्रकुर्यान्मिथुनस्थितेन्दुर्निरीक्षितो जन्मनि भूसुतेन ॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य उदारस्त्रीवाला, चतुर, शूरवीर, बुद्धिमान्, शुद्ध और धनवाहनादिसे युक्त होता है ॥ १४ ॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

धीरं सदाचारमुदारसारं नरं नरेन्द्राप्तधनं करोति ।
निशाधिनाथो मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीनाथसुतेन दृष्टः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चन्द्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य धैर्यवान्, हमेशा आचारसहित, उदार, राजाकरके धनको प्राप्त करता है ॥ १५ ॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

विद्याविवेकान्वितमर्थवन्तं ख्यातं विनीतं सुतरां सुपुण्यम् ।
करोति मर्त्यं मिथुनाधिसंस्थो निशाधिनाथो गुरुणा प्रदृष्टः ॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चन्द्रमाको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य विद्या और विवेकसहित, धनवान्, प्रसिद्ध, नम्रतासहित और निरन्तर पुण्यवान् होता है ॥ १६ ॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे शुक्रदृष्टिफलम् ।

वस्त्रप्रसूनान्नवराङ्गनाभ्यः सद्वाहनेभ्यश्च विभूषणेभ्यः ।
करोति सौख्यं हि सुधामयूखो द्वन्द्वस्थितो जन्मनि शुक्रदृष्टः ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य वस्त्र पुष्प अन्न श्रेष्ठ स्त्रीजनके सहित, श्रेष्ठ वाहन और आभूषणोंका सौख्य लाभ करता है ॥ १७ ॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम् ।

धनाङ्गनावाहननन्दनाद्यैर्विशेषमायाति विगर्हितत्वम् ।
नरो हि नीहारकरे नृयुग्मे निरीक्षिते भानुसुतेन मूर्तौ ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चन्द्रमाको शनैश्वर देखता हो वह मनुष्य धन, स्त्री तथा वाहन पुत्रादि पदार्थोंसे हीन और निंदा करनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम् ।

निरर्थकक्लेशकरं विकीर्णनृपाश्रयं दुर्गकृताधिकारम् ।
कुर्यात्कलावान्परिसूतिकाले कुलीरसंस्थो नलिनीशदृष्टः ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य निष्प्रयोजन नीचमार्गिके मनुष्योंसे क्लेश करनेवाला और राजाके आश्रयमें किलेपर अधिकार करनेवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम् ।

दक्षं च शूरं जननीविरुद्धं क्षीणाङ्गयष्टिं मनुजं करोति ।
कुलीरसंस्थः परिसूतिकाले दृष्टः कलावान्किल मङ्गलेन ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य चतुर, शूरवीर, माताके विरुद्ध और दुर्बलदेहवाला होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

दारार्थपुत्रोन्नतिनीतिसौख्यं सेनापतिं वा सचिवं मनुष्यम् ।
कर्काधिसंस्थः कुरुते हिमांशुर्हिमांशुपुत्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चन्द्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य की धन पुत्रकी उन्नति, नीतिके सौख्यसहित, फौजका मालिक वा राजाका मंत्री होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्।

नृपाधिकारं गुणिनं नयज्ञं सुखान्वितं चारुपराक्रमं च।
करोति जातं यदि चक्रवर्ती पीयूषमूर्तिर्गुरुणेक्ष्यमाणः ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चन्द्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य राजा करके अधिकारको प्राप्त, गुणवान, नीतिका जाननेवाला, सुख सहित और श्रेष्ठ पराक्रमवाला, चक्रवर्ती राजा और सुन्दमूर्ति होता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्।

सद्रत्नचामीकररत्नभूषावराङ्गनासौख्ययुतं नितान्तम्।
नरं निजागारगतः करोति सुधाकरः शुक्रनिरीक्ष्यमाणः ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ रत्न और सुवर्ण सहित और रत्नयुक्त भूषणोंका व श्रेष्ठ स्त्रीका निरंतर सौख्य पाता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्।

सत्येन हीनं जननीविरुद्धं सदाटनं पापरतं गतार्थम्।
करोति जातं निजगेहगामी चेद्यामिनीशो रविजेन दृष्टः ॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य सत्यरहित, माताका विरोधी, हमेशा भ्रमण करनेवाला, पापमें तत्पर और धनहीन होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्।

गुणयुतं सततं नृपतिप्रियं नरपदं च विलंबितसंततिम्।
हरिगतो वितनोति निशाकरः खरकरप्रविलोकनसंयुतः ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य गुणोंसहित, निरंतर राजाका प्यारा, श्रेष्ठ अधिकारको प्राप्त और देरसे संतानको प्राप्त होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम्।

नरपतेः सचिवो धनवाहनात्मजकलत्रसुखो हि भवेन्नरः।
हरिणलक्ष्मणि केशरिणि स्थिते क्षितिसुतेन ननु प्रविलोकिते ॥२६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चन्द्रमाको भौम देखता हो वह मनुष्य राजाका मंत्री तथा धन, वाहन, पुत्र, स्त्रीके सुखसहित होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

धनाङ्गनावाहननन्दनेभ्यः सुखप्रपूर्णं हि नरं करोति ।
द्विजाधिराजो मृगराजसंस्थो द्विजाधिराजात्मजसंप्रदृष्टः ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य धन, स्त्री तथा वाहन पुत्रादिकोंके सुखसे पूर्ण होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

बहुश्रुतं विस्मृतसाधुवृत्तं कुर्यान्नरं भूमिपतेः प्रधानम् ।
चन्द्रो मृगेन्द्रोपगतोऽमरेंद्रोपाध्यायदृष्टः परिसूतिकाले ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको गुरु देखता हो वह मनुष्य बहुश्रुत, साधुवृत्तको भूलनेवाला और राजाका मंत्री होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

श्रीवैभवं वै गुणिनं गुणज्ञं प्राज्ञं विधिज्ञं कुरुते मनुष्यम् ।
पीयूषरश्मिर्जननेयदि स्यात्पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य श्रीयुक्त वैभवसहित, गुणवान, गुणोंका जाननेवाला, चतुर और विधियोंका जाननेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

कान्ताविमुक्तः कृषिकर्मदक्षो दुर्गाधिकारी हि नरोऽल्पकार्थः ।
सिंहोपयाते सति शीतभानौ निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य स्त्री रहित, खेती करनेमें चतुर, राजाके किलेका स्वामी और थोडे धनवाला होता है ॥ ३० ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

भूमीशकोशाधिकृतं सुवृत्तं भार्याविमुक्तं गुरुभक्तियुक्तम् ।
जाते च कन्याश्रितशीतरश्मिस्तनोति जन्तुं खररश्मिदृष्टः ॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा हो और उसको सूर्य देखता हो वह मनुष्य राजाके खजानेका मालिक, श्रेष्ठ वृत्तिवाला, स्त्रीरहित और गुरुकी भक्तिमें तत्पर होता है ॥ ३१ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

हिंसापरं शूरतरं सकोपं नृपाश्रितं लब्धजयं रणादौ ।
कुमारिकासंश्रितशीतभानुर्भूसूनुदृष्टो मनुजं करोति ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा हो उसको मङ्गल देखता हो वह मनुष्य हिंसामें तत्पर, अति शूरवीर क्रोधसहित, राजाका आश्रय करनेवाला और संग्राम आदिमें जयको प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

ज्योतिर्विद्याकाव्यसंगीतविज्ञं प्राज्ञं युद्धे लब्धकीर्तिं विनीतम् ।
कुर्यान्नूनं मानवं मानवंतं कन्यास्थोऽब्जश्चेंदुजेन प्रदृष्टः ॥३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा बैठा हो उसको बुध देखता हो वह मनुष्य ज्योतिषशास्त्र और काव्य तथा सङ्गीत विद्याओंका जाननेवाला, चतुर संग्राममें यशको प्राप्त और नम्रतासहित होता है ॥ ३३ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

भूरिबंधुमवनीपतिप्रियं चारुवृत्तशुभकीर्तिसंयुतम् ।
मानवं हि कुरुतेऽङ्गनाश्रितश्चंद्रमाः सुरपुरोहितेक्षितः ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चन्द्रमा बैठा हो उसको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य बहुत भाइयोंवाला, राजाका प्यारा और श्रेष्ठ वृत्ति करके सुन्दर यशवाला होता है ॥ ३४ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

विलासिनीकेलिविलासचित्तं कांताश्रितं भूपतिलब्धवित्तम् ।
कुर्यान्नरं शीतकरः कुमार्यां स्थितः सितेन प्रविलोकितश्च॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा हो उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य वेश्याके साथ विलास करनेमें चित्तवाला, स्त्रीका आश्रित और राजाजनके धनको प्राप्त करता है ॥ ३५ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

निष्किञ्चनं हीनमतिं नितांतं स्त्रीसंश्रयादाप्तधनं जनन्या ।
हीनं प्रकुर्यात्खलु कन्यकायां गतो मृगांकोऽर्कसुतेन दृष्टः॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य धनहीन, बुद्धिरहित, निरंतर स्त्रीके आश्रयसे धनको प्राप्त करनेवाला और माताले हीन होता है ॥ ३६ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

सदाटनः सौख्यधनैर्विहीनः सदङ्गनामनुजैर्विहीनः ।
मित्रैरमित्रैश्च नरोऽतितप्तस्तुलाधरे शीतकरेऽर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य हमेशा भ्रमण करनेवाला, सुख और धनसे हीन श्रेष्ठ स्त्री और पुत्रोंसे रहित तथा मित्र और शत्रुओंसे संतापको प्राप्त होता है ॥ ३७ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

बुद्ध्या परार्थीकरणैकचित्तं मयासमेतं विषयाभितप्तम् ।
करोति जातं हि तुलागतेंदुर्निरीक्ष्यमाणो धरणीसुतेन ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य बुद्धिकरके दूसरोंके धनमें चित्त करनेवाला, मायासहित और विषयोंमें संतापको प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

कलाविधिज्ञं धनधान्ययुक्तं वक्तृत्वविद्याविभवैः समेतम् ।
कुर्यान्नरं शीतकरस्तुलास्थः प्रसूतिकाले शशिजेन दृष्टः ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य कलाओंकी विधिका जाननेवाला, धनधान्यसहित, बोलनेकी विद्या और वैभव सहित होता है ॥ ३९ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

विचक्षणो वस्त्रविभूषणेषु क्रयेऽथवा विक्रयताविधाने ।
तुलाधरे शीतकरो नरः स्याद्दृष्टः शुनासीरपुरोहितेन ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य वस्त्र और आभूषणोंके कार्यमें चतुर तथा वस्त्र और आभूषणोंके खरीदने और बेचनेमें चतुर होता है ॥ ४० ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञस्त्वनेकोद्यमसाधितार्थः स्यात्पार्थिवानां कृपया समेतः ।
हृष्टो नरः पीनकलेवरश्च धूके मृगांके भृगुजेन दृष्टे ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य चतुर, अनेक उद्यमकरके अर्थसिद्धि करनेवाला, राजाओंकी कृपाकरके सहित, प्रसन्नचित्त और पुष्ट देहवाला होता है ॥ ४१ ॥

अथ तुलाराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम् ।

धनैश्च धान्यैर्वरवाहनैश्च युतोऽपि हीनो विषयोपभोगैः ।
भवेन्नरस्तौलिनि जन्मकाले कलानिधौ भानुतनूजदृष्टे ॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चन्द्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य धन और धान्य तथा श्रेष्ठ वाहनों करके सहित और विषयभोगसे रहित होता है ॥ ४२ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम् ।

सद्वृत्तिहीनं धनिनं जनानामसह्यमत्यंतकृतप्रयासम् ।
सेनानिवासं मनुजं प्रकुर्यात्ताराधिपः कौर्प्यगतोऽर्कदृष्टः ॥४३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वृत्तिरहित, धनवान्, मनुष्योंको असह्य, अत्यन्त उद्यम करनेवाला और सेनामें रहनेवाला होता है ॥ ४३ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम् ।

रणाङ्गनावाप्तयशोविशेषो गभीरतागौरवसंयुतश्च ।
भूपानुकंपासमुपात्तवित्तो नरोऽलिनीन्दौ क्षितिजेन दृष्टे ॥४४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य युद्धमें विशेष करके यशको प्राप्त, गम्भीरता, गौरव सहित और राजाकी कृपासे धनको पैदा करनेवाला होता है ॥ ४४ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

वाग्विलासकुशली रणशीलो गीतनृत्यनिरतश्च नितांतम् ।
कूटकर्मणि नरो निपुणः स्याद्वृश्चिके शशिनि चन्द्रजदृष्टे ॥४५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य बोलनेमें चतुर, युद्ध करनेवाला, गीत और नृत्यमें तत्पर झूठे कर्मोंमें बड़ा चतुर होता है ॥ ४५ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

लोकानुकूल्यः सुतरां सुरूपः सत्कर्मकृद्वित्तविभूषणाढ्यः ।
स्यान्मानवो जन्मनि शीतरश्मौ संस्थेऽलिनीज्येननिरीक्ष्यमाणे ॥४६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य संसारकी इच्छाके समान चलनेवाला, सुन्दर रूपवान्, श्रेष्ठ कर्मोंका करनेवाला तथा धन और आभूषणोंकरके सहित होता है ॥ ४६ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे शुक्रदृष्टिफलम् ।

मत्सरमूर्तिः सद्गुरुकीर्तिः कूटविद्याज्ञो धनवाहनाढ्यः ।
कान्तारतार्थः पुरुषोऽलियाते शीतद्युतौ दैत्यगुरुप्रदृष्टे ॥ ४७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य मत्सरमूर्ति, उदार यशवाला, कूट विद्याको जाननेवाला, धन वाहनों सहित और स्त्रियों-करके उसका धन नष्ट होता है ॥ ४७ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम् ।

स्थूलाङ्गं दैन्यनाशाल्पवित्तं नीचापत्यासक्तमत्यल्पकोपम् ।
कुर्यान्नूनं सूतिकालेऽलिसंस्थश्छायापुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयातः ॥ ४८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य, स्थूलअङ्ग, दीनताका नाश करनेवाला, थोड़े नीच संतानवाला, धनहीन और राजयक्ष्मा रोगवाला होता है ॥ ४८ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

प्रौढप्रतापोत्तमकीर्तिसंपत्सद्वाहनाप्त्याहवजं जयं च ।
नृपप्रसादं कुरुते नराणां ताराधिपश्चापगतोऽर्कदृष्टः ॥ ४९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य बड़े प्रतापवाला, उत्तम यशवाला, संपदा सहित, श्रेष्ठ वाहनोंवाला, संग्राममें यशको पानेवाला और राजकृपासहित होता है ॥ ४९ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

सेनापतित्वं च महत्प्रतापं प्रभावसंपत्करणोपलब्धिम् ।
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्क एव शरासनस्थोऽवनिजेन दृष्टः ॥ ५० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य फौजका मालिक, बड़े प्रतापवाला, लक्ष्मीका त्याग और मनुष्योंको लाभ करनेवाला होता है ॥ ५० ॥

अथ धनराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

सद्वाग्विलासं बहुभृत्ययुक्तं कुर्यान्नरं ज्योतिषशिल्पविज्ञम् ।
धनुर्धरे हि कुरङ्गलक्ष्मा कुरङ्गलक्ष्मात्मभवेन दृष्टः ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाणीके विलास और बहुत नौकरवाला, ज्योतिष और शिल्पविद्याका जाननेवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

महापदस्थो धनवान्सुवृत्तो भवेन्नरश्चारुशरीरयष्टिः ।
धनुर्धरे शीतकरे प्रयाते निरीक्षिते शक्रपुरोहितेन ॥ ५२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य बड़े अधिकारको प्राप्त, धनवान्, श्रेष्ठ वृत्तिवाला और सुंदर शरीरवाला होता है ॥ ५२ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

संतानार्थात्यन्तसंजातधर्मैः शश्वत्सौख्येनान्वितो मानवः स्यात् ।
तारास्वामी चापगामी प्रसूतौ दैत्यामात्यप्रेक्षणस्थं प्रयातः ॥५३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य संतान, धन तथा धर्मको प्राप्त और निरंतर सौख्यसहित होता है ॥ ५३ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

सत्त्वोपेतं नित्यशास्त्रानुरक्तं सद्वक्तारं मानवं च प्रचण्डम् ।
कोदण्डस्थस्तीक्ष्णरश्म्यात्मजेन दृष्टः सूतौ शीतरश्मिः करोति ॥५४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य बलसहित, नित्य शास्त्रमें आसक्त, श्रेष्ठवक्ता और प्रचंड प्रतापी होता है ॥ ५४ ॥

अथ मकरराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम् ।

गतधनो मलिनश्चलनप्रियो हतमतिः खलु दुःखितमानसः ।
हिमकरे मकरे च दिवाकरेक्षिततनौ हि नरः प्रभवेद्यदि ॥५५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य धनहीन, मलिन, भ्रमणमें प्रीति करनेवाला, बुद्धिहीन और निश्चय करके दुःखित होता है ॥ ५५ ॥

अथ मकरराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम् ।

अतिप्रचण्डो धनवाहनाढ्यः प्राज्ञश्च दारात्मजसौख्ययुक्तः ।
स्यान्मानवो वैभवभाङ्नितान्तं मृगे मृगांकेऽवनिजेन दृष्टे ॥५६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य अत्यंत प्रचंड, धन और वाहनसमूहके सहित, चतुर, स्त्री और पुत्रोंके सुखसहित और निरन्तर वैभवसमूहके सहित होता है ॥ ५६ ॥

अथ मकरराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

बुद्धयाहीनो निधनस्त्यक्तगेहो गेहिन्याद्यैरुज्झितः पूरुषः स्यात् ।
आर्केकेरस्थावरे शीतरश्मौ पीयूषांशोरात्मजेन प्रदृष्टे ॥ ५७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चंद्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य बुद्धिहीन, धनरहित घरको त्यागनेवाला और स्त्रीपुत्रोंकरके त्यागा जाता है ॥ ५७ ॥

नृपात्मजः सत्ययुतो गुणज्ञः कलत्रपुत्रादियुतो नरः स्यात् ।
मृगानने जन्मनि यामिनीशे वाचामधीशेन निरीक्ष्यमाणे ॥५८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य राजपुत्र, सत्यहित, गुणोंका जाननेवाला और स्त्रीपुत्रसहित होता है ॥ ५८ ॥

अथ मकरराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

सुनयनो धनवाहनसंयुतः सुतविभूषणवस्त्रसुखी नरः ।
कुमुदिनीदयिते मृगसंस्थिते भृगुसुतेन जना ननु वीक्षिते॥५९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य सुन्दर नेत्रोंवाला, धन और वाहनसहित और पुत्र और भूषण वस्त्रोंके सुखसहित होता है ॥ ५९ ॥

अथ मकरराशिगतचंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

महालसो मंदधनस्त्वसत्यो मलीमसः स्याद्व्यसनाभिभूतः ।
पीयूषमूर्तिर्यदि नक्रवर्ती त्रिमूर्तिपुत्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥ ६० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य बड़ा आलसी, धनहीन, सत्यरहित, मलीन और व्यसनी होता है ॥ ६० ॥

अथ कुम्भराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम् ।

कृषीवलः कैतवसंयुतश्च नृपाश्रितो धर्मरतो नरः स्यात् ॥
पीयूषमूर्तिर्यदि कुंभगामी स्वम्भोजिनीस्वामिनिरीक्ष्यमाणः ॥६१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य खेतीके बलसहित, जुआ खेलनेवाला राजाके आश्रित, धर्ममें तत्पर होता है ॥६१॥

अथ कुम्भराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम् ।

धनभवनजनित्रीतातविश्लेषयुक्तो विषमतमपदार्थोत्पादकोऽनल्पजल्पः । भवति मलिनचित्तोऽत्यंतधूर्तो हि मर्त्यः शशिनि-कलशयाते वीक्षिते भूसुतेन ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य मकान, धन तथा मातापिताके वियोगको प्राप्त और बड़े कठिनपदार्थोंको पैदा करनेवाला, बहुत बोलनेवाला, मलिनचित्त और अति धूर्त होता है ॥ ६२ ॥

अथ कुम्भराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

विषयसौख्यरतोऽशनसंविधानरुचिरतीव शुचिः प्रियभाषणः ।
युवतिगीतसुनीतिकृतादरो घटगतेन्दुरिह ज्ञनिरीक्षितः ॥६३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत चन्द्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य विषय, सौख्यसहित, भोजनविधानका जाननेवाला, अत्यन्त पवित्र, प्यारीवाणी बोलनेवाला, स्त्रियोंकी गीत जाननेवाला और श्रेष्ठ नीतिसे स्त्रियोंका आदर करनेवाला होता है ॥ ६३ ॥

अथ कुम्भराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

महीपुरग्रामसुखादिसौख्यं भोगान्वितं साधुजनप्रवृत्तिम् ।
कुर्यान्नरं श्रेष्ठतरं घटस्थो निशाकरः शक्रगुरुप्रदृष्टः ॥ ६४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत चन्द्रमाको गुरु देखता हो वह मनुष्य धरती, नगर, ग्रामादिके सुखों सहित, भोगोंसे युक्त सत्पुरुषोंमें प्रवृत्ति करनेवाला और श्रेष्ठ पुरुष होता है ॥ ६४ ॥

अथ कुम्भराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

मित्रात्मजस्त्रीगृहसौख्यहीनो दीनो जनोत्सारितगौरवः स्यात् ।
निशाकरे कुंभधरे प्रसूतौ संवीक्षिते दानवपूजितेन ॥ ६५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य मित्र और पुत्र, स्त्री तथा मकानके सौख्यसे रहित, दीन और गौरव रहित होता है ॥ ६५ ॥

अथ कुम्भराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम् ।

खरोष्ट्रबालाश्वतरादिलाभं कुस्त्रीरतं धर्मविरुद्धवृत्तिम् ।
करोति मर्त्यं हि घटेऽधितिष्ठन्निशाकरो भास्करसूनुदृष्टः ॥६६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत चन्द्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य गधे, ऊंट, नवीन घोड़ोंका लाभ करनेवाला, खोटी स्त्रीमें तत्पर और धर्म विरुद्ध वृत्तिवाला होता है ॥ ६६ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

मनोद्भवोत्कर्षमतीव सौख्यं सेनापतित्वं बहुवित्तवृद्धिम् ।
सत्कर्मसिद्धिं कुरुते हिमांशुर्झषे दिनेशेन निरीक्ष्यमाणः॥६७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य कामदेवके सौख्यको अत्यंत प्राप्त करनेवाला, फौजका मालिक, बहुत धनकी वृद्धि और श्रेष्ठकर्मोंकी सिद्धिको प्राप्त होता है ॥ ६७ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

पराभिभूतं कुटलाभिसक्तं सौख्योज्झितं पापरतं नितांतम् ।
करोति जातं हि निधिः कलानां मीनस्थितो भूमिसुतेन दृष्टः ६८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमाको मङ्गल देखता हो वह मनुष्य शत्रुओंसहित, कुलटा स्त्रीसे मित्रता करनेवाला, सुखसे रहित और निरन्तर पापमें तत्पर होता है ॥ ६८ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

वरांगनासूनुसुखानि नूनं मानं धनं भूमिपतेः प्रसादम् ।
कुर्यान्नराणां हरिणांक एष वैसारिणस्थो ज्ञनिरीक्ष्यमाणः ६९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ स्त्री पुत्रोंके सुखोंको प्राप्त और राजाकी कृपासे मान तथा धन प्राप्त करता है ॥ ६९ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

उदारदेहं सुकुमारदेहं सद्देहिनीसूनुधनादिसौख्यम् ।
नृपं विदध्यात्पृथुरोमगामी तमीपतिर्वाक्पतिवीक्षितश्चेत् ॥७०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चन्द्रमाको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य उदारचित्त, सुकुमार, श्रेष्ठ स्त्री और पुत्र धनादिको सौख्य पानेवाला राजा होता है ॥ ७० ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

सद्गीतविद्यादिरतं सुवृत्तं विलासिनीकेलिविलासशीलम् ।
करोति मर्त्यं तिमियुग्मराशौ शीतद्युतिर्जन्मनि शुक्रदृष्टः ॥७१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत, श्रेष्ठ विद्यादिमें तत्पर, श्रेष्ठ वृत्तिवाला और स्त्रीके साथ विलास करनेमें शील जिसका ऐसा होता है ॥ ७१ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

कामातुरं दारसुतैर्विहीनं नीचांगनासक्तमकिमं च ।
मीनारविन्दः शफरं प्रसूते नरं विध्याद्दिनेशसुतदृष्टः ॥ ७२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चन्द्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य कामातुर, स्त्री और पुत्रोंसे रहित, नीच स्त्रियोंके संग मित्रता करनेवाला और मलीन होता है ॥ ७२ ॥ इति मेषादिराशौ चन्द्रमसि ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ मेषादिराशौ भौमे सति ग्रहदृष्टिफलम्–

तत्र स्वभे भौमे रविदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञः सुवक्ता पितृमातृभक्तो धनिप्रधानोऽतितरामुदारः ।
नरो भवेदात्मगृहे महीजे सरोजिनीराजनिरीक्ष्यमाणे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल बैठा हो और उसको सूर्य देखता हो वह मनुष्य चतुर, श्रेष्ठ वक्ता, पिताका भक्त, धनवानोंमें श्रेष्ठ और अत्यन्त उदार होता है ॥ १ ॥

अथ स्वभे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

अन्याङ्गनासक्तमतीव शूरं कृपाविहीनं हतचौरवर्गम् ।
नरं प्रकुर्यान्निजधामगामी भूमीतनूजो द्विजराजदृष्टः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य पराई स्त्रीमें आसक्त, बड़ा शूरवीर, कृपारहित और चोरोंको मारनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ स्वभे भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

पण्याङ्गनालंकरणैकवृत्तिर्विचक्षणोऽन्यद्रविणापहारी ।
भवेन्नरः स्वर्क्षगते प्रसूतौ क्षोणीसुते सोमसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिकराशिमें मंगल बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य वेश्याके अलंकार और वस्त्र बनवानेमें एक चित्त रखनेवाला, बड़ा चतुर और पराया धन हरनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ स्वभे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

वंशेऽवनीशो धनवान्सकोपो नृपोपचारः कृतचौरसख्यः ।
आरे निजागारगते नरः स्यात्प्रसूतौ सुराचार्यनिरीक्ष्यमाणे ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मङ्गल बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य अपने वंशमें राजा, धनवान्, क्रोधसहित, राजसेवकों सहित और चोरोंसे मित्रता करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ स्वभे भौमे भृगुदृष्टिफलम् ।

भूयोभूयो भोजनौत्सुक्ययुक्तः कान्ताक्लेशोत्पन्नचिन्ता मितासम् ।
प्राणी पुण्ये कर्मणि प्रीतिमान्स्यात्स्वर्क्षे भौमे भार्गवेण प्रदृष्टे

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल बैठा हो उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य बारंबार भोजनकी इच्छा करनेवाला और स्त्रीके निमित्त सफरकी हमेशा चिंता करता है ॥ ५ ॥

अथ स्वभे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

मित्रोज्झितं मातृवियोगतप्तं कृशाङ्गयष्टिं विषमं कुटुम्बे ।
ईर्ष्याविशेषं पुरुषं विदध्यात्कुजः स्वभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मङ्गल बैठा हो वह मनुष्य मित्रोंसे त्यागा हुआ, माताके वियोगसे संतापको प्राप्त, दुर्बल देहवाला, कुटुम्बका विरोधी और बहुत ईर्ष्यासहित होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे रविदृष्टिफलम् ।

कांतामनोवृत्तिविहीनमुच्चैर्वनाद्रिसंस्थानरुचिं विपक्षम् ।
प्रचण्डकोपं कुरुते मनुष्यं कुजः सितागारगतोऽर्कदृष्टः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य स्त्रीके मनकी वृत्तिसे रहित, बड़े बड़े वन और पर्वतोंमें रहनेकी इच्छा करनेवाला, शत्रुहीन और बड़ा क्रोधी होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

अम्बाविरुद्धः खलु युद्धभीरुर्बह्वङ्गनानामपि नायकश्च ।
स्यान्मानवो भूतनये सितर्क्षे नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें मङ्गल बैठा हो वा उसको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य माताके विरुद्ध, निश्चय कर संग्राममें डरपोक और बहुत स्त्रियोंका स्वामी होता है ॥ ८ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

शास्त्रप्रवृत्तिः कलहप्रियः स्यादनल्पजल्पोऽल्पधनागमश्च ।
सत्कार्यकीर्तिः पृथिवीतनूजे सितालयस्थे शशिजेन दृष्टे ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें मङ्गल बैठा हो व उसको बुध देखता हो वह मनुष्य शास्त्रमें प्रवृत्तिवाला, लड़ाई झिगड़ेमें प्यारी, बहुत बोलनेवाला, थोड़े धनका आगम और उसका देह शोभायमान होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

बंधुप्रिये स्यान्निरतोऽतिभाग्यः सद्गीतनृत्यादिविधिप्रवीणः ।
क्षोणीतनूजे भृगुजर्क्षयाते निरीक्षिते वाक्पतिना प्रसूतौ ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें स्थित मंगलको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य भाइयोंकी प्रीतिमें तत्पर अत्यंत भाग्यवान् और गीतनृत्यादि विधिमें चतुर होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे शुक्रदृष्टिफलम् ।

सुश्लाघ्यनामा क्षितिपालमंत्री सेनापतिर्वा बहुसौख्ययुक्तः ।
स्यान्मानवः शुक्रगृहोपयाते निरीक्षिते भूमिसुतेन तेन ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें मंगल बैठा हो व उसको शुक्र देखता हो वह मनुष्य प्रशंसाके योग्य, राजाका मंत्री अथवा फौजका मालिक और बहुत सौख्यसहित होता है ॥ ११ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

ख्यातो विनीतो धनवान्सुमित्रः पवित्रबुद्धिः कृतशास्त्रयत्नः ।
नरः पुरग्रामपतिः सितर्क्षे भूनंदने भानुसुतेन दृष्टे ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य प्रसिद्ध, नम्रतासहित, धनवान्, श्रेष्ठमित्रोंवाला, पवित्रबुद्धि, शास्त्रमें यत्न करनेवाला और नगर वा ग्रामका पति होता है ॥ १२ ॥

अथ बुधगृहे भौमे रविदृष्टिफलम् ।

विद्याधनैश्वर्ययुतं ससत्त्वमरण्यदुर्गाचलकेलिशीलम् ।
कुर्यान्नरं सोमसुतालयस्थः क्षोणीसुतः सूर्यनिरीक्ष्यमाणः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधकी राशि (मिथुन, कन्या) में मंगल बैठा हो व उसको सूर्य देखता हो वह मनुष्य विद्या धन ऐश्वर्यकरके सहित, बलयुक्त, वन-पर्वतोंमें तथा किलेमें रहनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ बुधगृहे भौमे चंद्रदृष्टिफलम् ।

संरक्षणे भूपतिना नियुक्तं कांतारति सत्त्वयुतं सतोषम् ।
भूमीसुतः संजनयेन्मनुष्यं बुधर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या, मिथुन राशिमें मंगल बैठा हो उसको चंद्र देखता हो वह मनुष्य राजद्वारा अपनी रक्षाके लिये नियुक्त किया हुआ, स्त्रीमें तत्पर, बलसहित तथा संतोषवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ बुधगृहे भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

अनल्पजल्पं गणितप्रगल्भं काव्यप्रियं सानृतचारुवाक्यम् ।
दौत्ये प्रयासैः सहितं प्रकुर्याद्धरात्मजो ज्ञगृहे ज्ञदृष्टः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें मंगल बैठा हो उसको बुध देखता हो वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, गणितशास्त्रमें चतुर, काव्य जिसको प्यारा, झूठी रचना करके सुन्दरवाणी बोलनेवाला, दूतोंके काम करनेमें बड़ा उद्यमी होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधगृहे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

अन्यदेशगमनं व्यसनाद्यैः संयुतं हि कुरुते नरमुर्व्याः ।

सोमसूनुभवनेऽवनिसूनुर्वाक्पतेरभिवीक्षित एव ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन, कन्याराशिमें मंगल बैठा हो व उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य परदेशका भ्रमण करनेवाला, व्यसनों सहित उत्तमस्थानको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधगृहे भौमे भृगुदृष्टिफलम् ।

वस्त्रान्नपानीयसुखैः समेतं कान्ताप्रसक्तं सुतरां समृद्धम् ।

कुर्यान्नरं भूमिसुतो बुधर्क्षसंस्थः प्रदृष्टो भृगुनन्दनेन ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें मंगल बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो वह मनुष्य वस्त्र अन्नपानोंके सुखसे सहित, स्त्रीमें आसक्त और निरंतर समृद्धियों सहित होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधगृहे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

अतीव शूरो मलिनोऽलसश्च दुर्गाचलारण्यविलासशीलः ।

भवेन्नरो भास्करपुत्रदृष्टे धरासुते सोमसुतालयस्थे ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधकी राशि मिथुन वा कन्यामें मंगल बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य बड़ा शूरवीर, मलिन, आलसी और किला कोट पर्वत जंगलोंमें विलास करनेवाला होता है ॥ १८ ॥

पित्तप्रकोपादतिदुःखितोऽतिधीरो दण्डाधिकारी सुतरां महौजाः ।

भवेन्नरः कर्कगते महीजे निरीक्ष्यमाणे रविणा प्रसूतौ ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल कर्क राशिमें बैठा हो और उसको सूर्य देखता हो वह मनुष्य पित्तप्रकोपसे दुःखी, अत्यन्त धैर्यवान्, फौजदारीका अधिकारी और निरंतर बड़े बलवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

मनाभिभूतो धनबन्धुशोको विहीनदेहो मतसाकुलः ।

भवेन्नरः कर्कटगे महीजे सोमेन सूतौ च निरीक्ष्यमाणे ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठा हो व उसको चंद्रमा देखता हो तो वह मनुष्य रोगकरके सहित, नष्ट चीजका सोच करनेवाला, कुरूपवान् और बुद्धिसे हीन होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

मित्रैर्विमुक्तोऽल्पकुटुम्बभारः पापप्रचारः खलचित्तवृत्तिः ।
बुधेन दृष्टे सति कर्कटस्थे भौमे नरः स्याद्व्यसनाभिभूतः ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य मित्रोंकरके रहित, थोडे कुटुंबवाला, पापका प्रचारक और दुष्ट-चित्तवाला और व्यसन करनेके कारण तिरस्कृत होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

नरेंद्रमंत्री गुणगौरवाढ्यो मान्यो वदान्यो मनुजः प्रसिद्धः ।
कुलीरसंस्थे तनये धरित्र्या निरीक्षिते चित्रशिखण्डिजेन ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य राजाका मंत्री, गुण और गौरवसहित, बडे मान करके युक्त और प्रसिद्ध दानी होता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम्

अर्थक्षयो दुर्व्यसनेन नूनं निरंतरानर्थसमुद्भवः स्यात् ।
भवेन्नराणां भृगुणा प्रदृष्टे त्वंगारके कर्कटराशिसंस्थे ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठा हो व उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य बुरे कामोंमें धनको नष्ट करनेवाला और रातदिन बुरे कामोंके विचार करता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

कीलालधान्यादिधनः सुकांतिर्महीपतिप्राप्तधनो मनुष्यः ।
महीसुते कर्कटराशिसंस्थे निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूनो ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य जलोत्पन्न धान्यसे धनवान्, श्रेष्ठ कांतिवाला और राजा करके धन प्राप्त करनेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहस्थभौमे रविदृष्टिफलम् ।

हितप्रकर्ताऽभिमतेषु नूनं द्विषज्जनानामहितप्रदाता ।
वनाद्रिकुंजेषु कृतप्रचारः सिंहे महीजे रविणा प्रदृष्टे ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको सूर्य देखता हो वह मनुष्य अपने प्यारोंसे प्रीति करनेवाला और शत्रुओंको दुःख देनेवाला तथा वन पर्वत कुओंमें रहनेवाला होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहस्थभौमे चंद्रदृष्टिफलम् ।

पृथुष्टमूर्तिः कठिनस्वभावश्चाम्बाविनीतो निपुणः स्वकार्ये ।
तीव्रः सुमांश्चारुमतिः प्रसूतौ सिंहे महीजे द्विजराजदृष्टे ॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें मंगल बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो व मनुष्य पुष्ट शरीरवाला, कठिन स्वभाव, मातासे नम्र, अपने कार्यमें चतुर, तीव्र और सुन्दर बुद्धिवाला होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहस्थभौमे बुधदृष्टिफलम् ।

सत्काव्यशिल्पादिकलाकलापे विज्ञोऽपि लुब्धश्चलचित्तवृत्तिः ।
स्वकार्यसिद्धौ निपुणो नरः स्यात्सिंहे महीजे शशिजेन दृष्टे॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको बुध देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ काव्य और शिल्पादि कलाओंके समूहको जाननेवाला, लोभी, चंचल चित्त-वृत्तिवाला और अपने कार्यके साधनमें चतुर होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

प्रशस्तबुद्धिर्नृपतेः सुहृच्च सेनाधिनाथोऽभिमतो बहूनाम् ।
विद्याप्रवीणो हि नरः प्रसूतौ जीवेक्षिते सिंहगते महीजे ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवाला, राजाका मित्र, फौजका मालिक, बहुत मनुष्योंके मनोरथ पूर्ण करनेवाला और विद्यामें प्रवीण होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम् ।

गर्वोन्नतोऽत्यन्तशरीरकान्तिर्नानाङ्गनाभोगयुतः समृद्धः ।
भूमीसुते सिंहगते प्रसूतौ निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको शुक्र देखता हो वह मनुष्य अभिमान करके ऊंचा, अत्यन्त सुन्दर शोभायमान देहवाला, अनेक स्त्रियोंके साथ भोग करनेवाला और सम्पूर्णसमृद्धिसहित होता है ॥ २९ ॥

भवेन्निवासोऽन्यगृहेऽतिचिन्ता वृद्धाकृतित्वं द्रविणोज्झितत्वम् ।
भवेन्नराणां धरणीतनूजे सिंहस्थिते भानुसुतेन दृष्टे ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य पराये घर वास करनेवाला, अत्यन्त चिन्ताकरके युक्त, बूढेके समान स्वरूपवाला और धनहीन होता है ॥ ३० ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे रविदृष्टिफलम् ।

वनाद्रिदुर्गेषु कृताधिवासं क्रूरं सभाग्यं जनपूजितं च ।
करोति जातं धरणीतनूजो जीवर्क्षयातस्तरणिप्रदृष्टः ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें बृहस्पति बैठा हो और सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य वन, पर्वत किले कोटमें वास करनेवाला, क्रूरस्वभाववाला, भाग्यवान् और मनुष्यों करके पूजनीय होता है ॥ ३१ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

विद्वद्विधिज्ञं नृपतेरसक्तं कलिप्रियं सर्वनिराकृतं च ।
प्राज्ञं प्रकुर्यान्मनुजं धराजो जीवर्क्षगः शीतकरप्रदृष्टः ॥३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा हो और चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो वह मनुष्य पण्डितोंकी विधिका जाननेवाला, राजाको नहीं माननेवाला, लडाई जिसको प्यारी और जनोंकरके त्यक्त, एवं बुद्धिमान् होता है ॥ ३२ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञं च शिल्पे निपुणं सुशीलं समस्तविद्याकुशलं विनीतम् ।
करोति जातं खलु लोहितांगः सौम्येन दृष्टो गुरुगेहयातः॥३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिवर्ती मंगलको बुध देखता हो वह मनुष्य चतुर, शिल्पविद्यामें निपुण, श्रेष्ठ शीलवान्, सब विद्याओंमें चतुर और नम्रतायुक्त होता है ॥ ३३ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

कान्तातिचिन्तासहितं नितांतमरातिवर्गैः कलहानुरक्तम् ।
स्थानच्युतं भूमिसुतः प्रकुर्य्याज्जीवेक्षितो जीवगृहाधिसंस्थः॥३४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा हो और बृहस्पति करके दृष्ट हो तो वह मनुष्य स्त्रीकी अत्यन्त चिन्ता करनेवाला, निरन्तर दुश्मनोंसे लडाई करनेवाला और स्थानसे भ्रष्ट होता है ॥ ३४ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम् ।

उदारचेता विषयानुरक्तो विचित्रभूषापरिभूषितश्च ।
भाग्यान्वितः स्यात्पुरुषोऽवनीजे जीवर्क्षगे दानवपूज्यदृष्टे॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य उदार चित्तवाला, विषयोंमें आसक्त, अनेक प्रकारके गहनों करके भूषित और भाग्यवान् होता है ॥ ३५ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

कायकांतिरहितश्च नितांतं स्थानसंचलनतोऽपि च दुःखी ।
अन्यकर्मनिरतश्च नरः स्यान्मीनचापे कुसुतेऽर्कजदृष्टे ॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा हो और शनैश्चरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य देहकी कांति करके रहित, अनेक स्थानोंमें भ्रमण करनेसे दुःखी हो और पराये कार्यमें तत्पर होता है ॥ ३६ ॥

अथ शन्यागारगते भौमे रविदृष्टिफलम् ।

कलत्रपुत्रार्थसुखैः समेतं श्यामं सुतीक्ष्णं सुतरां च शूरम् ।
कुर्यान्नरं भूतनयोऽर्कदृष्टश्चार्कात्मजागारगतः प्रसूतौ ॥३७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत मंगलको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य निरन्तर स्त्री पुत्र धनके सुख करके सहित तरुणस्वरूप, तीक्ष्ण और बड़ा शूरवीर होता है ॥ ३७ ॥

अथ शन्यागारगते भौमे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

सद्भूषणं मातृसुखेन हीनं स्थानच्युतं चञ्चलसौहृदं च ।
उदारचित्तं प्रकरोति जातं कुजोऽर्कजस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत मंगलको चन्द्रमा देखता है तो वह मनुष्य श्रेष्ठ आभूषणों करके सहित, माताके सुखसे हीन, स्थानभ्रष्ट, चञ्चल-मित्रवाला और उदारचित्त होता है ॥ ३८ ॥

अथ शन्यागारगते भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

प्रियोक्तियुक्तोऽटनवित्तलब्धः सत्त्वान्वितः कैतवसंयुतश्च ।
अभीर्नरो मंदगृहे प्रयाते पृथ्वीसुते चन्द्रसुतेन दृष्टे ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत मंगलको बुध देखता हो वह प्रियवाणी बोलनेवाला, भ्रमण करनेसे धन प्राप्त करनेवाला बलसहित, कपट करके सहित और भयरहित होता है ॥ ३९ ॥

अथ शून्यागारगते भौमे गुरुदृष्टिफलम्।

दीर्घायुषं भूपकृपागुणाढ्यं बंधुप्रियं चारुशरीरकांतिम्।
कार्यप्रलापं जनयेन्मनुष्यं जीवेक्षितो मन्दगृहे महीजः॥ ४०॥

जिस मनुष्यके मकर कुंभ राशिवर्ती मंगलको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य बड़ी उमरवाला, राजाकी कृपाकरके सहित, गुणकरके युक्त, भाइयोंको प्यारा, सुन्दर देहकी कांतिवाला और कार्यमें बहुत बोलनेवाला होता है॥ ४०॥

अथ शून्यागारगते भौमे भृगुदृष्टिफलम्।

सद्भोगसौभाग्यसुखैः समेतः कांताप्रियोऽत्यंतकलिप्रियश्च।
क्षोणीसुते मन्दगृहं प्रयाते निरीक्ष्यमाणे भृगुणा नरः स्यात्॥४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत मंगलको शुक्र देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ भोग सौभाग्य सुखकरके सहित, स्त्रियोंका प्यारा और जिसको कलह अत्यन्त प्यारा ऐसा होता है॥ ४१॥

अथ शून्यागारगते भौमे शनिदृष्टिफलम्।

नृपाप्तवित्तो वनिताविपक्षी बहुश्रुतोऽत्यन्तमतिः सकष्टः।
रणप्रियः स्याद्धरणीतनुजे मंदेक्षिते मंदगृहं प्रयाते॥ ४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भराशिगत मंगलको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य राजाकरके धनको प्राप्त करनेवाला, स्त्रीके साथ वैर करनेवाला, बहुश्रुत बड़ी बुद्धिवाला, कष्टसहित और संग्राम उसको प्यारा लगता है॥ ४२॥

इति मेषादिराशिगते भौमे ग्रहदृष्टिफलम्।

अथ मेषादिराशिगते बुधे रविदृष्टिफलम्।

तत्र भौमगेहे बुधे रविदृष्टिफलम्।

बंधुप्रियं सत्यवचोविलासं नृपालसद्गौरवसंयुतं च।
करोति जातं क्षितिसूनुगेहसंस्थो बुधो भानुमता प्रदृष्टः॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बुधको सूर्य देखता हो वह मनुष्य भाइयोंका प्यारा, सच्चा बोलनेवाला, विलासयुक्त, श्रेष्ठ राजाओंसे मान पानेवाला होता है॥ १॥

अथ भौमगृहे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्।

सद्गीतनृत्यादिरुचिः प्रकामं कांतारतिर्वाहनभृत्ययुक्तः।
कौटिल्यभाक्स्यान्मनुजः कुजर्क्षे सोमात्मजे शीतकरप्रदृष्टे॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बुध बैठा हो और उसको चंद्रमा देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत नृत्यादिमें प्रीति करनेवाला, कामसहित, स्त्रीमें, प्रीति करनेवाला, वाहन और नौकरोंसे सहित और कुटिल होता है ॥ २ ॥

अथ भौमगृहे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

भूपप्रियं भूरिधनं च शूरं कलाप्रवीणं कलहोद्यतं च ।
क्षुधान्वितं सञ्जनयेन्मनुष्यं सौम्यः कुजर्क्षे कुसुतेन दृष्टः ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बुधको मंगल देखता हो वह मनुष्य राजाका प्यारा, बहुत धनवाला, शूरवीर, कलाओंमें चतुर, लडाई करनेमें उद्यत और क्षुधाकरके सहित होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमगेहे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

सुखोपपन्नं चतुरं सुवाक्यं कांतासुताद्यैः सहितं प्रसन्नम् ।
करोति मर्त्यं कुजगेहगामी सोमात्मजो वाक्पतिना प्रदृष्टः ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य सुख करके सहित, चतुर, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, स्त्री पुत्रादि सहित और प्रसन्नचित्त होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमगेहे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

कांताविलासं गुणगौरवाढ्यं सुहृत्प्रियं चारुमतिं विनीतम् ।
करोति जातं शशिजः कुजर्क्षे संस्थश्च शुक्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बुध बैठा हो सो और उसको शुक्र देखता हो वह मनुष्य स्त्रियोंके साथ विलास करनेवाला, गुण और गौरवसहित, मित्रोंका प्यारा, सुन्दरबुद्धिवाला एवं नम्रतासहित होता है ॥ ५ ॥

अथ भौमगेहे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

सुसाहसं चोग्रतरस्वभावं कुलोत्कलिप्रीतिमसाधुवृत्तिम् ।
करोति मर्त्यं हरणाङ्कसूनुर्भौमर्क्षसंस्थः शनिना प्रदृष्टः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बुध बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो, तो वह मनुष्य श्रेष्ठ साहसवाला, क्रूरस्वभाववाला, कुलमें कलह करनेवाला, प्रीति और श्रेष्ठ वृत्तिसे रहित होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रगेहे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

दारिद्र्यदुःखामयतप्तदेहं परोपकारादिरतं नितांतम् ।
शांतं सुचित्तं पुरुषं प्रकुर्यात्सौम्यो भृगुक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें बुध बैठा हो और सूर्य करके दृष्ट हो वह मनुष्य दरिद्र और दुःख तथा रोगों करके संतापित देहवाला, पराया उपकार करनेमें नितांत तत्पर, शांतस्वभाव और शुद्धचित्त होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

बहुप्रपञ्चं धनधान्ययुक्तं दृढव्रतं भूमिपतिप्रधानम् ।
ख्यातं प्रकुर्यान्मनुजं हि सौम्यः शुक्रर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिमें बुध बैठा हो और चन्द्रमाकरके दृष्ट हो वह मनुष्य बहुत प्रपंच करनेवाला, धनधान्यसहित, दृढप्रतिज्ञावाला, राजाका मन्त्री और प्रख्यात होता है ॥ ८ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

राजापमानादिगदप्रतप्तं त्यक्तं सुहृद्भिर्विषयैश्च नूनम् ।
कुर्यान्नरं सोमसुतः सितर्क्षे स्थितो धरापुत्रनिरीक्ष्यमाणः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बुधको मंगल देखता हो वह मनुष्य राजासे अपमान किया हुआ, रोगसे संतापित, मित्र और विषयोंसे रहित होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

देशोत्तमग्रामपुराधिराजं प्राज्ञं गुणज्ञं गुणिनं सुशीलम् ।
कुर्यान्नरं चन्द्रसुतः सितर्क्षसंस्थः सुराचार्यनिरीक्ष्यमाणः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य उत्तम देश, ग्राम तथा उत्तम नगरोंका स्वामी (राजा), चतुर, गुणोंका जाननेवाला, गुणवान् और श्रेष्ठशीलवाला होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

अतिसुललितवेषं वस्त्रभूषाविशेषै-
र्युवतिजनमनोज्ञं मन्मथोत्कर्षहर्षम् ।
अतिचतुरमुदारं चारुभाग्यं च कुर्या-
द्भृगुगृहगतसौम्यो भार्गवेण प्रदृष्टः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें बुध बैठा हो और शुक्र करके दृष्ट हो वह मनुष्य अत्यन्त सुन्दर वेषवाला, वस्त्र और भूषणोंसे युक्त, स्त्रियोंको प्रिय और कामदेवके उत्कर्षसे हर्षको प्राप्त, अत्यन्त चतुर, उदार और श्रेष्ठ भाग्यवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ तुलास्थे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

कलत्रमित्रात्मजयानपीडासंतप्तचित्तं सुखवित्तहीनम् ।
कुर्यान्नरं शत्रुजनाभिभूतं मंदेक्षितो ज्ञः सितधामगामी ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध तुला राशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य स्त्री, पुत्र मित्र और वाहनके दुःखसे संतप्तचित्त और सुख और धनसे हीन शत्रुजनोंसे तिरस्कृत होता है ॥ १२ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

सत्त्वोपेतं चारुलीलाविलासं भूमीपालात्प्राप्तमानोन्नतिं च ।
चाञ्चल्यक्षीणं चापि कुर्यान्मनुष्यं स्वक्षेत्रस्थश्चंद्रपुत्रोऽर्कदृष्टः ॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बुधको सूर्य देखता हो वह मनुष्य सत्त्वसहित, सुंदरलीलाका विलास करनेवाला, राजासे मान और उन्नतिको प्राप्त और चञ्चलता रहित होता है ॥ १३ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

अनल्पजल्पोऽमृततुल्यभाषी कलिप्रियो राजसमीपवर्ती ।
भवेन्नरः सोमसुते स्वगेहे निरीक्ष्यमाणे मृगलाञ्छनेन ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध मिथुन कन्या राशिमें बैठा हो और चन्द्रमासे देखा गया हो वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, बहुत मीठी वाणी बोलनेवाला, लड़ाई भिड़को प्यारी और राजाके पास रहनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नगात्रं कुटिलं कलाज्ञं नरेन्द्रकृत्ये सुतरां प्रवीणम् ।
जनप्रियं संजनयेन्मनुष्यं भौमेक्षितो ज्ञः स्वगृहेऽधिसंस्थः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या मिथुन राशिगत बुधको मंगल देखता हो वह मनुष्य प्रसन्नदेह, चुगलखोर, कलाओंका जाननेवाला, राजाके कृत्यमें नितांत प्रवीण और मनुष्योंका प्यारा होता है ॥ १५ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

बह्वर्थसामर्थ्यविराजमानं सद्राजमानाप्तपदाधिकारम् ।
सुतं प्रकुर्यान्निजमन्दिरस्थः सौम्यः प्रदृष्टः सुरपूजितेन ॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य बहुत धनवाला, सामर्थ्यकरके सहित, श्रेष्ठ राजाके मानसे अधिकारको प्राप्त और बहुसुख होता है ॥ १६ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे शुक्रदृष्टिफलम्।

नरेंद्रदूतो विजितारिवर्गः संधिक्रियामार्गविधिप्रगल्भः।
वारांगनासक्तमनोऽभिलाषः शुक्रेक्षिते ज्ञे निजभे नरः स्यात्॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत बुधको शुक्र देखता हो वह मनुष्य राजाका दूत, वैरियोंको जीतनेवाला, दोनोंकी संधि करानेमें चतुर, वेश्याओंमें आसक्त और मनकी अभिलाषाको प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्।

प्रारम्भसिद्धिं विनयं विशेषात्सद्वस्त्रभूषादिसमृद्धिसुखैः।
कुर्यान्नराणाममृतांशुजन्मा स्वमंदिरस्थो रविसूनुदृष्टः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य प्रारम्भ किये कार्यको सिद्ध करनेवाला, नम्रतासहित, श्रेष्ठ वस्त्र और आभूषणादि समृद्धियोंसहित होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे रविदृष्टिफलम्।

कांतानिमित्तात्पमहाप्यलीको द्रव्यव्ययात्यंतकृशांगयष्टिः।
बहूपसर्गोऽपि भवेन्मनुष्यः कुलीरगे ज्ञे नलिनीशदृष्टे ॥१९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको सूर्य देखता हो वह मनुष्य स्त्रीके निमित्तसे पूर्ण पीड़ाको प्राप्त, धनका व्यय करनेवाला, अत्यन्त दुर्बलदेह और बहुत उत्पातोंसहित होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्।

वस्त्रादिशुद्धौ मणिसंग्रहे च गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणः।
प्रसूनमालाग्रथनेऽपि मर्त्यः कुलीरगे ज्ञे शशिना प्रदृष्टे ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको चंद्रमा देखता हो वह मनुष्य वस्त्रादिकोंकी शुद्धि, मणियोंका संग्रह करने और मकानादिकस्थानोंके बनानेमें चतुर और फूलोंकी माला गूंथनेमें भी चतुर होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम्।

स्वल्पश्रुतं चार्थरतं च शूरं प्रियंवदं कूटविधौ प्रवीणम्।
कुर्यान्नरं शीतकरस्य सूनुः कुलीरसंस्थेऽवनिसूनुदृष्टे ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको मंगल देखता हो वह थोड़ा शास्त्रका जाननेवाला, अर्थमें तत्पर, शूर वीर, प्यारी वाणी बोलनेवाला छल बात बोलनेमें चतुर होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञो विधिज्ञो विधिनातिशाली सद्वाग्विलासोऽवनिपालमान्यः ।
स्यान्मानवो जन्मनि सोमसूनौ कुलीरगामिन्यमरेज्यदृष्टे ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य चतुर, विधिका जाननेवाला, बड़ा भाग्यवान् और श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला होता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

प्रियंवदश्चारुशरीरभाक् च सङ्गीतवाद्यादिविधौ प्रवीणः ।
स्यान्मानवो दानववन्द्यदृष्टे कर्काटकस्थेऽमृतभानुसूनौ ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको शुक्र देखता हो वह मनुष्य प्यारी वाणी बोलनेवाला, सुन्दर शरीरवाला, गीत और बाजोंकी विधिमें चतुर होता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

गुणैर्विहीनं स्वजनैर्वियुक्तमलीकदंभानुरतं कृतघ्नम् ।
करोति मर्त्यं परिसूतिकाले कुलीरगो ज्ञो रविसूनुदृष्टः ॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य गुणोंसे हीन, अपने मित्र तथा भाई बंधुओंसे रहित, झूठ बोलने तथा दंभमें तत्पर और कृतघ्न होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

कृपाविहीनं च चलस्वभावं सेर्ष्यं च हिंसाभिरतं च रौद्रम् ।
क्षुद्रं प्रकुर्य्यान्मनुजं प्रसूतौ बुधोऽर्कदृष्टो मृगराजसंस्थः ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको सूर्य देखता हो वह मनुष्य कृपारहित, चंचल स्वभाववाला, ईर्षासहित, हिंसा करनेमें तत्पर, क्रूर और क्षुद्र होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

रूपान्वितं चारुमतिं विनीतं सङ्गीतनृत्याभिरतं नितांतम् ।
सद्वृत्तवृत्तं कुरुते हि मर्त्यं चन्द्रेक्षितः सिंहगतो बुधाख्यः ॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य रूपवान्, सुन्दर बुद्धिवाला नम्रतासहित, गीत और नृत्यमें नितांत तत्पर और श्रेष्ठ वृत्तिका करनेवाला होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

कन्दर्पसत्त्वोज्झितमुक्तवृत्तं क्षताङ्कितं हीनमतिं विचित्रम् ।
सुदुःखितं संजनयेत्पुमांसं भौमेक्षितः सिंहगतः शशीजः ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको मंगल देखता हो वह मनुष्य कामदेव और पराक्रम रहित चरित्रहीन, घावोंसे अंकित, बुद्धिहीन, विचित्र और दुःखसहित होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

कोमलामलरुचिः कुलवर्यश्चारुलोचनयुतश्च समर्थः ।
वाहनोत्तमधनो मनुजः स्यादिन्दुजे हरिगते गुरुदृष्टे ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य कोमल निर्मल रुचिवाला, कुलमें श्रेष्ठ, सुन्दरनेत्र, सामर्थ्यवान्, उत्तम वाहन और धनवान् होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

सद्रूपशाली प्रियवाग्विलासो नृपाश्रितो वाहनवित्तयुक्तः ।
भवेन्नरः सोमसुते प्रसूतौ सिंहास्थिते दानववन्द्यदृष्टे ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें सिंहराशिगत बुधको शुक्र देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ रूपवाला, मिष्ट वाणी बोलनेवाला, विलासयुक्त, राजाके आश्रित वाहन और धनसहित होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

स्वेदोद्गमोद्भूतमहोग्रगंधं विस्तीर्णगात्रं च कुरूपमुग्रम् ।
सुखेन हीनं मनुजं प्रकुर्य्यान्मन्देक्षितः सिंहगतो यदि ज्ञः ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो उस मनुष्यकी देहमें पसीने करके दुर्गंध आती है, बड़ी देहवाला, कुरूप, उग्र, सुखहीन होता है ॥ ३० ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

शूलाश्मरीमेहनिपीडिताङ्गो भङ्गोज्झितः शान्तिमुपागत[illegible]
स्यात्पूरुषो गीष्पतिवेश्मसंस्थे निशीथिनीस्वामिसुतेऽर्कदृ[illegible]॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको सूर्य देखता हो [illegible] मनुष्य मूढ, पथरी, प्रमेहरोगसे पीडित, मनकी उमंगसे रहित और शान्तिको प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

लेखक्रियायां सुतरां प्रवीणः सुसंगतः साधुसुहृज्जनानाम् ।
नरः सुखी शीतमयूखपुत्रे चन्द्रेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य लेखक्रियामें बड़ा चतुर, श्रेष्ठ संगति करनेवाला, साधु और मित्रोंका संग किये सुखी होता है ॥ ३२ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

परम्पराचोरवनस्थितानां स्युर्लेखका धान्यधनैर्विहीनाः ।
नरास्तु नीहारकरप्रसूतौ जीवालये मंगलदृष्टदेहे ॥ ३३ ॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको मंगल देखता हो वे मनुष्य बाप दादेसे लेकर चोर होते हैं और वनमें रहते हैं और उनके नाम राजमें लिखे जाते हैं और अन्न धनसे रहित होते हैं ॥ ३३ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

विज्ञानशाली स्वकुलावतंसो नृपालकोशालयलेखकर्ता ।
भर्ता बहूनां मनुजस्तु सौम्ये जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें बुध बैठा हो उसको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य ज्ञानवान् अपने कुलमें शिरोमणि और राजाके खजानेमें लिखनेवाला और बहुतजनोंका स्वामी होता है ॥ ३४ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे शुक्रदृष्टिफलम् ।

भूपामात्यापत्यलेखाधिकारं चौर्यासक्तं सौकुमार्येण युक्तम् ।
द्रव्योपेतं मानवं सोमसूनुर्जीवर्क्षस्थः शुक्रदृष्टः करोति ॥ ३५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको शुक्र देखता हो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, लेखके अधिकारको प्राप्त, चोरोंमें आसक्त, सुकुमारता सहित और धनवान् होता है ॥ ३५ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

बह्वन्नभोक्ता मलिनः कुवृत्तः कान्तारदुर्गाचलवासशीलः ।
कार्योपयुक्तो न भवेन्मनुष्यो जीवर्क्षगो ज्ञोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य बहुत अन्न खानेवाला, मलिन, कुदृष्टि रखनेवाला, वन और पर्वतोंमें वास करनेवाला और कामके साधक नहीं होता है ॥ ३६ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

प्रारब्धकार्याकलितप्रतापं सन्मल्लविद्याकुशलं कुशीलम् ।
कुटुम्बिनं संजनयेन्मनुष्यं बुधः शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बुधको सूर्य देखता हो वह मनुष्य अपने प्रारब्ध करके प्रतापसहित, श्रेष्ठ मल्लविद्यामें कुशल, सुशील और कुटुम्बी होता है ३७ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

जलोपजीवी धनवांश्च भीरुः प्रसूनकन्दोद्यमतत्परश्च ।
पुमान्भवेद्भानुसुतालयस्थे बुधे सुधांशुप्रविलोकयमाने ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभराशिमें बुधको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य जलसम्बन्धी कार्यमें आजीविका करनेवाला, धनवान्, डरपोक तथा फूल और कंदफलके उद्यम करनेवाला होता है ॥ ३८ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

व्रीडालसस्तब्धतरस्वभावः सौम्यः सुखी वाक्चपलोऽर्थयुक्तः ।
स्यान्मानवो भानुसुतर्क्षसंस्थे दृष्टेऽज्ञसूनौ क्षितिनन्दनेन ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बुधको मंगल देखता हो वह मनुष्य लज्जा और आलस्य करके सहित, कड़े स्वभाववाला, सौम्यमूर्ति, सुखी, चपलवाणी बोलनेवाला और धनवान् होता है ॥ ३९ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

धान्यवाहनधनान्वितः सुखी ग्रामपत्तनपतिर्महामतिः ।
भानुसूनुभवनेऽब्जनंदने देववंद्यविवीक्षिते नरः ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य अन्न और वाहन तथा धनकरके सहित, सुखी, ग्राम और नगरका स्वामी बड़ा बुद्धिमान् होता है ॥ ४० ॥

अथ शन्यालयगे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

बहुप्रजासंजनकं कुरूपं प्राज्ञोज्झितं नीचजनानुयातम् ।
कामाधिकं संजनयेन्मनुष्यं शुक्रेक्षितो ज्ञः शनिगेहसंस्थः ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बुधको शुक्र देखता हो वह मनुष्य बहुत संतानका पिता, कुरूप, चतुरतारहित, नीचजनोंका साथी और अधिक कामी होता है ॥ ४१ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

सुखोज्झितं पापरतं च दीनमकिंचनं हीनजनानुयातम् ।
करोति मर्त्यं शनिधामसंस्थः सौम्यस्तमोहंतृसुतेन दृष्टः ॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भराशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य सुखरहित, पापमें तत्पर, दीन, धनरहित और हीनजनोंका संग करनेवाला होता है ॥ ४२ ॥

इति मेषादिराशिगे बुधे ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ मेषादिराशिगे गुरौ ग्रहदृष्टिफलम्-
तत्र भौमर्क्षगे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

असत्यभीरुर्बहुधर्मकर्ता ख्यातश्च सद्भाग्ययुतो विनीतः ।
भवेन्नरो देवगुरौ प्रयाते भौमस्य गेहे रविदृष्टदेहे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो वह मनुष्य असत्यसे डरनेवाला, बहुत धर्म करनेवाला, विख्यात, श्रेष्ठ भाग्यसहित और नम्र होता है ॥ १ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

ख्यातो विनीतो वनितानुयातः सतां मतो धर्मरतः प्रशांतः ।
जातो भवेद्भूमिसुतर्क्षयाते वाचां पतौ शीतकरेण दृष्टे ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बृहस्पति बैठा हो और चन्द्रमा करके दृष्ट हो वह मनुष्य प्रसिद्ध, नम्रतासहित, स्त्रीका प्यारा, श्रेष्ठ पुरुषोंकी सलाह लेनेवाला, धर्ममें तत्पर और शांतस्वभाव होता है ॥ २ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

क्रूरोऽतिधूर्तः परगर्वहर्ता नृपाश्रयाजीवनवृत्तिकर्ता ।
भर्ता बहूनां ननु मानवः स्याज्जीवे कुजर्क्षे च कुजेन दृष्टे ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो वह मनुष्य क्रूर, बड़ा धूर्त, दूसरोंके अभिमानको नष्ट करनेवाला, राजाके आश्रयसे आजीविका करनेवाला और बहुत मनुष्योंका स्वामी होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

सद्वृत्तसत्योत्तमवाग्विहीनश्छिद्रप्रतीक्षी प्रणयानुयातः ।
मर्त्यो भवेत्कैतवसंप्रयुक्तो वाचस्पतौ भौमगृहे ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह मनुष्य सदाचार और सत्य उत्तमवाणी करके रहित, दूसरेका छिद्र देखनेवाला, नम्र मनुष्योंका साथी और धूर्त होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

गन्धमाल्यशयनासनभूषायोषिदम्बरनिकेतनसौख्यम् ।
संप्रयच्छति नृणां भृगुणा चेद्वीक्षितः सुरगुरुः कुजसंस्थः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो वह मनुष्य गंध, माला, शय्या, भोजन, आभूषण, स्त्री, वस्त्र, स्थान इन सब चीजोंके सौख्यको पाता है ॥ ५ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

लुब्धं रौद्रं साहसैः संयुतं च मित्रापत्योद्भूतसौख्योज्झितं च ।
कुर्यान्मन्त्रे निष्ठुरं देवमन्त्री धात्रीपुत्रक्षेत्रगो मन्ददृष्टः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष, वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य क्रूर, हठसहित, मित्र और संतानके सुखसे रहित और सलाह करनेमें कठोर होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

संगरात्तविजयं क्षतगात्रं सामयं च बहुवाहनभृत्यम् ।
मंत्रिणं हि कुरुते सुरमंत्री दैत्यमंत्रिगृहगो रविदृष्टः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष, तुला राशिमें बृहस्पति बैठा हो और सूर्यसे दृष्ट हो वह मनुष्य युद्धमें जयको प्राप्त, घावसहित, शरीररोगसहित, बहुत वाहन और नौकरोंवाला राजाका मन्त्री होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

सत्त्वेन युक्तं सततं विनीतं परोपकाराभिरतं सुचित्तम् ।
सद्भाग्यभाजं कुरुते मनुष्यं जीवः सितर्क्षेऽमृतरश्मिदृष्टः ॥ ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखता हो वह मनुष्य सत्त्वसहित, निरन्तर नम्रतायुक्त, पराया उपकार करनेवाला और श्रेष्ठ चित्त व श्रेष्ठ भाग्यवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

भाग्योपपन्नं सुतसौख्यभाजं प्रियंवदं भूपतिलब्धमानम् ।
नरं सदाचारपरं करोति भौमेक्षितेज्यो भृगुजालयस्थः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो वह मनुष्य भाग्यसहित, पुत्रसौख्यको प्राप्त, मीठी वाणी बोलनेवाला, राजा करके प्राप्त किया है मान जिसने और हमेशा आचारसहित होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

सन्मन्त्रविद्यानिरतं नितांतं भाग्यान्वितं भूपतिलब्धवित्तम् ।
सुन्दरकलाज्ञं पुरुषं प्रकुर्याद्गुरुर्भृगुक्षेत्रगतो ज्ञदृष्टः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिमें बृहस्पति बुध करके दृष्ट हो वह मनुष्य श्रेष्ठ मंत्र और श्रेष्ठ विद्यामें तत्पर, नितांत भाग्यसहित, राजासे धन प्राप्त करनेवाला, सुन्दर और कलाओंका जाननेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

धनान्वितं चारुविभूषणाढ्यं सद्वृत्तचित्तं विभवैः समेतम् ।
करोति मर्त्यं सुरराजमंत्री शुक्रालयस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषतुलाराशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो वह मनुष्य धन और भूषणसहित, श्रेष्ठ वृत्तिमें चित्त जिसका और ऐश्वर्यवान् होता है ११

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतं प्राज्ञं पुरग्रामभवोत्सवाढ्यम् ।
नरं प्रकुर्याच्चतुरं सुरेज्यो दैत्येज्यभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ पुत्र श्रेष्ठ स्त्रियोंके सुखकरके सहित, चतुर, नगर और ग्राममें उत्सव करके सहित, और चतुर होता है ॥ १२ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

सत्पुत्रदारं धनमित्रसौख्यं श्रेष्ठप्रतिष्ठाप्तविराजमानम् ।
नरं प्रकुर्यात्सुरराजमन्त्री रविप्रदृष्टो बुधवेश्मसंस्थः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री, धन तथा मित्र सौख्यसहित, श्रेष्ठ प्रतिष्ठाको प्राप्त शोभायमान होता है ॥ १३ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

गुणान्वितं ग्रामपुरोपकारं विराजमानं बहुगौरवेण ।
कुर्यान्नरं देवगुरुर्बुधर्क्षसंस्थो निशानाथनिरीक्ष्यमाणः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पति चन्द्रमा करके दृष्ट हो वह मनुष्य गुणोंसे युक्त, ग्राम और नगरोंमें उपकार करनेवाला, बहुत गौरवसे शोभायमान होता है ॥ १४ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

संग्रामसंप्राप्तजयं क्षताङ्गं धनेन सारेण समन्वितं च ।
करोति जातं विबुधेन्द्रमन्त्री बुधालयस्थः क्षितिसूनुदृष्टः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य संग्राममें जय पाता है और घावसहित देहवाला, धन तथा पराक्रमसे संपन्न होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

सन्मित्रदारात्मजवित्तसौख्यो वशी भवेज्ज्योतिषशिल्पवेत्ता ।
स्याच्चारुभाषी पुरुषः प्रकामं जीवे बुधर्क्षे च बुधेन दृष्टः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ और स्त्री पुत्र धन सौख्यसहित, चतुर, ज्योतिष और शिल्पशास्त्रका जाननेवाला और यथेष्ट सुन्दर वाणी बोलनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

धनाङ्गनापुत्रसुखैरुपेतः प्रासादवापीकृषिकर्मचित्तः ।
भवेत्प्रसन्नः पुरुषः सुरेज्ये दैत्येज्यदृष्टे बुधवेश्मसंस्थे ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो वह मनुष्य धन और स्त्री पुत्रोंके सुखसहित, मकान, बावडी और खेतीके काममें चित्त लगानेवाला, एवं प्रसन्नचित्तवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

नरेन्द्रसद्गौरवसंप्रयुक्तं नित्योत्सवं पूर्णगुणाभिरामम् ।
नरं पुरग्रामपतिं करोति बुधर्क्षगेहे शनिना प्रदृष्टः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य राजा करके श्रेष्ठ गौरवको प्राप्त होता है और नित्य ही उत्सव सहित, गुणोंसे पूर्ण, नगर तथा ग्रामोंका पति होता है ॥ १८ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

दारात्मजार्थोद्भवसौख्यहानिं पूर्वं च पश्चात्खलु तत्सुखानि ।
कुर्यान्नराणां हि गुरुः सुराणां कुलीरसंस्थो रविणा प्रदृष्टः ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य स्त्री, पुत्र और धन करके उत्पन्न सौख्यको पहिले नाश करता है और पिछली अवस्थामें पूर्वोक्त पदार्थोंका सौख्य होता है ॥ १९ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

नरेंद्रकोशाधिकृतं सुकांतं सद्वाहनार्थादिसुखोपपन्नम् ।
सद्वृत्तचित्तं जनयेन्मनुष्यं कर्कस्थितेज्यो शशिना हि दृष्टः ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य राजाके खजानेका स्वामी, श्रेष्ठकांतिवाला, श्रेष्ठवाहन और धनके सुखसहित, एवं श्रेष्ठवृत्तिमें चित्त लगानेवाला होता है ॥ २० ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

कुमारदाराम्बरचारुभूषाविशेषभाजं गुणिनं च शूरम् ।
प्राज्ञं क्षताङ्कं कुरुते मनुष्यं कर्कस्थितेज्योऽवनिजेन दृष्टः ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य बालक और स्त्री तथा सुन्दर वस्त्र भूषणोंसे सम्पन्न, गुणवान्, शूरवीर और व्रणरोगवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

मित्राश्रयोत्पादितसर्वसिद्धिः सद्वृत्तिबुद्धिर्विपुलप्रतापः ।
मन्त्री नरः कर्कटराशिसंस्थे गीर्वाणवन्द्ये शशिसूनुदृष्टे ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह मनुष्य मित्रोंके आश्रयसे सर्वसिद्धियोंको प्राप्त करनेवाला, श्रेष्ठ वृत्तिवाला, श्रेष्ठ बुद्धि, एवं बड़े प्रतापवाला और राजाका मंत्री होता है ॥ २२ ॥

बहूङ्गनावैभवमङ्गनानां नानासुखानामुपलब्धयः स्युः ।
कुलीरयाते वचसामधीशे निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य बहुत स्त्रियोंके वैभवको भोगनेवाला और स्त्रियोंके अनेक सौख्योंको प्राप्त करता है ॥ २३ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

सम्मानभूषागुणचारुशीलः सेनापुरग्रामपतिर्नरः स्यात् ।
अनल्पजल्पः खलु कर्कटस्थे वाचस्पतौ सूर्यसुतेन दृष्टे ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य सम्मान और भूषण तथा गुणोंसे सम्पन्न, श्रेष्ठ शीलवाला, फौज, नगर एवं ग्रामका स्वामी और बहुत बोलनेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

व्ययान्वितं ख्यातमतीव धूर्तं नृपाप्तवित्तं शुभकर्मचित्तम् ।
नरं प्रकुर्यात्सुरराजपूज्यः सूर्येण दृष्टो मृगराजसंस्थः ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य खर्च करनेवाला, प्रसिद्ध, बड़ा धूर्त, राजासे धनलाभ करनेवाला और शुभ कर्ममें चित्त देनेवाला होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिं गतचित्तशुद्धिं स्त्रीहेतुसंप्राप्तधनं वदान्यम् ।
कुर्यात्पुमांसं वचसामधीशः शशांकदृष्टः करिवैरिसंस्थः ॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखता हो तो वह मनुष्य प्रसन्नमूर्ति और चित्त शुद्धिसे हीन और स्त्रीके कारणसे धन लाभ करनेवाला एवं दानी होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

मान्यो गुरूणां गुरुगौरवेण सत्कर्मनिर्माणविधौ प्रवीणः ।
प्राणी भवेत्केसरिणि स्थितेऽस्मिन्गीर्वाणवंद्येऽवनिजेन दृष्टे ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य बड़े मान और बड़े गौरवताके सहित और श्रेष्ठ कर्मके निर्माण करनेमें चतुर होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम्।

गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणो गुणाग्रणीः स्यात्सचिवो नृपाणाम्।
वाणीविलासे चतुरो नरः स्यात्सिंहस्थिते देवगुरौ बुधदृष्टे ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह मनुष्य मकानादिकोंके बनवानेके काममें चतुर, गुणोंमें अग्रणी, राजाका मंत्री और वाणीविलासमें चतुर होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ शुक्रदृष्टिफलम्।

भूमीपतिप्राप्तमहापदस्थः कान्ताजनप्रीतिकरो गुणज्ञः।
भवेन्नरो देवगुरौ हरिस्थे निरीक्षिते चासुरपूजितेन ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य राजाके दिये हुए पदको पानेवाला, स्त्रियोंमें प्रीति करनेवाला और गुणोंका जाननेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम्।

सुखेन हीनं मलिनं सुपापं कृशाङ्गयष्टिं विगतोत्सवं च।
करोति मर्त्यं महताममात्यः सिंहस्थितः सूर्यसुतेन दृष्टः ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य सुखकरके हीन, मलिन, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, दुर्बल देह और उत्सवरहित होता है ॥ ३० ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम्।

राज्ञा विरुद्धत्वमतीव नूनं सुहृज्जनेनापि च वैमनस्यम्।
शत्रूद्गमः स्यान्नियतं नराणां जीवेऽर्कदृष्टे स्वगृहं प्रयाते ॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो वह मनुष्य राजाके अत्यन्त विरुद्ध, मित्रोंसे वैर करनेवाला और वैरी जिसके हमेशा रहते हैं ऐसा होता है, इसमें सन्देह नहीं है ॥ ३१ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

सुगर्वितं भाग्यधनाभिवृद्ध्या प्रियाप्रियत्वाभिमतं विशेषात्।
करोति जातं सुखिनं विनीतं चन्द्रेक्षितो देवगुरुः स्वभस्थः ॥३२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखता हो वह मनुष्य भाग्य और धनवृद्धिसे अभिमानको प्राप्त और स्त्रीका प्यारा, सुखयुक्त और नम्रतासहित होता है ॥ ३२ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

व्रणाङ्कितं सङ्गरकर्मदक्षं हिंसापरं क्रूरतरस्वभावम् ।
परोपकाराभिरतं प्रकुर्य्याद्गुरुः स्वभस्थः क्षितिजेन दृष्टः ॥३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो वह मनुष्य फोड़े करके अंकित, युद्धमें चतुर, हिंसा करनेवाला, क्रूर स्वभाव और पराये उपकार करनेवाला होता है ॥ ३३ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

नृपाश्रयप्राप्तमहाधिकारो दाराधनैश्वर्यसुखोपपन्नः ।
परोपकारादरनैकचित्तो नरो गुरौ स्वर्क्षगते ज्ञदृष्टे ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पति बुध करके दृष्ट हो वह मनुष्य राजाके आश्रयसे बड़े अधिकारको प्राप्त, स्त्री-ऐश्वर्य, धन-सुख सहित और परायेके उपकार एवं सम्मान करनेमें एकचित्त होता है ॥ ३४ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

सुखोपपन्नं सधनं प्रसन्नं प्राज्ञं सदैश्वर्यविराजमानम् ।
नूनं प्रकुर्यान्मनुजं सुरेज्यो दैत्येज्यदृष्टो निजमंदिरस्थः ॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो वह मनुष्य सुखसे सम्पन्न, धनवान्, प्रसन्न, चतुर और हमेशा ऐश्वर्यसहित विराजमान रहता है ॥ ३५ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

पदच्युतं सौख्यसुतैर्विहीनं संग्रामसंजातपराभवं च ।
करोति दीनं स्वगृहे सुरेज्यः सूर्यात्मजेन प्रविलोक्यमानः ॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य अधिकारसे पतित, सुख और पुत्रोंसे रहित तथा युद्धमें पराजयको प्राप्त होता है ॥ ३६ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नकांतिं शुभवाग्विलासं परोपकारादरतासमेतम् ।
कुले नृपालं कुरुते सुरेज्यो मंदालयस्थो यदि भानुदृष्टः ॥३७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो वह मनुष्य प्रसन्न कांतिमान्, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, पराया उपकार आदरसे करनेवाला और अपने कुलका पालक होता है ॥ ३७ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

कुलोद्वहस्तीव्रमतिः सुशीलो धर्मक्रियायां सुतरामुदारः ।
नरोऽभिमानी पितृमातृभक्तो जीवे शनिक्षेत्रगतेन्दुदृष्टे ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चरकी राशि १०।११ में बृहस्पति बैठा हो और चन्द्रमा करके दृष्ट हो तो वह मनुष्य कुलको धारण करनेवाला, तीव्रबुद्धि, शीलवान्, धर्मक्रिया करनेमें अत्यन्त उदार, अभिमानी, माता और पिताका भक्त होता है ॥ ३८ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

स्यादर्थसिद्धिर्नृपतेः प्रसादात्कीर्तिः सुखानामुपलब्धिरेव ।
सूनौ सुरेज्ये शनिमंदिरस्थे निरीक्ष्यमाणे धरणीसुतेन ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो वह मनुष्य राजाकी कृपासे धनकी सिद्धिको प्राप्त और सुखकी प्राप्ति करनेवाला होता है ३९

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

शांतं नितांतं वनितानुकूलं धर्मक्रियार्थे निरतं नितांतम् ।
करोति मर्त्यं महतां पुरोधा बुधेन दृष्टः शनिमंदिरस्थः ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह मनुष्य सदा शांत स्वभाववाला, निरन्तर स्त्रीके वशीभूत और धर्मक्रियाओंमें अत्यन्त तत्पर रहता है ॥ ४० ॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

विद्याविवेकार्थगुणैः समेतः पृथ्वीपतिप्राप्तमनोऽभिलाषः ।
स्यात्पूरुषः सूर्यसुतर्क्षसंस्थे जीवे प्रसूतौ भृगुजेन दृष्टे ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य विद्या, विवेक, धन, एवं गुणोंसे सम्पन्न और राजा करके मनकी अभिलाषाको प्राप्त करता है ॥ ४१ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

कामं सकामं सुगुणाभिरामं सदार्थप्राप्तिं धनधान्ययुक्तम् ।
ख्यातं विनीतं कुरुते मनुष्यं मंदेक्षितो मंदगृहस्थजीवः ॥ ४२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य कामनाको प्राप्त, श्रेष्ठ गुणोंसहित, मकान और अर्थकी प्राप्ति सहित धनधान्ययुक्त, प्रसिद्ध और नम्रतासहित होता है ॥ ४२ ॥

इति शनिक्षेत्रगते गुरौ ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ मेषादिराशिगे भृगौ ग्रहदृष्टिफलम्–तत्रादौ
भौमर्क्षगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

कृपाविशेषं नृपतेर्नितांतमतीव जायाजनितव्यलीकम्।
कुर्यान्नराणां तरणिप्रदृष्टः शुक्रो हि वक्रस्य गृहं प्रयातः॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य विशेष करके निरन्तर राजाकी कृपावाला और अत्यन्त स्त्री करके किये हुए कपटसे दुःखी होता है॥ १॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्।

श्रेष्ठप्रतिष्ठं चलचित्तवृत्तिं कामातुरत्वाद्विकृतिं प्रयातम्।
करोति मर्त्यं कुजगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वहमनुष्य श्रेष्ठ प्रतिष्ठावाला, चञ्चलचित्तवृत्तिवाला और कामातुरतासे विकारको प्राप्त होता है २

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

धनेन मानेन सुखेन हीनं दीनं विशेषान्मलिनं करोति।
नूनं धरित्रीतनयालयस्थः शुक्रो धरित्रीतनयेन दृष्टः॥ ३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य धन, मान और सुख करके रहित, विशेष दीन और निश्चित रूपसे मलिन होता है॥ ३॥

अथ कुजर्क्षगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

अनार्यमर्थात्मजनैर्विहीनं स्वबुद्धिसामर्थ्यपराङ्मुखं च।
क्रूरं परार्थापहरं नरं हि करोति शुक्रः कुजभे ज्ञदृष्टः॥ ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य खोटा और धन तथा अपने सम्बन्धियोंसे रहित, अपनी बुद्धि और सामर्थ्यसे रहित, क्रूर और पराये धनको हरनेवाला होता है॥ ४॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

कलत्रपुत्रादिसुखैः समेतं सत्कायकांतिं सुतरां विनीतम्।
उदारचित्तं प्रकरोति मर्त्यं जीवेक्षितो दैत्यगुरुः कुजर्क्षे॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य स्त्री और पुत्रादिकोंके सुखसहित, श्रेष्ठ देह, शोभायमान, निरन्तर नम्रता सहित और उदार चित्तवाला होता है॥ ५॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

सुखमवित्ताभिनतं प्रशान्तं मान्यं वदान्यं स्वजनानुयातम् ।
करोति जातं क्षितिपुत्रगेहे संस्थः सितो भानुसुतेन दृष्टः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य सुखवाला, शान्तस्वभाव, माननीय, बहुत दान देनेवाला और अपने जनोंकी सम्मति सहित होता है ॥ ६ ॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

वराङ्गनाभ्यो धनवाहनेभ्यः सुखानि नूनं लभते मनुष्यः ।
प्रसूतिकाले निजवेश्मयाते सिते पतङ्गेन निरीक्ष्यमाणे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ स्त्रियों करके तथा धन वाहनों करके निश्चय सुखको प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

विलासिनीकेलिविलाससक्तः कुलाधिपालोऽमलबुद्धिशाली ।
नरः सुशीलः शुभवाग्विलासः स्वीयालयस्थे भृगुजे तीन्दुदृष्टे ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य वेश्याओंके विलासमें आसक्त, अपने कुलका पालनेवाला, निर्मल बुद्धिवाला, सुशील और श्रेष्ठ वाणीके बोलनमें चतुर होता है ॥ ८ ॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम् ।

गृहादिसौख्योपहतं नितान्तं बलिप्रसंगाभिभवोपलब्धिम् ।
कुर्य्यान्नराणां दनुजेन्द्रमन्त्री स्वक्षेत्रसंस्थः क्षितिपुत्रदृष्टः ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको मङ्गल देखता हो तो वह मनुष्य गृहादि सौख्योंसे रहित, और लड़ाईमें अपमानको प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

गुणाभिरामं सुभगं प्रकामं सौम्यं सुसत्त्वं धृतिसंयुतं च ।
स्वक्षेत्रगो दैत्यगुरुः प्रकुर्य्यान्नरं तुषारांशुसुतेन दृष्टः ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको बुध देखता हो तो वह मनुष्य गुणवान्, अत्यन्त सुन्दर, सौम्यस्वभाववाला, बलवान् और धैर्य सहित होता है ॥ १० ॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

सद्वाहनानां गृहिणीगुणानां सुमित्रपुत्रद्रविणादिकानाम्।
करोति लब्धिं निजवेश्मयाते भृगोः सुते भानुसुतेन दृष्टे॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहन और स्त्री तथा गुण, श्रेष्ठ मित्र धनादिक सम्पूर्ण वस्तुओंको प्राप्त करता है॥ ११॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

गदाभिभूतो हतसाधुवृत्तः सौख्यार्थहीनो मनुजोऽतिहीनः।
भवेत्प्रसूतौ निजवेश्मयाते भृगोः सुते भानुसुतेन दृष्टे॥ १२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य रोगी, साधुवृत्तिसे हीन, सौख्य और धनहीन होता है॥ १२॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

नृपावरोधाधिकृतं विनीतं गुणान्वितं शास्त्रकृतप्रवेशम्।
कुर्यान्नरं दैत्यगुरुः प्रसूतौ सौम्यर्क्षसंस्थो रविणा प्रदृष्टः॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य राजाके रनवासकी ड्योढ़ीका अफसर, नम्रतासहित, गुणयुक्त और शास्त्रका जाननेवाला है॥ १३॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्।

सदन्नवस्त्रादिसुखोपपन्नं नीलोत्पलश्यामलचारुनेत्रम्।
सुकेशपाशं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्यर्क्षसंस्थो भृगुरिन्दुदृष्टः॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ अन्न वस्त्रादि सुखसहित और नीलकमलके समान श्याम सुन्दर नेत्रोंवाला और सुन्दर बालोंवाला होता है॥ १४॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

भाग्यान्वितः कामविधिप्रवीणः कान्तानिमित्तं द्रविणव्ययः स्यात्।
कुर्यान्नराणामुशनाः प्रकामं बुधर्क्षसंस्थः कुसुतेन दृष्टः॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य भाग्यसहित, कामकलामें चतुर और स्त्रीके निमित्त धनका व्यय करनेवाला कामी होता है॥ १५॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञं महावाहनवित्तवृद्धिं सेनापतित्वं परिवारसौख्यम् ।
कुर्यान्नराणामुशनाः प्रवीणं बुधर्क्षसंस्थश्च बुधेन दृष्टः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य चतुर, बड़ा भारी वाहन और धनकी वृद्धिवाला, फौजका मालिक, परिवारके सौख्यसहित और बुद्धिमान् होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

सद्बुद्धिवृद्धिर्बहुवैभवाढ्यः प्रसन्नचेताः सुतरां विनीतः ।
मर्त्यो भवेत्सौम्यगृहोपयाते दृष्टे सिते देवपुरोहितेन ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवृद्धिसहित, बहुत वैभवसहित प्रसन्नचित्त और निरंतर नम्र होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

पराभिभूतं चपलं विवित्तं सुदुःखितं सर्वजनोज्झितं च ।
मर्त्यं करोत्येव भृगोस्तनूजः सोमात्मजर्क्षे रविजेन दृष्टः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य अपमान करके सहित, चपल स्वभाव, अकेला, दुःखसहित और मनुष्योंसे त्यागा हुआ होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

सरोषयोषाकृतहर्षनाशः स्यात्पुरुषः शत्रुजनाभिभूतः ।
दैत्यार्चिते कर्कटराशियाते निरीक्षितेऽहर्पतिना प्रसूतौ ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य क्रोध करके स्त्रीकृत हर्षका नाश करनेवाला और वैरियों करके पीड़ित होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

कन्याप्रजापूर्वकपुत्रलाभमम्बां सपत्नीं बहुगौरवाणि ।
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्कदृष्टः कुलीरगो भार्गवनामधेयः ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य पहिले लड़की पीछेसे लड़का पैदा करता है और विमातावाला तथा बड़ा गौरवशाली होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम् ।

कलासु दक्षो हतशत्रुपक्षो बुद्ध्या च सौख्येन युतो मनुष्यः ।
परंतु कांताकृतचिंतयार्तो भौमेक्षिते कर्कटगे सिते स्यात् ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य कलाओंमें चतुर, शत्रुओंका नाश करनेवाला, बुद्धि तथा सौख्य सहित और स्त्री करके चिन्ताको प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

विद्याप्रवीणं गुणिनं गुणज्ञं कलत्रपुत्रोद्भवदुःखतप्तम् ।
जनोज्झितं चापि करोति मर्त्यं काव्यः कुलीरोपगतो ज्ञदृष्टः ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य विद्यामें प्रवीण, गुणवान्, गुणोंका जाननेवाला, स्त्री पुत्रोंकरके अत्यंत दुःखसे संतापको प्राप्त और मनुष्योंसे त्यागा जाता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

अतिचतुरमुदारं चारुवृत्तिं विनीत-
मतिविभवसमेतं कामिनीसूनुसौख्यम् ।
प्रियवचनविलासं मानुषं संविधत्ते
सुरपतिगुरुदृष्टो भार्गवः कर्कटस्थः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य अत्यंत चतुर, उदार, सुन्दरवृत्तिवाला, नम्रतासहित, मति और वैभवसहित स्त्री पुत्रोंके सौख्यवाला और प्यारी वाणी बोलनेवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

सद्वृत्तसौख्योपहतं गतार्थं व्यर्थप्रयत्नं वनिताजितं च ।
स्थानच्युतं संजनयेन्मनुष्यं मंदेक्षितः कर्कगतः सिताख्यः ॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठवृत्ति और सौख्यरहित, धनहीन, व्यर्थ परिश्रम करनेवाला, स्त्री करके जीता गया और स्थानसे पतित होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

स्पर्द्धातिसंवर्द्धितचित्तवृत्तिः कांताश्रयोत्पन्नधनो मनुष्यः ।
क्रमेलकाद्यैर्यदि वा युतः स्यादर्केक्षिते सिंहगते सिताख्ये ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य स्त्रीजनके चित्तवृत्तिको बढ़ानेवाला, स्त्रीके आश्रयसे धनको लाभ करनेवाला अथवा गड़े हुवे कोशोंसे धन लाभ करता है॥ २५ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम्।

नूनं जनन्याश्च भवेत्सपत्नी पत्नीविरोधो विभवोद्भवश्च।
यस्य प्रसूतौ दनुजेन्द्रमन्त्री चन्द्रेक्षितः सिंहगतो यदि स्यात्॥ २६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको चंद्रमा देखता हो उस मनुष्यकी माता दो होती हैं और वह स्त्रीसे विरोध करनेवाला तथा ऐश्वर्यसहित होता है॥ २६ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

नृपप्रियं धान्यधनैरुपेतं कन्दर्पजातव्यसनाभिभूतम्।
करोति मर्त्यं मृगराजसंस्थो भृगोस्तनूजोऽवनिजेन दृष्टः॥ २७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य राजाका प्यारा, अन्न धन सहित और कामकलाके व्यसनों सहित होता है॥ २७ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

धनान्वितं संग्रहचित्तवृत्तिं लुब्धं स्मराधिक्यविकारनिद्यम्।
दैत्येन्द्रमन्त्री कुरुते मनुष्यं सिंहस्थितः सोमसुतेन दृष्टः॥ २८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य धनसहित, संग्रह करनेमें चित्तवाला, लोभी और कामदेवकी अधिकतासे बुरे विकारोंको प्राप्त होता है॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

नरेन्द्रमन्त्री धनवाहनाढ्यो बहुस्त्रीनन्दनभृत्यसौख्यः।
विख्यातकर्मा च भृगोस्तनूजे जीवेक्षिते सिंहगते नरः स्यात्॥ २९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, धन वाहन सहित, बहुत स्त्री पुत्र नौकरोंके सौख्यवाला और प्रसिद्ध कर्मोंका करनेवाला होता है॥ २९ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

नृपोपमं सर्वसमृद्धिभाजं दंडाधिकारेऽप्यथ वा नियुक्तम्।
करोति मर्त्यं मृगराजवर्ती दैत्यार्चितः सूर्यसुतेन दृष्टः॥ ३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य राजाके समान सम्पूर्ण समृद्धियोंका भागी और कौशदारीके महकमेका अफसर होता है ॥ १० ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

रौद्रं प्राज्ञं भाग्यसौभाग्यभाजं सत्त्वोपेतं वित्तवन्तं विशेषात् ।
नानादेशप्राप्तयानं मनुष्यं कुर्याच्छुक्रो जीवभे भानुदृष्टः॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्र सूर्यसे दृष्ट हो वह मनुष्य क्रूर, चतुर, भाग्य और सौभाग्यका भागी, बलसहित, विशेष धनवान् और अनेक देशोंकी यात्रा करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम् ।

सद्राजमानेन विराजमानं ख्यातं विनीतं बहुभोगयुक्तम् ।
धीरं ससारं हि नरं करोति भृगुर्गुरुक्षेत्रगतोऽब्जदृष्टः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ राजमानसे विराजमान, प्रसिद्ध, नम्रतासहित, बहुत भोगसहित, धीर और बलवान् होता है ॥ १२ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम् ।

द्विषामसह्यं धनिनं प्रसन्नं कांताकुलप्रेमभरं सुपुण्यम् ।
सद्वाहनाढ्यं कुरुते मनुष्यं भौमेक्षितेज्यालयगामिशुक्रः॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य वैरियोंको नहीं सहन होनेवाला, धनवान्, प्रसन्न, स्त्रीकुल प्रेमसे सहित, श्रेष्ठ पुण्यवान् और श्रेष्ठ वाहनों सहित होता है ॥ १३ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

सद्वाहनार्थाम्बरभूषणानां लाभं सदन्नानि सुखानि नूनम् ।
कुर्यान्नराणां गुरुमंदिरस्थो दैत्यार्चितः सोमसुतेन दृष्टः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहन, धन, वस्त्र, आभूषणका लाभ करनेवाला और श्रेष्ठ अन्नोंके सुखसहित होता है ॥ १४ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

तुरंगहेमाम्बरभूषणानां महागजानां वनितासुखानाम् ।
करोत्यवाप्तिं भृगुजः प्रसूतौ जीवेक्षितो जीवगृहाश्रितश्च॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्र बृहस्पतिसे दृष्ट हो वह मनुष्य घोड़े सोना, वस्त्र, आभूषण, बड़े हाथी और स्त्रियोंके सुखोंसहित होता है ॥ ३५ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

सद्भोगसौख्योत्तमकर्मभाजं नित्योत्सवोत्कर्षयुतं सुवित्तम् ।
करोति मर्त्यं गुरुगेहयातो दैत्यार्चितो भानुसुतेक्षितश्च ॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ भोग, उत्तम, सौख्य और कर्मोंका भागी, नित्य उत्सवसहित और बड़े धनवाला होता है ॥ ३६ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

स्थिरस्वभावं विभवोपपन्नं महाधनं सारविराजमानम् ।
कान्ताविलासैः सहितं प्रकुर्याद् भृगुः शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः ॥३७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको शनि देखता हो वह मनुष्य स्थिर स्वभाववाला, वैभवसहित, मणियुक्त, बलमें विराजमान और स्त्रीके विलासों सहित होता है ॥ ३७ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

ओजस्विनं चारुशरीरयष्टिं प्रकृष्टसत्त्वं धनवाहनाढ्यम् ।
करोति मर्त्यं शनिगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः ॥३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य ओजस्वी, सुन्दर शरीरवाला, बड़ा बलवान्, धन और वाहनों सहित होता है ३८

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम् ।

श्रमामयाभ्यामतितप्तमूर्तिमनर्थतोऽर्थक्षतिसंयुतं च ।
कुर्यान्नरं दानवराजपूज्यः कुजेक्षितः सूर्यसुतालयस्थः ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य श्रम और रोगसे अत्यन्त तप्तस्वरूपवाला और अनर्थसे धनका नाश करनेवाला होता है ॥ ३९ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

विद्वद्विधिज्ञं धनिनं सुतुष्टं प्राज्ञं सुसत्त्वं बहुलप्रपंचम् ।
सद्वाग्विलासं मनुजं प्रकुर्याद् भृगुः शनिक्षेत्रगतो बुधदृष्टः ॥४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य पंडितोंकी विधिका जाननेवाला, धनी, संतुष्ट, चतुर, बलसहित, बड़ा प्रपंची और श्रेष्ठ वाणीका विलास करनेवाला होता है ॥ ४० ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

सद्गन्धमाल्याम्बरचारुवाद्यसंजातसंगीतरुचिः शुचिश्च ।
स्यान्मानवो दानवराजपूज्ये सुरेज्यदृष्टे शनिमन्दिरस्थे ॥४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गंध, माला, वस्त्र, सुन्दर बाजे सहित संगीतविद्याका जाननेवाला और पवित्र होता है ॥ ४१ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नगात्रं च विचित्रलाभं धनाङ्गनावाहनसूनुसौख्यम् ।
कुर्य्यान्नरं दानववृन्ददेवो मन्देक्षितो मन्दगृहाधिसंस्थः ॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य प्रसन्न देह, अनेक वस्तु लाभ करनेवाला, धन और स्त्रीपुत्रोंके सौख्यसहित वाहनवाला होता है ॥ ४२ ॥

इति मेषादिराशिगते शुक्रे ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ भौमालयस्थे शनौ रविदृष्टिफलम् ।

लुलायगोजाविसमृद्धिभाजं कृषिक्रियायां निरतं सदैव ।
सत्कर्मसक्तं जनयेन्मनुष्यं भौमालयस्थः शनिरर्कदृष्टः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको सूर्य देखता हो वह मनुष्य भैंसे, गैया, बकरी, भेड़की समृद्धिवाला, खेतीके काममें हमेशा तत्पर और श्रेष्ठ कर्ममें आसक्त होता है ॥ १ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

नीचानुयातं चपलं कुशीलं खलं सुखार्थैः परिवर्जितं च ।
कुर्यादवश्यं रविजो मनुष्यं शशीक्षितो भूसुतवेश्मसंस्थः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य नीचोंकी संगतिवाला, चपल, कुशील, खल, सुख और धनरहित होता है ॥ २ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ भौमदृष्टिफलम् ।

अनल्पजल्पं गतसत्पराथं कार्यक्षतिं यातविशेषवित्तम् ।
करोति जातं ननु भानुसूनुः कुजेन दृष्टः कुजवेश्मसंस्थः ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको मङ्गल देखता हो वह

मनुष्य बहुत बोलनेवाला, पर सम्पदासे रहित, कार्य नाश करनेवाला और विशेष धनहीन होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ बुधदृष्टिफलम्।

चौर्यकर्मकलहादितत्परं कामिनीजनगतोत्सवं नरम्।
प्रेक्षितो हि कुरुतेऽर्कनन्दनो भूमिसूनुभवनाधिसंस्थितः ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको बुध देखता हो वह मनुष्य चोरी करनेवाला, कलहमें तत्पर, स्त्री और उत्सव रहित होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ गुरुदृष्टिफलम्।

सुखधनैः सहितं नृपमन्त्रिणं नृपसमाश्रितमुख्यतयान्वितम्।
सुरपुरोहितवीक्षितभानुजोऽवनिजवेश्मगतः कुरुते नरम् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य सुख और धनकरके सहित, राजाका मन्त्री और राजाके आश्रयकरके मुख्यताको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ गुरुदृष्टिफलम्।

बहुप्रयाणाभिरतं विकीर्तिं पापाङ्गनासक्तमतिं विचित्तम्।
करोति मर्त्यं क्षितिजालयस्थो भानोस्तनूजो भृगुजेन दृष्टः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको शुक्र देखता हो वह मनुष्य बहुत यात्रा करनेवाला, कान्तिरहित, पापिनी स्त्रीमें आसक्त और बुद्धि करके दुःखी होता है ॥ ६ ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ रविदृष्टिफलम्।

विद्याविचारे प्रचुरोऽतिवक्ता परान्नभोक्ता विधनश्च शान्तः।
भवेन्नरस्तिग्मकरेण दृष्टे सूर्यात्मजे भार्गववेश्मसंस्थे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शनैश्चरको सूर्य देखता हो वह मनुष्य विद्याके विचारमें अधिक, बड़ा वक्ता, पराया अन्न खानेवाला, धनहीन और शांत होता है ॥ ७ ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

नृपप्रसादाप्तमहाधिकारं योषाविभूषाम्बरजातसौख्यम्।
बलान्वितं संजनयेन्मनुष्यं मन्दः सितर्क्षे हरिणाङ्कदृष्टे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य राजाकी कृपासे बड़े अधिकारको प्राप्त, स्त्री और भूषण तथा वस्त्रोंके सौख्यको प्राप्त और बलवान् होता है ॥ ८ ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ भौमदृष्टिफलम् ।

संग्रामकार्याभिरतं नितांतमनल्पजल्पं च महत्प्रसादम् ।
कुर्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भूसूनुदृष्टो भृगुजालयस्थः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शनैश्चरको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य युद्धके काममें तत्पर, निरंतर बहुत बोलनेवाला और बड़ी कृपावाला होता है ॥ ९ ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

कांतारतो नीचजनानुयातो विनोदहास्याभिरतो गतार्थः ।
क्लीबादिसख्यश्च भवेन्मनुष्यः शनौ सितर्क्षे शशिसूनुदृष्टे ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शनैश्चरको बुध देखता हो तो वह मनुष्य स्त्रीमें आसक्त, नीचपुरुषोंका साथी, विनोद और हास्यको करनेवाला, धनहीन और हिजड़ोंसे मित्रता करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ गुरुदृष्टिफलम् ।

परोपकारे कृतचित्तवृत्तिः परस्य दुःखेन सुदुःखितश्च ।
दातोद्यमी सर्वजनप्रियश्च मन्दे सितर्क्षे गुरुणा प्रदृष्टे ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य पराये उपकारमें चित्त करनेवाला, पराये दुःख करके आप दुःखी, दाता एवं समस्त प्राणियोंको प्रिय और उद्यमी होता है ॥ ११ ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

रत्नादिलाभं वनिताविलासं जलाधिकत्वं नृपगौरवाप्तिम् ।
कुर्यान्नराणां तरणेस्तनूजः शुक्रेक्षितः शुक्रगृहं प्रयातः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शनैश्चरको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य रत्नादिपदार्थोंका लाभ करनेवाला, स्त्रीके विलासमें आसक्त, पानीकी अधिकतावाला और राजाजनके गौरवको प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ रविदृष्टिफलम् ।

सुखोज्झितं नीचरतं सकोपमधार्मिकं द्रोहकरं सुधीरम् ।
कुर्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भानुप्रदृष्टो बुधमंदिरस्थः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चर बैठा हो व उसको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य सुखरहित, नीचोंकी संगति करनेवाला, क्रोधी, अधर्मी एवं वैर करनेवाला और धैर्यवान् होता है ॥ १३ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिर्नृपतिप्रसादात्प्राप्ताधिकारोन्नतिकार्यवृत्तिः ।
कांताधिकारोयदि वानरःस्यान्मन्देज्ञभस्थेऽमृतरश्मिदृष्टे ॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत शनैश्चरको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य प्रसन्नमूर्ति राजाकी कृपाकरके अधिकारको प्राप्त, ऊंचे कार्योंमें वृत्ति करनेवाला और स्त्रियोंका अधिकारी होता है ॥ १४ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ भौमदृष्टिफलम् ।

प्रकृष्टबुद्धिं सुतरां विधिज्ञं ख्यातं गभीरं च नरं करोति ।
सोमात्मजक्षेत्रगतोऽर्कसूनुर्भूसूनुदृष्टः परिसूतिकाले ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत शनैश्चरको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य बड़ा बुद्धिमान्, अतिशय विधिका जाननेवाला, प्रसिद्ध व गम्भीर होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

धनान्वितं चारुमतिं विनीतं गीताप्रियं सङ्गरकर्मदक्षम् ।
शिल्पेऽप्यभिज्ञं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्येक्षितःसौम्यगृहस्थमन्दः१६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चरको बुध देखता हो तो वह मनुष्य धनसहित, सुन्दर बुद्धिवाला, नम्रतासहित, गीत जिसको प्रिय, संग्रामके कार्यमें चतुर और शिल्पका जाननेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ गुरुदृष्टिफलम् ।

राजाश्रितश्चारुगुणैः समेतः प्रियः सतां गुप्तधनो मनस्वी ।
भवेन्नरो मन्दचरो यदि स्याज्ज्ञराशिसंस्थः सुरपूज्यदृष्टः॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य राजाका आश्रय करनेवाला, सुन्दर गुणों करके सहित, सत्पुरुषोंका प्यारा और गुप्तधनवाला तथा उदार होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

योषाविभूषाकरणे प्रवीणं सत्कर्मधर्मानुरतं नितान्तम् ।
स्त्रीसक्तचित्तं प्रकरोति मर्त्यं सितेक्षितो भानुसुतो ज्ञदृष्टः॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चरको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य स्त्रीके आभूषण बनवानेमें चतुर, श्रेष्ठ कर्म और धर्ममें निरन्तर तत्पर तथा स्त्रियोंमें आसक्तचित्तवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कस्थे शनौ रविदृष्टिफलम्।

आनन्ददारद्रविणैर्विहीनः सदान्नभोगैरपि वोज्झितश्च।
मातुर्महाक्लेशकरो नरः स्यान्मन्दे कुलीरोपगतेऽर्कदृष्टे ॥१९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको सूर्य देखता हो वह मनुष्य आनन्द और स्त्री धन करके हीन हमेशा अन्न भोग करके हीन और माताको बड़ा क्लेश देनेवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कस्थे शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

निपीडितं बन्धुजने जनन्यां नूनं धनानामभिवर्द्धनं च।
कुर्यान्नराणां द्युमणेस्तनूजः कुलीरसंस्थो द्विजराजदृष्टः ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य बन्धुजनोंको पीड़ा देनेवाला और माताको दुःख देनेवाला, धनकी वृद्धि-सहित होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ भौमदृष्टिफलम्।

गलद्बलः क्षीणकलेवरश्च नृपार्पितार्थोत्तमवैभवोऽपि।
स्यान्मानुषो भानुसुते प्रसूतौ कर्कस्थिते क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको मंगल देखता हो वह मनुष्य बल करके हीन, क्षीण देहवाला, राजाके दिये हुए धन करके वैभववाला होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ बुधदृष्टिफलम्।

वाग्विलासकठिनोऽटनबुद्धिश्चेष्टितैर्बहुविधैरपि युक्तः।
दम्भवृत्तिचतुरोऽपि नरः स्यात्कर्कगामिनि शनौ बुधदृष्टे ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको बुध देखता हो वह मनुष्य वाग्विलासमें कठिन और भ्रमण करनेवाला और मनोवांछित फलको प्राप्त एवं पाखण्ड करनेमें चतुर होता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्

क्षेत्रपुत्रगृहगेहिनीधनै रत्नवाहनविभूषणैरपि।
संयुतो भवति मानवो जनो जीवदृष्टियुजि कर्कगे शनौ ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य पृथ्वी, पुत्र, मकान और स्त्री, धन, रत्न और वाहन आभूषणोंकरके सम्पन्न होता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

उदारतागौरवचारुमानैः सौन्दर्यवर्यामलवाग्विलासैः ।
नूनं विहीना मनुजा भवेयुः शुक्रेक्षिते कर्कगतेऽर्कपुत्रे ॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको शुक्र देखता हो वह मनुष्य उदारता एवं गौरव करके युक्त, अच्छे प्रकार मान करके सहित और अधिक सुन्दरता तथा निर्मल वाणी विलास करके हीन होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ रविदृष्टिफलम् ।

धनेन धान्येन च वाहनेन सद्वृत्तिसत्योत्तमचेष्टितैश्च ।
भवेद्विहीनो मनुजः प्रसूतौ सिंहस्थिते भानुसुतेऽर्कदृष्टे ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको सूर्य देखता हो वह मनुष्य धन, धान्य, वाहन, श्रेष्ठ वृत्ति, सत्य और उत्तम चरित्रों करके हीन होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

सद्रत्नभूषाम्बरचारुकीर्तिं कलत्रमित्रात्मजसौख्यपूर्तिम् ।
प्रसन्नमूर्तिं कुरुतेऽर्कसूनुर्नरं हरिस्थो हरिणांकदृष्टः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ रत्न, आभूषण, वस्त्र, सुन्दर, यशः स्त्री, मित्र और पुत्रादिकोंके सुखसे पूर्ण और प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ भौमदृष्टिफलम् ।

संग्रामकर्मण्यतिनैपुणः स्यात्कारुण्यहीनो मनुजः सकोपः ।
क्रूरस्वभावो ननु भानुसूनौ सिंहस्थिते भूमिसुतेक्षिते च ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको मंगल देखता हो वह मनुष्य संग्रामकर्ममें अत्यन्त निपुण, करुणाहीन, क्रोधी, और क्रूरस्वभाववाला होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

धनाङ्गनासूनुसुखेन हीनं दीनं च नीचव्यसनाभिभूतम् ।
करोति जातं तपनस्य सूनुः सिंहस्थितः सोमसुतेक्षितश्च ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको बुध देखता हो वह मनुष्य धन, स्त्री और पुत्र सुख करके हीन, दीनतासहित और नीच व्यसनोंके करनेसे तिरस्कृत होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्।

सन्मित्रपुत्रादिगुणैरुपेतं ख्यातं सुवृत्तं सुतरां विनीतम्।
नरं पुरग्रामपतिं करोति सौरिर्हरिस्थो गुरुणा प्रदृष्टः॥ २९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ मित्र और पुत्रादि युक्त, गुणोंसहित, प्रसिद्ध, श्रेष्ठ वृत्तिवाला अत्यन्त नम्रता सहित पुर और ग्रामका पति होता है॥ २९॥

अथ सिंहराशिगते शनौ भृगुदृष्टिफलम्।

धनैश्च धान्यैरपि वाहनैश्च सुखैरुपेतं वनिताप्ततप्तम्।
कुर्यान्मनुष्यं तपनस्य सूनुः पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको शुक्र देखता हो वह मनुष्य धन और अन्न तथा वाहनके सुखसे सम्पन्न और स्त्रीसे सन्तापको प्राप्त होता है॥ ३०॥

अथ गुरुगेहगते शनौ रविदृष्टिफलम्।

ख्यातिं धनाप्तिं बहु गौरवाणि स्नेहप्रवृत्तिं परनन्दनेषु।
लभेन्नरो देवगुरोरगारे शनैश्चरे पद्मिनिनाथदृष्टे॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चरको सूर्य देखता हो वह मनुष्य प्रसिद्ध धनको प्राप्त करनेवाला, बहुत गौरवको प्राप्त और पराये पुत्रमें प्रीति करनेवाला होता है॥ ३१॥

अथ गुरुगेहगते शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

सद्वृत्तशाली जननीवियुक्तो नामद्वयालंकरणप्रयातः।
सुतार्थभार्यासुखभाङ् नरः स्यात्सौरे सुरेज्यालयगेऽब्जदृष्टे ३२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चरको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वृत्ति करनेवाला, मातासे रहित और दो नामों करके शोभित एवं पुत्र, धन, स्त्रीके सुख भोगनेवाला होता है॥ ३२॥

अथ गुरुगेहगते शनौ भौमदृष्टिफलम्।

वातान्वितं लोकविरुद्धचेष्टं प्रवासिनं दीनतरं करोति।
नरं धरासूनुनिरीक्ष्यमाणो मार्तण्डपुत्रः सुरमन्त्रिणो भे॥ ३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चरको मंगल देखता हो वह मनुष्य वातरोगसहित, संसारमें मनुष्योंके विपरीत चलनेवाला, परदेशमें रहनेवाला तथा अत्यन्त दीन होता है॥ ३३॥

अथ गुरुगेहगते शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

गुणाभिरामो धनवान्सकामो नराधिराजाप्तमहाधिकारः ।
नरः सदाचारविराजमानः शनौ ज्ञदृष्टे गुरुमंदिरस्थे ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चर बुधको देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गुणोंकरके सहित, धनवान्, कामी, राजा करके बडे अधिकारको प्राप्त और हमेशा श्रेष्ठ आचरण करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ गुरुदृष्टिफलम् ।

नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा सर्वाधिशाली बलवान्सुशीलः ।
स्यान्मानवो भानुसुते प्रसूतौ जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, अथवा फौजका स्वामी (जनरल), सब कार्योंको करनेवाला, बलवान् एवं सुशील होता है ॥ १५ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

विदेशवासी बहुकार्यसक्तो द्विमातृपुत्रः सुतरां पवित्रः ।
स्यान्मानवो दानवमंत्रिदृष्टे मन्देऽमराचार्यगृहं प्रयाते ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिवर्ती शनैश्चरको शुक्र देखता हो वह मनुष्य परदेशमें रहनेवाला, बहुकार्योंमें आसक्त, दो माताका पुत्र और अत्यन्त पवित्र होता है ॥ १६ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ रविदृष्टिफलम् ।

कुरूपभार्यश्च परान्नभोक्ता नानाप्रवासामयसंयुतश्च ।
विदेशवासी प्रभवेन्मनुष्यो मन्दे निजागारगतेऽर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शनैश्चरको सूर्य देखता हो वह मनुष्य बुरे रूपवाली स्त्रीका पति, पराया अन्न खानेवाला, अनेक प्रवाससहित रोगसहित और परदेशका वासी होता है ॥ १७ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

धनाङ्गनाढ्यं वृजिनानुयातं चलस्वभावं जननीविरुद्धम् ।
कामातुरं चापि नरं प्रकुर्यान्मन्दः स्वभस्थोऽमृतरश्मिदृष्टः ॥३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शनैश्चरको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य धन और स्त्री सहित, दुःख करके पैदा हुआ, चञ्चल स्वभाववाला, माताके विरुद्ध और कामातुर होता है ॥ १८ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ भौमदृष्टिफलम्।

शूरः क्रूरः साहसी सद्गुणाढ्यः सर्वोत्कृष्टः सर्वदा हृष्टचित्तः।
ख्यातो मर्त्यश्चात्मजस्थेऽर्कपुत्रे धात्रीपुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयाते॥३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शनैश्चरको मंगल देखता हो वह मनुष्य शूरवीर, क्रूर, साहसी, अच्छे गुणोंकरके सहित, सर्वजनोंमें उत्कृष्ट, हमेशा प्रसन्न रहनेवाला और प्रसिद्ध होता है ॥ ३९ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ बुधदृष्टिफलम्।

सद्वाहनान्साहसिकान्ससत्त्वान्धीरांश्च नानाविधकार्यसक्तान्।
करोति मर्त्यान्ननु भानुपुत्रः स्वक्षेत्रसंस्थः शशिपुत्रदृष्टः॥४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शनैश्चरको बुध देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहनसहित, उत्साहसहित, बलवान् धीर और अनेक प्रकारके कार्योंमें आसक्त होते हैं ॥ ४० ॥

अथ स्वगेहगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्।

गुणान्वितं क्षोणिपतिप्रधानं निरामयं चारुशरीरयष्टिम्।
कुर्यान्नरं देवगुरुप्रदृष्टश्चण्डांशुसूनुर्निजवेश्मसंस्थः॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य गुणोंसे संपन्न, राजाका मंत्री, रोगरहित, एवं सुन्दर शरीरवाला होता है ॥ ४१ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ भृगुदृष्टिफलम्।

कामातुरं सन्नियमेन हीनं भाग्योपपन्नं सुखिनं धनाढ्यम्।
भोक्तारमीशं कुरुते स्वभस्थो रवेः सुतो भार्गवसूनुदृष्टः॥४२॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
ग्रहदृष्टिफलाध्यायः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शनैश्चरको शुक्र देखता हो वह मनुष्य कामातुर, श्रेष्ठ नियमरहित, भाग्यसहित, सुखवान्, धनवान्, भोग भोगने-वाला और लक्ष्मीका स्वामी होता है ॥ ४२ ॥

इति [illegible]-
कृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां ग्रहदृष्टिफलवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ राशिफलानि—तत्र मेषराशिगतसूर्यफलम् ।

भवति साहसकर्मकरो नरो रुधिरपित्तविकारकलेवरः ।
क्षितिपतिर्मतिमान्सहितस्तदा सुमहसा महसामधिपे क्रिये ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य साहसके काम करनेवाला, रुधिर और पित्तविकारयुक्त देहवाला, भूमिका मालिक अतिशय तेजस्वी और बुद्धिमान् होता है ॥ १ ॥

अथ वृषराशिगतसूर्यफलम् ।

परिमलैर्विमलैः कुसुमासनैः सुवसनैः पशुभिस्सुखमद्भुतम् ।
गवि गतो हि रविर्जलभीरुतां विहितमाहितमादिशते नृणाम् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य दूर जानेवाली गन्धयुक्त पुष्प और शय्या और उत्तम वस्त्र और पशुओंके अद्भुत सौख्यको पानेवाला, जलसे डरनेवाला, मनुष्योंके लिये हित एवं कर्तव्य कर्मोंका उपदेश करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ मिथुनराशिगतसूर्यफलम् ।

गणितशास्त्रकलामलशीलतासुललिताद्भुतवाक्प्रथितो भवेत् ।
दिनपतौ मिथुने ननु मानवो विनयतानयतातिशयान्वितः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन राशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य गणितशास्त्रकी कलाको जाननेवाला, निष्कपट शीलवाला, शोभायमान, अद्भुत वाणी बोलनेवालोंमें अग्रणीय, विनयसहित, अतिशयकरके नीतियुक्त होता है ॥ ३ ॥

अथ कर्कराशिगतसूर्यफलम् ।

सुजनतारहितः किल कालवित्जनकवाक्यविलोपकरो नरः ।
दिनकरे हि कुलीरगते भवेत्सधनधनतासहिताधिकः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत सूर्य बैठा हो तो वह मनुष्य मनुष्यतारहित, कालका जाननेवाला, पिताके वाक्यको नष्ट करनेवाला, धनवान् और धनदानमें अग्रणीय होता है ॥ ४ ॥

अथ सिंहराशिगतसूर्यफलम् ।

स्थिरमतिश्च पराक्रमताधिको विभुतयाद्भुतकीर्तिसमन्वितः ।
दिनकरे करिवैरिगते नरो नृपरतो परतोषकरो भवेत् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य स्थिर बुद्धिवाला, अधिक बलवान्, अपनी संपत्तिके द्वारा अद्भुत कीर्तिवाला, राजामें रत और पराया सन्तोष करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ कन्याराशिगतसूर्यफलम्।

दिनपतौ युवतौ समवस्थिते नरपतेर्द्रविणं हि नरो लभेत्।
मृदुवचाः श्रुतगेयपरायणः सुमहिमा महिमापिहिताहितः॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य राजासे धन प्राप्त करनेवाला, कोमलवाणी बोलनेवाला, गाना सुननेवाला और बडे महत्त्वको पानेवाला, एवं अपने पराक्रमसे शत्रुओंको वशमें रखने वाला होता है॥ ६ ॥

अथ तुलाराशिगतसूर्यफलम्।

नरपतेरतिभीरहर्निशं जनविरोधविधानमघं दिशेत्।
कलिमनाः परकर्मरतिर्घटे दिनमणिर्न मणिद्रविणादिकम्॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य रात दिन राजासे अत्यन्त डरने वाला, मनुष्योंसे विरोध करनेवाला, पापकर्म करनेवाला, कलह (झगडा) करनेवाला, पराये कर्ममें प्रीति करनेवाला होता है और उसको द्रव्यादिक मणियें नहीं प्राप्त होती॥ ७ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतसूर्यफलम्।

कृपणतां कलहं च भृशं रुषं विषहुताशनशस्त्रभयं दिशेत्।
अलिगतः पितृमातृविरोधितां दिनकरो न करोति समुन्नतिम्॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य कृपण, अतिशय करके कलह करनेवाला, विष अग्नि शस्त्रसे भयको प्राप्त, पिता माताका विरोधी और उन्नतिरहित होता है॥ ८ ॥

अथ धनराशिगतसूर्यफलम्।

स्वजनकोपमतीव महामतिं बहुधनं हि धनुर्धरगो रविः।
स्वजनपूजनमादिशते नृणां सुमतितो मतितोषविवर्द्धनम्॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन राशिगत सूर्य बैठा हो तो वह मनुष्य अपने मित्रोंसे क्रोध करनेवाला, बडा बुद्धिमान्, बहुत धनवाला, मित्रोंका पूजन करनेवाला और श्रेष्ठ बुद्धिद्वारा संतोषका बढानेवाला होता है॥ ९ ॥

अथ मकरराशिगतसूर्यफलम्।

अटनतां निजपक्षविपक्षतामधनतां कुरुते सततं नृणाम्।
मकरराशिगतो विगतोत्सवं दिनविभुर्न विभुत्वसुखं दिशेत्॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य भ्रमण कर-

नेवाला, अपने जनोंसे विरोध रखनेवाला, निरन्तर धनहीन, उत्सवरहित और मित्रोंका सुख नहीं पाता है ॥ १० ॥

अथ कुम्भराशिगतसूर्यफलम् ।

कलशगामिनि पंकजिनीपतौ शठतरो हि नरो गतसौहृदः ।
मलिनताकलितो रहितः सदा करुणयारुणयाऽसुखो भवेत् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य शठता सहित मित्रता रहित, मलिनतायुक्त, करुणाहीन और रुधिर प्रकोप होनेसे दुःखी होता है ॥ ११ ॥

अथ मीनराशिगतसूर्यफलम् ।

बहुधनं क्रयविक्रयतः सुखं निजजनादपि गृह्यमहाभयम् ।
दिनपतौ झषभेऽभिमतो भवेत्सुजनतो जनतोषदसन्मतिः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत सूर्य बैठा हो तो वह मनुष्य क्रय विक्रय करके बहुत धन पानेवाला, अपने मनुष्योंसे भयको प्राप्त, श्रेष्ठ जनों करके मनुष्योंको तोष करनेवाला और श्रेष्ठ बुद्धिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ मेषराशिगतचन्द्रफलम् ।

स्थिरधनो रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदाविजितो भवेत् ।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक् ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य स्थिर धनवाला होता है और श्रेष्ठ जनोंकरके रहित, पुत्र सहित, स्त्री करके पराजित व अद्भुत वैभवसे अच्छी कीर्ति पाता है ॥ १३ ॥

अथ वृषराशिगतचन्द्रफलम् ।

स्थिरगतिं सुमतिं कमनीयतां कुशलतां हि नृणामुपभोगताम् ।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत्सुकृतितः कृतितश्च सुखानि च ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य स्थिर गतिवाला, श्रेष्ठ बुद्धिवाला, शोभायमान, कुशलताको प्राप्त, बहुत भोगोंवाला, श्रेष्ठ कार्योंसे और कुशलतासे सौख्य पाता है ॥ १४ ॥

अथ मिथुनराशिगतचन्द्रफलम् ।

प्रियकरः करमरस्ययुतो नरः सुरतसौख्यकरो नृपतिप्रियः ।
मिथुनराशिगते हिमगौ भवेत्सुजनताजनताकृतगौरवः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य मि[ष्ट भाषण] करनेवाला, हाथोंमें मछलीके आकारवाली रेखावाला, मैथुनके सौख्यसहित, अधिक्षय करके स्त्रियोंका प्यारा, एवं सज्जन होता है और मनुष्य उसका गौरव करते हैं ॥ १५ ॥

अथ कर्कराशिगतचंद्रफलम् ।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृत्तयः कुसुमगंधजलाशयकेलयः ।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमतीप्सितलब्धयः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य शास्त्रमें कुशल, बलवान्, शुद्धचित्त, पुष्पोंसे गंध सूंघनेवाला, जलमें क्रीडा करनेवाला, धरती करके सहित और श्रेष्ठ बुद्धिसे मनोरथको प्राप्त करनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ सिंहराशिगतचंद्रफलम् ।

अचलकाननयानमनोरथं गृहकलिं च गलोदरपीडनम् ।
द्विजपतिर्मृगराजगतो नृणां वितनुते तनुतेजविहीनताम् ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य पर्वत और जंगलकी यात्राका मनोरथ करनेवाला, घरमें कलह करनेवाला, गले और पेटमें पीडाको प्राप्त और शरीरके तेजरहित होता है ॥ १७ ॥

अथ कन्याराशिगतचन्द्रफलम् ।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिविलासकुतूहलैः ।
विमलशीलसुताजननोत्सवैः सुविधिनाविधिनासहितःपुमान् ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य स्त्रियोंके साथ अधिक विलास करनेवाला, कुतूहल करके श्रेष्ठशील, कन्याकी सन्तानके उत्सव सहित, श्रेष्ठ भाग्यवान् और उत्तम रूपवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ तुलाराशिगतचन्द्रफलम् ।

वृषतुरंगमविक्रमविक्रमो द्विजसुरार्चनदानमनाः पुमान् ।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभवसंचितविक्रमः ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य बैल घोडेके समान पराक्रमवाला, एवं ब्राह्मणोंका पूजन करनेवाला, बहुत स्त्रियोंवाला वैभव और अधिक करके पराक्रम प्राप्त करनेवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतचन्द्रफलम् ।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृप दुरोदरजातधनक्षयः ।
कलिरुचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहृतो भवेत्२०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चंद्रमा बैठा हो उसका राजा अथवा जुए करके धन नष्ट होता है, कलहमें प्रीति करनेवाला, निर्बल देहवाला, दुष्ट मनवाला एवं दुर्बल देहवाला और शान्तिरहित होता है ॥ २० ॥

अथ धनराशिगतचन्द्रफलम् ।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक् ।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम् ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य बहुत कामोंमें चतुर, अधिक बलवान्, निर्मलता करके सहित, सीधी वाणी बोलनेवाला, धनवान् और बहुत खर्च नहीं करता है ॥ २१ ॥

अथ मकरराशिगतचन्द्रफलम् ।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरुजासहितो मदनातुरः ।
निजकुलोत्तमवृत्तिकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत् ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य पाली करके डरनेवाला, गानविद्याका जाननेवाला, रूखा शरीर, कामातुर और अपने कुलमें उत्तम वृत्ति करनेवाला होता है ॥ २२ ॥

अथ कुम्भराशिगतचन्द्रफलम् ।

अलसतासहितोऽन्यसुतप्रियः कुशलताकलितोऽतिविचक्षणः ।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोऽरिपुव्रजः ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य आलस्य सहित, पराये पुत्रसे प्रीति करनेवाला, कुशलतासहित, अत्यन्त चतुर, शांत स्वभाववाला और वैरियोंका नाश करनेवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ मीनराशिगतचन्द्रफलम् ।

शशिनि मीनगते विजितेंद्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः ।
विमलधीः किल शास्त्रकलादरस्त्वबलताबलताकलितो नरः २४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य इन्द्रियोंका जीतनेवाला, बहुत गुणवाला, कुशल, जलकी लालसावाला, निर्मल बुद्धिवाला, शास्त्रविद्यामें प्रवीण और निर्बल देहवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ मेषराशिगतभौमफलम् ।

क्षितिपतेः क्षितिमानधनागमैः सुवचसा महसा बहुसाहसैः ।
अवनिजः कुरुते सततं युतं त्वजगतोजगतोऽभिमतं नरम् ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य राजा करके धरती और मान धनको प्राप्त करनेवाला, श्रेष्ठ वाणी, एवं तेजवाला, बहुत साहसी और संसारका प्यारा होता है ॥ २५ ॥

अथ वृषराशिगतभौमफलम् ।

गृहधनाल्पसुखं च रिपूदयं परगृहस्थितिमादिशते नृणाम् ।
अविनयाग्निगदो वृषभस्थितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवपीडनम् ॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य घर और धनका थोड़ा सुख पानेवाला, शत्रुओंसहित, पराये घरमें वास करनेवाला अत्यन्त पुत्रजनित पीड़ाको प्राप्त, अनीति और अग्निरोगसहित होता है ॥ २६ ॥

अथ मिथुनराशिगतभौमफलम् ।

बहुकलाकलनं कुलजोत्कलि प्रचलनप्रियतां च निजस्थलात् ।
ननु नृणां कुरुते मिथुनस्थितः कुलनयस्तनयप्रमुखात्सुखम् ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य बहुत कलाओंकी रचना करनेवाला, अपने कुटुम्बके पुरुषोंसे कलह करनेवाला, अपने स्थानसे यात्रा प्रिय और पुत्रादिकोंसे सौख्य पानेवाला होता है ॥ २७ ॥

अथ कर्कराशिगतभौमफलम् ।

परगृहस्थिरतामतिदीनतां विमतितां शमितां च रिपूदयैः ।
हिमकरालयगे किल मंगले प्रबलयाबलया कलहं व्रजेत् ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य पराये घरमें वास करनेवाला, अत्यन्त दीन, बुद्धिहीन, शत्रुओंके उपद्रवसे शांत और बलवान् स्त्रीसे कलह करनेवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगतभौमफलम् ।

अतितरां सुतदारसुखान्वितो हतरिपुर्विततोद्यमसाहसः ।
अवनिजे मृगराजगते पुमाननयतानयताभियुतो भवेत् ॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य अत्यन्त पुत्र और स्त्रीके सौख्यको पानेवाला व शत्रुओंका नाश करनेवाला, बड़ा उद्यमी और साहसी, अनीति और नीति सहित होता है ॥ २९ ॥

अथ कन्याराशिगतभौमफलम् ।

सुजनपूज[illegible] यजनयाजनकर्मरतो भवेत् ।
सति कन्यकयाश्रिते स्ववनितोवनितोत्सवतःसुखी १०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य संसारमें श्रेष्ठ कर्मोंकरके पूजनीय मनुष्योंके साथ सौख्य सहित, यज्ञ करे और करावे और स्त्रियोंके उत्सवकर्मसे सुखी होता है ॥ १० ॥

अथ तुलराशिगतभौमफलम् ।

बहुधनव्ययतांगविहीनतागतसुहृभियतापरितापितः ।
वणिजि भूमिसुते विकलः पुमानवनितोवनितोद्भवदुःखितः ११

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य बहुत धन खर्च करनेवाला, अंगविहीन, बड़े जनोंसे प्रेमरहित, संतापको प्राप्त, विकलतासहित और स्त्रियोंसे दुःखको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतभौमफलम् ।

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितः सुतसुतावनितादिमहत्सुखम् ।
वसुमतीसुतभाजि सरीसृपे नृपरतः परतश्च जयं भजेत् ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य विष और अग्नि तथा शस्त्रके भयको प्राप्त, लड़का, लड़की एवं वनिता (स्त्री) आदिके बड़े सौख्यको प्राप्त, राजामें रत और शत्रुओंसे जयको प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

अथ धनुराशिगतभौमफलम् ।

रथतुरंगमगौरवसंयुतः परमरातितनुक्षतिदुःखितः ।
भवति नावनिजे धनुषिस्थिते सुवनितोवनिताभ्रमणप्रियः॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य रथ और घोड़े तथा गौरवसहित व्रणरोगसे पीड़ित श्रेष्ठ स्त्रीवाला और भ्रमण करनेवाला होता है १३

अथ मकरराशिगत भौमफलम् ।

रणपराक्रमतावनितासुखं निजजनप्रतिकूलतया श्रमः ।
विभवता मनुजस्य धरात्मजे मकरगे करगेव रमा भवेत् ॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य युद्धमें पराक्रम दिखानेवाला, स्त्रीके सौख्यको प्राप्त, अपने कुटुम्बियोंके प्रतिकूल बड़े परिश्रमको पानेवाला और इस प्रकार वैभववाला होता है कि मानो लक्ष्मी हस्तगत ही है ॥ १४ ॥

अथ कुम्भराशिगतभौमफलम् ।

विनयतारहितं सहितं रुजा निजजनप्रतिकूलमलज्जकम् ।
प्रकुरुते मनुजं कलशाश्रितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवदुःखितम् ३५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत मंगल हो वह मनुष्य नम्रतारहित, रोगसहित, अपने कुटुंबियोंके प्रतिकूल परिपूर्ण खलताको प्राप्त और बहु पुत्र जनित दुःखको प्राप्त होता है ॥ ३५ ॥

अथ मीनराशिगतभौमफलम् ।

व्यसनतां खलतामदयालुतां विकलतां चलनं च निजालयात् ।
क्षितिसुतस्तिमिनासुसमन्वितो विमतिनामतिनाशनमादिशेत् ३६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य व्यसनसहित दुष्टतासहित, दयारहित, विकलतासहित, अपने स्थानसे चलनेवाला कुबुद्धिसे उसका नाश होय ॥ ३६ ॥

अथ मेषराशिगतबुधफलम् ।

खलमतिः किल चञ्चलमानसो ह्यविरतं कलहाकुलितो नरः ।
अकरुणोऽनृणवांश्च बुधे भवेदविगते विगते क्षितिसाधनः ३७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष राशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य, दुष्टबुद्धि, चञ्चल स्वभाव, निरंतर कलह करके आकुल, ऋण खानेवाला, करुणारहित और धर्मोंका साधनरहित होता है ॥ ३७ ॥

अथ वृषराशिगतबुधफलम् ।

वितरणप्रणयं गुणिनं दिशेद्बहुकलाकुशलं रतिलालसम् ।
धनिनमिन्दुसुतो वृषभस्थितो तनुजतोऽनुजतोऽतिसुखं नरम् ३८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत बुध बैठा हो वह मनुष्य दान और नम्रतासहित, गुणवान्, बहुत कलाओंमें कुशल, मैथुनकी लालसा करनेवाला, धनवान्, पुत्र और भ्राताओंके सुखको पाता है ॥ ३८ ॥

अथ मिथुनराशिगतबुधफलम् ।

प्रियवचोरचनासु विचक्षणो द्विजननीतनयः शुभवेषभाक् ।
मिथुनगे जनने शशिनन्दने सदनतोऽदनतोऽपि सुखी नरः ३९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन राशिगत बुध बैठा हो वह मनुष्य प्यारके वचन बोलनेकी रचनामें चतुर, दो माताका पुत्र, शुभ वेषवाला, भोगी, स्वान और भोजन करके सुखी होता है ॥ ३९ ॥

अथ कर्कराशिगतबुधफलम् ।

कुचरितानि च गीतकथादरो नृपरुचिः परदेशगतिर्नृणाम् ।
किल कुलीरगते शशभृत्सुते सुरततारतता नितरां भवेत् ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य खोटे चरित्र करनेवाला, गीत और कथाका आदर करनेवाला, राजसेवी, परदेश जानेवाला और निरंतर स्त्रियोंके साथ भोग करनेकी इच्छावाला होता है ॥ ४० ॥

अथ सिंहराशिगतबुधफलम् ।

अनृततासहितं विमतिं परं सहजवैरकरं कुरुते नरम् ।
युवतिहर्षपरं शशिनः सुतो हरिगतोऽरिगतोन्नतिदुःखितम् ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुध बैठा हो वह मनुष्य झूठ बोलनेवाला, हीनबुद्धि, बन्धुगणोंसे वैर करनेवाला, स्त्रियोंके साथ आनंद करनेवाला, शत्रुओंके कारण उन्नति रहित और दुःखित होता है ॥ ४१ ॥

अथ कन्याराशिगतबुधफलम् ।

सुवचनानुरतश्चतुरो नरो लिखनकर्मपरो हि परोन्नतिः ।
शशिसुते युवतौ च गते सुखी सुनयनानयनाञ्चलपेहितैः ॥ ४२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वचन बोलनेमें तत्पर, चतुर, लिखाई करनेमें तत्पर, श्रेष्ठ उन्नतिवाला, सुखी और सुन्दर नेत्रोंवाली स्त्रीके अंचलकी इच्छा रखनेवाला होता है ॥ ४२ ॥

अथ तुलाराशिगतबुधफलम् ।

अनृतवाग्व्ययभाक्खलु शिल्पवित्कुचरिताभिरतिर्बहुजल्पकः ।
व्यसनयुङ्मनुजः सहिते बुधेऽनुलयातुलयात्वसतायुतः ॥ ४३ ॥

जिस मनुष्यके तुलाराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य झूंठ बोलनेवाला, खर्च करनेवाला, शिल्पविद्याका जाननेवाला, खोटे चरित्रोंमें प्रीति करनेवाला, बहुत बोलनेवाला, व्यसनसहित और पापयुक्त होता है ॥ ४३ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतबुधफलम् ।

कृपणतातिरतिप्रणयश्रमो विहितकर्मसुखोपहतिर्भवेत् ।
धवलभानुसुतेऽलिगते क्षतिस्त्वखलसतो लसतोऽपि च वस्तुनः ॥ ४४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत बुध बैठा हो वह मनुष्य कृपणतामें अत्यन्त प्रीति करनेवाला, बड़ा मेहनती, श्रेष्ठकार्य और सुखकरके हीन, हानि और आलस्यसहित, गुणोंमें दोष देनेवाला होता है ॥ ७४ ॥

अथ धनराशिगतबुधफलम् ।

वितरणप्रणयो बहुवैभवः कुलपतिश्च कलाकुशलो भवेत् ।
शशिसुतेऽत्र शरासनसंस्थिते विहितया हितया रमयान्वितः॥७५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य दान और नम्रता युक्त, बहुत वैभवकरके सहित, कुलका स्वामी, कलाओंमें कुशल, योग्य एवं हितकारिणी स्त्रियोंके साथ रमण करनेवाला होता है ॥ ७५ ॥

अथ मकरराशिगतबुधफलम् ।

रिपुभयेन युतः कुमतिर्नरः स्मरविहीनतरः परकर्मकृत् ।
मकरगे सति शीतकरात्मजे व्यसनतःसनतःपुरुषो भवेत् ॥७६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य शत्रुभयसहित, खोटीबुद्धिवाला, कामकलारहित, पराये कर्म करनेवाला और व्यसनोंकरके नम्र होता है ॥ ७६ ॥

अथ कुम्भराशिगतबुधफलम् ।

गृहकलिं कलशे शशिनन्दनो वितनुते तनुतां ननु हीनताम् ।
धनपराक्रमधर्मविहीनतां विमतितामतितापितशत्रुभिः ॥ ७७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य घरमें क्लेश करनेवाला, हीनताको बढानेवाला, धन पराक्रम धर्मरहित, बुद्धिहीन, और शत्रुओंकरके सन्तापित होता है ॥ ७७ ॥

अथ मीनराशिगतबुधफलम् ।

परधनादिकरक्षणतत्परो द्विजसुरानुचरो हि नरो भवेत् ।
शशिसुते पृथुरोमसमाश्रिते सुवदनावदनानुविलोकनः ॥७८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत बुध बैठा हो वह मनुष्य पराया धन और जायदादकी रक्षा करनेवाला, ब्राह्मण और देवताओंका सेवक और श्रेष्ठ स्त्रियोंके मुखको देखनेवाला होता है ॥ ७८ ॥

अथ मेषराशिगतगुरुफलम् ।

बहुतरां कुरुते समुदारतां सुरचितां निजवैरिसमुन्नतिम् ।
विभवतां च मरुत्पतिपूजितः क्रियगतोऽपगतोरुमतिभ्रमः॥७९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य अत्यन्त उदार चित्तवाला, शत्रुओंकी उन्नतिसहित, और बड़ी बुद्धिवाला होता है ॥ ४९ ॥

अथ वृषराशिगतगुरुफलम् ।

द्विजसुरार्चनभक्तिविभूतयो द्रविणवाहनगौरवलुब्धयः ।
सुरगुरौ वृषभे बहुवैरिणश्चरणगा रणगाढपराक्रमैः ॥ ५० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य ब्राह्मण, देवताओंके पूजन और भक्तिसहित, धन, वाहन और गौरव (प्रतिष्ठा) का लोभी और गाढ पराक्रमद्वारा शत्रुओंको अपने चरणोंका दास बनानेवाला होता है ॥ ५० ॥

अथ मिथुनराशिगतगुरुफलम् ।

कवितया सहितः प्रियवाक्शुचिर्विमलशीलरुचिर्निपुणः पुमान् ।
मिथुनगे सति देवपुरोहिते सहितता हिततासहितैर्भवेत् ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य काव्य करके सहित, प्यारी वाणी बोलनेवाला, पवित्र, निष्कपट और शीलवाला, चतुर एवं हितकारी होता है ॥ ५१ ॥

अथ कर्कराशिगतगुरुफलम् ।

बहुधनागमनो मदनोन्नतिर्विविधशास्त्रकलाकुशलो नरः ।
प्रियवचाश्च कुलीरगते गुरौ चतुरगैस्तुरगैः करिभिर्युतः ॥ ५२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य बहुत धनवाला, कामदेवकी उन्नतिसहित, अनेक शास्त्रोंकी कलामें कुशल प्रिय बोलनेवाला और घोड़े और हाथियोंकरके सहित होता है ॥ ५२ ॥

अथ सिंहराशिगतगुरुफलम् ।

अचलदुर्गवनप्रभुतोर्जितो दृढतनुर्ननु दानपरो भवेत् ।
अरिविभूतिहरो हि नरो गुरौ सुवचसा वचसामधिपे हरौ ॥ ५३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य पर्वत, किला (कोट) तथा वनका स्वामी, मजबूत, शरीर, दान करनेवाला, शत्रुओंके वैभवको हरण करनेवाला और श्रेष्ठवाणी बोलनेवाला होता है ॥ ५३ ॥

अथ कन्याराशिगतगुरुफलम् ।

कुसुमगन्धसदम्बरशालिता विमलता धनवानमतिर्भृशम् ।
[illegible] सुतया सति संयुते रुचिरता चिरतापितशत्रुता ॥ ५४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य पुष्पोंकी माला और उत्तम गंध वेष वस्त्र करके सहित, निर्मल, धन और दानमें बुद्धिवाला, सुन्दर तथा बहुत कालतक शत्रुता करनेवाला होता है ॥ ५४ ॥

अथ तुलाराशिगतगुरुफलम् ।

श्रुततपोजपहोममहोत्सवे द्विजसुरार्चनदानमतिर्भवेत् ।
वणिजि जन्मनि चित्रशिखण्डिजे चतुरतातुरताहितकारिता॥५५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य वेद और तप, जप, होम, बड़े उत्सवमें तत्पर, ब्राह्मण देवताओंके पूजन और दानमें बुद्धिवाला, चतुरतासहित, आतुर, अहित करनेवाला और शत्रुओंसहित होता है ॥ ५५ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतगुरुफलम् ।

धनविनाशनदोषसमुद्भवैः कृशतरो बहुदम्भपरो नरः ।
अलिगते सति देवपुरोहिते भवनतो धनतोऽपि च दुःखभाक्॥५६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य धनका नाश करनेवाला, दोषोंकरके उत्पन्न दुर्बल देहवाला, बड़ा पाखंडी और भवन तथा धनके द्वारा दुःखका भागी होता है ॥ ५६ ॥

अथ धनराशिगतगुरुफलम् ।

वितरणप्रणयो बहुवैभवं ननु धनान्यथ वाहनसंचयः ।
धनुषि देवगुरौ हि मतिर्भवेत्सुरुचिरा रुचिराभरणानि च॥५७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य दान देनेवाला और नम्र, बहुत वैभव और धन वाहनोंसहित, श्रेष्ठ बुद्धिवाला और सुन्दर आभूषणोंवाला होता है ॥ ५७ ॥

अथ मकरराशिगतगुरुफलम् ।

हतमतिः परकर्मकरो नरः स्मरविहीनतरो बहुरोषभाक् ।
सुरगुरौ मकरे विदधाति नो जनमनो न मनोरथसाधनम् ॥५८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य नष्टबुद्धि, पराया कर्म करनेवाला, कामदेवरहित, अत्यन्त क्रोधी, मनुष्योंके कामको नाश करनेवाला और अपना मनोरथ साधन करनेवाला होता है ॥ ५८ ॥

अथ कुम्भराशिगतगुरुफलम् ।

गदयुतः कुमतिर्द्रविणोज्झितः कृपणतानिरतः कृतकिल्बिषः ।
घटगते सति देवपुरोहिते कदशनो दशनोदरपीडितः ॥ ५९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य रोगसहित, दुष्टबुद्धि, धनहीन, कृपणतामें तत्पर, पाप करनेवाला, दुष्ट भोजन करनेवाला, दांत और पेटकी पीड़ा युक्त होता है ॥ ५९ ॥

अथ मीनराशिगतगुरुफलम् ।

नृपकृपाप्तधनो मदनोन्नतिः सदनसाधनदानपरो नरः ।
सुरगुरौ तिमिना सहिते सतामनुमतोऽनुमतोत्सवदो भवेत् ॥ ६० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य राजाकी कृपासे धनको पानेवाला, कामकी उन्नतिवाला, घरका साधन करनेवाला, दानमें तत्पर, सत्पुरुषोंका प्यारा और मित्रोंको सुख देनेवाला होता है ॥ ६० ॥

अथ मेषराशिगतभृगुफलम् ।

भवनवाहनवृन्दपुराधिपः प्रचलनप्रियताविहितादरः ।
यदि च संजननेऽहि भवेत्क्रियः कवियुतो वियुतो रिपुभिर्नरः ॥ ६१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य मकान, वाहन समूह और नगरका स्वामी, यात्राका प्रेमी, आदर सहित, और शत्रुओं करके रहित होता है ॥ ६१ ॥

अथ वृषराशिगतशुक्रफलम् ।

बहुकलत्रयुतोत्सवगौरवं कुसुमगंधरुचिः कृषिनिर्मितः ।
वृषगते भृगुजे कमला भवेदविरला विरला रिपुमण्डली ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य बहुत स्त्री और उत्सव तथा गौरव सहित, पुष्पोंकी गंधमें रुचि करनेवाला, खेती करनेवाला, बहुत धनवाला और थोड़े शत्रुओंवाला होता है ॥ ६२ ॥

अथ मिथुनराशिगतशुक्रफलम् ।

भृगुसुते जनने मिथुनस्थिते सकलशास्त्रकलामलकौशलम् ।
सरलता ललिता किल भारती सुमधुरा मधुरान्नरुचिर्भवेत् ॥ ६३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत शुक्र बैठा हो वह मनुष्य सम्पूर्ण शास्त्रोंकी कलाओंमें कुशल, सीधी शोभायमान मधुर वाणी बोलनेवाला और मीठा खानेमें रुचि जिसकी ऐसा होता है ॥ ६३ ॥

अथ कर्कराशिगतशुक्रफलम् ।

द्विजपतेः सदने भृगुनंदने विमलकर्ममतिर्गुणसंयुतः ।
जनमलं सकलं कुरुते वशं सुकलया कलयापि गिरा नरः॥६४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्मोंमें बुद्धिवाला, गुणोंसहित, सब आदमियोंको वशमें करनेवाला और अच्छी चतुरतासे मधुर वाणीसहित होता है ॥ ६४ ॥

अथ सिंहराशिगतशुक्रफलम् ।

हरिगते सुरवैरिपुरोहिते युवतितो धनमानसुखानि च ।
निजजनव्यसनान्यपि मानवस्त्वहिततो हिततो मनुजोव्रजेत् ६५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य स्त्रियोंसे धन, मान और सुख पानेवाला, अपने मनुष्योंमें व्यसनको प्राप्त, मित्रोंको संतोष करनेवाला व शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ ६५ ॥

अथ कन्याराशिगतशुक्रफलम् ।

भृगुसुते सति कन्यकयान्विते बहुधनी खलु तीर्थमनोरथः ।
कमलया पुरुषोऽतिविभूषितस्त्वमितयामितयापिगिरान्वितः॥६६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य बड़ा धनवान्, तीर्थोंमें मनोरथ करनेवाला, लक्ष्मी करके शोभायमान और बड़ी भारी वाणी करके सहित होता है ॥ ६६ ॥

अथ तुलाराशिगतशुक्रफलम् ।

कुसुमवस्त्रविचित्रधनान्वितो बहुगमागमनो ननु मानवः ।
जननकालतुलाकलनं यदा शुक्रविना कविनायकतां व्रजेत्॥६७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य पुष्प और विचित्र वस्त्र धनसहित, बहुत आने जानेवाला और कवियोंका स्वामी अर्थात् उत्तम कविराज होता है ॥ ६७ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतशुक्रफलम् ।

कलहघातमतिं जननिंद्यतां प्रजननामयतां नियतं नृणाम् ।
व्यसनतां जननेऽलिसमाश्रितः कविरलं विरलं कुरुते धनम् ॥६८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत शुक्र बैठा हो वह मनुष्य कलह तथा घात करनेवाला, मनुष्य करके निंद्य, जन्मसे रोगवाला, व्यसन सहित और अत्यन्त थोड़ा धनवाला होता है ॥ ६८ ॥

अथ धनराशिगतशुक्रफलम् ।

युवतिसूनुधनागमनोत्सवं सचिवतां नियतं शुभशीलताम् ।
जनुषिकार्मुकगः कुरुते कविं कविरतिं विरतिं चिरतो नृणाम् ॥६९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य स्त्री पुत्र धनका आगमन व उत्सवसहित, राजाका मन्त्री, श्रेष्ठ शीलवाला, कवियोंमें प्रेम करनेवाला और बहुत कालतक विरतिको प्राप्त होता है ॥ ६९ ॥

अथ मकरराशिगतशुक्रफलम् ।

अभिरतिस्तु जराङ्गनया नृणां व्ययभयं कृशतामतिचिन्तया ।
भृगुसुते मृगराजगते सदा कविजने विजनेऽपि मनो भवेत् ॥७०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य वृद्ध स्त्रीमें प्रीति करनेवाला, व्यय करनेवाला, भयसहित, दुर्बल देहवाला, अत्यन्त चिन्तासहित, कवीश्वर और जंगलमें प्रीति करनेवाला होता है ॥ ७० ॥

अथ कुम्भराशिगतशुक्रफलम् ।

उशनसः कलशे जनुषि स्थितौ वसनभूषणभोगविहीनता ।
विमलकर्ममहालसता नृणामुपगतापगता विरमा भवेत् ॥७१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत शुक्र बैठा हो वह मनुष्य वस्त्र और आभूषण भोगरहित, अच्छे कर्मोंमें आलस्य करनेवाला और धननाशक होता है ॥७१॥

अथ मीनराशिगतशुक्रफलम् ।

भृगुसुते सति मीनसमन्विते नरपतेर्विभुता विनता भवेत् ।
रिपुसमाक्रमणं द्रविणागमो वितरणे तरणे प्रणयो नृणाम् ॥७२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत शुक्र बैठा हो वह मनुष्य राजाकी कृपासे वैभवको प्राप्त, नम्रतासहित, शत्रुओंपर हमला करनेवाला, धनको प्राप्त, दान करनेमें और तैरनेमें प्रीति करनेवाला होता है ॥ ७२ ॥

अथ मेषराशिगतशनिफलम् ।

धनविहीनतया तनुता तनौ जनविरोधतयेप्सितनाशनम् ।
क्रियगतेऽर्कसुते स्वजनैर्नृणां विषमताशमताशमनं भवेत् ॥७३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य धनहीनता करके दुर्बल देहवाला, मनुष्योंसे वैर करके मनोरथको नाश करनेवाला, अपने मित्रोंसे विरोध करनेवाला और शांतिरहित होता है ॥ ७३ ॥

अथ वृषराशिगतशनिफलम्।

युवतिसौख्यविनाशनतां भृशं पिशुनसङ्गरुचिं मतिविच्युतिम्।
तनुभृतां जनने वृषभस्थितो रविसुतो विसुतोत्सवमादिशेत्॥७४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य स्त्रीके सुखको नाश करनेवाला, अतिशय दुष्ट मनुष्योंका संग करनेवाला और बुद्धिहीन, एवं पुत्रोत्सवसे रहित होता है॥ ७४॥

अथ मिथुनराशिगतशनिफलम्।

प्रचलनं विमलत्वविहीनतां भवनबाह्यविलासकुतूहलम्।
व्रजति ना मिथुनोपगते सुते दिनविभोर्नविभोर्लभते सुखम्॥७५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य ज्यादे चलनेवाला और निर्मलतासे रहित, मकानके बाहर हास्य विलास आनंद करनेवाला तथा सुखको नहीं लाभ करता है॥ ७५॥

अथ कर्कराशिगतशनिफलम्।

शशिनिकेतनगामिनि भानुजे तनुभृतां कृशता भृशमंबया।
वरविलासकरा कमला भवेदविकलं विकलं रिपुमण्डलम्॥७६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य दुर्बल देह-वाला, माता करके रहित श्रेष्ठ विलासका करनेवाला, धनवान् और शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है॥ ७६॥

अथ सिंहराशिगतशनिफलम्।

लिपिकलाकुशलेश्च कलिप्रियो विमलशीलविहीननरो नरः।
रविसुते रविवेश्मनि संस्थिते हतनयस्तनयप्रमदार्तिभाक्॥७७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य लेखक्रियामें कुशल, कलह जिसको प्यारी, निर्मलशीलरहित, नीतिरहित और पुत्र स्त्रीसे पीडाको प्राप्त होता है॥ ७७॥

अथ कन्याराशिगतशनिफलम्।

विहितकर्मणि शर्म कदापि नो विनयतोपहतिश्चलसौहृदम्।
रविसुते सति कन्यकयान्विते विमलतावकलासहितो भवेत्॥७८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य जो कुछ काम करे उसमें कल्याण नहीं पाता, नम्रताहीन, चलायमान मन मित्रतावाला हमेशा निर्बल रहता है॥ ७८॥

अथ तुलाराशिगतशनिफलम् ।

निजकुलेऽवनिपालबलान्वितः स्मरबलाकुलितो बहुदानदः ।
जलजिनीशसुते हि तुलान्विते नृपकृतोपकृतो हि नरो भवेत्॥७९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य अपने कुलमें राजाके बलसहित, कामदेव करके सहित, बहुत दान देनेवाला और राजासे सम्मानको प्राप्त होता है ॥ ७९ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतशनिफलम् ।

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितो धनविनाशनवैरिगदार्दितः ।
विकलता कलिता च समन्विते रविसुते विसुतेष्टसुखो नरः॥८०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य विष, अग्नि, शस्त्रमें डरनेवाला, धनका नाश करनेवाला, शत्रुओंसहित, रोगकरके युक्त, विकलता युक्त और पुत्रहीन होता है ॥ ८० ॥

अथ धनराशिगतशनिफलम् ।

रविसुतेन युते सति कार्मुके सुतगणैः परिपूर्णमनोरथः ।
प्रथितकीर्तिसुवृत्तपरो नरो विभवतो भवतोषयुतो भवेत् ॥८१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य पुत्रगण करके परिपूर्ण मनोरथवाला, प्रख्यात यशवाला, श्रेष्ठ वृत्तिमें तत्पर, वैभव और सन्तोषसहित होता है ॥ ८१ ॥

अथ मकरराशिगतशनिफलम् ।

नरपतेरिव गौरवतां व्रजेद्रविसुते मृगराशिगते नरः ।
अगुरुणा कुसुमैर्मृगजातया विमलया मलयाचलजैः सुखम्॥८२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य राजाके समान गौरवको प्राप्त, अगर और पुष्प कस्तूरी तथा चंदनादि सुगंधोंका भोगनेवाला होता है ॥ ८२ ॥

अथ कुंभराशिगतशनिफलम् ।

ननु जितो रिपुभिर्व्यसनावृतो विहितकर्मपराङ्मुखतान्वितः ।
रविसुते कलशेन समन्विते सुसहितः सहितः प्रचयैर्नरः॥८३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य शत्रुओं करके जीता हुआ, व्यसनोंमें आसक्त, कर्तव्य कर्मोंसे रहित और श्रेष्ठ मित्रोंवाला होता है ॥ ८३ ॥

अथ मीनराशिगत शनिफलम्।

विनयता व्यवहारसुशीलतासकललोकगृहीतगुणो नरः।
उपकृतौ निपुणस्तिमिसंश्रिते रविभवे विभवेन समन्वितः॥८४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य नम्रता और व्यवहार सुशीलता सहित, सब संसार उसके गुणोंको ग्रहण करता है और वह सबका उपकार करनेवाला होता है ॥ ८४ ॥

अथ राशिपतौ विचारः।

बलान्विते राशिपतौ च राशौ खेटेऽथ वा राशिफलं समग्रम्।
नीचोच्चगेहास्तमयादिभावैर्न्यूनाधिकत्वं परिकल्पनीयम् ॥८५॥

जिस राशिका स्वामी राशि या बलसहित राशिगत ग्रह हो तो वह ग्रह राशिका पूरा फल देता है और जो राशिपति नीच उच्च अस्त होकर बैठा हो तो वह कमती बढती फल करता है अर्थात् उच्चमें श्रेष्ठ वा नेष्ट फल पूरा, नीचमें फल हीन होता है। बीच राशियोंमें त्रैराशिक गणित करके जान लेना चाहिये ॥ ८५ ॥

इति राशिफलानि।

अथ शुभाशुभज्ञानार्थं शनिचक्रं विलिख्यते।

अथ नराकारशनिचक्रस्वरूपम्।

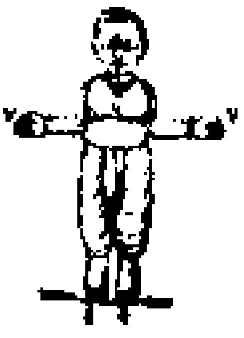

नराकारं लिखेच्चक्रं शनिचक्रं तदुच्यते।
वेदितव्यं फलं तस्मान्मानवानां शुभाशुभम् ॥ १ ॥ जन्मर्क्षतो यत्र च कुत्र संस्थे मित्रस्यपुत्रे प्रथमं विदित्वा। चक्रे नरास्ये खलु जन्मधिष्ण्याद्विन्यस्य भानि प्रवदेत्फलानि ॥ २ ॥

अब अच्छा बुरा फल जाननेके लिये शनिचक्र लिखते हैं, मनुष्याकार चक्र लिखे उसको शनिचक्र कहते हैं, उस शनिचक्रसे मनुष्योंको अच्छा बुरा फल जानना चाहिये ॥ १ ॥ जन्मनक्षत्रसे गणना करके जिस नक्षत्र पर शनैश्चर हो वह नक्षत्र, जहां कहीं स्थित हो अर्थात् जिस अंगमें शनि-

नक्षत्र आवे वैसा ही निम्न लिखित फल जानो । मित्र और शत्रुका भी हाल कहे । नराकार चक्रमें जन्मनक्षत्रसे अंगोंमें निम्नलिखित स्थापन करके फल कहना चाहिये ॥ २ ॥

अथ नराकारशनिचक्रे नक्षत्रन्यासमाह–

नक्षत्रमेकं च शिरोविभागे मुखे लिखेत्त्रीणि युगं च गुह्ये ।
नेत्रे च नक्षत्रयुगं हृदिस्थं भपंचकं वामकरे चतुष्कम् ॥ ३ ॥
वामे च पादे त्रितयं हि भानां भानां त्रयं दक्षिणपादसंस्थम् ।
चत्वारि ऋक्षाणि च दक्षिणाख्ये पाणौ प्रणीतं मुनिनारदेन ॥ ४ ॥

उस नराकार शनिचक्रपर १ एक नक्षत्र शिरपर लिखे और ३ तीन नक्षत्र मुखपर और दो २ नक्षत्र लिंगपर और नेत्रोंपर दो २ दो २ नक्षत्र धरे, ५ नक्षत्र हृदयपर स्थापित करे, बायें हाथ पर ४ चार ॥ ३ ॥ बायें पैरपर ३, दाहिने पैरपर ३, दाहिने हाथपर ४ चार नक्षत्र स्थापन करना चाहिये, यह नारद मुनिने कहा है ॥ ४ ॥

अथ नक्षत्रन्यासेन शनिनक्षत्रफलम् ।

रोगो लाभो हानिरास्तिश्च सौख्यं बंधः पीडा सप्रमाणं च लाभः ।
मन्दे चक्रे मार्गगे कल्पनीयं तद्वैलोम्याच्छीघ्रगे स्युः फलानि ॥ ५ ॥

अब नराकार शनिचक्रमें नक्षत्रोंका फल कहते हैं–जो शनिनक्षत्र शिरपर आवे तो रोग करे, मुखमें पड़े तो लाभ, गुह्य स्थानमें पड़े तो हानि, नेत्रोंमें पड़े तो धनलाभ, हृदयमें पड़े तो सुखी रहे, बायें हाथमें पड़े तो बन्धन पावे, बायें पैरमें पड़े तो पीड़ा, दाहिने पैरमें पड़े तो यात्रा करावे और दाहिने हाथमें पड़े तो लाभ कराता है ॥ ५ ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ।
विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥

अब इसके बाद तीनों लोकोंका प्रकाश करनेवाला शीघ्र ही विश्वास करानेवाला सर्वतोभद्र चक्र कहते हैं ॥ १ ॥

अथ चक्रप्रकारमाह ।

याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठा नवात्र चक्रे सुधिया विधेयाः ।
स्वरर्क्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्धभावाच्च मया निरुक्तम् ॥ २ ॥

अब सर्वतोभद्र बनानेका प्रकार कहते हैं:-दक्षिण उत्तर पूर्व पश्चिम नौ कोष्ठ का चक्र पंडितजन विधान करें उस चक्रमें अपने वर्णस्वर और जन्म नक्षत्र लिखकर जो ग्रह जिस नक्षत्र पर हो वह ग्रह नक्षत्रपर वेधित हो उस करके भावसे प्रसिद्ध अच्छा बुरा फल मैं कहता हूं ॥ २ ॥

अथ वेधफलमाह-

भ्रमो भवेद्भेऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीश्च तिथौ निरुक्ता ।
राशौ च वेधे सति विघ्नमेवं जन्तुः कथं जीवति पञ्चवेधे ॥३॥

अब ग्रहोंके वेधका फल कहते हैं:-जो जन्मनक्षत्रपर पापग्रहोंका वेध हो तो भ्रम करते हैं और जन्म अक्षरपर पापग्रहोंका वेध हो तो हानि कहना और जन्म स्वर पर पापग्रहका वेध हो तो व्याधि कहना चाहिये और जन्म तिथि पर ग्रहोंका वेध हो तो भय कहना और जन्म राशिपर वेध हो तो विघ्न कहना चाहिये और जन्म नक्षत्र अक्षर स्वर तिथि राशि इन पांचोंको पापग्रह वेधे तो वह जीव नहीं जीता है ॥ ३ ॥

अथ वेधप्रकारमाह ।

भरण्यकारौ वृषभं च नन्दां भद्रां तकारं श्रवणं विशाखाम् ।
तुलां च विध्येदनलर्क्षसंस्थो ग्रहोऽत्र चक्रे गदितं स्वरज्ञैः ॥४॥
वकारमौकारमुकारदास्रे स्वातीं रकारं मिथुनं च कन्याम् ।
तथाभिजित्संज्ञकभं च विध्येद्ब्रह्मर्क्षसंस्थो हि नभश्चरेन्द्रः ॥ ५
कर्कं ककारं च हरिं पकारं चित्रां च पौष्णं च तथा लकारम् ।
अकारकं वैश्वभमत्र विध्येदलं नभोमण्डलगो मृगस्थः ॥ ६ ॥

अब वेधप्रकार कहते हैं:-भरणी नक्षत्र और अकारका वेध और वृषराशि नंदा तिथिका वेध होता है और भद्रा तिथि तकार श्रवण विशाखा नक्षत्र तुलाराशि और कृत्तिका नक्षत्रका वेध होता है ॥ ४ ॥ वकार वर्ण औकार उकार अश्विनी नक्षत्र पर वेध होता है तथा स्वाती नक्षत्र और रकारका वेध होता है मिथुन कन्याका वेध कहना, इसी प्रकार अभिजित्पर रोहिणी नक्षत्रका वेध होता है ॥ ५ ॥ कर्कराशी और ककारका वेध कहना चाहिये, सिंहराशिपर पकारका वेध होता है, चित्रा और रेवतीपर लकारका वेध कहना चाहिये, और अकार मकारका मकरराशिसे वेध होता है ॥ ६ ॥

एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वैर्भैश्चिन्तनीयः सुधीभिः।
दद्याद्वेधः सत्फलं सौम्यजातोऽत्यन्तं कष्टं दुष्टवेधः करोति॥७॥
यस्मिन्नृक्षेसंस्थितो वेधकर्ता पापःखेटःसोऽन्यभं याति यस्मिन्।
काले तस्मिन्मङ्गलंपीडितानांप्रोक्तं सद्भिर्नान्यथास्यात्कदाचित्॥८॥

इस प्रकार सर्वतोभद्र चक्रमें सम्पूर्ण नक्षत्र और राशियोंका वेध पंडितजन चिन्तन करें, जो शुभग्रहोंका वेध हो तो श्रेष्ठ फलको देता है और पापग्रहों का वेध दुष्ट फलको करता है ॥ ७ ॥ जिस नक्षत्रमें वेध करनेवाला ग्रह बैठा हो शुभग्रह हो तो शुभफलको देता है और पापग्रह अन्य नक्षत्रमें प्राप्त हो और वेध करता हो तो पीडा करता है ॥ ८ ॥

॥ अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ॥

अ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	ऽश्ले.	आ.
भ.	उ.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	आ.	म.
अ.	लृ.	लृ.	वृ.	मि.	कर्क.	लृ.	अ.	पू.
रे.	च.	मे.	ओ.	१।६।११ सू.मं.	औ	सिं.	ट.	उ. फ.
उ.भा.	द.	मी.	५।१०।१५ शु.	४।९।१४ श.	२।७।१२ चं.बु.	कं.	प.	ह.
पू.भा.	स.	कुं.	अं.	३।८।१३ बृ.	अः.	तु.	र.	चि.
श	ग.	ॠ.	म.	ध.	वृश्चि.	ए.	त	स्वा.
ध.	ऋ.	ख.	ज.	भ.	य.	न.	ऐ.	वि.
ई.	श्र.	अ.	उ.षा.	पू.षा.	मू.	ज्ये.	अ.	इ.

अथ सूर्यकालानलचक्रम्।

सूर्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं हि यत्।
तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परम् ॥ १ ॥
त्रिशूलकाभाः सरलाश्च तिस्रः किलोर्द्ध्वरेखाःपरिकल्पनीयाः।
रेखात्रयं मध्यगतं च तत्र द्वे द्वे च कोणोपरिगे विधेये ॥२॥

त्रिशूलकोणांतरगान्यरेखा तदग्रयोः शृंगयुगं विधेयम् ।
मध्ये त्रिशूलस्य च दण्डमूलात्सव्येन भान्यर्कभतोऽभिजिच्च ॥ ३ ॥

अथ सूर्यकालानल चक्र कहते हैं:-स्वरशास्त्रमें कहा हुआ जो सूर्यकालानलचक्र है उसको विस्तार करके मैं कहता हूं, यह सूर्यकालानल चमत्कार करनेवाला है ॥ ॥ १ ॥ त्रिशूल है अग्रभागमें जिसके ऐसी सीधी रेखा तीन लिखे उनको ऊपरको मुख कर स्थापित करना और तीन रेखा उन रेखाओंके बीचमें तिरछी करे और दो दो रेखा चारों कोणोंमें करे ॥ २ ॥ त्रिशूल और कोणोंके बीचमें एक रेखा और करनी चाहिये । उस रेखाके आगे दो शृंग बनावे, बीचमें जो त्रिशूलकी रेखा है उस रेखाकी जडसे लेकर दाहिनी तरफको अभिजित् सहित सूर्यके नक्षत्रसे लेकरके अट्ठाईस नक्षत्र लिखने चाहिये ॥ ३ ॥

अथ सूर्यकालानलचक्रम् ।

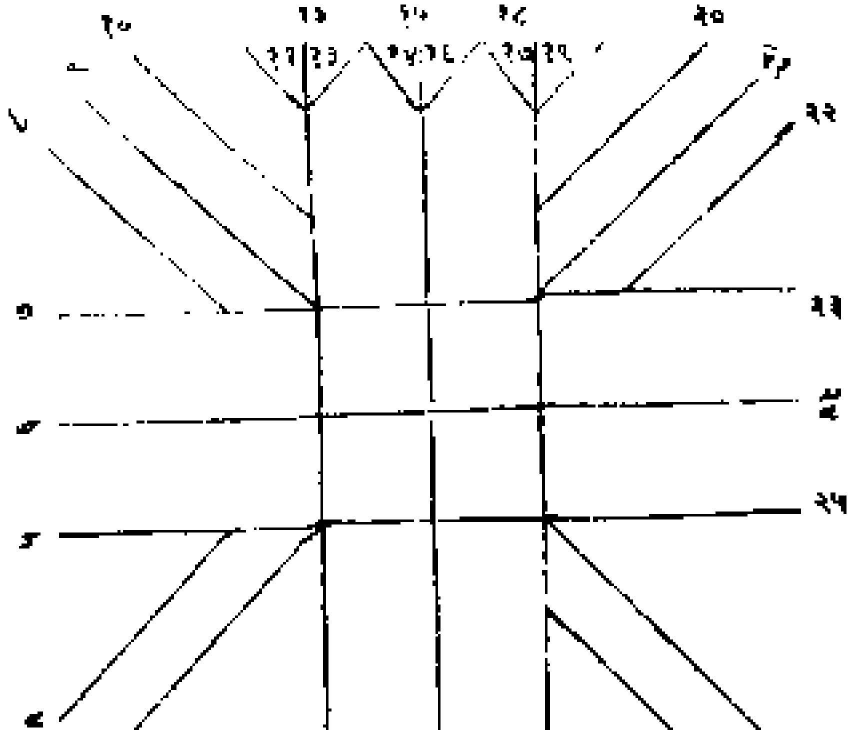

अथ सूर्यकालानलचक्रविचारः ।

स्वनामभं यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सदसत्फलं हि ।
तत्रस्थऋक्षत्रितये क्रमेण चिंता वधश्च प्रतिबंधनानि ॥ ४

शृंगद्वये रुक्च भवेद्धि भंगं शूलेषु मृत्युः परिकल्पनीयः ।
शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्बहुधा नराणाम् ५
श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्रुवे च वादे च रणप्रयाणे ।
प्रयत्नपूर्वं ननु चिंतनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥

अब अपने नामका नक्षत्र जिस जगह स्थित हो उस क्रम करके अच्छा बुरा फल विचार करे । नीचेके तीन नक्षत्रोंमें अपना जन्मनक्षत्र हो तो चिंता, वध, बंधन क्रम करके करते हैं ॥ ४ ॥ और दोनों शृंगोंमें जन्मनक्षत्र हो तो रोगभय होता है, त्रिशूलमें जन्मनक्षत्र हो तो मृत्यु करता है और बाकीके नक्षत्रोंमें जन्मनक्षत्र हो तो जय, लाभ, अभीष्ट सिद्धि अनेक प्रकारोंकी होती है ॥५॥ यह सूर्यकालानलचक्रका विचार रोग, विवाद, युद्ध, एवं यात्रामें यत्नपूर्वक विचारना चाहिये, यह पूर्वाचार्य गर्ग वशिष्ठादिकोंने कहा है ॥ ६ ॥

अथ चंद्रकालानलचक्रम् ।

कर्कटकेन प्रविधाय वृत्तं तस्मिंश्च पूर्वापरयाम्यसौम्ये ।
वृत्ताद्बहिः संचलिते विधेये रेखे त्रिशूलानि तदग्रकेषु ॥ १ ॥
कोणाश्च रेखाद्वितयेन साध्याः पूर्वत्रिशूले किल मध्यसंस्थम् ।
चान्द्रं लिखेद्भं तदनुक्रमेण सव्येन धिष्ण्यानि बहिस्तदन्ते ॥२॥

अब चंद्रकालानलचक्र कहते हैं:- पहिलेकी तरह गोल मण्डल बनावे, उस मण्डलमें दो रेखा पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर बनावें, गोल मण्डलकी वे रेखा जो बाहर होजावें उन रेखाओंके अग्रभागमें त्रिशूल बनाना चाहिये ॥ १ ॥ और कोनोंके बीचमें दो रेखा सीधी ईशान, नैर्ऋत्य और अग्नेय, पश्चिममें करे । पूर्वके त्रिशूलके बीचमें चंद्रमाका नक्षत्र लिखे, फिर क्रमसे अभिजित्सहित दक्षिण रीतिसे बाहर और भीतर नक्षत्र स्थापन करने चाहिये ॥ २ ॥

अथ चंद्रकालानलचक्रफलम् ।

कालानलं चक्रमिदं हि चांद्रं रणप्रयाणादिषु जन्मभं चेत् ।
त्रिशूलसंस्थानि धनाय नूनमन्तर्बहिःस्थं त्वशुभप्रदं हि ॥ ३ ॥

यह जो चंद्रकालानलचक्र कहा है उसको युद्ध समयमें और यात्राकालमें विचारना चाहिये । जो जन्मनक्षत्र त्रिशूलमें आवे तो अवश्य मृत्यु कहना चाहिये और त्रिशूलके बाहर भीतर जन्मनक्षत्र आवे तो शुभ फलका दाता होता है ॥ ३ ॥

॥ अथ चंद्रकालानल चक्रम् ॥

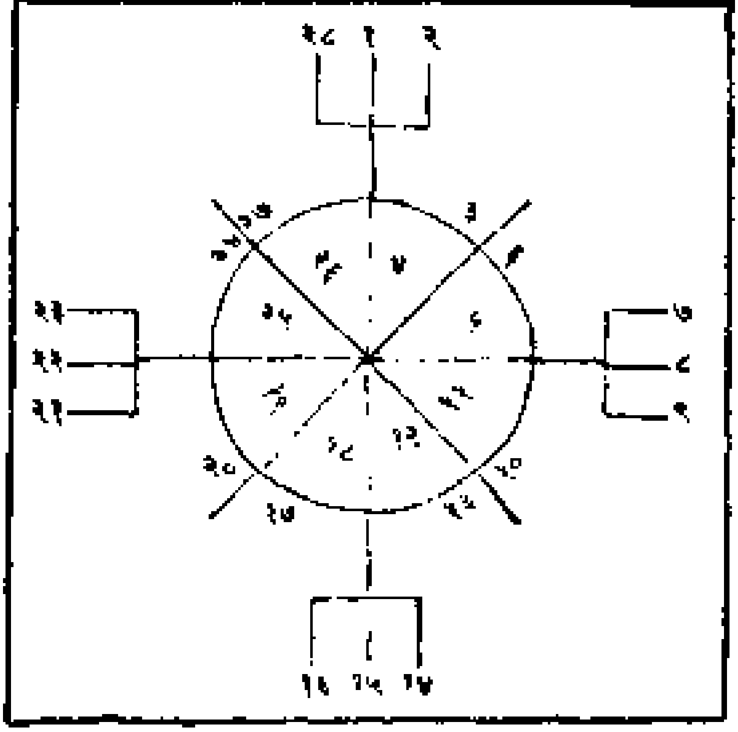

अथ गोचरफलम् ।

नृजन्मराशेः खचरप्रचारैर्यद्गोचरैः संहितिकैः प्रणीतम् ।
स्थूलं फलं तत्किल संप्रवच्मि बालावबोधप्रदमग्रगानाम् ॥१॥

अब गोचरफल कहते हैं-मनुष्योंके जन्मराशिसे ग्रहोंके संचारसे जो गोचर करके संहिताकारोंने फल कहा है वही थोडा फल बालकोंके बोधके अर्थ करनेमें कहता हूं ॥ १ ॥

अथ गोचरेण द्वादशधा सूर्यफलम् ।

गतिर्भयं श्रीर्व्यसनं च दैन्यं शत्रुक्षयो यानमतीव पीडा ।
कांतिक्षयोऽभीष्टवरिष्ठसिद्धिर्लाभो व्ययोऽर्कस्य फलं क्रमेण॥२॥

जन्मके सूर्यमें यात्रा, दूसरे सूर्यमें भय, तीसरे सूर्यमें धन प्राप्त होता है, चौथे सूर्यमें व्यसन होता है, पांचवें सूर्यमें दीनता होती है, छठे सूर्यमें शत्रुनाश होता है सातवें सूर्यमें यात्रा होती है, आठवेंमें अत्यन्त पीडा होती है, नवम सूर्यमें कांतिक्षय होता है, दशम सूर्यमें वांछितसिद्धि होती है, ग्यारहें सूर्यमें लाभ होता है और बारहें सूर्यमें खर्च होता है ॥ २ ॥

अथ गोचरेण द्वादशधा चन्द्रफलम् ।

मदन्नमर्थक्षयमर्थलाभं कुक्षिव्यथां कार्यविघातलाभम् ।
वित्तं रुजं राजभयं सुखं च लाभं च शोकं कुरुते मृगांकः ॥३॥

अब गोचर करके चन्द्रमाका फल कहते हैं:—जन्मके चन्द्रमामें मिष्ट अन्न प्राप्त होता है. दूसरे चन्द्रमामें धननाश, तीसरे चन्द्रमामें धनलाभ, चतुर्थ चंद्रमामें कोखका रोग, पांचवें चन्द्रमामे कार्यसिद्धि, छठे चन्द्रमामें कार्यनाश, सप्तम चन्द्रमामें लाभ अष्टम चन्द्रमामें रोग, नवम चन्द्रमामें राजभय. दशम चन्द्रमामें सुख, ग्यारहवें चन्द्रमामें लाभ और बारहवें चन्द्रमामें शोक होता है ॥ ३ ॥

पुत्रधर्मधनस्थस्य चन्द्रस्योक्तमसत्फलम् ।
कलाक्षये परिज्ञेयं कलावृद्धौ तु साधु तत् ॥ ४ ॥

पंचम नवम द्वितीयस्थ चंद्रमाका जो फल कहा है. सो फल कलाहीन चन्द्रमाका है और जो पूर्ण चंद्र ५ । ९ । २ में हो तो शुभफल करता है ॥ ४ ॥

अथ गोचरे भौमफलम् ।

भीतिक्षती वित्तमरिप्रवृद्धिमर्थप्रणाशं धनमर्थनाशम् ।
शस्त्रोपघातं च रुजं च रोगं लाभं व्यये भूतनयस्तनोति ॥५॥

अब गोचर करके मंगलका फल कहते हैं:—जन्मराशिमें मंगल हो तो भय, द्वितीयमें हानि, तृतीयमें धनलाभ, चतुर्थ शत्रुवृद्धि, पंचम धननाश, छठे धनलाभ, सप्तम धननाश, अष्टम शस्त्रसे घात, नवम रोगदाता. दशम रोगका नाश, एकादशमें लाभ और बारहवां मंगल खर्च अधिक कराता है ॥ ५ ॥

अथ गोचरे बुधफलम् ।

बंधुं धनं वैरिभयं धनाप्तिं पीडां स्थितिं पीडनमर्थलाभम् ।
खेदं सुखं लाभमथार्थनाशं क्रमात्फलं यच्छति सोमसूनुः ॥६॥

अब गोचर करके बुधका फल कहते हैं:—जन्मराशिमें बन्धुलाभ करनेवाला, द्वितीय बुध धनलाभ, तृतीय बुध शत्रुभय, चतुर्थ बुध धनकी प्राप्ति, पंचम बुध पीडा करनेवाला, छठा बुध स्थिति, सप्तम बुध पीडा, अष्टम बुध धनलाभ, नवम बुध खेद, दशम बुध सुख, ग्यारहवां बुध लाभ और बारहवां बुध धननाशक होता है ॥ ६ ॥

अथ गोचरे गुरुफलम् ।

प्रीतिं वित्तं पीडनं वैरिवृद्धिं सौख्यं शोकं राजमानं च रोगम् ।
सौख्यं दैन्यं मानवित्तं च पीडां धत्ते जीवो जन्मराशेः सकाशात्॥

अथ गोचरकी रीतिसे बृहस्पतिका फल कहते हैं:-जन्मस्थानपर बृहस्पति हो तो भय, द्वितीय धन तृतीय. पीडा, चतुर्थ शत्रुवृद्धि, पञ्चम सौख्य, छठा शोक सातम राजमान, अष्टम रोग, नवम सौख्य, तथा दीनता, दशम मानवृद्धि, ग्यारहवां धनलाभ तथा बारहवां बृहस्पति पीडा करता है ॥ ७ ॥

अथ गोचरे शुक्रफलम् ।

रिपुक्षयं वित्तमतीव सौख्यं वित्तं सुतप्रीतिमरातिवृद्धिम् ।
शोकं धनाप्तिं वरवस्त्रलाभं पीडां स्वमर्थं च ददाति शुक्रः ॥८॥

अथ शुक्रका फल कहते हैं:-जन्मस्थानपर शुक्र हो तो शत्रुनाश, द्वितीयमें धनलाभ, तृतीयमें अतीव सौख्य, चतुर्थमें धनलाभ, पञ्चम पुत्रप्राप्ति, छठे शत्रुवृद्धि, सातवें शोक, अष्टम धनलाभ, नवम श्रेष्ठ वस्त्रलाभ, दशम पीडा, ग्यारहवें स्वकीय धनलाभ और बारहवें व्यय कराता है ॥ ८ ॥

अथ गोचरे शनिफलम् ।

भ्रंशं क्लेशं शं च शत्रुप्रवृद्धिं पुत्रात्सौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम् ।
पीडां सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनुस्तनोति ॥९॥

गोचर करके शनैश्चरका फल कहते हैं:-जन्मका शनैश्चर भ्रष्ट करता है, द्वितीयमें क्लेश, तृतीयमें कल्याण, चतुर्थमें शत्रुवृद्धि, पञ्चम पुत्रोंसे सौख्य, छठे सौख्यवृद्धि, सप्तम कोप, अष्टम पीडा, नवम सौख्य, दशम निर्धनता, ग्यारहवें धनलाभ और बारहवें शनैश्चर अनेक अनर्थ कराता है ॥ ९ ॥

अथ गोचरे राहुफलम् ।

हानिं नैःस्वं स्वं च वैरं च शोकं वित्तं वादं पीडनं चापि पापम् ।
वैरं सौख्यं द्रव्यहानिं प्रकुर्याद्राहुः पुंसां गोचरे केतुरेवं ॥१०॥

अथ गोचर करके राहुका फल कहते हैं:-जन्मके राहुमें हानि, द्वितीयमें धनहीनता, तृतीयमें धनलाभ, चतुर्थमें वैर, पञ्चममें शोक, छठे धनप्राप्ति, सातवें विवाद, अष्टममें पीडा, नवममें पाप, दशममें वैर, एकादशमें सौख्य और बारहवेंमें राहु धनहानि करता है ॥ इसी तरह केतुका भी फल जानना चाहिये ॥ १० ॥

राशौ राशौ गोचरे खेचराणामुक्तं पूर्वैर्यत्फलं जन्मराशेः ।
तन्मर्त्यानामेकभोत्पत्तिकानां भिन्नं भिन्नं दृश्यतेऽवश्यमेव ॥११॥

राशिमें गोचर करके ग्रहोंका फल जो पूर्वाचार्योंने जन्मराशिसे लेकर कहा है सो फल एक राशिमें उत्पन्न मनुष्योंको जुदा जुदा देखनेमें आता है, अवश्य करके इसमें क्या कारण है ॥ ११ ॥

यस्मिन्राशौ शीतरश्मिप्रसूतौ संस्थःप्रोक्तो जन्मराशिः स एव ।
एवं लग्नेनान्विताःसप्तखेटास्ते किं न स्युः प्राणिनांजन्मभानि ॥ १२ ॥
पुंसामतोऽष्टौ किल राशयः स्युः शुभाशुभान्यत्र फलानि तेभ्यः ।
ततश्च रेखामिलनांतरालात्स्पष्टं फलं चाष्टकवर्गयुक्तम् ॥ १३ ॥

मनुष्योंके जन्मकालमें जिस राशिमें चन्द्रमा बैठा हो उसीको जन्मराशि कहते हैं इसी प्रकार लग्न करके सहित सातों ग्रहोंकी राशि क्यों नहीं होती हैं ॥ १२ ॥ पुरुषोंकी निश्चय करके आठ ही जन्मराशि होती हैं, उन आठों राशि करके अच्छा बुरा फल करके रेखा और बिन्दुओंके अन्तर करके ठीक फल अष्टकवर्ग करके कहा है ॥ १३ ॥

अथ सूर्याष्टकवर्गमाह ।

स्वान्मंदात्कुजतोरविस्त्रिमितिपोलाभार्थकेंद्रस्थितः शुक्रादस्तरिपुव्ययेषु च गुरोर्धर्मारिपुत्राप्तिषु। चंद्रात्प्राप्तिरिपुत्रिखेषुशशिजात्पश्च त्रिनंदव्ययारिप्राप्त्यभगतस्तनोस्त्रिषु सुखोपान्त्यारिरिःफे शुभे ॥ १४ ॥

सूर्यशुभाष्टकम्.

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

अथ सूर्यका अष्टकवर्ग कहते हैं—शनि, मंगल, सूर्य, अपने स्थानसे १ । २ । ४ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ में शुभ फल देते हैं और शुक्र अपने स्थानसे ७।६।१२ में शुभ फल देता है, बृहस्पति अपने स्थानसे ९ । ६ । ५ । ११ में शुभ फल देता है, चन्द्रमा अपने स्थानसे ११ । ६ । ३ । १० में शुभ फल देता है, बुध अपने स्थानसे ५ । ३ । ९ । १२ । ६।११ । १० में शुभ फल देता है और लग्नसे ३ । ४ । ६ । ११ । १२ इं स्थानमें शुभ फल देता है ॥ १४ ॥

(स्था)नष्टाष्टकम्
सूर्य ... श। ल।
१४ ... १२
७
८
९
१०

अथ चंद्राष्टकवर्गमाह ।

भौमाद्द्वलोर्नवधीधनोपचयगः षड्व्याति-
धीस्थोऽर्कजाल्लग्नाच्चोपचयो रवेरुपचयाष्टा-
स्तेषु शस्तो बुधात् । धीरंभेषु चतुष्टये त्रिषु
गुरोः केन्द्राष्टलाभव्यये स्वादेकोपचमास्त-
गस्विसभवास्तांबुत्रिकोणे भृगोः ॥ १५ ॥

अथ चंद्रशुभाष्टकम्.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	च.
१	२	१	१	३	३	३	१
३	३	३	४	४	५	६	३
६	५	४	५	५	६	१०	६
७	६	५	७	७	११	११	७
१०	९	७	९	९			१०
११	१०	८	१०	१०			११
	११	१०	११	११			
		११					

अथ चन्द्रमाष्टक वर्ग कहते हैं:—चन्द्रमा मंगलसे २ । ३ । ५ । ९ । १० । ११ । स्थानमें शुभफल देता है और शनैश्चरसे ६ । ३ । ११ । ५ में शुभ फल देता है और लग्नसे ३ । ६ । १० । ११ । ११ । १ । ७ । १० में शुभ फल देता है । सूर्यसे ३ । ६ । १० । ११ । ८ । ७ में शुभ फल देता है और बुधसे ५ । ८ । ४ । ३ स्थानमें शुभफल देता है और बृहस्पतिसे १ । ४ । ७ १० । ८ । ११ । १२ स्थानमें शुभफल देता है और चन्द्रमा अपने स्थानमे १ । ३ । ६ । १० । ११ । ७ में शुभफल देता है और शुक्रसे ३ । १० । ११ । ७ । ४ । ९ । ५ में शुभ फल देता है ॥ १५ ॥

अथ चंद्रानिष्टाष्टकम्.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	च.
२	१	३	२	१	१	१	१
४	४	६	३	२	२	२	३
५	७	९	६	६	४	४	४
८	८	१२	८	८	७	५	५
९	१२		१२	१२	८	७	९
१२					९	८	१२
					१०	९	
					१२	१२	

अथ भौमाष्टकवर्गः ।

स्वाद्भौमोऽष्टचतुष्टयापधनगोजीवात्षडा-
यान्त्यखे चन्द्रादायरिपुत्रिगो भृगुसुतादष्टा-
न्त्यकाभारिगः । ज्ञात्पञ्चापरिपुत्रिगोऽर्कतन-
यात्केंद्राष्टधर्मान्त्यगः सूर्याच्चोपचयात्मजेषु
तनुतस्त्र्यायाग्निताये शुभः ॥ १६ ॥

अथ भौमाष्टकम्.

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	सू.	च.
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	७	६	६	११
७	११	१२	१२	८	१०	१०	
८				९	११	११	
१०				१०			
११				११			

अब मंगलका अष्टक वर्ग कहते हैं-मंगल अपने स्थानसे १।२।४।७।८।१०। ११ स्थानोंमें शुभफल देता है और बृहस्पतिसे ६ । १० । ११ । १२ स्थानोंमें शुभ फल देता है और चन्द्रमासे ३ । ६ । ११ स्थानोंमें शुभफल देता है बुधसे ३ । ५ । ६ । ११ स्थानोंमें शुभफल देता है और शनिश्चरसे १ । ४ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । स्थानोंमें मंगल शुभ फल देता है और सूर्यसे ३ । ५ । ६ । १० । ११ स्थानोंमें शुभफल देता है और लग्नसे १ । ३ । ६ । १० । ११ । स्थानोंमें शुभफल देता है ॥ १६ ॥

अथ भौमानिष्टाष्टकम्

म.	बृ.	शु.	बु.	श.	च.	सू.	ल.
३	२	१	१	२	२	१	१
५	३	२	२	३	४	२	२
६	४	३	३	५	५	४	४
९	७	४	४	६	७	७	५
१२	८	५	५	१२	८	८	७
	९	७	७		९	९	८
	१०	८	९		१२	१२	९
	११	९	१०				१०
							१२

अथ बुधाष्टकवर्गमाह ।

शुक्राद्दासुतधर्मलाभमृतिगः सौम्यः कुजा-
र्क्योस्तथः केंद्रायाष्टधने स्वतोऽप्युपचया-
स्त्येकत्रिकोणे शुभः ॥ कोणान्त्यारिभवे रवेरिषु-
भवाद्यान्त्ये गुरोरिंदुतः खायाष्टारिसुखा-
थेगः सुखभवान्त्यैकोऽङ्कषट्सूदयात ॥ १७॥

अथ बुधाष्टकम्.

बु.	बृ.	शु	श.	म.	सू.	चं.	ल.
१	६	१	१	१	५	४	१
३	८	२	२	२	६	५	२
५	११	३	४	४	९	६	४
६	१२	४	७	६	११	८	७
९		५	८	९	१२	१०	८
१०		८	९	११		११	९
११		९	१०	१२			१०
१२		११	११				११

अब बुधका अष्टकवर्ग कहते हैं-बुध शुक्रके स्थानसे १।२।३।४।५।८।९। ११ स्थानोंमें शुभ है और मंगल शनैश्चरसे १।२।४।७।८।९ । १० । ११ स्थानोंमें शुभ है और अपनी राशिसे १ । ३ । ५ । ६ । ९ । १० । ११ । १२ । स्थानोंमें शुभ है और सूर्यसे ५।६।९।११।१२।शुभफल देता है और बृहस्पतिसे ६।८।११ १२।१२ शुभफल देता है और बृहस्पतिसे ६ । ८ । ११ । ११। शुभफल देता है और चन्द्रमासे ४।२।६।८ । १०। ११ शुभफल देता है और लग्नसे १ । २ । ४ । ६ । ९ । ११ । १२ बुध शुभफल दाता होता है १७

अथ बुधानिष्टाष्टकम्.

बु.	बृ.	शु	श.	म.	सू.	चं.	ल.
२	१	६	३	३	१	१	३
४	२	७	५	५	२	२	५
७	३	१०	६	७	३	३	६
८	४	१२	१२	८	४	७	१२
	५			१०	६	९	
	७				८	१२	
	९				१०		
	१०						

अथ गुरोरष्टकवर्गमाह ।

स्वात्स्वायाष्टत्रिकेन्द्रस्वनवदशभवारातिधीस्थश्चशुक्राल्लग्नात्केन्द्रायधीषट्स्वनवसु च कुजात्स्वाष्टकेन्द्राय इज्यः । इन्दोर्यूनार्थकोणाशिवसहजनवाष्टायकेन्द्राष्टगोकाज्ज्ञात्कोणेऽव्यायसाद्याम्बुधिरिपुशनेःत्र्यन्त्यषीषट्सु शस्तः ॥ १८ ॥

अब बृहस्पतिका अष्टक वर्ग कहते हैं:-बृहस्पति अपने स्थानसे १।२।३।४।७।८।१०।११ स्थानोंमें शुभफल देता है और शुक्रसे २।५।६।९।१०।११ स्थानोंमें शुभफल देता है और लग्नसे १।२।४।५।६।७।९।१०।११ स्थानोंमें शुभफल देता है और मंगलसे १।२।४।७।८।१० ११ स्थानोंमें शुभफल देता है और चंद्रमासे २।५।७।९। ११ स्थानोंमें शुभफल देता है और सूर्यसे १।२।३। ।४।७।८।९।१०।११ स्थानोंमें शुभफलको देता है और बुधसे १।२।४।५।६।९।१०। ११ स्थानोंमें बृहस्पति शुभफल देता है और शनिश्चरसे ३।५।६।१२ बृहस्पति शुभफल देता है ॥ १८ ॥

गुरोःशुभाष्टकम्

बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	बु.
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	९	१२	५	४	९	७	५
७	१०		६	७	११	८	६
८	११		७	८		१०	९
१०			९	९		११	१०
११			१०	१०			११
			११	११			

गुरोरनिष्टाष्टकम्.

बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	बु.
५	१	१	३	५	१	३	३
६	३	२	८	६	३	५	७
९	४	४	१२	१२	४	६	८
१२	७	७			६	९	१२
	८	८			८	१२	
	१२	९			१०		
		१०			१२		
		११					

अथ शुक्राष्टकवर्गम् ।

स्वास्तात्याद्यितवार्जतेषु तनुतः शुक्रो विना स्तारिखं चन्द्रात्स्वान्मबनन्यपारिरहिते-त्र्यर्काद्व्ययाष्टातिषु । मन्दाद्द्व्येकरिपुव्य-थास्तर ज्यात्रयायाष्ट सा-ऽपन्त्यारिधर्मे कुजात् ॥ १९ ॥

शुक्राष्टकवर्गचक्रम्.

शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	बृ.	बु.
१	३	१	८	१	३	५	३
२	४	२	११	२	५	८	५
३	५	३	१२	३	६	९	६
४	८	४		४	९	१०	९
५	९	५		५	११	११	११
८	१०	८		८	१२		
९	११	९		९			
१०		११		११			
११				१२			

शुक्रानिष्टाष्टकवर्गच०							
शु.	श.	ल.	म.	चं.	बृ.	बु.	सू.
६	१	६	१	६	१	१	१
७	२	७	२	७	२	२	२
१२	६	१०	३	१०	४	४	३
	७	१२	४		७	७	४
	१२		५		८	८	६
			६		१०	१०	७
			७			१२	१२
			९				
			१०				

चंद्रमासे १।२।३।४।५।८।९।११। शुभफलको देता है और अपने स्थानसे शुक्र १।२।३।४।५।८।९।१०।११ शुभफलको देता है और सूर्यसे ८।११।१२ शुभफल देता है और शनैश्चरसे ३।४।५।८।९।१०।११। शुभफल देता है और बृहस्पतिसे ५।८।९।१०।११। शुभफल देता है और बुधसे ३।५।६।९।११ शुभफल देता है और मंगलसे शुक्र ३।५।६।९।११।१२ शुभफलको देता है ॥ १९ ॥

अथ शनेरष्टकवर्गम्।

शनेरष्टकवर्गचक्रम्.							
श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
३	३	१	३	३	६	५	६
५	४	३	६	५	८	६	११
६	६	४	११	६	९	११	१२
११	९	७		१०	१०	१२	
	१०	८		११	१२		
	११	१०		१२			
		११					

स्वान्मन्दस्त्रिषडायधीपुरवितोऽष्टायाद्-
द्विकेन्द्रे शुभो भौमात्स्वायषडंत्यधीस्त्रिषु
तनोः स्वायाम्बुषट्त्र्येकगः। ज्ञाद्दायारि-
नवांत्यस्वाष्टसु भृगोरंत्यायषट्संस्थित-
श्चन्द्रात्स्वायरिपुत्रिगः सुरगुरोरन्त्यायधी-
शत्रुगः ॥ २० ॥

शनेनिष्टाष्टकवर्गच०							
श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
१	१	२	१	१	१	१	१
२	२	५	२	२	२	२	२
४	५	६	४	४	३	६	३
७	७	९	५	७	४	४	४
८	८	१२	७	८	५	७	५
९	१२		८	९	७	८	७
१०			९		११	९	८
१२			१०			१०	९
			१२				१०

अब शनैश्चरका अष्टक वर्ग कहते हैं:- शनैश्चर अपने स्थानसे ३।५।६।११ में शुभ है और सूर्यसे १।२।४।७।८।१०।११ में शुभ है और मंगलसे ३।५।६।१०।११।१२ में शुभ है और लग्नसे ३।४।६।९।१०।११ में शुभ है और बुधसे ६।८।९।१०।१२ में शुभ है और शुक्रसे ६।११।१२ में शुभ है और चंद्रसे ३।६।११। में शुभ है और बृहस्पतिसे ५।६।११।१२ में शुभफल देता है ॥ २० ॥

स्थानानि यानि प्रतिपादितानि शुभानि चान्यान्यशुभानि नूनम्।
तयोर्वियोगादधिकं फलं यत्स्वराशितो यच्छति तद्ग्रहेन्द्रः॥२१॥

लग्नकरके सहित सात ही ग्रहोंके जो स्थान कहे हैं उन स्थानोंमें ग्रह शुभफलको देते हैं और उक्त स्थानोंके बिना अन्यस्थानोंमें अशुभ फल करते हैं, शुभाशुभ स्थानोंका अन्तर करनेसे जो अधिक स्थान हो तो अपनी राशिसे ग्रह फलको देता है ॥ २१ ॥

अथ रेखासंख्यामाह-

भुजंगवेदा नवसागराश्च नवाग्नयः सागरसायकाश्च ।
रसेषवो युग्मशरा नवत्रितुल्याः क्रमेणाष्टकवर्गलेखाः ॥ २२ ॥

अब रेखाओंकी संख्या कहते हैं-सूर्यकी ४८ रेखा, चन्द्रमाकी ४९, मंगलकी ३९, बुधकी ५४, बृहस्पतिकी ५६, शुक्रकी ५२, शनैश्चरकी ३९. सब ग्रहोंकी रेखाओंका योग ३३७ होता है ॥ २२ ॥

विलग्ननाथाश्रितराशितोऽत्र भवन्ति रेखाः खलु यत्र यत्र ।
विलग्नतस्तत्र च तत्र राशौ संस्थापनीयाः सुधिया क्रमेण ॥ २३ ॥

जन्मलग्नका स्वामी जिस राशिमें बैठा हो उस राशिसे जिस जगह रेखा निश्चय करके हो वह रेखा लग्नसे लेकर उसी उसी राशिमें पंडितजन क्रम करके स्थापन करें ॥ २३ ॥

अथ प्रत्येकरेखाफलमाह ।

क्लेशोऽर्थहानिर्व्यसनं समत्वं शश्वत्सुखं नित्यधनागमश्च ।
सम्पत्प्रवृद्धिर्विपुलाप्रलक्ष्मीः प्रत्येकरेखाफलमामनन्ति ॥२४॥

अब प्रत्येक रेखाका फल कहते हैं-१रेखासे क्लेश, २ धनहानि, ३ व्यसन, ४ सम ५ रेखा निरंतर सुख, ६ रेखा नित्य धनप्राप्ति, ७ रेखा संपदाकी वृद्धि करे, ८ रेखा श्रेष्ठ लक्ष्मी प्राप्त करती हैं। यह फल एकसे लेकर आठ रेखाका कहा है ॥ २४ ॥

इत्येकखेटस्य हि संप्रदिष्टा रेखायुतिश्चाखिलखेटरेखाः ।
अष्टद्विसंख्यास्तु समास्ततोऽपि यथाधिकोनाः सदसत्फलास्ताः २५

यह एक ग्रहकी रेखाका फल कहा है, सम्पूर्ण ग्रहोंकी रेखासिद्धि करके फल कहना चाहिये २८ रेखामें ग्रहोंका फल बराबर होता है, जो २८ रेखासे कमती हो तो नेष्ट और २८ रेखा से अधिक हो तो श्रेष्ठ फल कहा है ॥ २५ ॥

का कदा फलदेत्याह।

इलातनूजश्च पतिर्नलिन्याः प्रवेशकाले फलदः किल स्यात्।
राश्यर्द्धभोगे भृगुजामरेज्यौ प्रान्ते शनीन्दू च सदेन्दुसूनुः२६॥

अब ग्रहोंके शुभाशुभ फल देनेका समय कहते हैं, कौन ग्रह किस समय फल देगा। मंगल और सूर्य राशिके प्रवेशमें फल देते हैं और शुक्र बृहस्पति राशिके अर्द्ध भाग व्यतीत होने पर फल देते हैं और शनैश्चर चन्द्रमा राशिके अन्तमें फल देते हैं और बुध हमेशा राशिमें फल देता है॥ २६॥

अथांगविभागेन ग्रहारिष्टमाह।

शिरःप्रदेशे वदने दिनेशो वक्षःस्थले चापि गले कलावान्।
पृष्ठोदरे भूतनयः प्रभुत्वं करोति सौम्यश्चरणे च पाणौ॥२७॥
कटिप्रदेशे जघने च जीवः कविस्तु गुह्यस्थलमुष्कयुग्मे।
जानूरुदेशे नलिनीशसूनुश्चारेण वा जन्मनिचिन्तनीयम्॥२८॥
यदा यदा स्यात्प्रतिकूलवर्ती स्वाङ्गेऽस्य दोषेण करोतिपीडाम्।
इदं तु पूर्वं प्रविचार्य सर्वं प्रश्नप्रसूत्यादिषु कल्पनीयम्॥२९॥

अब अंगविभागमें ग्रहोंका रिष्ट प्रकार कहते हैं:-सूर्य शिर और मुखमें पीडा करता है और छाती गलेमें चन्द्रमा रिष्ट करता है और मंगल पीठ और पेटमें पीडा करता है और बुध हाथ पैरोंमें पीडा करता है॥ २७॥ कमर और जंघोंमें बृहस्पति पीडा करता है और गुदा अंडकोशमें शुक्र पीडा करता है और जानु तथा पिंडलियोंमें शनैश्चर पीडा करता है। इसका ग्रहोंके चारसे विचार करना चाहिये॥ २८॥ जो जो ग्रह गोचर अष्टकवर्गमें प्रतिकूल हो वह ग्रह अपने कहे हुए अंगमें अपने दोषको करता है यह पहिले सम्पूर्ण विचार करके प्रश्नकाल वा जन्मकालमें वर्षमासादिकोंमें कल्पना करनी चाहिये॥ २९॥

अथ द्विग्रहयोगादिवर्णनम्।

अथ सूर्यचंद्रयोगफलम्।

पाषाणयंत्रक्रयविक्रयेषु कूटक्रियायां हि विचक्षणः स्यात्।
कामी प्रकामी पुरुषः सगर्वः सर्वौषधीशेन रवौ समेते॥ १॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्यचंद्रमा एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य पत्थर और यंत्रोंका बेचनेवाला, माया रचनेमें चतुर, कामी और चाहना सहित अभिमानी होता है॥ १॥

अथ सूर्यकुजयोगफलम्।

भवेन्महौजा बलवान्विमूढो गाढोद्धतोऽसत्यवचा मनुष्यः।
सुसाहसः शूरतरोऽतिहिंस्रो दिवामणौ क्षोणिसुताभ्युपेते ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मंगल एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य बडे मदवाला, बलवान्, मूढ, अतिशय करके उद्धत, झूठ बोलनेवाला, साहसी, शूरवीर और हिंसा करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यबुधयोगफलम्।

प्रियवचाः सचिवो बहुसेवयार्जितधनश्च कलाकुशलो भवेत्।
श्रुतपटुर्हि नरो नलिनीपतौ कुमुदिनीपतिसूनुसमन्विते ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य बुध एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य प्यारी बोलीवाला, मंत्री, बहुत सेवा करके धनको इकट्ठा करनेवाला, कलाओंमें कुशल और शास्त्रमें चतुर होता है ॥ ३ ॥

अथ चन्द्रभौमयोगफलम्।

आचारहीनः कुटिलप्रतापी पण्यानुजीवी कलहप्रियश्च।
स्यान्मातृशत्रुर्मनुजो रुजार्तः शीतद्युतौ भूसुतसंयुते वै ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा मंगल एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य आचाररहित, कुटिल, प्रतापी, व्यापारसे आजीविका करनेवाला, कलह जिसको प्यारा मातृवैरी और रोग करके दुःखी होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यगुरुयोगफलम्।

पुरोहितत्वे निपुणो नृपाणां मन्त्री च मित्रात्तधनः समृद्धः।
परोपकारी चतुरो दिनेशे वाचामधीशेन युते नरः स्यात् ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य बृहस्पति एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य पुरोहितपनेमें निपुण, राजाका मन्त्री, मित्रतासे धनकी समृद्धिको प्राप्त, पराया उपकार करनेवाला और चतुर होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यशुक्रयोगफलम्।

संगीतवाद्यायुधवाक्प्रबुद्धिर्भवेन्नरो नेत्रबलेन हीनः।
कांताप्रियुक्तः ससुहृत्समाजः सिताम्विते जन्मनि पद्मिनीशे ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य शुक्र एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य गाना बजाना और शास्त्रविद्यामें सुन्दर बुद्धिवाला, रोगोंके बलसे रहित स्त्रीजनके सहित और मित्रोंके समान करके पूर्ण होता है ॥ ६ ॥

अथ सूर्यशनियोगफलम् ।

धातुक्रियापण्यमतिर्गुणज्ञो धर्मप्रियः पुत्रकलत्रसौख्यः ।
सदा समृद्धोऽतितरां नरः स्यात्प्रद्योतने भानुसुतेन युक्ते ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य शनि एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य धातुक्रिया और व्यवहारमें बुद्धि रखनेवाला गुणका जाननेवाला, धर्म जिसको प्यारा, पुत्र और स्त्रीसे सौख्य पानेवाला और हमेशा अत्यन्त समृद्धियोंसहित होता है ॥ ७ ॥

अथ चन्द्रबुधयोगफलम् ।

सद्वाग्विलासो धनवान्सुरूपः कृपार्द्रचेताः पुरुषो विनीतः ।
कांतापरप्रीतिरतीव वक्ता चंद्रे सचान्द्रौ बहुधर्मकृत्स्यात् ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा बुध एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य श्रेष्ठ वाणीवाला, धनवान्, श्रेष्ठ रूपवाला, दयाकरके युक्तचित्त, नम्रतासहित, स्त्रीसे अधिक प्रीति करनेवाला और बड़ा भारी वक्ता होता है ॥ ८ ॥

चन्द्रगुरुयोगफलम् ।

सदा विनीतो दृढगूढमंत्रः स्वधर्मकर्माभिरतो नरः स्यात् ।
परोपकारादरतैकचित्तो शीतद्युतौ वाक्पतिना समेते ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा बृहस्पति एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य हमेशा नम्रतासहित, मजबूत, छिपी सलाह करनेवाला, अपने धर्म और कर्ममें तत्पर और पराये उपकार करनेमें एकचित्त होता है ॥ ९ ॥

अथ चन्द्रभृगुयोगफलम् ।

वस्त्रादिकानां क्रयविक्रयेषु दक्षो नरः स्याद्व्यसनी विधिज्ञः ।
सुगंधपुष्पोत्तमवस्त्रचित्तो द्विजाधिराजे भृगुजेन युक्ते ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा शुक्र एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य वस्त्रादिकोंके खरीदने और बेचनेमें चतुर और व्यसन सहित विधिका जाननेवाला, सुगन्ध और उत्तम पुष्प वस्त्रोंमें चित्त रखनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ चन्द्रशनियोगफलम् ।

नानांगनानां परिसेवनेच्छुर्वैश्यानुवृत्तिर्गतसाधुशीलः ।
परात्मजः स्यात्पुरुषार्थहीन इन्दौ समन्दे प्रवदंति संतः ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा और शनिका योग हो वह मनुष्य अनेक स्त्रियोंको सेवन करनेकी इच्छावाला, वैश्यवृत्ति करनेवाला, साधु शीलसे रहित, परपुत्र युक्त और पुरुषार्थहीन होता है ॥ ११ ॥

अथ भौमबुधयोगफलम् ।

बाहुयुद्धकुशलो विपुलस्त्रीलालसो विविधभेषजपण्यः ।
हेमलोहविधिबुद्धिविभावः संभवेद्यदि कुजेंदुजयोगः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल बुध एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य मल्लविद्यामें चतुर, बहुत स्त्रियोंकी लालसा करनेवाला, अनेक औषधियोंका व्यापार करनेवाला सोना और लोहेकी विधिमें बुद्धिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ भौमगुरुयोगफलम् ।

मंत्रार्थशास्त्रादिकलाकलापे विवेकशीलो मनुजः किल स्यात् ।
चमूपतिर्वा नृपतिः पुरेशो ग्रामेश्वरो वा सकुजे सुरेज्ये ॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल बृहस्पति एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य मन्त्र और शास्त्रविद्याकी कलाके समूहमें चतुर शीलवाला, फौजका मालिक अथवा राजा अथवा नगर वा ग्रामका स्वामी होता है ॥ १३ ॥

अथ भौमभृगुयोगफलम् ।

नानाङ्गनाभोगविधानचित्तो द्यूतानृतप्रीतिरतिप्रपंचः ।
नरः सगर्वः कृतसर्ववैरो भृगोः सुते भूसुतसंयुते स्यात् ॥ १४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल शुक्र एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य अनेक स्त्रियोंके भोगविधानमें चित्त करनेवाला, द्यूत और झूठमें प्रीति करनेवाला, प्रपंचमें तत्पर, अभिमानसहित और सबमें वैर करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ भौमशनियोगफलम् ।

शस्त्रास्त्रवित्संगरकर्मकर्ता स्तेयानृतप्रीतिकरः प्रकामम् ।
सौख्येन हीनो नितरां नरः स्याद्धरासुते मंदयुतेऽतिनिंद्यः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल शनैश्चर एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य अस्त्र और शस्त्रोंको जाननेवाला, युद्ध करनेवाला, चोरी और झूठमें प्रीति करनेवाला और निरन्तर सौख्यरहित होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधगुरुयोगफलम् ।

सङ्गीतविद्यानिपुणो विनीतः सौख्यान्वितोऽत्यन्तमनोभिरामः ।
धीरो नरः स्यात्सततमुदारः सुगंधभाग्वाक्पतिसौम्ययोगे ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध बृहस्पति एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य गानविद्याका जाननेवाला, नम्रतासहित, सौख्ययुक्त, अत्यंत श्रेष्ठ, धैर्यवान, निरंतर उदार और सुगन्धका भोग भोगनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधशुक्रयोगफलम् ।

कुलाधिशाली शुभवाग्विलासः सदा सहर्षः पुरुषः सुवेषः ।
भर्ता बहूनां गुणवान्विवेकी सभार्गवे जन्मनि सोमसूनौ ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध शुक्र एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य कुलमें प्रतापी, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, हमेशा हर्षसहित, श्रेष्ठ वेष, बहुत नौकरोंवाला और गुणवान, चतुर होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधशनियोगफलम् ।

चलस्वभावश्च कलिप्रियश्च कलाकलापे कुशलः सुवेषः ।
पुमान्बहूनां प्रतिपालकश्चेद्रवेश्च सूनो मिलनं ज्ञशन्योः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध शनैश्चर एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य चञ्चल स्वभाव, कलह जिसको प्यारा, कलाओंके समूहमें चतुर, श्रेष्ठ वेषवाला और बहुत मनुष्योंका पालनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ गुरुशुक्रयोगफलम् ।

विद्यया भवति पण्डितः सदा पंडितैरपि करोति विवादम् ।
पुत्रमित्रधनसौख्यसंयुतो मानवः सुरगुरौ भृगुयुक्ते ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति शुक्र एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य विद्याकरके पण्डित, हमेशा पण्डितोंसे विवाद करनेवाला और पुत्र मित्र धनके सौख्य सहित होता है ॥ १९ ॥

अथ गुरुशनियोगफलम् ।

ऐश्वर्यवान्ग्रामपुराधिनाथो भवेद्यशस्वी कुशलः कलासु ।
संप्राप्तमनोरथश्च नरः सुरेज्ये रविजेन युक्ते ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति शनैश्चर एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य शूरवीर, धनवान्, ग्राम और नगरका स्वामी, यशवाला, कलाओंमें कुशल और स्त्रीके आश्रयसे मनोरथ प्राप्त करनेवाला होता है ॥ २० ॥

अथ शुक्रशनियोगफलम् ।

शिल्पलेख्यविधिजातकौतुको दारुणो रणकरो नरो भवेत् ।
अश्मकर्मकुशलश्च जन्मनि भार्गवे रविसुतेन संयुते ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र शनैश्चर एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य शिल्पशास्त्र और लेखनविधिमें चतुर, कौतुकी, घोर युद्ध करनेवाला और पत्थरके काममें कुशल होता है ॥ २१ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिक पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां द्विग्रहयोगवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ त्रिग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्यचंद्रभौमयोगफलम् ।

शूराश्च यन्त्राश्वविधिप्रवीणास्त्रपाकृपाभ्यां सुतरां विहीनाः ।
नक्षत्रनाथक्षितिपुत्रमित्रैरेकत्र संस्थैर्मनुजा भवंति ॥ १ ॥

अब त्रिग्रहयोग कहते हैं—जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. मं. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य शूरवीर, यंत्र और अश्वविद्याका जाननेवाला, लाज और कृपासे हीन होता है ॥ १ ॥

अथ सू० चं० बु० योगफलम् ।

भवेन्महौजा नृपकार्यकर्ता वार्ताविधौ शास्त्रकलासु दक्षः ।
दिवामणिज्ञामृतरश्मिसंस्थैः प्राणी भवेदेकगृहं प्रयातैः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. बु. एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य बडे यशवाला, राजाकाकार्य करनेवाला, बात करनेमें और शास्त्रकलामें चतुर होता है ॥ २ ॥

अथ सू० चं० गु० योगफलम् ।

स्व विदेशगामी प्राज्ञः प्रवीणश्चपलोऽतिधूर्तः ।
नरो भवेच्चंद्रगुरुवंशप्रद्योतनानां मिलने प्रसूतौ ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० चं० बु० बैठे हों वह मनुष्य सेवाकी विधि जाननेवाला, परदेश जानेवाला, चतुर, प्रवीण, चपल और अत्यन्त धूर्त होता है ॥३॥

अथ सू० चं० शु० योगफलम् ।

परस्वहर्ता व्यसनानुरक्तो विमुक्तसत्कर्मरुचिर्नरः स्यात् ।
मृगांकपंकेरुहबंधुशुक्रा ह्येकत्र भावे यदि संयुताः स्युः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० चं० शु० एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य पराया धन हरनेवाला, व्यसनोंमें आसक्त और सत्कर्मोंकी रुचिसे रहित होता है ॥ ४ ॥

अथ सू० चं० श० योगफलम् ।

परेंगितज्ञो विधनश्च मन्दो धातुक्रियायां निरतो नितान्तम् ।
व्यर्थश्रमासक्तो नरः स्यात्क्षेत्रे यदैकत्र रवीन्दुमन्दाः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य पराये इंगितका जाननेवाला, धनहीन, मन्दबुद्धि, धातुक्रियामें निरन्तर रत और वृथा श्रम करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ सू० बु० भौ० योगफलम् ।

ख्यातो भवेन्मंत्रविधिप्रवीणः सुसाहसो निष्ठुरचित्तवृत्तिः ।
लज्जार्थजायात्मजमित्रयुक्तो युक्तैर्बुधार्कक्षितिजैर्नरः स्यात् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० बु० मं० एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य प्रसिद्ध, मन्त्रशास्त्रकी विधिमें प्रवीण, श्रेष्ठ, साहसी, कठोर चित्तवाला और लज्जा, धन, स्त्री एवं पुत्रमित्रोंसहित होता है ॥ ६ ॥

अथ सू० मं० बृ० योगफलम् ।

वक्ताऽर्थयुक्तः क्षितिपालमन्त्री सेनापतिर्नीतिविधानदक्षः ।
महामनाः सत्यवचोविलासः सूर्यारजीवैः सहितैर्नरः स्यात् ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० मं० बृ० एक स्थानमें बैठे हों वह मनुष्य वक्ता, धनसहित, राजाका मन्त्री, फौजका मालिक, नीतिविधानमें चतुर, तेजस्वी, सत्य बोलनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ सू० मं० गु० योगफलम् ।

भाग्यान्वितोऽत्यंतमतिर्विनीतः कुलीनवाग्भिर्विराजमानः ।
स्याद्रूपजस्वश्चतुरो नरश्चेद्भास्वत्कुजित्सूर्ययुतिः प्रसूतौ ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. मं. बु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य भाग्यवान् अत्यन्त बुद्धिमान्, नम्रतासहित, कुलीन, शीलवान्, थोडा बोलनेवाला और चतुर होता है ॥ ८ ॥

अथ सू० मं० श० योगफलम् ।

धनेन हीनः कलहान्वितश्च त्यागी वियोगी पितृबंधुवर्गैः ।
विवेकहीनो मनुजः प्रसूतौ योगो यदार्कारशनैश्चराणाम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. मं. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य धनहीन कलहसहित, त्यागी और पिता बन्धुवर्ग करके वियोगी विवेकरहित होता है ॥ ९ ॥

अथ सू० बु० बृ० योगफलम् ।

विचक्षणः शास्त्रकलाकलापे सुसंग्रहार्थः प्रबलः सुशीलः ।
दिवाकरामरपूजितानां योगे भवेन्ना नयनामयार्तः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. बृ. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य चतुर शास्त्रोंकी कलाके समूहमें प्रवीण, धन संग्रह करनेवाला, बडा, बलवान्, श्रेष्ठ शील और नेत्ररोगसे पीडित होता है ॥ १० ॥

अथ सू० बु० शु० योगफलम् ।

साधुद्वेषी निंदितोऽत्यंततप्तः कांताहेतोर्मानवः संयुतश्च ।
दैत्यामात्यादित्यसौम्याख्यखेटाश्च वाचालःस्यादन्यदेशाटनश्च ११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. शु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य साधुओंका वैरी, निन्दा करनेवाला, स्त्रीके कारण अत्यन्त सन्तापको प्राप्त, बहुत बोलनेवाला और देशोंका भ्रमण करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ सू० बु० श० योगफलम् ।

तिरस्कृतःस्वीयजनैश्च हीनोऽप्यन्यैर्महादोषकरो नरः स्यात् ।
षण्ढाकृतिर्हीनतराग्रयातश्चादित्यमन्देन्दुसुतैः समेतैः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य तिरस्कारको प्राप्त, अपने जनोंसे रहित और भी अनेक दोष करनेवाला हिजडोंकीसी आकृति तथा हीनवृत्तिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ सू० बृ० शु० योगफलम् ।

अप्रगल्भवचनो धनहीनोऽप्याश्रितोऽवनिपतेर्मनुजः स्यात् ।
शूरताप्रियतरः परकार्ये सादरोऽर्कगुरुभार्गवयोगे ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. गु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य थोड़ा बोलनेवाला, धर्मरहित, राजाका आश्रय करनेवाला और पराये कार्यमें शूरता करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ सू० बु० श० योगफलम्।

नृपप्रियो मित्रकलत्रपुत्रैर्नित्यं युतः कांतवपुर्नरः स्यात्।
शनैश्चराचार्यदिवामणीनां योगे सुनीत्या व्ययकृत्प्रगल्भः॥ १४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बृ. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य राजाका प्यारा, मित्र और स्त्री पुत्रों करके सहित, शोभायमान शरीर, अच्छी नीतिसे खर्च करनेवाला बड़ा, निर्भय और बोलनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ सू० शु० श० योगफलम्।

रिपुभयपरियुक्तः सत्कथाकाव्यमुक्तः
कुचरितरुचिरेवाऽत्यंतकंडूयनार्तः।
निजजनधनहीनो मानवः सर्वदा स्यात्
कविरविरविजानां संयुतिश्चेत्प्रसूतौ ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. शु. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य शत्रुके भयसे युक्त, अच्छी कथा और काव्यरहित, खोटे कामोंमें प्रीति करनेवाला, अत्यन्त कण्डूरोगसे पीड़ित, अपना धन और बन्धुवर्गसे हीन होता है ॥ १५॥

अथ चं० मं० बु० योगफलम्।

भवंति दीना धनधान्यहीना नानाविधानात्मजनापमानाः।
स्युर्मानवा हीनजनानुयाताश्चेत्संयुताः शोणितसुतेन्दुसौम्याः ॥ १६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. बु. एक भावमें बैठे हों वे मनुष्य दीन, धन धान्यरहित, अपने बन्धुवर्गोंसे अपमानित और नीचजनोंसे साथ करनेवाले होते हैं ॥ १६ ॥

अथ चं० मं० बृ० योगफलम्।

व्रणांकितः कोपयुतश्च हर्ता कांतारतः कांतवपुर्नरः
प्रसूतिकाले मिलिता भवंति पेदारनीतारकरामरे...

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. बृ. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य व्रण करके सहित, क्रोधसहित, पराया धन हरनेवाला, स्त्रीमें तत्पर और शोभायमान शरीर होता है ॥ १७ ॥

अथ चं. मं. गु. योगफलम्।

दुःशीलकांतापतिरस्थिरः स्याद्दुःशीलकांतातनुजोऽल्पशीलः।
नरो भवेज्जन्मनि चैकभावे भौमात्सुरेज्यक्रमतो यदि स्युः॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. गु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य दुष्ट-शीला स्त्रीका पति, अस्थिर, दुष्टशील माताका संतान और थोडा शीलवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ चं० मं० श० योगफलम्।

शैशवे हि जननीमृतिप्रदः सर्वदाऽपि कलहान्वितो भवेत्।
संभवे रविभवेन्दुभूसुताः संयुता यदि नरोऽतिगर्हितः॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य बालक-पनेमें माताकी मृत्यु करनेवाला और हमेशा कलहसहित निंदित होता है ॥ १९ ॥

अथ चं. बु. बृ. योगफलम्।

विख्यातकीर्तिर्मतिमान्महौजा विचित्रमित्रो बहुभाग्ययुक्तः।
सद्वृत्तविद्योऽतितरां नरः स्यादेकत्र संस्थैर्गुरुसोमसौम्यैः॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. बृ. एकभावमें बैठे हों वह मनुष्य प्रसिद्ध यशवाला, बुद्धिमान्, बडा प्रतापी, विचित्र मित्रोंवाला, बहुत भाग्यसहित और श्रेष्ठ आचार और विद्यावाला होता है ॥ २० ॥

अथ चं. बु. शु. योगफलम्।

विद्याप्रवीणोऽपि च नीचवृत्तः स्पर्धाऽभिवृद्ध्या च रुचिर्विशेषात्।
स्यादर्थलुब्धो हि नरः प्रसूतौ मृगांकसौम्यास्फुजिता युतिश्चेत्॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. शु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य विद्यामें प्रवीण, नीचवृत्ति करनेवाला, सबसे द्रोह करनेवाला अर्थात् सबकी निन्दा करनेमें प्रीति जिसकी, धनका लोभी होता है ॥ २१ ॥

अथ चं० बु० श० योगफलम्।

कलाकलापाऽमलबुद्धिशाली ख्यातः क्षितीशाभिमतो नितान्तम्।
नरः पुरग्रामपतिर्विनीतो बुधेन्दुमन्दाः सहिता यदि स्युः॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य कला-ओंके समूहमें निर्मल बुद्धिवाला, विख्यात, राजाका प्यारा, नगर ग्रामका पति और नम्रतासहित होता है ॥ २२ ॥

अथ चं० बृ० शु० योगफलम्।

भाग्यभाग्भवति मानवः सदा चारुकीर्तिमतिवृत्तिसंयुतः।
भार्गवेन्दुसुरराजपूजिताः संयुता यदि भवन्ति संभवे॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बृ. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य भाग्यवान्, हमेशा सुन्दर कीर्तिवाला, बुद्धिमान् और श्रेष्ठवृत्तिसहित होता है॥ २३॥

अथ चं० बृ० श० योगफलम्।

विचक्षणःक्षोणिपतिप्रियश्च सन्मन्त्रशास्त्राधिकृतो नितांतम्।
भवेत्सुवेषो मनुजो महौजाः संयुक्तमन्देज्यसुरेन्द्रवन्द्यैः॥ २४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बृ. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य चतुर, राजाका प्यारा, श्रेष्ठ, मन्त्रशास्त्रमें अधिकारी, उत्तम वेषवाला और बड़ा प्रतापी होता है॥ २४॥

अथ चं० शु० श० योगफलम्।

पुरोधसां वेदविदां वरेण्याः स्युः प्राणिनः पुण्यपरायणाश्च।
सत्पुस्तकालोकनलेखनेच्छाः कवीन्दुमंदा मिलिता यदि स्युः॥२५॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें चं. शु. श. एक भावमें बैठे हों वे मनुष्य वेदके ज्ञाता, पुरोहितोंमें श्रेष्ठ, पुण्यकरनेमें तत्पर, श्रेष्ठ पुस्तकोंके देखने और लिखनेवाले होते हैं॥ २५॥

अथ मं० बु० बृ० योगफलम्।

क्ष्मापालकः स्वीयकुले नरः स्यात्कवित्वसङ्गीतकलाप्रवीणः।
परार्थसंसाधकतैकचित्तो वाचस्पतिज्ञावनिसूनुयोगे॥ २६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. बृ. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य अपने कुलमें घरोंका पालनेवाला, राजाके समान, काव्य और गाने बजानेकी कलामें प्रवीण और पराया कार्य साधनमें एकचित्त होता है॥ २६॥

अथ मं. बु. शु. योगफलम्।

वित्तान्वितः क्षीणकलेवरश्च वाचालताचञ्चलतासमेतः।
धृष्टः सदोत्साहपरो नरः स्यादेकत्र यातैः कविभौमसौम्यैः॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य धनसहित, दुर्बल देह, बड़ा बोलनेवाला, चंचलतासहित, धृष्ट और निरंतर उत्साहमें तत्पर होता है॥ २७॥

अथ मं० बु० श० योगफलम्।

कुलोचनः क्षीणतनुर्वनस्थः प्रेष्यप्रवासी बहुहास्ययुक्तः।
स्यान्नरोऽसहिष्णुश्चनगोऽपराधी मंदारसौम्यैः सहितैः प्रसूतौ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य बुरे नेत्रोंवाला, दुर्बल देह, वनमें वास करनेवाला, दूतका काम करनेवाला, परदेशी, बहुत हास्यसहित, किसीको न सहनेवाला और अपराधी होता है ॥ २८ ॥

अथ मं० बु० गु० योगफलम्।

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतः क्ष्मापालमान्यः सुजनानुयातः।
वाचस्पतिः क्षोणिसुतेन्दुजिद्भिः क्षेत्रे यदैकत्र गतैर्नरः स्यात्॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं.बु.गु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य श्रेष्ठ पुत्र और स्त्रीके सुखसहित, राजाकरके माननीय और श्रेष्ठ जनोंके साथ रहनेवाला होता है॥२९॥

अथ मं० बृ० श० योगफलम्।

नृपापमानं कृपया विहीनं कृशं कुवृत्तं गतमित्रसख्यम्।
जन्यां च शन्यंगिरसावनीजाः संयोगभाजो मनुजं प्रकुर्युः॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बृ. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य राजाकरके प्राप्त मान और कृपारहित, दुर्बल, खोटी वृत्ति करनेवाला और मित्रोंकी मित्रतारहित होता है ॥ ३० ॥

अथ मं० शु० श० योगफलम्

वासो विदेशे जननी त्वनार्या भार्या तथैवोपहतिः सुखानाम्।
दैत्येन्द्रपूज्यावनिजार्कजानां योगे भवेज्जन्म नरस्य यस्य॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. शु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य परदेशमें वास करनेवाला और उसकी माता नीचकुलवाली, वैसी ही उसकी औरत होती है और उसके सुखोंका नाश होता है ॥ ३१ ॥

अथ बु० बृ० शु० योगफलम्।

नृपानुकंप्यो बहुगीतकीर्तिः प्रसन्नमूर्तिर्विजितारिवर्गः।
सौम्यामरेज्यास्फुजितां प्रसूतौ चेत्संयुतिः सत्त्वपरो नरः स्यात्॥३२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु.बृ.शु. एक राशीमें बैठे हों वह मनुष्य राजाकी कृपासहित, बहुत यशवाला, प्रसन्नचित्त, शत्रुओंको जीतनेवाला और बलवान् होता है॥३२॥

अथ बु० बृ० श० योगफलम्।

स्थानार्थसद्वैभवसंयुतः स्यादनल्पजल्पो धृतिमान्सुवेषः।
क्षेत्रे यदैकत्र गता भवंति ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु.बृ.श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य मकानमें धन और श्रेष्ठ वैभव सहित, बहुत बोलनेवाला, धृतिमान् और श्रेष्ठ वृत्तवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ बु० शु० श० योगफलम् ।

साधुशीलरहितोऽनृतवक्ताऽनल्पजल्पनरुचिः खलु धूर्तः ।
दूरयाननिरतश्च कलाज्ञो भार्गवज्ञशनिसंयुतिजन्मा ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु. शु. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य साधु शील-रहित झूठ बोलनेवाला, बहुत बोलनेवाला, निश्चय धूर्त, बडी दूरकी यात्रा करनेवाला और कलाओंका जाननेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ बृ० शु० श० योगफलम् ।

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा नरः सुकीर्तिः पृथिवीपतिः स्यात् ।
सद्वृत्तिशाली परिसूतिकाले मन्देज्यशुक्रा मिलिता यदि स्युः ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृ. शु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य नीचवंशमें भी चाहे पैदा हो तो भी श्रेष्ठ कीर्तिवाला, धरतीका स्वामी और श्रेष्ठ वृत्ति करनेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ शुभाशुभयुक्तचन्द्रसूर्यफलम् ।

पापान्विते शीतरुचौ जनन्या नूनं भवेन्नैधनमामनंति ।
तादृग्दिनेशः पितृनाशकर्ता मिश्रैर्विमिश्रं फलमत्र कल्प्यम् ॥ २६ ॥
शुभान्वितो जन्मनि शीतरश्मिर्यशोऽर्थभूकीर्तिविवृद्धिलाभम् ।
करोति जातं सकलप्रदीपं श्रेष्ठप्रतिष्ठं नृपगौरवेण ॥ २७ ॥
एकालये चेत्खलखेचराणां त्रयं करोत्येव नरं कुरूपम् ।
दारिद्र्यदुःखैः परितप्तदेहं कदापि गेहं न समाश्रयेत्सः ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके युक्त चन्द्रमा बैठा हो तो माताको निश्चय करके नाश करता है, उसी प्रकार सूर्य पापग्रहों करके सहित हो तो पिताका नाश करता है मिश्रग्रहोंसे मिश्र फल करता है ॥ २६ ॥ और जो चन्द्रमा शुभ ग्रह-करके सहित बैठा हो तो वह मनुष्य यश और धन, कीर्तिकी वृद्धिको प्राप्त होता है और वह मनुष्य श्रेष्ठ प्रतिष्ठा करके सहित, राजाकरके मान्यको प्राप्त होता है ॥ २७ ॥ जिसके एक घरमें तीन पापग्रह बैठे हों तो वह मनुष्य बुरे रूपवाला, दारिद्र्य और दुःख करके सन्तापित कभी घरमें सुख नहीं पाता है ॥ २८ ॥

इति त्रिग्रहयोगाध्यायः ।

अथ राजयोगाध्यायप्रारम्भः ।

तत्रादौ गणेशस्तुतिः ।

सद्विलासकलगर्जनशीलः शुण्डिकावलयकुन्प्रतिवेलम् ।
अस्तु वः कलितभालतलेंदुर्मंगलाय किल मंगलमूर्तिः ॥१॥

अब राजयोग कहते हैं:-तहां पहिले श्रीगणेशजीका ध्यान करते हैं. कैसे हैं गणेशजी-श्रेष्ठ विलासके करनेवाले, मधुर स्पष्ट शब्दके गर्जनशीलवाले, शुण्डको पहुँचीके समान वारंवार घुमाते हुए, शोभायमान हैं मस्तकपर चंद्रमा जिनके ऐसे मंगलकी मूर्ति श्रीगणेशजी महाराज मंगलके वास्ते हमारे विघ्नोंका नाश करें ॥ १ ॥

अथ राजयोगकथनकारणमाह ।

भाग्यादिभावप्रतिपादितं यद्भाग्यं भवेत्तत्खलु राजयोगैः ।
तान्विस्तरेण प्रवदामि सम्यकैः सार्थकं जन्मयतो नराणाम् ॥२॥

भाग्यादिभाव जो पहिले वर्णन किये हैं सो भाग्य निश्चय करके राजयोगसे होता है, उन राजयोगोंको मैं भले प्रकार वर्णन करता हूं, उन राजयोगोंके उत्पन्न हुएसे मनुष्योंका जन्म सार्थक है ॥ २ ॥

अथ राजयोगः ।

नभश्चराः पंच निजोच्चसंस्था यस्य प्रसूतौ स तु सार्वभौमः ।
त्रयः स्वतुंगादिगताः स राजा राजात्मजस्त्वन्यसुतोऽत्रमंत्री ॥३॥

राजयोगः ।

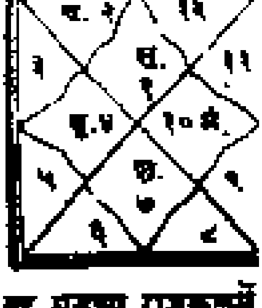

राजयोगः ।

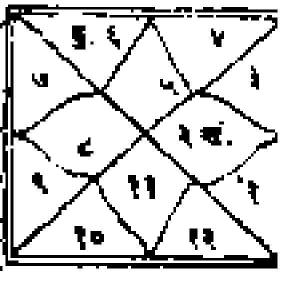

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पांच ग्रह अपनी उच्चराशिमें बैठे हों वह मनुष्य समुद्रपर्यंत धरतीका पति सार्वभौमराजा होता है (एको योगः) और जिसके तीन ग्रह अपने उच्च स्वक्षेत्र मूल त्रिकोणमें बैठे हों वह मनुष्य राजकुलमें उत्पन्न हुआ राजा होता है और अन्यजातिमें उत्पन्न राजाका वजीर होता है ॥ ३ ॥

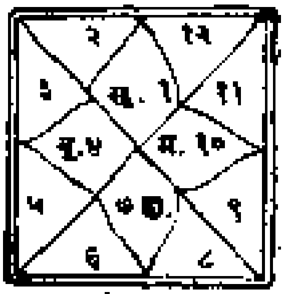

तुंगोपगा यस्यचतुर्नभोगा महापगासंतरणे
बलानाम् । व्रातावलानां किल सेतुबंधा
कीर्तिप्रबन्धा वसुधातले ते ॥ ४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चार ग्रह अपने उच्चमें बैठे हों उस मनुष्यके साथ हाथियोंके समूह चलते हैं और वह मनुष्य पुलबांधनेमें समर्थ हो उसकी धरतीपर बड़ी कीर्ति होती है ॥ ४ ॥

स्वोच्चे सूर्यशनीज्यभूमितनयैर्यद्वा त्रिभिर्लग्नगै-
स्तेषामन्यतमे हि षोडशमिताः श्रीराजयोगाः स्मृताः ।
तन्मध्ये निजतुंगगे ग्रहयुगे यद्वैकखेटे विधौ
स्वर्क्षे तुंगसमाश्रितैकखचरे लग्ने परे षोडश ॥ ५ ॥

अब बत्तीस राजयोग कहते हैं-सूर्य शनैश्चर, बृहस्पति, मंगल अपनी उच्चराशिमें बैठे हों तो चार राजयोग होते हैं। अथवा पूर्वोक्त ग्रहोंमेंसे तीन ग्रह उच्चराशिगत केन्द्रमें बैठे हों तो बारह राजयोग होते हैं इस तरह सोलह हुए ॥ ५ ॥

राजयोगः १

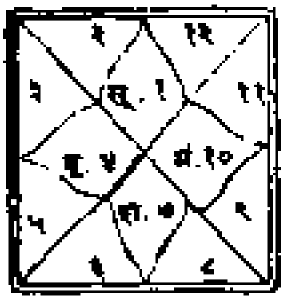

राजयोगः २

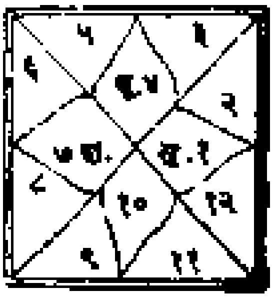

राजयोगः ३

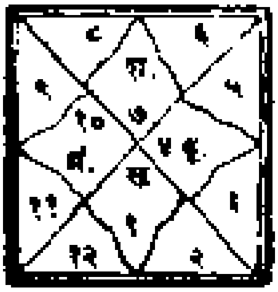

राजयोगः ४

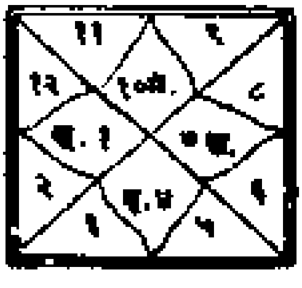

राजयोगः ५

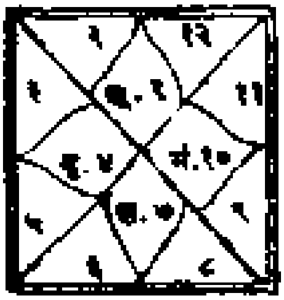

राजयोगः ६

राजयोगः ७

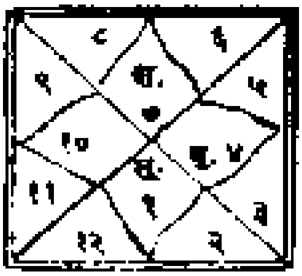

राजयोगः ८

राजयोगः ९

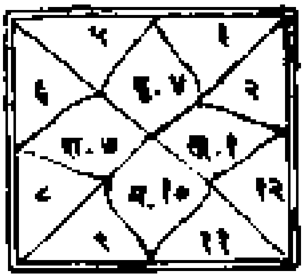

राजयोगः १०

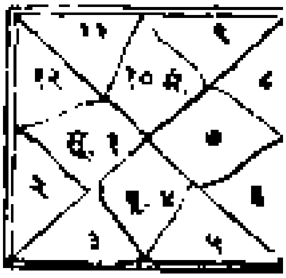

राजयोगः ११

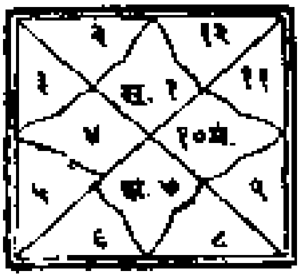

राजयोगः १२

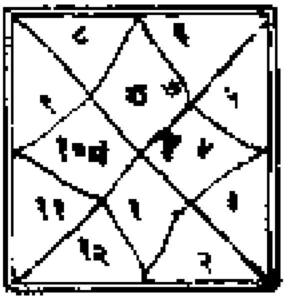

राजयोगः १३

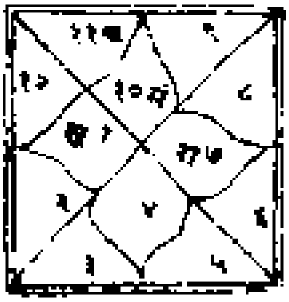

राजयोगः १४

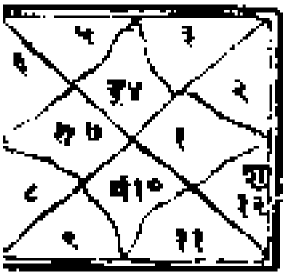

राजयोगः १५

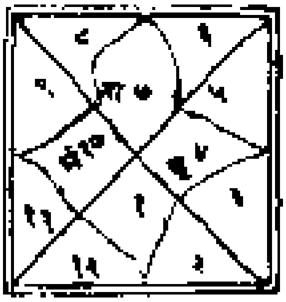

राजयोगः १६

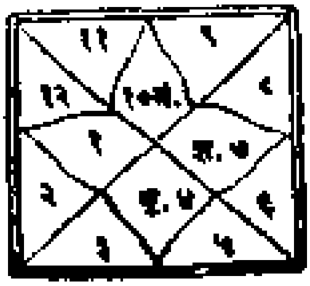

उन्हीं पूर्वोक्त ग्रहोंमेंसे दो ग्रह अपनी उच्चराशिगत केन्द्रमें बैठे हों और चन्द्रमा कर्कराशिका हो तो बारह राजयोग होते हैं और उन्हीं चार ग्रहोंमेंसे एक ग्रह भी अपनी उच्चराशिगत केन्द्रमें बैठा हो और चन्द्रमा कर्क राशिमें बैठा हो तो चार राजयोग होते हैं और पूर्वोक्त बारह राजयोग मिलकर सोलह हुए ॥ ५ ॥

राजयोग: १७

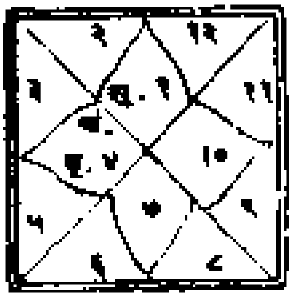

राजयोग: १८

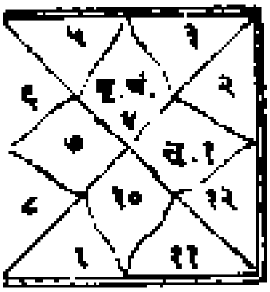

राजयोग: १९

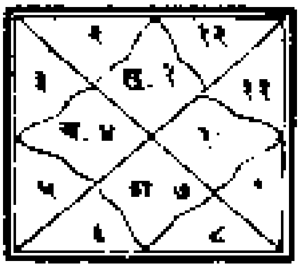

राजयोग: २०

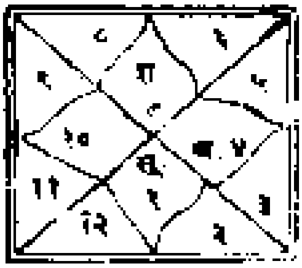

राजयोग: २१

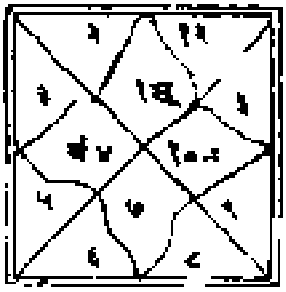

राजयोग: २२

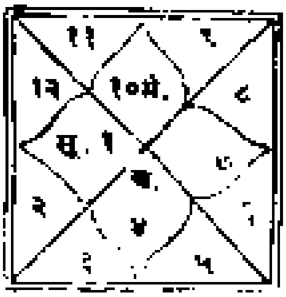

राजयोग: २३

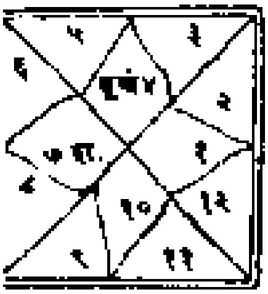

राजयोग: २४

राजयोग: २५

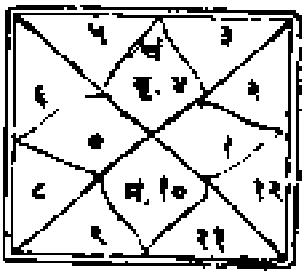

राजयोग: २६

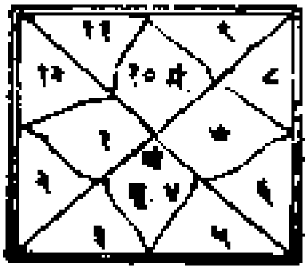

राजयोग: २७

राजयोग: २८

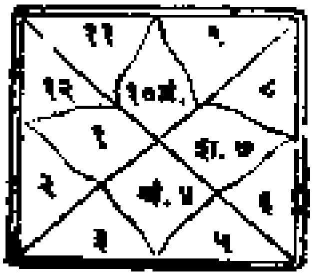

राजयोगः २९

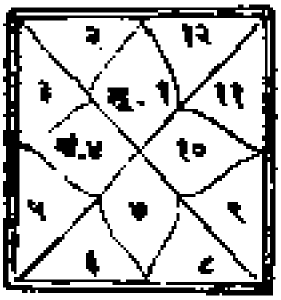

राजयोगः ३०

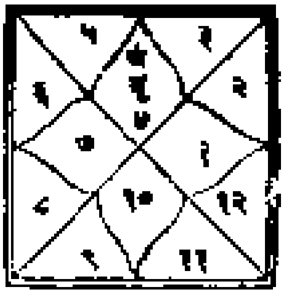

राजयोगः ३१

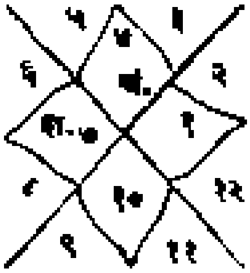

राजयोगः ३२

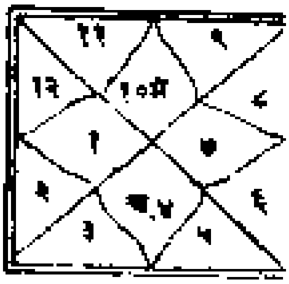

वर्गोत्तमेऽमृतकरे यदि वा शरीरे संवीक्षिते च चतुरादिभिरिन्दुहीनैः। द्वाविंशतिप्रमितया खलु संभवंति योगाः समुद्रवलयक्षितिपालकानाम् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा वर्गोत्तम नवांशगत लग्नमें बैठा हो अथवा खाली चन्द्रमा लग्नमें चार ग्रहोंको आदि लेकर पांच छः ग्रह लग्नको देखते हों तो बाइस राजयोग होते हैं इन योगोंमें पैदा हुआ मनुष्य समुद्र पर्यन्त धरतीका पालनेवाला होता है ॥ ६ ॥

राजयोगः १

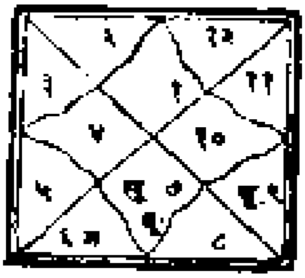

राजयोगः २

राजयोगः ३

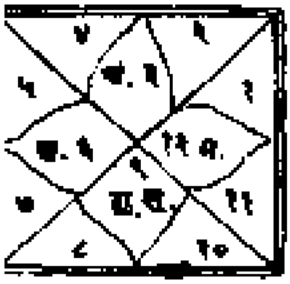

राजयोगः ४

राजयोगः ५

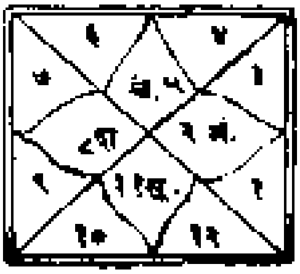

राजयोगः ६

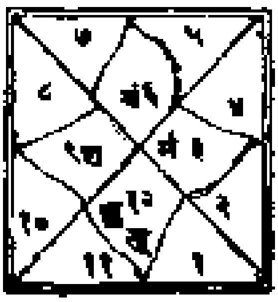

राजयोगः ७

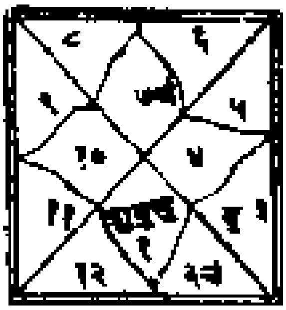

राजयोगः ८

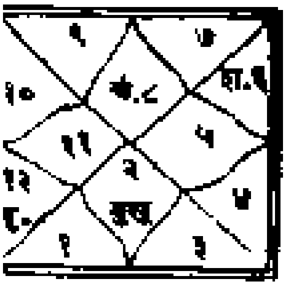

राजयोगः ९

राजयोगः १०

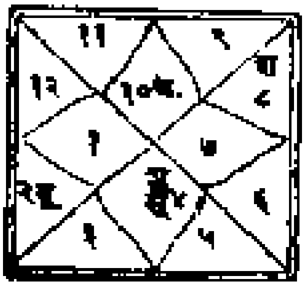

राजयोगः ११

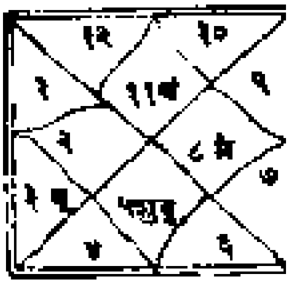

राजयोगः १२

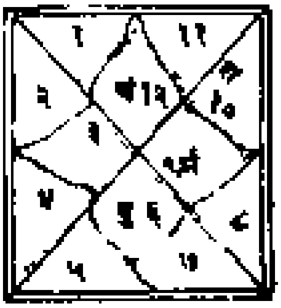

राजयोगः १३

राजयोगः १४

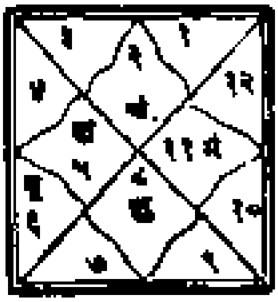

राजयोगः १५

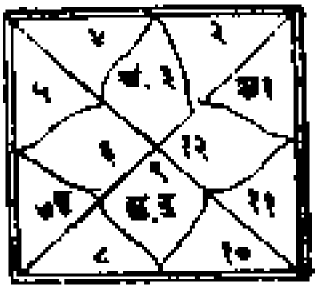

राजयोगः १६

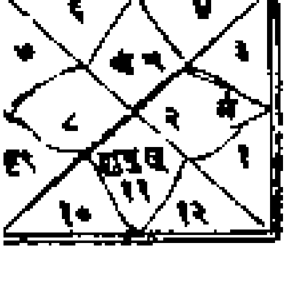

राजयोगः १७

राजयोगः १८

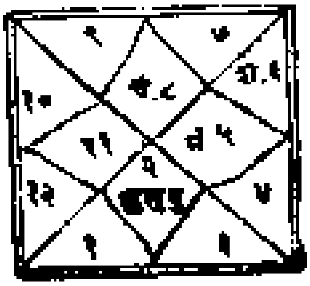

राजयोग: १९

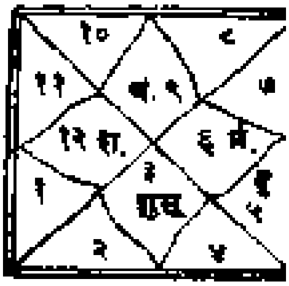

राजयोगः २०

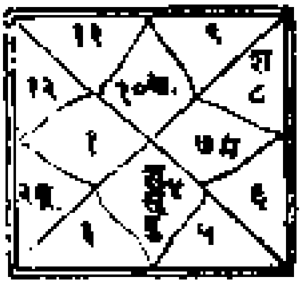

राजयोगः २१

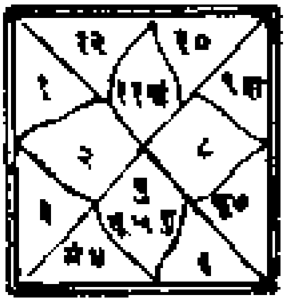

राजयोगः २२

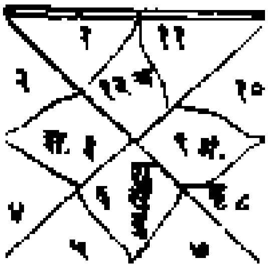

इसी प्रकार चन्द्रमा लग्नमें न बैठा हो और न देखता हो और चार वा पांच वा छः ग्रह लग्नको देखते हों तो २२ और योग होते हैं ॥

उदग्वसिष्ठो भृगुजश्च पश्चात्प्राग्वाक्पतिर्दक्षिणतस्त्वगस्त्यः । प्रसूतिकाले स भवेदिलाया नाथो हि पाथोनिधिमेखलायाः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तरमें वशिष्ठ और शुक्र पश्चिममें, पूर्वमें बृहस्पति, दक्षिणमें अगस्त्य हों ऐसे समयमें पैदा हुआ मनुष्य समुद्र है तागडी जिसकी ऐसी धरतीका स्वामी होता है ॥ ७ ॥

राजयोगः

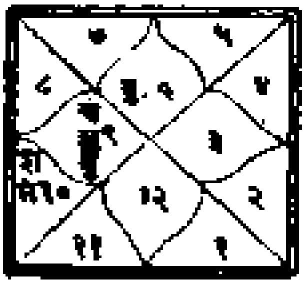

स्वोच्चे मूर्तिगतोऽमृतांशुतनये नक्रे सवक्रे शनौ पापे वागधिपेन्दुभार्गवयुते स्याज्जन्म भूमीपतेः । स्वस्थाने ननु यस्य भूमितुरगो मत्तेभमालामिलत्सेनांदोलितभूमिगोलकलनं विर्दतिनः कुर्वते ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उच्चराशिगत लग्नमें बुध बैठा हो और मकरराशिमें मंगलसहित शनैश्चर बैठा हो और धनराशिमें बृहस्पति चन्द्रमा शुक्र करके

सहित बैठा हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाके जन्मकालमें उस राजाके बराबर घरकी, घोडे, मतवाले हाथियोंके समूहकरके फौज धरतीके ऊपर दिग्पाल हाथी आनन्दको करते हैं ॥ ८ ॥

राजयोग:

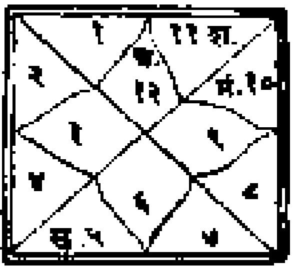

दिनाधिराजे मृगराजसंस्थे नक्रे कलशेऽर्कसूनौ । पाठीरलग्ने शशिना महीपतेर्जन्म महौजसः स्यात् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, सिंहराशिमें और मकरराशिमें मंगल, कुम्भ राशिमें शनैश्चर, मीनराशिमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य बडा तेजवाला राजा होता है ॥ ९ ॥

राजयोग:

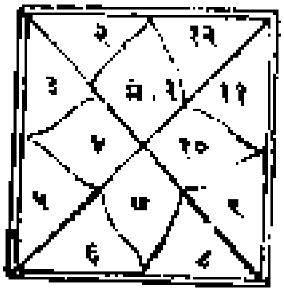

राजयोग:

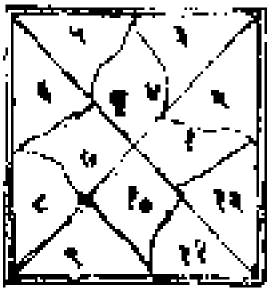

महीसुते मेषगते तनुस्थे बृहस्पतौ वा तनुगे स्वतुंगे । योगद्वयेऽस्मिन्नृपती भवेतां जितारिपक्षौ नृपनीतिदक्षौ ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत मंगल लग्नमें बैठा हो (एको योगः) अथवा कर्कराशिगत बृहस्पति लग्नमें बैठा हो इन दोनों योगोंमें उत्पन्न मनुष्य शत्रुओंके जीतनेवाले नीतिशास्त्रमें राजा होते हैं ॥ १० ॥

राजयोग:

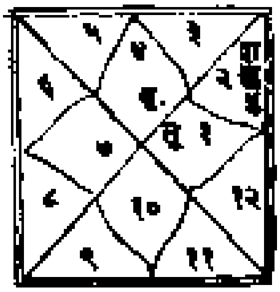

वाचस्पतिः स्वोच्चगते विलग्ने मेषे दिनेशः शनिशुक्रसौम्याः । लाभालयस्थाः किल भूमिपालं तं भूतलस्याभरणं गृणंति ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति उच्चका होकर लग्नमें बैठा हो, मेषराशिमें सूर्य और शनैश्चर शुक्र बुध ग्यारहवें बैठे हों, वह मनुष्य निश्चय करके धरतीका आभूषणरूपी राजा होता है ॥ ११ ॥

राजयोगः ।

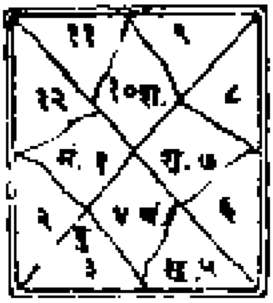

मन्दो यदा नक्रविलग्नवर्ती मृगेन्द्रयुग्माजतुलाकुलीराः । स्वस्वामियुक्तं जनयंति नाथं पाथोनिधिप्रांतमहीतलस्य ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर मकरराशिगत लग्नमें बैठा हो और सिंहराशिगत सूर्य, मिथुनमें बुधमेषमें मंगल, तुलाराशिमें शुक्र, कर्कराशिमें चन्द्रमा बैठा हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य समुद्रपर्य्यन्त धरतीका स्वामी (राजा) होता है । यह योग किसी किसी देशमें कभी होता है ॥ १२ ॥

राजयोगः ।

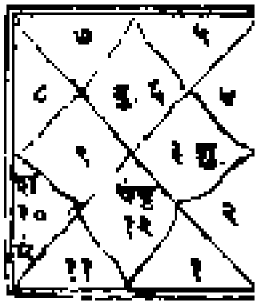

द्वन्द्वे दैत्यगुरौ निशाकरसुते मूर्तौ च तुंगस्थिते वक्रे नक्रशनैश्चरे च शफरे चंद्रामरेज्यौ स्थितौ । योगोऽयं प्रभवेत्प्रसूतिसमये यस्यावनीशो महान्वैरिव्रातमहोद्धतेभदलने पञ्चाननः केवलम् ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिमें शुक्र और बुध लग्नमें कन्याराशिका बैठा हो और मकरराशिमें मंगल शनैश्चर बैठा हो और मीनराशिगत चन्द्रमा बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य शत्रुओंका नाश करनेवाला बड़ा भारी राजा होता है, जैसे हाथियोंके दलन करनेमें सिंह होता है ॥ १३ ॥

राजयोगः ।

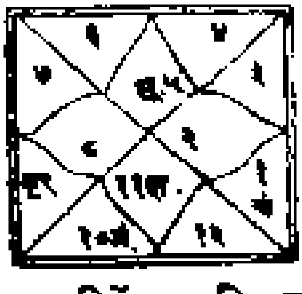

सिंहोदयेऽर्कस्त्वजगो मृगांकः शनैश्चरे कुंभधरे सुरेज्यः । धनुर्धरे चेन्मकरे महीजो राजाधिराजो मनुजो भवेत्सः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत लग्नमें सूर्य बैठा हो, मेषराशिमें चन्द्रमा और शनिश्चर कुंभमें बैठा हो, धन राशिमें बृहस्पति, मकरराशिमें मंगल बैठा हो ऐसे योगमें उत्पन्न मनुष्य राजाओंका राजा होता है ॥ १४ ॥

राजयोग।

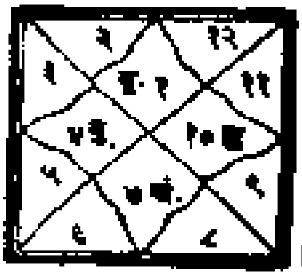

मेषे गतो मूर्तिगतः प्रसूतौ बृहस्पतिश्चास्तगतः कलावान्। रसातले व्योमगते सितश्चेन्महीपतिर्गीतदिगंतकीर्तिः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत बृहस्पति बैठा हो, सातवें चन्द्रमा बैठा हो और चतुर्थ वा दशम भावमें शुक्र बैठा हो ऐसे योगमें उत्पन्न राजाकी कीर्ति दिगंतव्यापिनी होती है अर्थात् बड़ा प्रतापी राजा होता है ॥ १५ ॥

राजयोगः

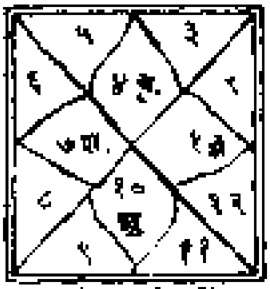

गुरुः कुलीरोपगतः प्रसूतौ स्मराम्बुखस्था भृगुमन्दभौमाः। तद्यानकाले जलधेर्जलानि भेरीनिनादोच्छलनं प्रयाति ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति कर्कराशिगत लग्नमें बैठा हो और सातवें शुक्र और चतुर्थ शनैश्चर दशम मंगल बैठा हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाकी यात्राके समयमें समुद्रका जल नगाडेके शब्दसे उछलता है ॥ १६ ॥

प्रसूतिकाले स्फुरदंशुजालः षड्वर्गशुद्धोऽदितिभे स्वभे वा।
तुंगे त्रिकोणे स नभश्चरेन्द्रो नरं प्रकुर्य्यात्खलु सार्वभौमम् १७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा षड्वर्गमें शुद्ध होकर पुनर्वसु नक्षत्रका कर्कराशिका बैठा हो अथवा उच्चराशिगत हो वह मनुष्य निश्चय कर समुद्र पर्यंत धरणीका स्वामी होता है ॥ १७ ॥

षड्वर्गशुद्धौ खचरद्वयं चेद्यथोक्तरीत्या जनने नृपस्य।
तस्याधिपत्यं खलु किंनरेषु द्वीपांतरे चात्र न किं धरायाम् १८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें षड्वर्गमें शुद्ध दो ग्रह पूर्वोक्त रीतिसे समान बैठे हों उस राजाका आधिपत्य किन्नरोंके बिंषे और द्वीपांतरोंमें और पृथ्वीपर होता है ॥ १८ ॥

तुंगत्रिकोणाद्यधिकारहीनैः षड्वर्गशुद्धैस्त्रिभिरेव मंत्री।
राजा चतुर्भिः खलु सार्वभौमः पंचादिभिर्वाक्पतिनैककेन १९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीन ग्रह उच्च और मूल त्रिकोणके अधिकारसे हीन होकर षड्वर्गमें शुद्ध बैठे हों वह मनुष्य राजाका वजीर होता है और पूर्वोक्त रीतिके समान चार ग्रह बैठे हों वह मनुष्य राजा होता है और पांच वा छः ग्रह षड्वर्गमें शुद्ध बैठे हों वह मनुष्य सार्वभौम राजा होता है और बृहस्पति अकेला ही षड्वर्गमें शुद्ध बैठा हो तो वह राजा होता है ॥ १९ ॥

राजयोगः

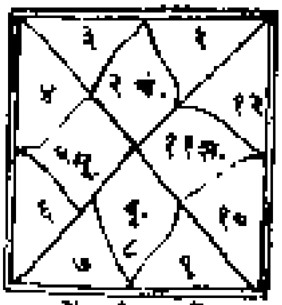

वृषे शशी लग्नगतोऽम्बुसप्तखस्था रवीज्यार्कसुता भवंति। तदंडयात्रासु रजोऽन्धकाराद्दिनेऽपि रात्रिः कुरुते प्रवेशम् ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमा लग्नमें बैठा हो और चौथे भावमें सूर्य और सप्तम बृहस्पति और दशममें शनैश्चर बैठा हो उस राजाकी चढ़ी मात्र यात्रासे फौजके चलनेके कारण धरती रजसे अंधकार हो जाता है अर्थात् दिनमें रात्रिका वेश मालूम पड़ता है ॥ २० ॥

राजयोगः।

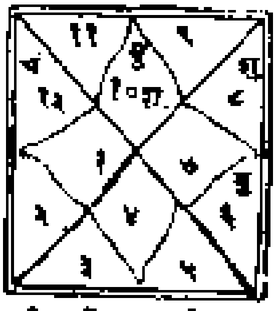

गुर्विंदुसौम्यास्फुजितश्च यस्य मूर्तित्रिधर्मायगता भवंति। मृगेऽर्कसूनुस्तनुगोऽत्रनूनमेकातपत्रां स भुनक्ति धात्रीम् ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति और चन्द्रमा, बुध, शुक्र, लग्न तृतीय नवम एकादशमें बैठे हों और मकरराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो वह मनुष्य धरती पर एकछत्रधारी होकर पृथिवीका भोग करता है ॥ २१ ॥

राजयोगः।

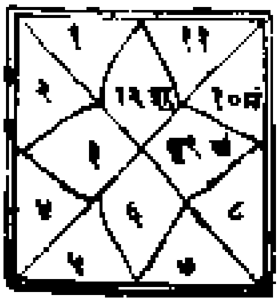

तुंगस्थितौ शुक्रबुधौ विलग्ने नक्रे च वक्रो धनुषीज्यचंद्रौ। प्रसूतिकाले किल तौ भवेतामाखण्डलौ भूमितलेऽपि संस्थौ ॥ २२ ॥

राजयोगः।

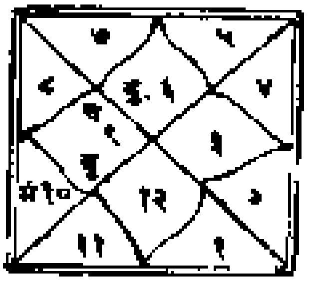

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र या बुध उच्चराशिगत लग्नमें बैठा हो मकरमें मङ्गल, धनराशिमें बृहस्पति, चंद्रमा जिस राजाके जन्मकालमें ऐसा योग हो वह राजा इंद्रके समान धरतीके ऊपर होता है, अथवा समग्र धरतीका स्वामी होता है ॥ २२ ॥

राजयोगः।

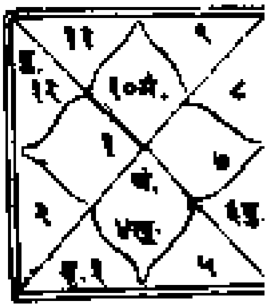

कर्केऽर्कचंद्रौ सुरराजमन्त्री शत्रुस्थितश्चापि बुधः स्वतुंगे। कश्चिद्बली लग्नगतः स राजा राजाधिराजाभिधयास्तमेव ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य, चंद्रमा बैठे हो और बृहस्पति छठे और बुध अपनी उच्चराशिगत हो और कोई ग्रह लग्नमें बली होकर बैठा हो वह मनुष्य राजाधिराज राजाकरके प्रसिद्ध होता है ॥ २३ ॥

राजयोगः।

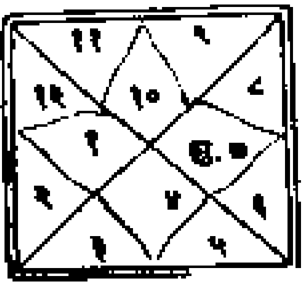

गुरुर्निजोच्चेयदि केन्द्रशाली राज्यालये दानवराजपूज्यः। प्रसूतिकाले किल तस्य मुद्रा चतुःसमुद्रावधि गामिनी स्यात् ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति उच्चका होकर केन्द्रमें बैठा हो, दशमभावमें शुक्र बैठा हो ऐसा योग होनेसे उस राजाका रुपया और मोहर चारों समुद्रतक चलता है ॥ २४ ॥

राजयोगः।

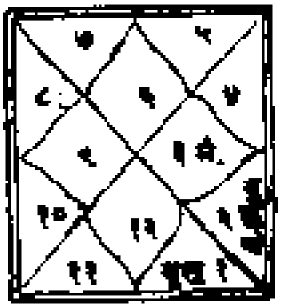

देवाचार्यदिनेश्वरौ क्रियगतौ मेषूरणे क्षोणिजः पुण्ये भार्गवसौम्यशीतकिरणा यस्य प्रसूतौ स्थिताः। नूनं दिग्विजयप्रयाणसमये सैन्यैरिला व्याकुला चिंताम्रुद्वहतीति का गतिरहो सर्वसहायाः स्थितेः ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति और सूर्य मेषराशिगत लग्नमें बैठे हों और दशमभावमें मङ्गल बैठा हो और नवम स्थानमें शुक्र, बुध, चंद्रमा, बैठे हों जिसके जन्मकालमें ऐसा योग हो उस राजाकी दिग्विजय-यात्राके समय फौजकरके धरती व्याकुल हो जाती है और सम्पूर्ण मनुष्य चिंताको करके कहते हैं कि अब क्या गति होनेवाली है ? ॥ २५ ॥

नीचारातिलवोज्झिता बलयुताः संत्यक्तवैराः परं
स्फारस्फीतिधरा भवंति खचराःसंस्थो वृषे भार्गवः।
भ्रातृणां यदि मंडले समुदितो जीवो भवेत्संभवे
देवैस्तुल्यपराक्रमः स च नृपः कोपप्रसूत्याहितः॥ २६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नीच और शत्रु नवांशसे रहित वैसे हीन प्रकाशवान् कांतिको धारण करनेवाले ग्रह हों और शुक्र वृष राशिमें बैठा हो, भ्रातृमंडलमें उदयको प्राप्त बृहस्पति बैठा हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ राजा देवताओंके समान बलवान् क्रोधसे रहित होता है॥ २६॥

राजयोगः।

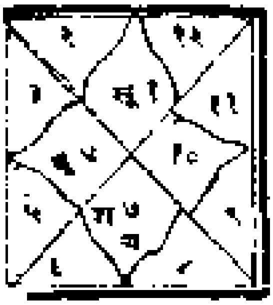

मेषोदयेऽर्कश्च गुरुःकुलीरे तुलाधरे मंदविधू भवेताम्। भवेन्नृपालोऽमलकीर्तिशाली भूपालमालापरिपालिताज्ञः॥ २७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत सूर्य लग्नमें बैठा हो और बृहस्पति कर्कराशिगत हो और तुलाराशिमें शनैश्चर चन्द्रमा बैठा हो ऐसे योगमें उत्पन्न राजा निर्मल यशवाला हो जिसकी आज्ञाको राजालोग पालन करते हैं॥ २७॥

राजयोगः।

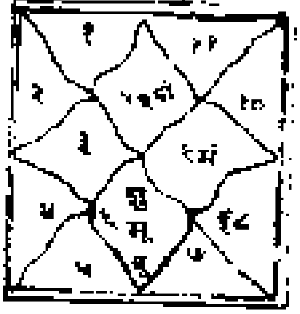

मीने निशाकरः पूर्णः सर्वग्रह निरीक्षिते। सार्वभौमं नरं कुर्य्यादिन्द्रतुल्यपराक्रमम्॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमा पूर्ण हो उसको सम्पूर्ण ग्रह देखते हों ऐसे योगसे उत्पन्न राजा चक्रवर्ती इंद्रके तुल्य बलवान् होता है॥ २८॥

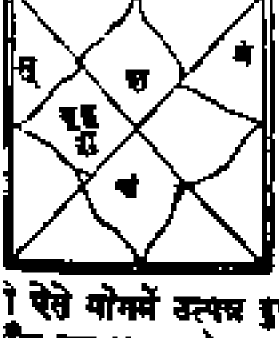

धने दिनेशाद्भृगुजीवसौम्या नास्तं गता नो रिपुदृष्टियुक्ताः। स्यात्सङ्कटं तत्कटकं रिपूणां यशःपटो दिग्वसनाय नूनम्॥ २९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्यसे दूसरे शुक्र बृहस्पति बुध बैठे हों न तो अस्तके हों और न शत्रु कोई देखता हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाके शत्रुओंकी फौज सामनेसे भाग जाती है और उन शत्रुओंके यशरूपी वस्त्रोंको नंगे कर देता है॥ २९॥

राजयोगः ।

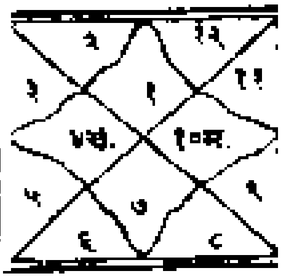

सत्त्वोपेतः शुभजननपः पूर्णचन्द्रं प्रपश्ये
द्यस्योत्पत्तौ भवतिनृपतिर्निर्जिताराति पक्षः
यात्राकाले गजहयरथात्यंतभूर्यस्वनानां ब्रह्माडं
नोऽखिलमपि भवेत्पूरणार्थं समर्थम् ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नका स्वामी बलवान् हो उसको पू चन्द्रमा देखता हो ऐसे योगमें पैदा हुए राजा शत्रुओंको जीतनेवाले होते हैं, उ राजाओंकी यात्राके समय हाथी, घोडे रथोंके अत्यन्त शब्दों करके सम्पूर्ण ब्रह्मां पूरित हो जाता है ॥ ३० ॥

राजयोगः ।

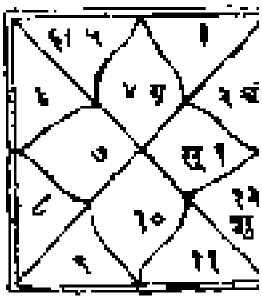

स्वोच्चेषु वाचस्पतिसूर्यशुक्राः शनीक्षितः शी-
तरुचिर्निजोच्चे । प्रयाणकाले रजसो वितानं
रुणद्धि सूर्याश्वविलोचनानि ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति सूर्य शुक्र अपने उच्चमें बैठे हों और चन्द्रमा भी उच्च राशिगत शनैश्चर करके दृष्ट हो ऐसे योगमें पैदा हुए राजाकी यात्राकालमें धरतीकी रजका सामियाना छापा जाता है और सूर्यके अश्वोंके नेत्रोंको वह रज बंद क देती है ॥ ३१ ॥

राजयोगः

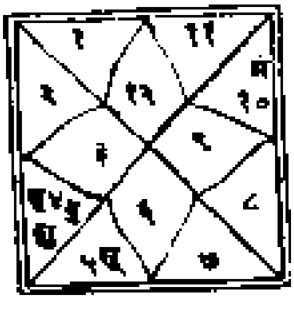

नास्तं याताः सुतगृहगताः सौम्यशुक्राम
ज्या नक्रो वक्रो रविरहितगो धर्मगो यस्य
मन्दः । यात्राकाले किल कमलिनीपुष्पसं
कोचकर्ता श्रीसूर्योऽपि प्रचलितदलोद्भूत
लीकृतास्तः ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें बुध, शुक्र, बृहस्पति बैठे हों पर अस्तंगत न हों और सूर्यसे रहित मकरराशिमें मंगल बैठा हो और नवमभा में शनैश्चर हो ऐसे योगमें पैदा हुए राजाकी यात्राके समयमें कमलिनी सं संकोच करती है अर्थात् बन्द हो जाती है और श्रीसूर्यनारायण भी उस राजा फौजके चलनेसे धरतीकी रज करके अस्त हो जाते हैं ॥ ३२ ॥

राजयोगः ।

कन्यालग्नगते बुधे च विबुधामात्ये च जाया-
स्थिते भौमार्कौ सहजेऽर्कजोऽरिभवनेऽम्बुस्थे
भृगोर्नन्दने । योगेऽस्मिन्मनुजस्य यस्य जननं
तच्छासनं सर्वदा राजानः प्रवहन्त्यलं सुवि-
मलां मालां वै मौलिस्थले ॥ ३३ ॥

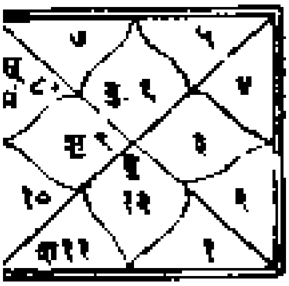

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत लग्नमें बुध बैठा हो और बृहस्पति सातवें बैठा हो और मंगल सूर्य सातवें बैठे हो और शनैश्चर छठे और चतुर्थ शुक्र बैठे हों ऐसे योगसे जिस मनुष्यका जन्म हो उस राजाके शासनमें हमेशा सब राजालोग मस्तक नवाते हैं ॥ ३३ ॥

राजयोगः

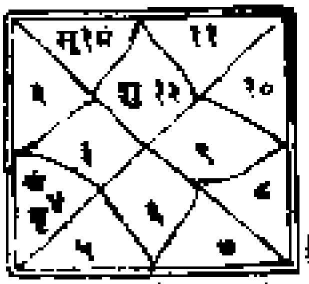

मीनोदये दानवराजपूज्यश्चंद्रामरेज्यौ भवतः कुलीरे । मेषेऽर्कभौमौ नृपतिः किल स्यादा खण्डलेनापि तुलां प्रयाति ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत लग्नमें शुक्र बैठा हो, और चंद्रमा, बृहस्पति कर्कमें बैठे हों, मेषराशिमें सूर्य, मंगल बैठे हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ राजा इन्द्रके समान होता है ॥ ३४ ॥

इति निगदितयोगैर्नीचवंशोद्भवोऽपि
भवति हि पतिरुर्व्याः किं पुना राजसूनुः ।
नरपतिकुलजातो वक्ष्यमाणैश्च योगै-
र्भवति नृपतिरेवं तत्समोऽन्यस्य सूनुः ॥ ३५ ॥

यह योग मैंने कहे हैं, इन योगोंमें नीच वंशमें पैदा हुआ भी मनुष्य धरतीका स्वामी होता है तो राजाके पुत्र क्यों नहीं राजा होंगे—अर्थात् जरूर ही राजाधिराज होंगे, अब जो आगे राजयोग कहेंगे उन योगोंमें उत्पन्न हुआ राजाका ही पुत्र राजा होता है और अन्यवंशमें पैदा हुए राजा नहीं होंगे ॥ ३५ ॥

---

१ छत्रे चामरः ।

राजयोग:

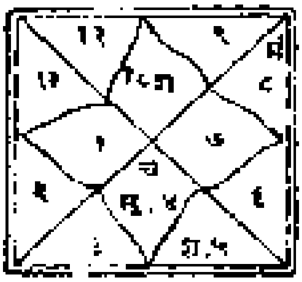

छायासुतो नक्रविलग्नवर्ती चास्ते प्रसूतं यदि पुष्पवन्तौ । लाभे कुजो वै भृगुजोऽष्टमस्थः स्यान्नृपतिर्भूपकुलप्रसूतः ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर मकरराशिके लग्नमें बैठा हो और सातवें सूर्य, चन्द्रमा बैठे हों, ग्यारहवें मंगल, अष्टम शुक्र बैठा हो ऐसे योगमें राजवंशमें उत्पन्न हुए मनुष्य राजा होते हैं ॥ ३६ ॥

सुरासुरेज्यौ भवतश्चतुर्थेऽत्यर्थं समर्थः पृथिवीपतिः स्यात् । कर्कस्थितो देवगुरुः सचन्द्रः काश्मीरदेशाधिपतिं करोति ॥ ३७

राजयोग: राजयोग:

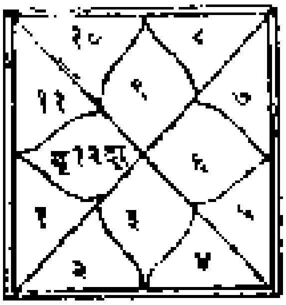

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति, शुक्र चौथे बैठे हों ऐसे योगमें उत्पन्न नर अत्यन्त बलवान राजा होता है (एको योगः) और जिसके कर्कराशिगत चन्द्र बृहस्पति केन्द्रमें बैठे हों वह मनुष्य काश्मीर देशका राजा होता है ॥ ३७ ॥

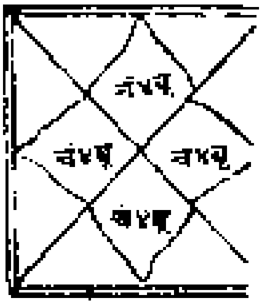

राजयोग: राजयोग:

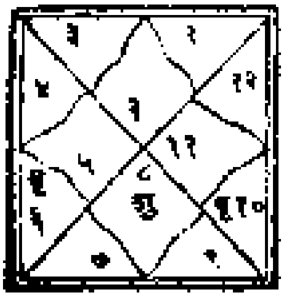

सुरासुरेज्यस्थितदृष्टिरिन्दुः स्वोच्चे स्थितो भूमिपतिं करोति । विलोकयन्तः परिपूर्णचन्द्रं शुक्रज्ञजीवा जनयन्ति भूपम् ॥ ३८ ॥

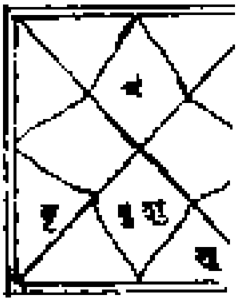

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चन्द्रमाको बृहस्पति और शुक्र देखें वह मनुष्य राजा होता है और जो परिपूर्ण चन्द्रमाको शुक्र, बुध, बृहस्पति देखते हों तो वह राजकुलमें उत्पन्न पुरुष राजा होता है ॥ ३८ ॥

पश्येन्मृगांकात्मजमिन्द्रमन्त्री विचित्रसम्पन्नृपतिं करोति । क्रूरोऽपि खेटो यदि पंचमांशे प्रसूतिकाले कुरुते नृपालम् ॥ ३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधको बृहस्पति देखता हो तो वह राजकुलोत्पन्न राजा विविध संपत्तियुक्त होता है और जिसका एक भी ग्रह पंचमनवांशमें बैठा हो तो भी वह मनुष्य राजा होता है ॥ ३९ ॥

नक्षत्रनाथोऽप्यधिमित्रभागे शुक्रेण दृष्टो नृपतिं करोति ।
स्वांशाधिमित्रांशगतोऽथवा स्याज्जीवेन दृष्टः कुरुते नृपालम् ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा अपने अधिमित्रके द्वादशभावमें बैठा हो और शुक्र देखता हो तो वह राजा होता है और जो चन्द्रमा अपने नवांश अथवा अधिमित्रके नवांशमें बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो भी राजा होता है ॥ ४० ॥

दिनाधिनाथोऽप्यधिमित्रभावे चंद्रेण सम्यक्सुविलोकितो वा ।
स्यात्तस्कराणां निचये नृपालः सच्छीलशाली सुतरामुदारः ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य अपने अधिमित्रके भावमें बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य चोरोंके समूहमें श्रेष्ठ शीलवान्, नितांत उदार राजा होता है ॥ ४१ ॥

राजयोगः १

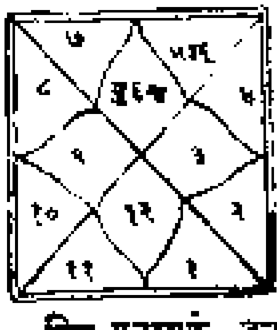

स्वोच्चस्थितः सोमसुतः ससोमः कुर्यान्नरं मगधदेशराजम् । कलाधिशाली बलवान्कलावान्करोति भूपं शुभधामसंस्थम् ॥ ४२ ॥

राजयोगः २

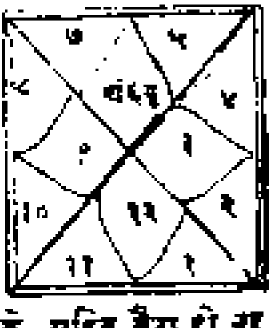

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध कन्याराशिमें चंद्रमा करके सहित बैठा हो वह मनुष्य मगधदेशका राजा होता है (एको योगः) और वही चंद्रमा कलाओं करके पूर्ण बलवान् हो तो वह मनुष्य उत्तमस्थानका राजा होता है ॥ ४२ ॥

जन्मेश्वरो जन्मविलग्नपो वा केंद्रे बली नीचकुलेऽपि भूपम् ।
कुर्यादुदारं सुतरां पवित्रं किमत्र चित्रं क्षितिपालपुत्रम् ॥ ४३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मराशि और जन्मलग्नका स्वामी केंद्रमें बलवान् होकर बैठा हो तो वह मनुष्य नीचकुलमें पैदा हुआ भी उदार, नितान्त पवित्र राजा होता है राजपुत्रके राजा होनेमें क्या आश्चर्य है ॥ ४३ ॥

राजयोगः।

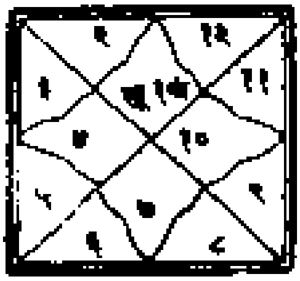

मेषे दिनेशः शशिना समेतो यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यात्। कर्णाटकद्राविडकेरलान्ध्रदेशाधिपानामनुकूलवर्ती ॥ ४४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत सूर्य चन्द्रमा करके सहित हो तो वह राजा होता है। कर्णाटक, द्राविड केरल, आंध्र इन देशोंका स्वामी अथवा इनके राजाओंका आज्ञाकारी होता है ॥४४॥

राजयोगः

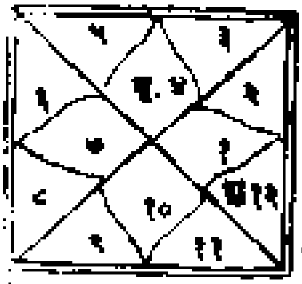

स्वतुङ्गगेहोपगतौ सितेज्यौ केन्द्रत्रिकोणेषु गतौ भवेताम्। प्रसूतिकाले कुरुतो नृपालं नृपालजातं सचिवेन्द्रमान्यम् ॥ ४५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अपने उच्चराशिमें केंद्र वा त्रिकोणमें शुक्र बृहस्पति बैठा हो तो वह मनुष्य राजकुलमें पैदा हुआ राजा होता है और अन्यके कुलमें उत्पन्न मंत्री होता है ॥ ४५ ॥

राजयोगः

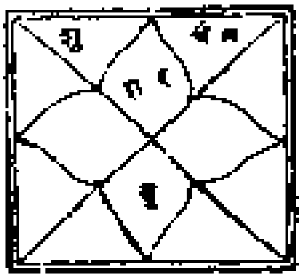

प्रसूतिकाले मदने धने च व्यये विलग्ने यदि सन्ति खेटाः। ते छत्रयोगं जनयन्ति तस्य प्राक्पुण्यपाकाभ्युदयो हि यस्य ॥ ४६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तम, द्वितीय, बारहें और लग्नमें संपूर्ण ग्रह बैठे हों तो छत्र नाम योग होता है, इसमें उत्पन्न राजा हो, जिसके पूर्वजन्मके पुण्योंका उदय हो वह इस योगमें पैदा होता है ॥ ४६ ॥

राजयोगः

राजयोगः

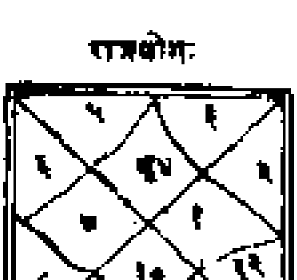

पापो विलग्ने यदि यस्य सूतौ दृष्टो भवेन्निशिसपिण्डजेन। कर्के गुरुर्ब्राह्मणदेवभक्तः प्रासादवापीकूपकरः स्यात् ॥ ४७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह लग्नमें बैठा हो और बृहस्पति करके दृष्ट हो तो वह राजा होता है और जिसके कर्कराशिगत बृहस्पति लग्नमें बैठा हो वह मनुष्य मकान, बावड़ी और नगरका करनेवाला होता है ॥ ४७ ॥

राजयोगः ।

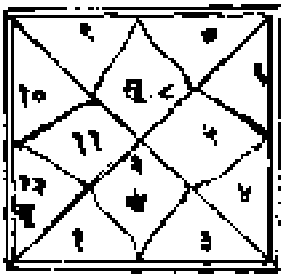

एकोऽपि शस्तः शुभदं स्वतुंगे केन्द्रे पतङ्गो बलवान्प्रदृष्टः । सुतस्थितेनामरपूजितेन चेन्मानवो मानवनायकः स्यात् ॥ ४८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक भी शुभग्रह केन्द्रमे उच्चका होकर बैठा हो और बलवान् सूर्य करके दृष्ट हो और पंचमभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्योंका नायक होता है ॥ ४८ ॥

मृगराशिं परित्यज्य स्थितो लग्ने बृहस्पतिः ।
करोति पृथिवीनाथं मत्तेभपरिवारितम् ॥ ४९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिको छोड़कर बृहस्पति लग्नमें बैठा हो तो वह राजा मतवाले हाथियोंसहित होता है ॥ ४९ ॥

राजयोगः ।

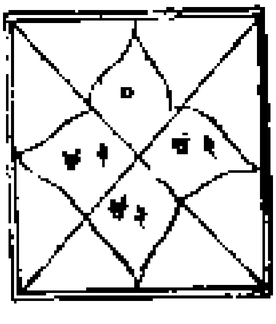

कलाकलापाधिकृताधिशाली चन्द्रो भवेज्जन्मनि केन्द्रवर्ती । विहाय लग्नं कुरुते नृपालं लीलाविलासाकुलितारिवृन्दम् ॥ ५० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिपूर्ण चंद्रमा लग्नको छोड़कर केन्द्रमें उच्चका बैठा हो वह राजा लीला विलासादिसहित शत्रुओंको नाश करनेवाला होता है ॥ ५० ॥

राजयोगः ।

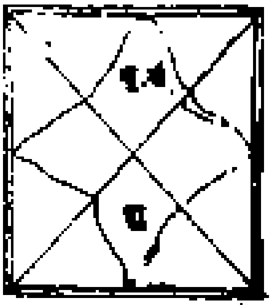

केन्द्रगः सुरगुरुः सशशाङ्को यस्य जन्मनि च भार्गवदृष्टः । भूपतिर्भवति सोऽतुलकीर्तिर्नीचगो न यदि कश्चिदिह स्यात् ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमासहित बृहस्पति केन्द्रमें बैठा हो और शुक्रकरके दृष्ट हो वह मनुष्य बड़ा यशस्वी राजा होता है, जो कोई ग्रह नीचमें न बैठा हो ॥ ५१ ॥

राजयोगः ।

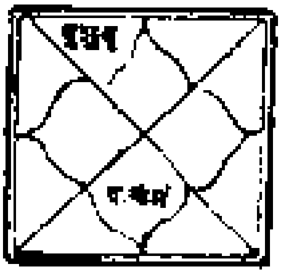

धनस्थिताः सौम्यसितामरेज्या मंदारचन्द्रा यदि सप्तमस्थाः । यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्याद्रातिदंतिव्रतिसिंह एव ॥ ५२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें बुध, शुक्र, बृहस्पति बैठे हों और शनैश्चर, चन्द्रमा, मंगल सातवें बैठे हों वह राजा होता है, जैसे हाथियोंको सिंह नाश करता है वैसे शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

कुम्भाष्टमांशे शशिनि त्रिकोणे मेषेऽद्रिभागे धरणीसुतो वा ।
द्वंद्वैकविंशांशगतेऽथवाज्ञे यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यात्॥५३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिके अष्टमनवांशमें चन्द्रमा त्रिकोणमें बैठा हो और मेषके सातवें भागमें मंगल बैठा हो और मिथुनराशिके इक्कीसवें त्रिंशांशमें बुध बैठा हो, जिसके जन्मकालमें यह योग हो वह राजा होता है ॥ ५३ ॥

कुम्भस्य चेत्पंचदशे विभागे कर्के दशांशोपगतो विधुश्चेत् ।
तृतीयभागे धनुषीड्यः सिंहे शशांकेऽप्यथवापि भूपः ॥५४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिके पंद्रहवें भागमें और कर्कराशिके दशम भागमें चन्द्रमा बैठा हो और धनके तृतीय भागमें बृहस्पति बैठा हो और सिंहके तृतीयभागमें चंद्रमा हो तो वह राजा होता है ॥ ५४ ॥

पुष्येऽश्विभे वाप्यथ कृत्तिकासु वर्गोत्तमे पूर्णतनुः कलावान् ।
करोति जातं खलु सार्वभौमं त्रिपुष्करोत्पन्ननरोऽपि भूपः ॥५५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पुष्य नक्षत्र अथवा अश्विनी वा कृत्तिकामें वर्गोत्तम पूर्ण चन्द्रमा बैठा हो इस योगमें उत्पन्न हुआ समग्र धरतीका राजा होता है और त्रिपुष्कर योगमें उत्पन्न मनुष्य भी राजा होता है ॥ ५५ ॥

तिथिश्च भद्रा विषमांघ्रिभे चेद्वारे गुरुक्ष्मातनयार्कजानाम् ।
त्रिपुष्करो योग इति प्रदिष्टो वृद्धौ च हानौ त्रिगुणाति कर्ता॥५६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भद्रा तिथि और नक्षत्रका प्रथम वा तृतीय चरण हो और बृहस्पति, मंगल, शनैश्चर वार हों तो त्रिपुष्करयोग होता है, जो वृद्धिमें और नाशमें त्रिगुण फल करता है, इस योगमें उत्पन्न मनुष्य राजा होता है ॥ ५६ ॥

मैत्रे च वासेऽप्यथवास्मतुंगं वर्गोत्तमे भूमिसुतः करोति ।
महीपतिं पार्थिववंशजातं चान्यं प्रधानं धनिनं समृद्धम् ॥५७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अनुराधा, अश्विनी नक्षत्रमें अथवा अपनी उच्च राशि मकरमें अथवा वर्गोत्तम नवांशमें मङ्गल बैठा हो ऐसे योगमें उत्पन्न राजाके वंशमें पैदा हुआ राजा होता है. अन्य वंशमें उत्पन्न धनवान् समृद्धिसहित राजाका वजीर होता है ॥ ५७ ॥

चेद्भार्गवो जन्मनि यस्य धर्मे मेषूरणे पूर्णतनुः शशाङ्कः ।
अन्ये ग्रहा लाभगता भवेयुः पृथ्वीपतिः पार्थिववंशजातः ॥५८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र नवम बैठा हो और पूर्ण चंद्रमा दशम बैठे और बाकीके ग्रह ग्यारहें बैठे हों तो राजाके वंशमें उत्पन्न मनुष्य राजा होता है ॥ ५८ ॥

राजयोगः । राजयोगः ।

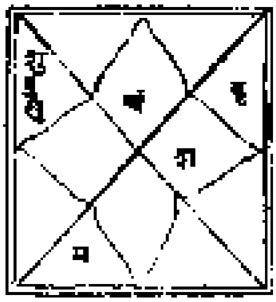

उपचयभवनस्थाः सर्वखेटाः शशांकाद्रविगुरुशशिनश्चेद्भूमिसूनोर्भवन्ति । त्रितनयनवमस्थाः कुर्वते ते नरेन्द्रं गजतुरगरथानां सम्पदा राजमान्यम् ॥ ५९ ॥

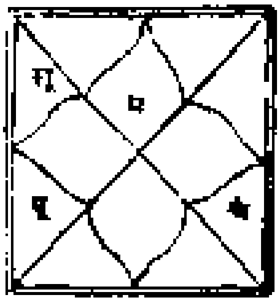

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमासे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहें सब ग्रह बैठे हों (एको योगः) अथवा मंगलसे तीसरे, पांचवें, नवम, सूर्य, बृहस्पति, चंद्रमा बैठे हों तो वह मनुष्य हाथी, घोड़े और रथ तथा और भी अनेक संपदासहित राजमान्य होता है ॥ ५९ ॥

राजयोगः ।

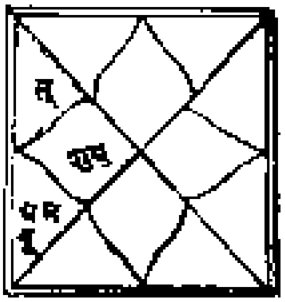

सुखे सितज्ञौ सहजेऽम्बुजेशास्तिष्ठन्ति खेटाः सुतधाम्नि चान्ये । निजारिराशौ नहि कश्चिदत्र धात्रीपतिश्चैकछत्रातपत्रः ॥ ६० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें शुक्र, बुध बैठे हों और तीसरे सूर्य, बाकीके ग्रह पंचममें बैठे हों अपने शत्रुकी राशिमें कोई न हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न मनुष्य धरतीका एक छत्रधारी राजा होता है ॥ ६० ॥

सिंहे कमलिनीभर्ता कुलीरस्थो निशाकरः ।
द्वयो द्वावपि जीवेन पार्थिवं कुरुतः सदा ॥ ६१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें सूर्य बैठा हो और कर्कराशिमें चंद्रमा बैठा हो और बृहस्पति करके दोनों दृष्ट हों तो वह मनुष्य राजा होता है ॥ ६१ ॥

राजयोगः ।

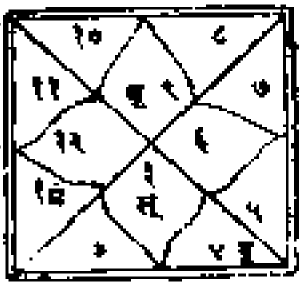

बुधः कर्कटमारूढो वाक्पतिश्च धनुर्धरे रविभूसुतदृष्टौ तौ पार्थिवं कुरुते सदा ६२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध कर्कराशिमें बैठा हो और बृहस्पति धनराशिमें बैठे और दोनों सूर्य, मङ्गल करके दृष्ट हों तो वह राजा होता है ॥ ६२ ॥

राजयोगः ।

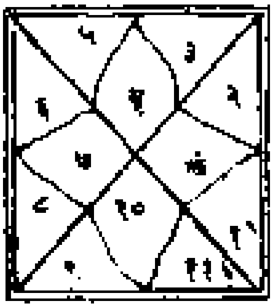

शफरीयुगले चन्द्रः कर्कटे च बृहस्पतिः । शुक्रः कुंभे भवेद्राजा गजवाजिसमृद्धिभाक् ६३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीन वा मेषराशिगत चंद्रमा बैठा हो और कर्कराशिमें बृहस्पति हो और शुक्र कुंभराशिमें बैठा हो तो वह राजा हाथी घोड़ों सहित समृद्धिका भोगी होता है ॥ ६३ ॥

राजयोगः ।

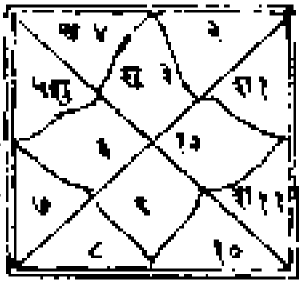

सितदृष्टः शनिः कुम्भे पद्मिनीनायकोदये । चंद्रे जलचरे राशौ यदि राजा तदा भवेत् ६४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र करके दृष्ट शनैश्चर कुंभराशिमें बैठा हो और सूर्य लग्नमें बैठा हो और चंद्रमा कर्कराशिमें बैठा हो तो वह मनुष्य राजा होता है ॥ ६४ ॥

राजयोगः ।

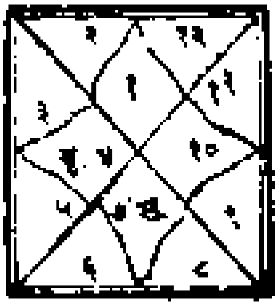

चेत्खेचरो नीचगृहं प्रयातस्तदीश्वरश्चापि तदुच्चनाथः । केन्द्रस्थितौ तौ भवतः प्रसूतौ प्रकीर्तितौ भूपतिसम्भवाय ॥६५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जो केंद्रवर्ती ग्रह नीच बैठा हो उस राशिका स्वामी जो ग्रह है उसके उच्चराशिका स्वामी केन्द्रमें बैठा हो तो राजाके कुलमें उत्पन्न मनुष्य राजा ॥ ६५ ॥

कृत्तिका रेवती स्वाती पुष्यस्थायी भृगोः सुतः।
करोति भूभुजां नाथमश्विन्यामपि संस्थितः॥ ६६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कृत्तिका, रेवती, स्वाती और पुष्य इन नक्षत्रोंमें शुक्र बैठा हो तो वह मनुष्य राजा होता है. अश्विनी नक्षत्रमें शुक्र हो तो भी पूर्वोक्त फल जानना चाहिये॥ ६६॥

अथ राज्यप्राप्तिकालमाह।

राज्योपलब्धिर्दशमस्थितस्य विलग्नगस्याप्यथवा दशायाम्।
तयोरलाभे बलशालिनो वा सद्राजयोगो यदि जन्मकाले॥६७॥

अब राज्यप्राप्तिके कालको कहते हैं. राज्यका जो ग्रह दशममें बैठा हो वह करके राज्यका लाभ कहना अथवा लग्नमें जो ग्रह बैठा हो उसकी दशामें राज्यका लाभ कहना चाहिये। इन दोनों भावोंमें जब कोई ग्रह नहीं बैठा हो तब सब ग्रहोंमें जो अधिक बलवान् हो उस ग्रहकी दशामें श्रेष्ठ राजयोग कहना चाहिये॥ ६७॥

इति राजयोगाध्यायः।

अथ राजयोगसंगतिसामुद्रिकाध्यायः।

प्रसूतिकाले प्रबला यदि स्युर्नृपालयोगाः पुरुषस्य यस्य।
सद्राजचिह्नानि पदे तदीये भवंति वा पाणितलेऽमलानि॥१॥
अनामिकामूलगता प्रशस्ता सा कीर्तिता पुण्यविधानरेखा।
मध्याङ्गुलेर्या मणिबंधजाता राज्याप्तये सा च किलोर्ध्वरेखा॥२॥
विराजमानं यवलाञ्छनं चेदङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य।
भवेद्यशस्वी निजवंशभूषा भूषाविशेषैः सहितो विनीतः॥ ३॥
चेद्वारणो वातपवारणो वा वैसारिणः पुष्करिणी सृणिर्वा।
वीणा च पादौ चरणे नराणां स्युर्नराणामधिपा वरेण्याः॥४॥

अब राजयोगोंके प्रसंगसे सामुद्रिकाध्याय कहते हैं-जिस मनुष्यके जन्मकालमें बलवान् राजयोग हो उसके हाथ और पैरोंमें निर्मल राजचिह्न होते हैं ॥ ॥ १ ॥ अनामिका अंगुलीकी जडसे चली जो रेखा उसको पुण्यविधान रेखा कहते हैं और मध्यम अंगुलीसे चलकर हाथके मणिबन्धतक प्राप्त हुई जो रेखा उसको ऊर्ध्व रेखा कहते हैं, वह राज्यको प्राप्ति कराती है ॥ २ ॥ जिसके अंगूठेके बीचमें यवका चिह्न मौजूद हो वह मनुष्य यशस्वी, अपने वंशका भूषण, बहुत आभूषणों सहित और नम्रतायुक्त होता है ॥ ३ ॥ और जिसके हाथकी हथेलीमें और पैरोंमें हाथीके सदृश वा छत्रके तुल्य मछलीके समान वा तलैयाके तुल्य या अंकुशके समान वा वीणाके समान रेखा हो वह मनुष्य राजा होता है ॥ ४ ॥

आदर्शमालाकरवालशैलहलाश्च तत्पाणितले मिलंति ।
स्यान्मांडलीकोऽवनिपालको वा कुले नृपालःकुलतारतम्यात् ५
नेयस्य पाणौ चरणे च चक्रे धनुर्ध्वजाब्जध्यजनासनानि ।
रथाश्वदोलाकमलाविलासास्तस्यालये स्युर्गजवाजिशालाः ६॥
स्तंभस्तु कुंभस्तु तरुस्तुरंगो गदा मृदंगोऽपिकरप्रदेशे ।
दण्डोऽथवाखंडितराज्यलक्ष्म्या स्यान्मण्डितःपण्डितशौण्डकोवा
सुवृत्तमौलिस्तु विशालभालश्चाकर्णनीलोत्पलपत्रनेत्रः ।
आजानुबाहुं पुरुषं नमाहुर्भूमण्डलाखण्डलमार्यवर्याः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके हाथ और पैरोंमें शीशेकी तरह, माला और कमण्डलुके तरह, पर्वत और हलके सदृश रेखाका आकार हो वह मनुष्य एकदेशका राजा अथवा बड़ा राजा अपने कुलके समान होता है ॥ ५ ॥ और जिसके हाथ पैरोंमें चक्र, धनुष, ध्वजा, कमल, पंखा और आसनके समान रेखा हो उसके घरपर रथ, घोड़े, पालकी, लक्ष्मीका विलास, हाथी घोड़ोंकी शाला होती है ॥ ६ ॥ और जिसके हाथ पैरोंमें थमलेके समान वृक्ष, घोडा, गदा, मृदंग, दण्डके समान रेखा हो वह मनुष्य अखण्डित राज्यलक्ष्मीको प्राप्त, पंडितोंका शिरोमणि होता है ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यका शिर गोल, चौडा माथा और कानोंके पासतक चौडे कमलसे नेत्र कमलके तुल्य, पींडियोंतक बाहें हों वह पुरुष पृथिवीमण्डलपर इन्द्रके समान राजा होता है ॥ ८ ॥

नरस्य नासा सरला च यस्य वक्षस्थलं चापि शिलातलाभम् ।
नाभिर्गभीरातिमृदू भवेतामारक्तवर्णौ चरणौ स भूपः ॥ ९ ॥

करतले यदि यस्य तिलो भवेदविरलः किल तस्य धनागमः ।
पदतले च तिलेन समन्विते नृपतिवाहनचिह्नसमन्वितः ॥ १० ॥
प्रसन्नमूर्तिः समुदारचेता वंशाभिमानः शुभवाग्विलासः ।
अनीतिभीरुर्गुरुसाधुनम्रः साम्राज्यलक्ष्मीं लभते मनुष्यः ॥ ११ ॥
एतत्फलं राजकुलोद्भवानां स्यान्मानवानां मुनयो वदन्ति ।
प्रकल्पयेदन्यकुलोद्भवानां नूनं तदूनं स्वकुलानुमानात् ॥ १२ ॥
चिह्नानि यानि प्रतिपादितानि व्यक्तानि सम्पूर्णफलप्रदानि ।
वामे तरंगे च करे नराणां धान्यानि वामे खलु कामिनीनाम् ॥ १३ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
संगतिसामुद्रिकाध्यायः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यकी नाक सीधी और ऊंची शिलाके समान और नाभि गहरी और लाल वर्णके पैर हों वह राजा होता है ॥ ९ ॥ जिस मनुष्यके हाथकी हथेलीमें तिलका चिह्न हो उसको बहुत धन प्राप्त होता है । जिसके पैरोंके तलुवेमें तिलका चिह्न हो और वाहन-चिह्न हो वह राजा होता है ॥ १० ॥ जो मनुष्य प्रसन्नमूर्ति और उदारचित्तवाला हो और श्रेष्ठ वंशमें पैदा हो, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, अन्यायसे डरनेवाला, गुरु और साधुओंसे नम्र हो वह राजा होता है ॥ ११ ॥ और राजवंशके विना अन्य कुलमें पैदा हो तो वह अपने वंशके समान राजलक्ष्मीको प्राप्त करता है ॥ १२ ॥ जो जो चिह्न कहे हैं वे चिह्न प्रकट दीख पड़ते हों तो पूर्ण फल देते हैं, पुरुषोंके दाहिने हाथ, पैर और स्त्रियोंके बांये हाथ पैरमें पूर्वोक्त चिह्न श्रेष्ठ फल देते हैं ॥ १३ ॥

इति श्रीबांसबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रराज-
ज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां
राजयोगसंगतिसामुद्रिकाध्यायः ॥ ५ ॥

अथ राजभङ्गयोगाध्यायप्रारम्भः।

राजभङ्गयोगः

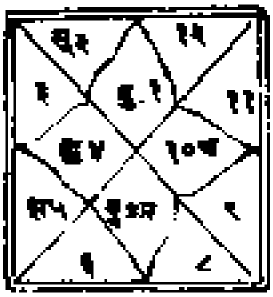

शत्रुक्षेत्रगतैः सर्वैर्गोः समयुतैरपि। राजयोगा [illegible] गैर्गृहैः ॥ १ ॥

राजभङ्गयोगः

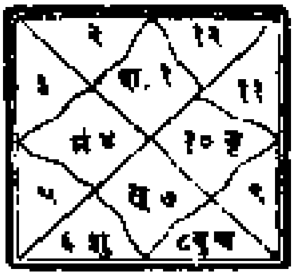

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शत्रुकी राशिमें सब ग्रह बैठे हों और चाहे नवांशमें वर्गोत्तम हो तो राजयोग नष्ट होते हैं (एको योगः) अथवा बहुत ग्रह नीचराशिमें बैठे हों तो भी राजयोग नष्ट हो जाते हैं ॥ १ ॥

राजभङ्गयोगः

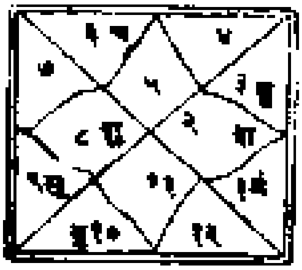

चन्द्रं वा यदि वा लग्नं ग्रहो नैकोऽपि वीक्षते।
तथापि राजयोगानां भंगमाह पराशरः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमाको वा लग्नको कोई एक भी ग्रह नहीं देखता हो तो सब राजयोग नष्ट हो जाते हैं, यह पराशर कहते हैं ॥ २ ॥

राजभङ्गयोगः

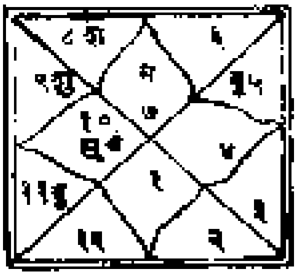

स्वांशे रवौ शीतकरे विनष्टे दृष्टे च पापैः शुभदृष्टिहीने। कृत्वापि राज्यं च्यवते मनुष्यः पश्चात्सुदुःखं लभते हताशः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य अपने नवांशमें बैठा हो और क्षीण चन्द्रमाको पापग्रह देखते हों और शुभ ग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य पहिले राज्य करे पीछेसे दुःखको प्राप्त आशाहीन हो जाता है ॥ २ ॥

उल्काव्यतीपातदिने तथैव नैर्घातिके केतुसमुद्भवे वा।
चेद्राजयोगेऽपि च यस्य सूतिर्नरो दरिद्रोऽतितरां भवेत्सः ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उल्कापात हो अथवा मधीतपातयोग हो, अथवा धरती कम्पायमान हो या फट जावे या जन्मके समयमें केतु तारेका उदय हो तो वह समग्र राजयोगोंमें पैदा हुआ मनुष्य दरिद्री होता है ॥ ४ ॥

राजयोगः ।

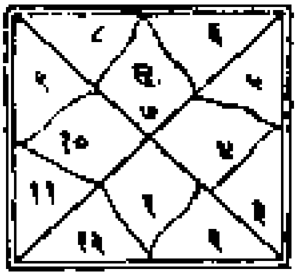

तुलायां नलिनीनाथः परमं नीचमाश्रितः ।
निर्दिष्टराजयोगानां हननोऽथ भवेद्ध्रुवम्५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत सूर्य परम नीच राशिमें बैठा हो तो पहिले कहे हुए सब राजयोग नष्ट हो जाते हैं ॥ ५

राजभंगयोगः ।

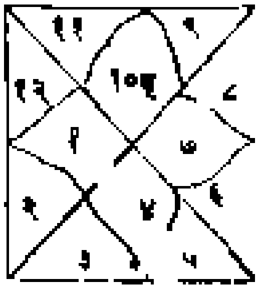

मृगलग्ने सुराचार्यः परमं नीचमाश्रितः ।
राजयोगोद्भवस्यापि कुरुतेऽतिदरिद्रताम्॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरलग्नमें बृहस्पति परम नीचराशिगत बैठा हो तो राजयोगोंमें पैदा हुआ मनुष्य अत्यन्त दरिद्री होता है ॥ ६ ॥

राजभंगयोगः । राजभंगयोगः ।

वाचस्पतावस्तगते ग्रहे-
न्द्रास्त्रयोऽपि नीचेषु घटो-
विलग्ने । एकोऽपि नीचे-
दशमेऽपि पापा भूपाल-
योगा विलयं प्रयाति ॥७॥

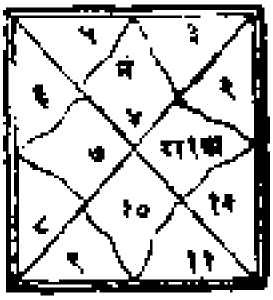

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति अस्तका हो और तीन ग्रह नीच राशिमें बैठे हों और जन्मलग्न कुम्भ हो तो सम्पूर्ण राजयोग नष्ट हो जाते हैं (एको योगः) अथवा एक भी ग्रह लग्नमें नीचराशिका बैठा हो और दशममें पापग्रह बैठे हों तो उस मनुष्यका राजयोग नष्ट हो जाता है ॥ ७ ॥

राजभंगयोगः

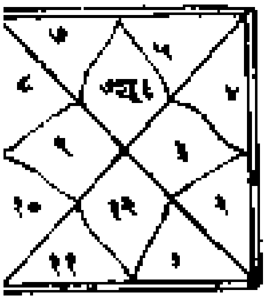

प्रसूतौ दानवामात्यः परमं नीचमाश्रितः ।
करोति पतनं नूनं मानवानां महापदात् ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र परम नीचराशिगत बैठा हो तो वह मनुष्य राजयोगसे नष्ट होता है ॥ ८ ॥

राजभंगयोगः

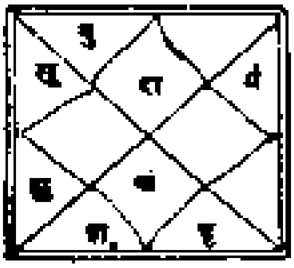

यदि तनुभवनस्थो राहुरिंदुप्रदृष्टः सहजरिपुभवस्था भानुमंदावनेयाः । शुभविरहितकेन्द्रैरस्तगैर्वापि सौम्यैर्भवति नृपतियोगो व्यर्थ एवेति चित्यम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहु लग्नवर्ती बैठा हो और चंद्रमा देखता हो और तीसरे, छठे, ग्यारहें, सूर्य, शनैश्चर, मंगल बैठे हों और शुभग्रह केंद्रसे बाहिर हों वा शुभग्रह सप्तममें बैठे हों तो उस मनुष्यके राजयोग खाली जाते हैं ॥ ९ ॥

राजयोगः

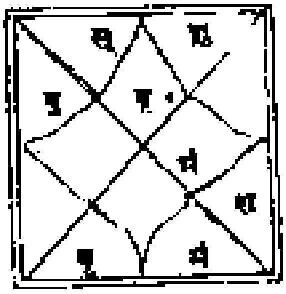

केन्द्रेषु शून्येषु शुभैर्नभोगैरस्तं गतैर्नीचगृहस्थितैर्वा । चतुर्भिरेवाप्यरिमंदिरस्थैर्नृपालयोगाः प्रलयं प्रयांति ॥१०॥

राजयोगः ।

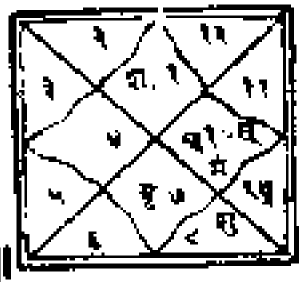

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चारों केन्द्रोंमें कोई शुभग्रह नहीं बैठा हो (एको योगः) । अथवा केन्द्रोंमें जो ग्रह बैठे हों वे अस्तंगत हों (द्वितीयो योगः) । अथवा नीच राशिगत हो (तृतीयो योगः) वा चारों केन्द्रोंमें शत्रुराशिगत ग्रह बैठे हों तो राजयोग नष्ट हो जाता है ॥ १० ॥

सर्वेऽपि पापा यदि कण्टकेषु नीचारिगा नो शुभदृष्टियुक्ताः।
नीचारिरिःफेषु च सौम्यसंज्ञा राज्ञां हि योगो विलयं प्रयाति॥११॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे
राजभंगयोगाध्यायः॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सम्पूर्ण पापग्रह जो केन्द्र १।४।७।१० में बैठे हों और नीचराशि वा शत्रुक्षेत्री हों, किसी शुभग्रह करके दृष्ट न हों अथवा नीच शत्रुराशिगत बारहें बैठे हों तो राजयोग नाशको प्राप्त होता है॥११॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुरराजज्योतिषिक-पंडितश्याम-लालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां राजभंगयोगाध्यायः॥६॥

अथ पञ्चमहापुरुषाध्यायप्रारम्भः।

ये महापुरुषसंज्ञका नृपाः पंच पूर्वमुनिभिः प्रकीर्तिताः।
वच्मि तान्सुसरलान्महोक्तिभी राजयोगविधिदर्शनेच्छया॥१॥
स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वावनिसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः॥२॥

अब पंच महापुरुष योगाध्याय कहते हैं- जो महापुरुषसंज्ञक राजा पांच पहिले मुनीश्वरोंने वर्णन किये हैं उन पांच महापुरुषोंको राजयोगविधि दर्शनकी इच्छासे सरल बड़ी उक्ति करके कहता हूं॥१॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें अपने घरमें अपने उच्चमें भौमादि पांच ग्रह बैठे हों तो क्रम करके मंगलसे रुचक, बुधसे भद्र, बृहस्पतिसे हंस, शुक्रसे मालव्य और शनैश्चर करके शशकनाम योग होते हैं॥२॥

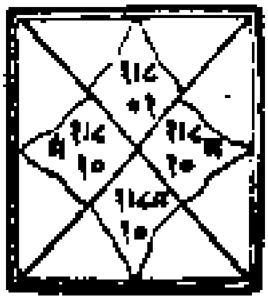
रुचकयोगः ४

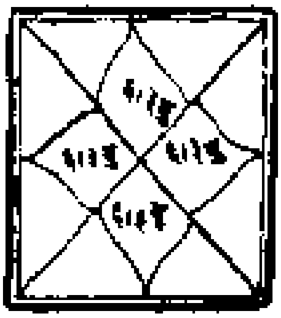
भद्रयोगः ५

हंसयोगः ६

मालवयोगः

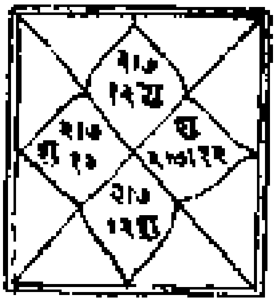

अथ रुचकयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्वच्छकान्तिर्बहुरु-
धिरबलः साहसाप्तप्रसिद्धि-
श्चारुभ्रूनीलकेशः समकर-
चरणो मंत्रविच्चारुकीर्तिः ।

रुचकयोगः

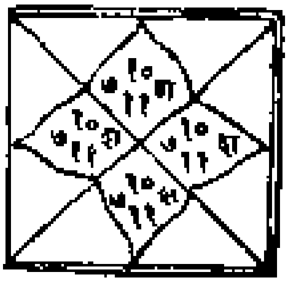

रक्तश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः क्रूरो भक्तः सुराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजंघः ॥३॥ खट्वांगपाशवृषकार्मुकचक्रवीणावज्रांकहस्तचरणः सरलांगुलः स्यात् । मंत्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥४॥ सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिजीवितोऽसौ । शस्त्राग्निचिह्नो रुचकाभिधाने देवालये सन्निधनं प्रयाति ॥५॥

अब रुचकयोगजनित राजाके लक्षण कहते हैं—बड़ी उमरवाला, निर्मलकान्तिवाला, बहुत रुधिरके बलवाला, साहसकरके कार्यकी सिद्धिको प्राप्त, सुन्दर भौंहवाला, नील वर्णके बालोंवाला, हाथ पैर समान, मंत्रका जाननेवाला, सुन्दर यशवाला, लाली लिये श्यामवर्णवाला, अत्यन्त शूरवीर, शत्रुओंके बलका नाश करनेवाला, शंखके समान कंठवाला, बड़ा पराक्रमी, क्रूरस्वभाव, देवताओंका भक्त, ब्राह्मण और गुरुओंसे नम्र, दुर्बल जानु, ऊरु और जांघोंवाला होता है ॥ ३ ॥ खट्वांग और फांसी और बैल और धनुष, चक्र, वीणा और वज्र इन चिह्नों करके अंकित हाथ पैर जिसके, सीधी अंगुलियोंवाला, मंत्रोंके अभिचारमें कुशल, तुलाके मान करके एक हजार पल तोल जिसके देहका भार होता है, लम्बा मुख होता है ॥ ४ ॥ सह्य और विन्ध्याचल और उज्जयिनीका राजा होता है और पचहत्तर वर्षकी आयु पाता है और शस्त्र तथा अग्नि चिह्न करके सहित देवताके स्थानमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ भद्रयोगफलम् ।

शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षःस्थलो
लम्बापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः ।
कामीकोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगण्डस्थलः
प्राज्ञः पंकजगर्भपाणिचरणः सत्त्वाऽधिको योगवित् ॥ ६॥

शङ्खासिकुञ्जरगदाकुसुमेषुकेतुचक्राब्जलांगलविचिह्नितपाणिपादः।
यात्रागजेंद्रमदवारिकृतार्द्रभूमिः सत्कुंकुमप्रतिमगंधतनुः सुघोषः ॥७॥
सद्रूपगोऽतिमतिमान्खलु शास्त्रवेत्ता
मानोपभोगसहितोऽतिनिगूढगुह्यः।
सत्कुक्षिधर्मनिरतो सुललाटपट्टो
धीरो भवेदसितकुंचितकेशपाशः ॥ ८ ॥
स्वतंत्रः सर्वकार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमी।
भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमार्थिजनैः परैः ॥ ९ ॥
भारं तुलायां तु भवेत्सुरत्ने श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः।
भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम् ॥ १० ॥

अब भद्रसंज्ञक राजाके सुलक्षण कहते हैं– सिंहके समान हाथीकीसी चाल चलनेवाला, मोटी जांघोंवाला, पुष्ट छातीवाला, लम्बी पुष्ट बांहोंवाला और भुजाओंके प्रमाण ऊँचा, कामी और कोमल महीन रोमोंके समूहसे ढका हुआ गंडस्थल जिसका, चतुर, कमलपत्रके समान हाथ और पैरोंवाला, अधिक बलवान्, योगशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ६ ॥ शंख और तलवार और हाथी, गदा, कमलपुष्प और बाण, पताका और चक्र, चंद्रमा, हल इत्यादि चिह्नोंसे अंकित हाथ पैर जिसके और उस राजाकी यात्राके समय हाथियोंके मदके जलसे धरती गीली होती है और केसरके समान सुगंधित देहवाला, श्रेष्ठ आवाजवाला होता है ॥ ७ ॥ श्रेष्ठ रूपवाला, बुद्धिमान्, निश्चयकरके शास्त्रका जाननेवाला, मान और भोगों सहित, छिपा हुआ गुह्यस्थल जिसका, श्रेष्ठ कुक्षिवाला, धर्ममें तत्पर, श्रेष्ठ माथेवाला, धैर्यवान्, काले बालोंवाला होता है ॥ ८ ॥ और भद्रराजा सब कामोंमें स्वतंत्र, अपने मित्रोंपर दया करनेवाला और उस राजाके वैभवको नित्य ही अतिथिलोग भोगते हैं ॥ ९ ॥ और भद्रनाम राजाकी देहका भार तुलामान १००० पल होता है और वह राजा कान्यकुब्ज देशका स्वामी, पुत्र और स्त्रीके सौख्यसहित अस्सी वर्षकी आयु पाता है ॥ १० ॥

अथ हंसमहापुरुषलक्षणम्।

रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसः प्रसन्नेंद्रियो
गौरः पीनकपोलरक्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मलः।

[illegible]ङ्कुशमत्स्यदामयुगलैः ....

पद्मस्यावकरस्थले मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ॥ ११ ॥

जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम्।
उच्चोऽङ्गुलैर्वै षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्षण्णवतिः समानाम् ॥१२॥

बाह्लीकदेशांतरशूरसेनगांधर्वगंगायमुनांतरालान्।
भुक्त्वा वनांते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः पुराणैः ॥१३॥

अथ हंसनामक राजाके लक्षण कहते हैं–हंसनामक राजाका लाल मुख, ऊँची नाक, सुन्दर पैर, प्रसन्न इंद्रियोंवाला, गोरे और पुष्ट गालोंवाला, लाल अंगुलियोंवाला हंसके समान शब्दवाला, कफप्रकृतिवाला और शंख, कमल, अंकुश, मछली और खट्वांग, माला, कुंभ इन चिन्हों करके अंकित हाथ पैर जिसके, शहदके समान आभावाले नेत्र, गोल शिरवाला होता है ॥ ११ ॥ और जलकी जगहमें प्रीति करनेवाला, अत्यन्त कामी, स्त्रियोंसे तृप्तिको प्राप्त नहीं और छियासी अंगुल ऊँचा शरीर और छयानवे वर्षकी आयु पाता है ॥ १२ ॥ और हंसराजा बाह्लीक, शूरसेन देश, गांधार देश, गंगायमुनाके बीचकी भूमिका राजा होता है और वनके बीचमें मृत्युको प्राप्त होता है ऐसा पहिले मुनीश्वरोंने कहा है ॥ १३ ॥

अथ मालव्यनृपतिलक्षणमाह–

अस्थूलोष्ठोऽथ विषमवपुर्नैव रिक्तांगसंधि-
मध्ये क्षामः शशधररुचिर्हस्तिनासः सुगंडः।
सद्दीप्ताक्षिः समशितरदो जानुदेशाप्तपाणि-
र्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥१४॥

वक्त्रं त्रयोदशमितांगुलमस्य दीर्घं तिर्यग्दशांगुलमितं श्रवणांतरालम्।
मालव्यसंज्ञनृपतिः स भुनक्ति नूनं लाटांश्च मालवकसिंधुसुपारियात्रान् ॥

अथ मालव्यनृपतिके लक्षण कहते हैं मालव्यनामकराजा पतले होठोंवाला, कमती बढती देहवाला नहीं, जिसके अंगकी संधि खाली नहीं, कमर जिसकी पतली, चंद्रमाके समान स्वरूपवाला लंबी नाक, सुन्दर कपोलोंवाला होता है और मालव्यराज बराबर सफेद दांतोंवाला, आजानुबाहु, बडे नेत्र, सत्तर ७० वर्षकी आयुतक राज्य भोगता है ॥ १४ ॥ तेरह अंगुल मुख जिसका लम्बा, दस अंगुल चौडा, मालव्यनाम राजा लाटदेश, मालवदेस, सिन्धुदेस, पारियात्रक देशोंके राज्यको भोगता है ॥ १५ ॥

लघुद्विजास्यो द्रुतगः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः।
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः॥१६॥
नानासेनानिचयनिरतो दन्तुरश्चापि किंचि-
द्धातोर्वादे भवति कुशलश्चंचलः कोलनेत्रः।
स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजंघो
मध्ये क्षामः सुललितमती रंध्रवेदी परेषाम्॥१७॥
पर्यंकशंखशरशास्त्रमृदंगमाला-
वीणोपमा खलु करे चरणे च रेखाः।
वर्षाणि सप्तनिमितानि करोति राज्यं
सम्यक्शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः॥१८॥
केन्द्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुयुता भवंति।
कुर्वंति नोर्वीपतिमात्मपाके यच्छंति ते केवलसत्फलानि॥१९॥

इति श्री टी० दुण्ढिराजवि० जात० पञ्चमहापुरुषलक्षणाध्यायः॥७॥

अब शशकनाम नृपतिके लक्षण कहते हैं:—शशकनामक राजा छोटे दांतोंवाला, जल्दी चलनेवाला, क्रोधसहित, शठ, अत्यन्त शूरवीर, वन पर्वतोंमें प्रचार करनेवाला और नदीमें आसक्त, अतिथियोंका प्यारा, बहुत छोटा नहीं व प्रसिद्ध होता है॥१६॥ अनेक फौजोंके दल करके सहित, ऊंचे दांतोंवाला, किंचित् धातुके विवादमें चतुर, बड़ा चञ्चल, सूकरकेसे नेत्रवाला, स्त्रीमें सक्त, पराये धनका हरनेवाला, माताका भक्त, श्रेष्ठ जांघोंवाला, कमरसे दुर्बल, सुन्दरबुद्धि, पराये छिद्र देखनेवाला होता है॥१७॥ शय्या और शंख, बाण, तलवार और मृदंग, माला और वीणाके समान निश्चय कर जिसके हाथ पैरोंमें रेखा होती हैं और शशकनाम राजा मगर ७० वर्षकी उमरतक राज्यभोग करता है यह मुनीश्वरोंने कहा है॥१८॥ और पूर्वोक्त केन्द्र १।४।७।१० में भौमादि पांचों ग्रह उच्चमें बैठे हों और चन्द्रमा वा सूर्यके करके युक्त हों तो पूर्वोक्त राजयोग नहीं करते हैं, केवल श्रेष्ठ फल देते हैं॥१९॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थपंडितज्योतिर्वित्पण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषा-
टीकायां पञ्चमहापुरुषलक्षणवर्णनाध्यायः॥७॥

अथ कारकयोगाध्यायप्रारम्भः ।

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्था नभश्चराः केन्द्रगता मिथः स्युः ।
ते कारकाख्या मुनिभिः प्रणीता विज्ञेय आज्ञाभवने विशेषः ॥ १ ॥

जो ग्रह अपने मूलत्रिकोणी राशिमें अथवा अपनी ही राशिमें या अपने उच्च राशिमें केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में प्राप्त हों तो वे ग्रह आपसमें कारक कहाते हैं परन्तु केन्द्रमें भी दशम स्थान स्थित ग्रह विशेष कारक होते हैं ॥ १ ॥

प्रालेयरश्मिर्यदि मूर्तिवर्ती स्वमंदिरस्थौ यदि तुंगयातः ।
सूर्यार्कजारामरराजपूज्याः परस्परं कारकसंज्ञकाः स्युः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य लग्नमें सिंह वा मेषराशिका बैठा हो तो सूर्य, शनैश्चर, बृहस्पति ये परस्पर कारक संज्ञक होते हैं ॥ २ ॥

शुभग्रहे लग्नगते च खाम्बुस्थितो ग्रहः कारकसंज्ञकः स्यात् ।
तुंगत्रिकोणे स्वगृहांशयातास्तेऽपीडमाने तपने विशेषात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रह लग्नमें बैठे हों अथवा दशम चतुर्थ बैठे हों वे ग्रह कारक होते हैं और उच्च वा मूलत्रिकोणी वा अपनी राशि वा अपने नवांशोंमें बैठे होकर दशममें हों तो विशेष कारक होते हैं ॥ ३ ॥

वेशिस्थितो यस्य शुभो न भोगी लग्नं विलग्नं च लवे स्वकीये ।
केन्द्राणि सर्वाणि शुभान्वितानि तस्यालये श्रीः कुरुते निवासम् ॥ ४ ॥

केन्द्रस्थिता गुरुविलग्नपजन्मनाथा
मध्ये वयस्यतितरां वितरंति भाग्यम् ।
शीर्षोदयाद्युभयभेषु गता भवेयु-
रारंभमध्यमविरामफलप्रदास्ते ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्यसे दूसरे घरमें शुभग्रह बैठे हों और लग्नस्थग्रह अपने नवांशमें हो और चारों केन्द्रोंमें भी शुभग्रह बैठे हों उसके मकानमें लक्ष्मी वास करती है ॥ ४ ॥ जिस मनुष्यके बृहस्पति और लग्नका स्वामी जन्मराशिका स्वामी केन्द्रमें बैठे हों तो उस मनुष्यका भाग्य मध्यमीमें उदय

होता है और शीर्षोदय राशिगत बैठे हों और उभयोदय राशिगत ग्रह हों तो बालकपन, जवानी और बुढापेमें फल देते हैं ॥ ५ ॥

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा मंत्री भवेत्कारकखेचरेंद्रैः ।
राजान्वये यस्य भवेत्प्रसूतिर्भूमीपतित्वं स कथं न याति ॥६॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे कारकयोगाध्यायः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कारकयोग हो और वह नीचवंशमें पैदा हो तो मन्त्री होता है और जो राजाके वंशमें पैदा हो तो वह क्यों नहीं राजा होगा अर्थात् अवश्य राजा होगा ॥ ६ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां कारकयोगवर्णनाध्यायः ॥ ८ ॥

अथ नाभसयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ रज्जु-मुसल-नलयोगानाह-

रज्जुयोगः ।

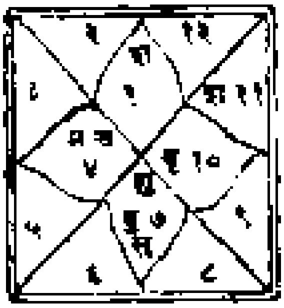

मुसलयोगः ।

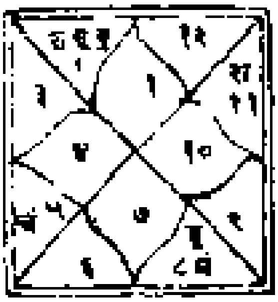

नलयोगः ।

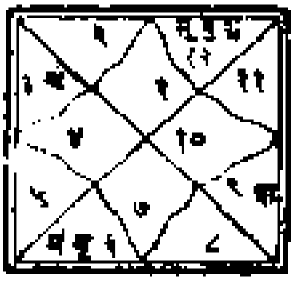

सर्वे चरस्था अपि वा स्थिरस्था द्विदेहसंस्था यदि वा भवंति ।
क्रमेण रज्जुर्मुसलं नलश्च योगत्रयं स्यादिदमाश्रयाख्यम् ॥१॥

अब आश्रयादि तीन योग कहते हैं-जो सब ग्रह चर राशियोंमें बैठे हों तो रज्जुनाम योग होता है और सब ग्रह स्थिरराशियोंमें बैठे हों तो मुसलनाम योग होता है और सब ग्रह द्विस्वभावराशियोंमें बैठे हों तो नलनाम योग होता है, ये आश्रययोग कहे हैं ॥ १ ॥

मालायोगः ।

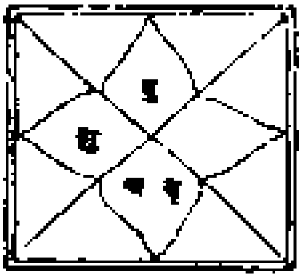

अथ मालाव्यालयोगद्वयम् ।

केंद्रत्रये सौम्यखगैस्तु माला खलग्रहैर्व्यालस-माह्वयः स्यात् । इदं तु योगद्वितयं दलाख्यं पराशरेण प्रतिपादितं हि॥२॥

व्यालयोगः ।

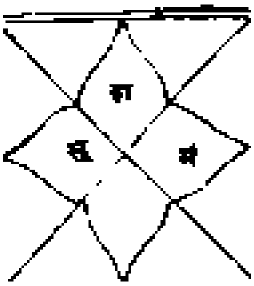

जिस मनुष्यके तीन केन्द्रोंमें सब ग्रह बैठे हों तो मालायोग होता है और तीन केन्द्रोंमें पापग्रह बैठे हों तो व्यालयोग होता है ये दो योग पराशरने दल कहे हैं ॥ २ ॥

मालायोगः ।

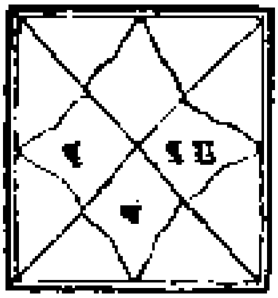

मालायोगः ।

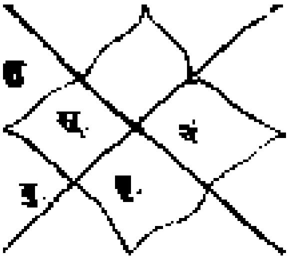

मालायोगः ।

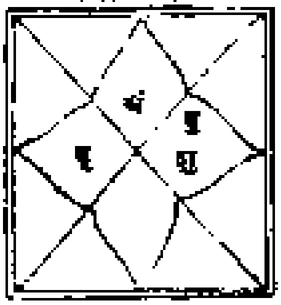

व्यालयोगः

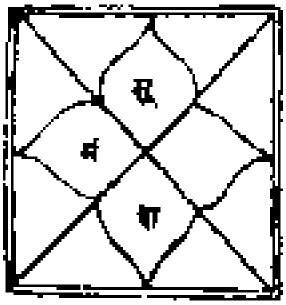

व्यालयोगः

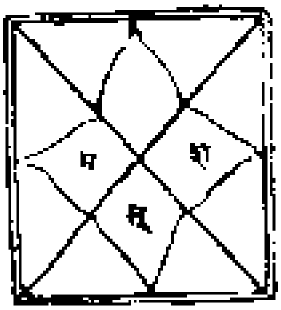

व्यालयोगः

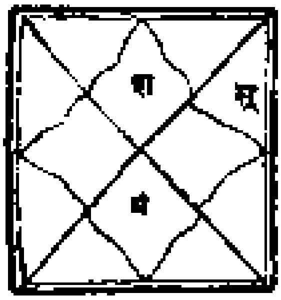

गदायोगः ।

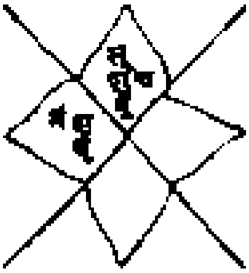

गदाशकटविहंगशृंगाटकयोगानाह—

आसन्नकेंद्रद्वयगैर्गदाख्यो लग्नास्तसंस्थैः शकटः स-मेतैः । खबंधुपातैर्विहगः प्रदिष्टः शृंगाटकं लग्नन-वात्मजस्थैः ॥ ३ ॥

गदायोगः ।

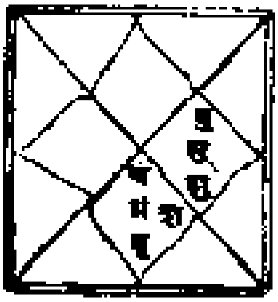

गदायोगः ।

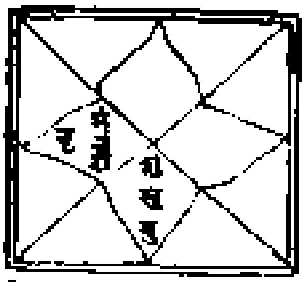

गदायोगः ।

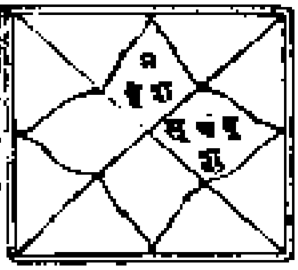

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पास पासके केन्द्रोंमें सब ग्रह बैठे हों तो गदानाम योग होता है, वह गदायोग चार प्रकारका होता है-लग्नचतुर्थमें सब ग्रह हों (एको योगः), चतुर्थ सप्तममें सब ग्रह बैठे हों (द्वितीयो योगः), सप्तम दशममें सब ग्रह बैठे हों (तृतीयो योगः), दशम लग्नमें सब ग्रह बैठे हों तो (चतुर्थो योगः) यह चार तरहका गदायोग कहा है। अब शकटयोग और विहङ्गयोग कहते हैं-जो लग्न सप्तममें सब ग्रह बैठे हों तो शकटयोग होता है और जिसके चतुर्थ दशममें सब ग्रह बैठे हों तो विहङ्गनामयोग होता है। अब शृङ्गाटक योग कहते हैं-जो लग्न पंचम नवममें सब ग्रह पड़ें तो शृंगाटक योग होता है। अब हलयोग कहते हैं-द्वितीय, छठे, दशममें सब ग्रह पड़े हों (द्वितीयो योगः) और तृतीय, सप्तम, एकादशमें सब ग्रह पड़े हो (तृतीयो योगः) और चतुर्थ, अष्टम, बारहें सब ग्रह पड़ें तो। (चतुर्थो योगः) ये चार योग होते हैं॥ ३॥

शकटयोगः ।

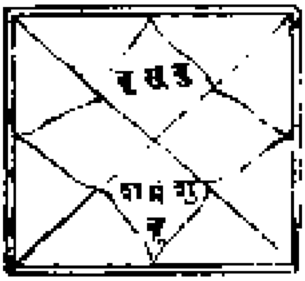

विहङ्गयोगः ।

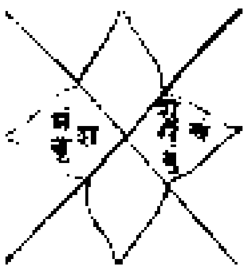

शृङ्गाटकयोगः ।

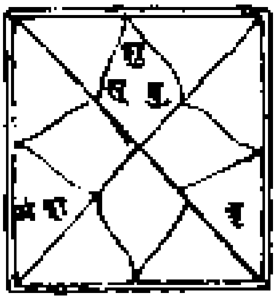

अथ हलनामयोगः ।

धनारिखस्थैस्त्रिमदायगैर्वा चतुर्थरंध्रव्ययसंस्थितैर्वा ।
नभस्तलस्थैर्हलनामयोगः किलोदितोऽयं निखिलागमज्ञैः ॥४॥

हलयोगः ।

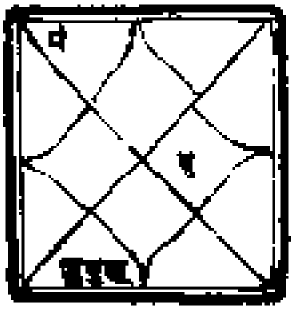

हलयोगः ।

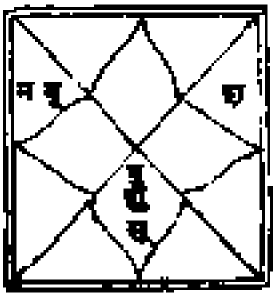

हलयोगः ।

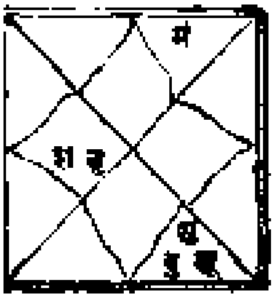

अब हल नाम योग कहते हैं सो तीन प्रकारका है २।६।१० सब ग्रह पड़े (एको योगः), ३।७।११ सब ग्रह पड़ें (द्वितीयो योगः), ४।८।१२ सब ग्रह पड़ें तो (तृतीयो हल नाम योगः), यह योग सम्पूर्ण ज्योतिषवेत्ताओंने कहा है ॥ ४ ॥

अथ वज्रयवकमलयोगानाह–

लग्नास्मरस्थानगतैः शुभाख्यैः पापैश्च मेषूरणबन्धुयातैः।
वज्राभिधस्तैर्विपरीतसंस्थैर्यवश्च मिश्रैः कमलाभिधानः ॥ ५ ॥

अब वज्र, यव, कमल तीन योग कहते हैं–जिस मनुष्यके लग्न सप्तममें शुभग्रह पड़ें और पापग्रह चौथे दशममें पड़े तो वज्र नाम योग होता है और चतुर्थ दशम शुभ ग्रह पड़ें और लग्न सप्तममें पापग्रह पड़ें तो यव योग होता है और चारों केन्द्रोंमें शुभाशुभ दोनों तरहके सब ग्रह पड़ें तो कमल नाम योग होता है। ये योग उस देशमें होते हैं जहांकी पलभा आठसे ज्यादा होगी ॥ ५ ॥

वज्रयोगः।

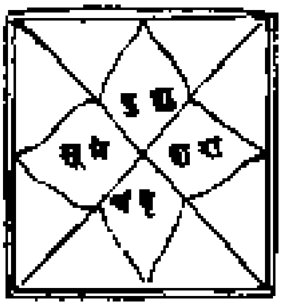

यवयोगः।

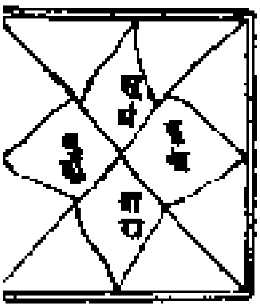

कमलयोगः।

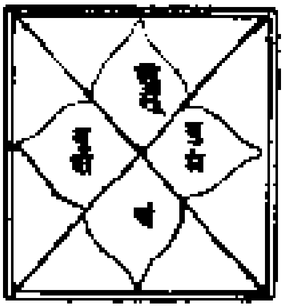

सूर्याच्चतुर्थे कविचन्द्रसूनू कथं भवेतामिति नैव युक्तौ।
यवाख्यवज्रौ त्विदमामनंति तत्रोपपत्तिं परिदर्शयामि ॥ ६ ॥

अब भरतमतीय भी तीनों योग कहते हैं इससे शंका दूर हो जायगी, सूर्यसे चौथे घरमें बुध शुक्र नहीं हो सकते हैं तो यव वज्र योगोंको नहीं मानना चाहिये अतः उन योगोंकी उपपत्ति दिखाता हूं ॥ ६ ॥

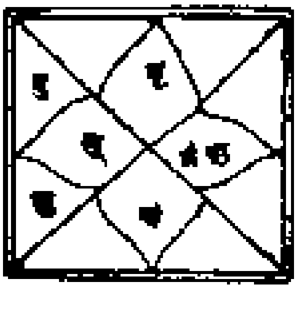

विलग्नपार्श्वद्वयवर्तिनौ चे-ज्ज्ञशुक्रजीवान्यतमौ लग्ने। कुजार्किचंद्राःसज-लस्मरस्था वज्रं विलोमाच्च यवो निरुक्तम् ॥ ७ ॥

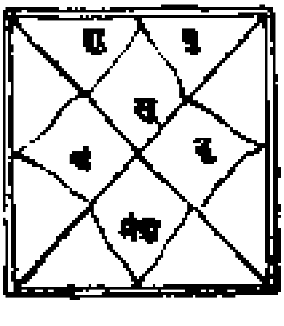

जन्मलग्नसे दूसरे बारहें शुभ शुक्र बैठे हों और बृहस्पति मं. श. चं. ये योग कारक हों तो पूर्वोक्त योग होते हैं, इस प्रकार भारतवर्षमें भी योगोंका होना संभव है सो चक्रमें देखलो ॥ ७ ॥

सर्वैर्नभोगैर्यदि नाभसाख्यो व्यालाख्यमाले त्रिभिरेव खेटैः ।
कथं भवेतामिति चिंतयंति मुनिप्रणीतं कथमन्यथा स्यात् ८॥

सम्पूर्ण ग्रहोंकरके तथा नाभस योग तीन ग्रहोंकरके व्याल और माला योग हों तो क्या सम्पूर्ण नाभस योगमेंसे व्यालमाला योगमें दोष आ जावे, तो क्या मुनियोंका कहा हुआ झूठा हो जायगा ॥ ८ ॥

अथ वापीयोगः ।

वापीयोगः ।

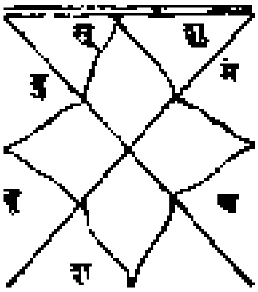

त्यक्त्वा केंद्राणि चेत्खेटाः शेषस्थानेषु संस्थिताः । वापीयोगो भवेदेवं गदितः पूर्वसूरिभिः ॥ ९ ॥

अब वापीयोग कहते हैं:-चारों केंद्रस्थानोंको छोड़ करके ग्रह अन्य स्थानोंमें बैठे हों तो वापीयोग होता है यह पहिलेके आचार्योंने कहा है ॥ ९ ॥

अथ यूपशरशक्तिदंडयोगानाह-

यूपयोगः ।

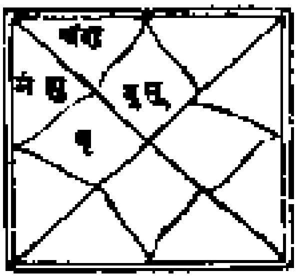

शक्तियोगः ।

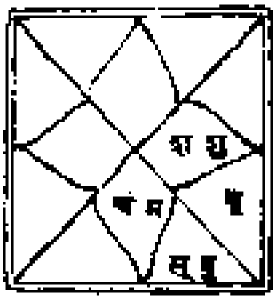

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्ग्रहस्थैर्गगने चरेन्द्रैः । क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दण्डः प्रदिष्टः खलु जातकज्ञैः ॥ १० ॥

शरयोगः ।

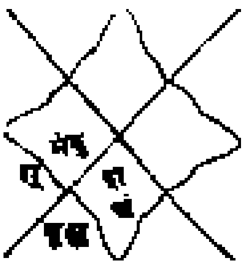

दण्डयोगः ।

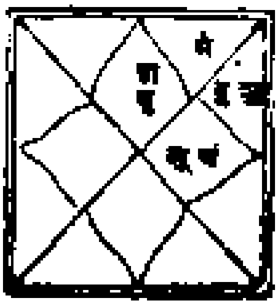

अब यूप, शर, शक्ति, दंड चार योग कहते हैं-लग्नसे चतुर्थभावतक सब ग्रह पड़ें तो यूप नाम योग है और चतुर्थसे सप्तमतक सब ग्रह पड़ें तो शर नाम योग और सप्तमसे दशम तक सब ग्रह

पड़ें तो शक्तियोग और दशमभावसे लग्नपर्यंत सब ग्रह हों तो शक्तियोग होता है यह ज्योतिषी लोगोंने कहा है ॥ १० ॥

अथ नौ-कूट-छत्र-धनुष-अर्द्धचन्द्रयोगानाह–

नौकायोगः

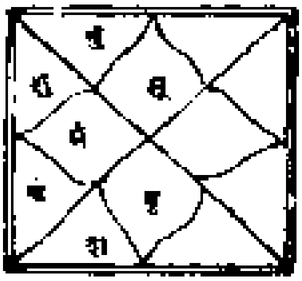

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्यात्सप्तर्क्षगैर्नौरथ कूटसंज्ञः । छत्रं धनुश्चान्यगृहप्रवृत्तैर्नौपूर्वकैर्योग इहार्धचंद्रः ॥ ११ ॥

धनुर्योगः ।

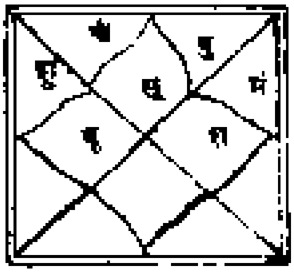

कूटयोगः ।

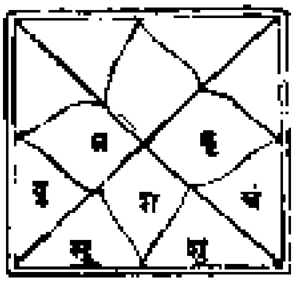

अब नौका, कूट, छत्र, धनुष और अर्धचन्द्र योग कहते हैं–जिसके लग्नसे लेकर सातवें भावतक सब ग्रह पड़ें तो नौका योग होता है और चतुर्थसे लेकर दशम भावतक सब ग्रह पड़ें तो कूटयोग होता है और सप्तमसे लेकर लग्नतक सब ग्रह पड़ें तो छत्रयोग होता है और दशमसे लेकर चतुर्थतक सब ग्रह पड़ें तो धनुषयोग होता है तथा चार केन्द्रोंके अतिरिक्त अन्य सात स्थानोंमें सब ग्रह पड़ें तो अर्धचन्द्र योग होता है ॥ ११ ॥

छत्रयोगः ।

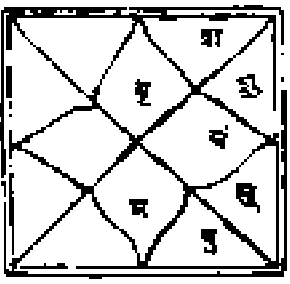

अथ चक्रसमुद्रार्द्धशशियोगानाह–

चक्रयोगः ।

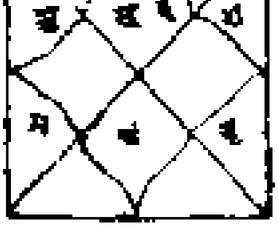

तनोर्धनाच्चैकगृहान्तरेण स्युःस्थानषट्के गगनेचरेन्द्राः । चक्राभिधानाच्च समुद्रनामा योगा इतीहाकृतिजाश्च विंशत् १२

समुद्रयोगः ।

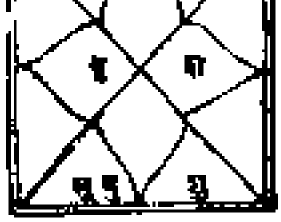

जिसके लग्नसे लेकर एक राशि बीचमें देकर छः राशियोंमें सब ग्रह पड़ें तो चक्रयोग होता है और दूसरे भावसे लेकर एक भाव बीचमें छोड़कर सब ग्रह पड़ें तो समुद्रयोग होता है ॥ १२ ॥

अर्द्धचन्द्रयोगः

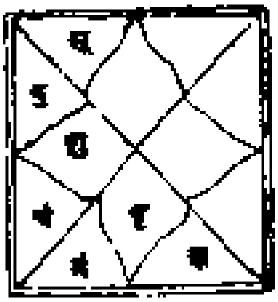

अर्द्धचन्द्रयोगः

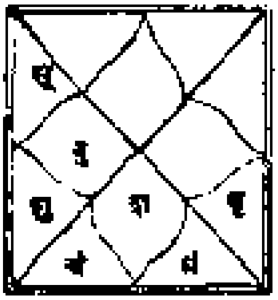

अर्द्धचन्द्रयोगः

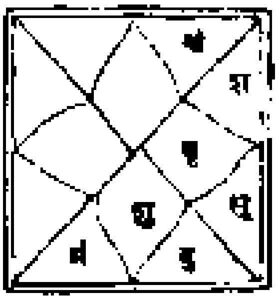

अर्द्धचन्द्रयोगः

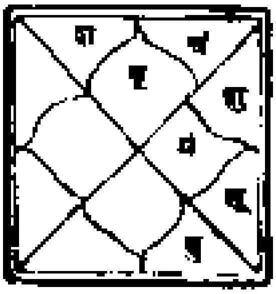

अर्द्धचन्द्रयोगः

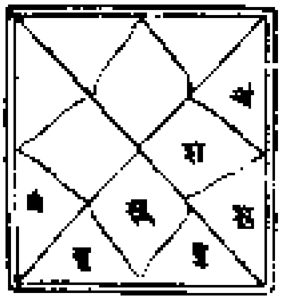

अर्द्धचन्द्रयोगः

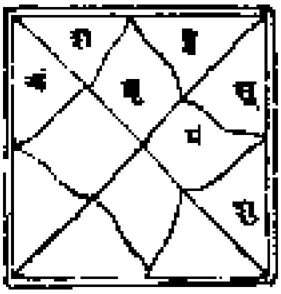

अथ गोलादिसप्तयोगानाह–

अर्द्धचन्द्रयोगः

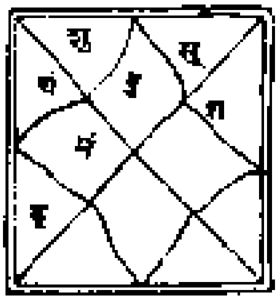

अर्द्धचन्द्रयोगः ।

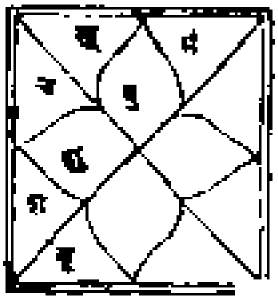

ये योगाः कथिताः पुरा बहुनरास्तेषामभावे भवेद्गोलैकगतैर्युगं द्विगृहगैः शूलस्त्रिगेहोपगैः । केदारश्च चतुर्षु सर्वखचरैः पाशस्तु पंचस्थितैः षट्स्थैर्दामिनिका च सप्तगृहगैर्वीणेति संख्या इमे ॥ १३ ॥ नानाप्रकारैः किलकालविद्भिर्योगा महद्भिः परिकीर्तिता ये ॥ तत्कर्तृपाको हि फलं तदीयं बलानुमानेन विचिन्तनीयम् ॥ १४ ॥

जो ये पहिले बहुतसे योग कहे हैं इनके न होनेसे जो एक भावमें सब ग्रह पड़ें तो गोलयोग होता है और दो स्थानोंमें सब ग्रह पड़ें तो युगयोग होता है और तीन भावोंमें सब ग्रह पड़ें तो शूलयोग होता है और चार भावोंमें सब

ग्रह पड़ें तो केदारयोग होता है, पांच भावोंमें सब ग्रह पड़ें तो पाशनाम योग होता है, छः भावोंमें सब ग्रह पड़ें तो दामिनीयोग होता है और सात भावोंमें सब ग्रह पड़ें तो वीणायोग होता है । यह संख्या योगकी कही है ॥ १३ ॥ अनेक प्रकारसे निश्चय करके ज्योतिषशास्त्रवेत्ता महर्षियोंने जो ये योग वर्णन किये उन योगकारक ग्रहोंकी दशामें बलके अनुसार उनका फल चिंतवन करें ॥ १४ ॥

अथ रज्जुयोगफलम् ।

चच्चद्रूपेणान्विताः क्रौर्यभाजो जातोत्साहा क्रूरकार्यें नितांतम् ।
रज्जूयोगोत्पन्नमर्त्याःस्वदेशे ह्यन्यस्मिन्वै संचरन्त्यर्थलब्ध्यै १५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रज्जुनामक योग होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ रूपवाला, दुःखका भागी, दुष्ट कामोंमें नितान्त उत्साही, परदेशमें विचरनेवाला, और धनको प्राप्त होता है ॥ १५ ॥

अथ मुसलयोगफलम्

नानामानैर्ज्ञानधान्योपपन्नः पुत्रैर्लक्ष्म्या राजते राजतेजाः ।
पृथ्वीपालस्याश्रितः स्यात्सहर्षो हर्षोत्कर्षाद्यामिकुन्मौसलेयः॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मुसलयोग होता है वह मनुष्य अनेक ज्ञान और धान्य सहित पुत्र और लक्ष्मी करके राजतेज करके शोभाको प्राप्त, राजाका आश्रित हर्षकरके सहित और हर्षकी उत्कर्षताकरके पूर्णताको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अथ नलयोगफलम् ।

शश्वत्पूर्णापूर्णरत्नैः स्वगेहाः राजस्नेहाः पुष्पदेहाश्च मर्त्याः ।
कीर्त्या युक्ताः सर्वदा तेन देवा दैवाद्येषां जन्मकाले नलश्चेत् ॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नलनाम योग होता है वह मनुष्य निरन्तर रत्नोंकरके सहित अपने घरमें होता है और राजासे प्रीति करनेवाला, पुष्पसदृश देहवाला और कीर्तिसहित हमेशा होता है ॥ १७ ॥

अथ मालायोगफलम् ।

पुत्रैर्मित्रैश्चारुभूषाविशेषैर्नानायानैरन्विताश्चे भवंति ।
येषां पुंसां सूतिकाले हि माला मालादोलाकामिनीकेलिशीला १८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मालायोग हो वह मनुष्य पुत्र और मित्रों करके सहित श्रेष्ठ आभूषणोंसहित अनेक सवारी करके सहित और स्त्रियोंमें क्रीडा करनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ सर्पयोगफलम् ।

भोक्तान्य स्यान्नस्य रौद्रो दरिद्रो निद्रोत्साहोरुद्गसमुद्रोऽप्यभद्रः ।
दुर्दर्पः स्याच्चापकाराय सार्पः सर्पः सूतौ यस्य मर्त्यस्य योगः ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सर्पनामयोग होता है वह मनुष्य पराये अन्नका भोगनेवाला, क्रोधी, दरिद्री, निद्राका उत्साही, बडे रोगसहित, अमंगलकारी, खोटे अभिमानवाला और पराया बडाई करनेवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ गदायोगफलम् ।

नानाशास्त्रानेकमंत्रानुरक्तो गीते वाद्ये कोविदश्चापि यज्वा ।
रौद्रो द्वेषी द्वेषिवर्गैर्वियुक्तो युक्तो योषाभूषणार्थैर्गदायाम् ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें गदायोग हो वह मनुष्य अनेक शास्त्र और अनेक मन्त्रोंमें तत्पर, गाने बजानेमें चतुर, यज्ञ करनेवाला, उग्र वैर करनेवाला, शत्रुओं-करके वियुक्त, भूषणसहित स्त्रियोंवाला होता है ॥ २० ॥

अथ शकटयोगफलम् ।

दीनो हीनो वैभवेनार्थमित्रैर्यस्योत्पत्तौ बाल्यकार्श्योऽप्यवश्यम् ।
याति प्रीतिं प्राप्य मर्त्यः कुयोषां त्यक्ता योगे शाकटेयस्य जन्म २१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शकटयोग होता है वह मनुष्य दीन, मित्र, वैभव और धनसे रहित, जन्मसे कृशता सहित, खोटी स्त्रीको पाकर त्याग करनेवाला सुखी होता है ॥ २१ ॥

अथ विहंगयोगफलम् ।

येषां सूतौ मानवानां विहंगो भोगो योगोत्पन्नसौख्यं न तेषाम् ।
याने प्रीतिर्नित्यमेव प्रवासः सेवार्थानामल्पता जल्पितार्थैः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विहंगयोग होता है वह मनुष्य भोगोंसहित, योगों-करके उत्पन्न सौख्यवाला, यात्रामें प्रीति, नित्य ही परदेस जानेवाला और बहुत बोलनेवाला होता है ॥ २२ ॥

अथ शृंगाटकयोगफलम् ।

भूयोत्कर्षः साहसी संगरेच्छुः सौख्यैर्युक्तोऽत्यंतबुद्धिर्नरः स्यात् ।
तिर्यक्छेत्पूर्वपत्न्याः सपत्न्या प्रोक्तं चैवं शृंगपूर्वैर्मुखाटे ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शृंगाटक नाम योग होता है वह मनुष्य उत्साही,

साहसी, युद्धकी इच्छा करनेवाला, सौख्यरहित बड़ा बुद्धिमान् और पहिली स्त्रीसे वैर करनेवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ हलनामयोगफलमाह–

प्रेष्योऽयुक्तःसाधुभिर्मित्रवर्गैःकृष्याजीवी दुःखितोऽत्यंतमुक्तस्यात् ।
उत्पत्तिं यो लाङ्गलाख्ये प्रयाति याति क्लेशं निर्धनत्वात्प्रकामम् ॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हल नाम योग होता है वह मनुष्य दूत, साधु और मित्रोंकरके रहित, खेती करके आजीविका करनेवाला, अत्यंत दुःखोंका भोगी होता है और अत्यन्त क्लेशों को प्राप्त, धनहीन होता है ॥ २४ ॥

अथ वज्रयोगजातफलम् ।

आद्ये भागे जीवितस्यांतिमे च सौख्योपेतो भाग्यवान्मानवःस्यात् ।
मध्ये भागे भाग्यहीनः प्रकामं कामक्रोधैरान्वितो वज्रयोगे ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वज्र नाम योग होता है वह मनुष्य पहिली अवस्थामें जीविकाको प्राप्त, अंतमें सौख्यको प्राप्त, भाग्यवान् होता है और जवानीमें पूर्णतया भाग्यहीन, काम क्रोध करके सहित होता है ॥ २५ ॥

अथ यवयोगफलम् ।

मध्ये भागे धर्मकामार्थसंपत्सौख्यैर्युक्तः स्याद्विनीतो वदान्यः ।
नित्योत्साहः सद्व्रते सु प्रशांतः शांतक्रोधो यः प्रसूतो यवाख्ये ॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें यवनाम योग होता है वह मनुष्य जवानी उमरमें धर्म, काम, अर्थ, संपत्ति और सौख्य और नम्रता सहित, उदार, हमेशा उत्साही, श्रेष्ठवृत्तिवाला, शांतचित्त और क्रोधरहित होता है ॥ २६ ॥

अथ कमलयोगफलम् ।

नित्यं हर्षोत्कर्षशाली बलीयांश्चारुकांतिर्गीतकीर्तिर्मनुष्यः ।
योगे सूतिश्चेत्सरोजे स राजा राज्ञो वंशे वा भवेद्दीर्घजीवी ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कमल नाम योग होता है वह मनुष्य हमेशा बड़े हर्षवाला, बलवान्, सुन्दर कांतिवाला, यशवान्, राजाके वंशमें उत्पन्न और बड़ी उमरवाला होता है ॥ २७ ॥

अथ वापीयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्यादात्मवंशावतंसः सौख्योपेतोऽत्यंतधीरो मनीषी ।
कन्यद्रव्यः सन्मनाः पुण्यपापी वापीयोगे यः प्रसूतः प्रतापी ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वापी योग होता है वह मनुष्य बडी उमरवाला, अपने वंशमें प्रतापी, सौख्यसहित, अत्यन्त धीर, सुन्दर वाणी बोलनेवाला, श्रेष्ठ मन, फूलोंकी वाटिका करनेवाला और प्रतापी होता है ॥ २८ ॥

अथ यूपयोगजातफलम् ।

धीरोदारो यज्ञकर्मानुसारो नानाविद्यासद्विचारो नरो वै ।
यस्योत्पत्तौ वर्तते यूपयोगो योगो लक्ष्म्या जायते तस्य नूनम् २९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें यूपनाम योग होता है वह मनुष्य धैर्यवान्, उदार, यज्ञकर्ममें तत्पर, अनेक विद्या और श्रेष्ठ विचार करनेवाला लक्ष्मी करके सहित होता है ॥ २९ ॥

अथ शरयोगफलम् ।

हिंस्रोऽत्यन्तं शिल्पकृद्दुःखैः प्रतप्तः प्राप्तानन्दः काननेऽति शरज्ञः ।
मर्त्यो योगे यः शरे जातजन्मा जन्मारंभात्तस्य न क्वापि सौख्यम् ३०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शर नाम योग होता है वह मनुष्य हिंसा करनेवाला शिल्पका जाननेवाला, दुःखोंसे सन्तापको प्राप्त, वनमें आनन्दको प्राप्त, बाणविद्याका जाननेवाला और जन्मसे कभी सौख्यको प्राप्त नहीं होता है ॥ ३० ॥

अथ शक्तियोगफलम् ।

नीचैरुच्चैः प्रीतिकृत्सालसश्च सौख्यैरर्थैर्वर्जितो निर्बलश्च ।
वादे युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शालासौख्यस्याल्पता शक्तियोगे ३१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शक्तियोग होता है वह मनुष्य नीचे ऊँचे मनुष्योंसे प्रीति करनेवाला, आलस्यसहित, सौख्य और धनसे रहित, विवाद और युद्धमें उसकी विशाल बुद्धि और स्थानका सौख्य थोडा होता है ॥ ३१ ॥

अथ दण्डयोगजातफलम् ।

दीनो हीनोऽन्त्यसंजातसख्यः प्रेष्यद्वेषी गोत्रजैर्जातवैरः ।
कान्तापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्ध्या दण्डयोगात्तजन्मा ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दंडनाम योग हो वह मनुष्य दीन हीन, अन्त्यजोंसे मित्रताको प्राप्त, दूसरेसे वैर करनेवाला, अपने कुटुम्बियोंसे वैर करनेवाला, स्त्री, पुत्र, धन, मित्रों करके हीन और बुद्धिरहित होता है ॥ ३२ ॥

अथ नौकायोगजातफलम् ।

ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनो यो नौयोगे लब्धजन्मा मनुष्यः ।
क्लेशी शश्वच्चञ्चलः स्यात्तद्वृत्तिर्वित्तस्तोयोद्भूतधान्येन तस्य ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नौकायोग हो वह मनुष्य प्रसिद्ध लोभी और भोग शीलतासे रहित, क्लेश पानेवाला, अत्यन्त चश्चल चित्तवृत्तिवाला, चोरी करनेवाला और भयसहित होता है ॥ ३३ ॥

अथ कूटयोगजातफलम् ।

दुर्गारण्यावासशीलश्च मल्लो भिल्लप्रीतिर्निर्धनो निंद्यकर्मा ।
धर्माधर्मज्ञानहीनश्च कूटः कूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः ॥३४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कूटयोग होता है वह मनुष्य वन पर्वतोंमें वास करनेवाला, पहलवान, भीलोंसे प्रीति करनेवाला, धनहीन, निन्दित कर्म करनेवाला, धर्म अधर्मके ज्ञानरहित और चुगली करनेवाला होता है ॥ ३४ ॥

अथ छत्रयोगजातफलम् ।

प्राज्ञो राज्ञां कार्यकर्ता दयालुः पूर्वे पश्चात्सर्वसौख्यैरुपेतः ।
यस्योत्पत्तौ छत्रयोगोपलब्धिर्लब्धिस्तस्य च्छत्रसञ्चामरादौ ३५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छत्रयोग होता है वह मनुष्य चतुर, राजाओंका कार्य करनेवाला, दयावान्, बालकपन, और बुढापेमें सब सौख्योंको प्राप्त और वह श्रेष्ठ छत्र और चमरकी प्राप्ति करनेवाला होता है ॥ ३५ ॥

अथ कार्मुकयोगजातफलम् ।

आद्ये भागे चांतिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननाद्रिप्रचारः ।
योगे जातःकार्मुके सोऽतिगर्वोगर्वोन्मत्तापत्तिकृत्कार्मुकस्त्रः ॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कार्मुक योग होता है वह मनुष्य बालकपन और बुढापेमें सौख्य पानेवाला और वन पर्वतोंमें रहनेवाला, बडा अभिमानी, गर्वकी उन्मत्ततासे आपत्तिको प्राप्त और धनुष धारण करनेवाला होता है ॥ ३६ ॥

अथ अर्धचन्द्रयोगजातफलम् ।

भूमीपालप्राप्तचञ्चत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणाद्यम्बराद्यैः ।
चेदुत्पत्तौ यस्य योगोऽर्द्धचन्द्रश्चंद्रः साक्षादुत्सवार्थे जनानाम् ३७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अर्धचन्द्रनाम योग होता है वह मनुष्य राजासे श्रेष्ठ प्रतिष्ठाको प्राप्त, श्रेष्ठ सेना और आभरण वस्त्रादिसहित, मनुष्योंके उत्सवके अर्थ चन्द्रमा समान होता है ॥ ३७ ॥

अथ चक्रयोगजातफलम् ।

श्रीमद्रूपोऽत्यंतजातप्रतापो भूयो भूयोपायनैरन्वितः स्यात् ।
योगे जातः पूरुषो यस्तु चक्रे चक्रे पृथ्व्याः शालिनी तस्य कीर्तिः ३८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चक्रनामक योग होता है वह मनुष्य लक्ष्मीवान्, रूपवाला, बड़ा प्रतापी, वारंवार भेंट लेनेवाला और उस राजाका यश समग्र धरती पर होता है ॥ ३८ ॥

अथ समुद्रयोगजातफलम् ।

दानी धीरश्चारुशीलो दयालुः पृथ्वीपालप्राप्तसौख्यः प्रकामम् ।
योगे जातो यः समुद्रे स धन्यो धन्यो वंशस्तेन नूनं नरेण॥३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें समुद्र योग होता है वह मनुष्य दानी धैर्यवान्, सुंदर शीलवाला, दयावान्, राजा करके सौख्यको प्राप्त वह पुरुष धन्य और उससे उसका वंश धन्य होता है ॥ ३९ ॥

अथ गोलयोगजातफलमाह ।

विद्यासत्त्वौदार्यसामर्थ्यहीना नानायासा नित्यजातप्रवासाः ।
येषां योगः संभवे गोलनामा नानासत्यप्रीतयोऽनीतयस्ते॥४०॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें गोलयोग होता है वह मनुष्य विद्या और बल, उदारता और सामर्थ्यसे रहित, अनेक दुःखोंको प्राप्त, हमेशा परदेश जानेवाले और अनेक असत्योंमें प्रीति करते हैं ॥ ४० ॥

अथ युगयोगजातफलम् ।

पाखंडेनाखण्डितप्रीतिभाजो निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्मापयुक्ताः ।
पुत्रैरर्थैः सर्वथा ते वियुक्ता युक्तायुक्तज्ञानशून्या युगाख्ये॥४१॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें युगनाम योग होता है वे मनुष्य पाखण्डमें पूरी प्रीति करनेवाले, लज्जारहित, पुत्र और धनसे हीन और युक्त अयुक्त ज्ञानसे शून्य होते हैं ॥ ४१ ॥

अथ शूलयोगजातफलम् ।

युद्धे वादे तत्पराश्चातिशूराः क्रूराः स्वांते निष्ठुरा निर्धनाश्च
योगो येषां सूतिकाले हि शूलः शूलप्रायास्ते जनानां भवंति ॥४२॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें शूलनामक योग होता है वे मनुष्य युद्ध और विवादमें तत्पर, बड़े क्रूर स्वभाव, कठोरचित्त, धनहीन और सेवारी मनुष्योंको शूलके समान होते हैं ॥ ५२ ॥

अथ केदारयोगजातफलम् ।

सत्योपेताश्चार्थवंतो विनीताः कृष्योत्सुक्याश्चोपकारादराश्च ।
योगे केदारे नरास्तेऽपि धीरा धीराचाराश्चापि तेषां विशेषात् ॥ ५३ ॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें केदारयोग होता है वे मनुष्य सत्यसहित, धनवान्, नम्रतासहित, खेती करके उत्साह करें, आदरसे उपकार करनेवाले, धैर्यवान् और श्रेष्ठ आचारवाले होते हैं ॥ ५३ ॥

अथ पाशयोगजातफलम् ।

दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बन्धेनार्ता भूरिभृत्याः सदम्भाः ।
नानानर्थाः पाशयोगे प्रजाता जातारण्यप्रीतयः स्युर्मनुष्याः ॥ ५४ ॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें पाशयोग हो वे मनुष्य दीनस्वरूप, बुराई करनेमें तत्पर, बंधन करके दुःखी, बहुत खिपोंवाले, क्रोधसहित और अनेक अनर्थ सहित, वनमें प्रीति करनेवाले होते हैं ॥ ५४ ॥

अथ दामिनीयोगजातफलम् ।

जातानन्दो नंदनाद्यैः सुधीरो विद्वान्भूषाकोशसंजाततोषः ।
चंचच्छीलोदारबुद्धिप्रशस्तः शस्तः सूतो दामिनी यस्य योगः ॥ ५५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दामिनी योग हो वह मनुष्य आनन्दको प्राप्त, पुत्रों सहित, धैर्यवान्, विद्वान्, आभूषण और खजानेसे संतोषको प्राप्त, चञ्चल शील, उदार बुद्धि, श्रेष्ठ होता है ॥ ५५ ॥

अथ वीणायोगजातफलम् ।

अर्थोपेताः शास्त्रपारंगताश्च सङ्गीतज्ञाः पोषकाः स्युर्बहूनाम् ।
नानासौख्यैरन्विताः स्तु प्रवीणा वीणायोगे प्राणिनां जन्म येषाम् ॥ ५६ ॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें वीणा योग हो वे मनुष्य धनसहित, शास्त्रके पार जानेवाले, बहुत जनोंका पालन करनेवाले और अनेक सौख्यसहित चतुर होते हैं ॥ ५६ ॥

प्रोक्तैरेतैर्नाभसाख्यैश्च योगैः स्यात्सर्वेषां प्राणिनां जन्म कामम् ।
तस्मादेतेऽप्यंतरस्मात्पूर्णाः पूर्वाचार्यैर्जातके संप्रदिष्टाः ॥ ५७ ॥

एवं योगानां फलं शालिनी-सद्वृत्तैर्व्यक्तं युक्तियुक्तं निरुक्तम् ।
तस्मात्प्राज्ञैः सत्कवीनामनूनं सौख्यं चैवं जातके कोमलोक्त्या ॥७८॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे
नाभसयोगाध्यायः ॥ १ ॥

ये जो इतने नाभस कहे हैं सो सम्पूर्ण प्राणियोंके जन्मकालमें विचार करना चाहिये, इनको अत्यन्त यत्नसे पूर्वाचार्योंने विचारकरके कहा है ॥ ७७ ॥ इस प्रकार ये नाभसयोग शालिनी छन्दमें युक्तियों करके युक्त कहे हैं, इस कारणसे चतुर जन और कविजन सौख्यको प्राप्त हों, कोमल उक्तिकरके कहे हुए जातक जन्म करके विचार कर फलको कहैं ॥ ७८ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजज्योतिर्वित्-पंडितश्यामलाल
कृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां नाभसयोगाध्यायः ॥ १ ॥

अथ रश्मिजातकाध्यायप्रारंभः ।

अथैकादिपंचरश्मिफलम् ।

येषां नराणां किरणाः प्रसूता एकादितः पंचभवेति यावत् ।
ते सर्वथा दुःखदरिद्रभाजो नीचप्रिया नीचकुलाः खलाश्च ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके एक रश्मिसे लेकर पांच रश्मितक ग्रहकी हों वह मनुष्य हमेशा दुःख और दारिद्र्यको भोगनेवाला, नीचोंका प्यारा और नीच कुलमें उत्पन्न हुए होता है ॥ १ ॥

अथ दशरश्मिफलम् ।

पंचादितः सेंदुमिताश्च यावन्मरीचयस्ते जनयंत्यवश्यम् ।
नरान्विदेशेऽभिरतान्सुदीनान्भाग्येन हीनान्प्रतिपाळिताश्च ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचसे लेकर दश रश्मितक ग्रहोंकी हों वह मनुष्य परदेशमें रत, दीन, भाग्यहीन, निरंतर दूसरोंसे पालन किया, दुःखी होता है ॥२॥

अथ पञ्चदशरश्मिफलम्।

परं दशाभ्यस्तिथयस्तु यावत्ते मानवो मानवमल्पकार्थम्।
धर्मप्रियं संजनयंति नूनं कुलानुरूपं सुखिनं सुवेषम्॥ ३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशसे लेकर पंद्रह रश्मितक बलयुक्त ग्रह हों वह मनुष्य थोड़े धनवाला होता है। धर्म जिसको प्यारा, अपने कुलके समान रूपवाला, सुखी और श्रेष्ठ वेषवाला होता है॥ ३॥

अथ विंशतिरश्मिफलम्।

पंचेषुतो विंशतिरेव यावद्रश्मयस्ते मनुजं सुशीलम्।
कुर्वंति सत्कीर्तिकरं सुधीरं वंशावतंसं कुशलं कलासु॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंद्रहसे लेकर बीस पर्यन्त रश्मि हों वह मनुष्य शीलवान्, श्रेष्ठ कीर्तिवाला, धैर्यवान्, अपने वंशमें प्रकाशवान् कलाओंमें कुशल होता है॥ ४॥

अथ पञ्चविंशतिरश्मिफलम्।

यस्य प्रसूतौ च नखा मयूखास्तद्भाग्यरेखा सुहृदां सुखाय।
पंचाधिका विंशतिरत्र यावत्तावत्फलाधिक्यमनुक्रमेण॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बीस वा पचीस पर्यन्त रश्मि हों वह मनुष्य मित्रोंके लिये सुख देनेवाला हो, क्रमसे अधिक अधिक फल कहना चाहिये॥ ५॥

अथ त्रिंशद्रश्मिफलम्।

यावत्त्रिंशत्संमिता पंचवर्गा येषां सूतौ चेन्मयूखा नराणाम्।
भूमीपालात्प्राप्तसौख्याः प्रधाना नानासंपत्संयुतास्ते भवंति॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसपर्यन्त रश्मियां हों वह मनुष्य राजाकरके सौख्यको प्राप्त राजाका दीवान होता है और अनेक संपत्तिसहित होता है॥ ६॥

अथ एकत्रिंशद्रश्मिफलम्।

येषां नूनं मानवानां प्रसूतावेकत्रिंशत्संख्यकाश्चेन्मयूखाः।
विख्यातास्ते राजतुल्याः प्रधाना नानासेनास्वामिनः संभवंति॥७॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें इकतीस रश्मियां हों वह मनुष्य संसारमें प्रसिद्ध राजाके समान वा राजाके वजीर अनेक सेनाओंके स्वामी होते हैं॥ ७॥

अथ द्वात्रिंशद्रश्मिफलम् ।

प्रसूतिकाले किरणा नराणां द्वित्रिप्रमाणा यदि संभवंति ।
नानापुराणामथवा गिरीणां ते स्वामिनो ग्रामशताधिपा वा ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बत्तीस ग्रहकी रश्मियां हों वह मनुष्य अनेक नगरोंका बसानेवाला, अनेक पर्वतोंका स्वामी और सौ ग्रामोंका पति होता है ॥ ८ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशद्रश्मिफलम् ।

रामाग्निभिश्चापि युगाग्निभिर्वा करैर्नरस्य प्रसवो यदि स्यात् ।
क्रमात्सहस्रं त्रिसहस्रकं च ग्रामान्स पातीति वदंति केचित् ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तेतीस वा ३४ रश्मियां हों वह मनुष्य एक हजार वा तीन हजार ग्रामोंका स्वामी होता है ऐसा कोई कहते हैं ॥ ९ ॥

अथ पंचत्रिंशद्रश्मिफलम् ।

पंचत्रिसंख्यैः खलु यो मयूखैर्जातो भवेन्मण्डलनायकश्च ।
विलाससत्त्वामलशीलशाली यशोविशेषाधिककोशयुक्तः ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पैंतीस रश्मि ग्रहोंकी हों वह मनुष्य एक देशका राजा होता है और विलासयुक्त, पराक्रमी, निर्मल शीलवान्, बडे यशवाला और बहुत खजानेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ षट्त्रिंशद्रश्मिफलम् ।

रसाग्निसंख्यैश्च नगाग्निसंख्यैर्जातो मयूखैः खलु यः क्रमेण ।
ग्रामान्मनुष्यः स तु सार्धलक्षं लक्षत्रयं पाति महाप्रतापात् ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्रहोंकी ३६ रश्मियोंका योग हो वह मनुष्य डेढ लाख ग्रामोंका स्वामी होता है और जिसके सैंतीस रश्मियां हों वह मनुष्य तीन लाख ग्रामोंका स्वामी होता है ॥ ११ ॥

अथाष्टत्रिंशद्रश्मिफलम् ।

यस्य प्रसूतौ किरणप्रमाणमष्टत्रिसंख्यैः स भवेन्महौजाः ।
भूमीपतिर्लक्षचतुष्टयं हि ग्रामान्प्रशास्तीन्द्रसमानसंपत् ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्रहोंकी अडतीस रश्मियोंका योग हो वह मनुष्य बडा पराक्रमी राजा, चार लाख ग्रामोंके ऊपर हुक्म चलानेवाला, इन्द्रके समान संपत्तिवाला होता है ॥ १२ ॥

नगत्रिसंख्याजनने मयूखा विख्यातकीर्तिर्नृपतिर्भवेत्सः ।
प्रौढप्रतापाग्निरुदस्तशत्रुर्गर्वोद्धताराति भुजंगमेषु ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उनतालीस रश्मियोंका योग हो वह मनुष्य प्रसिद्ध यशवाला राजा होता है, बडे प्रतापवाला, शत्रुओंके अभिमानको नष्ट करनेवाला जैसे गरुडजी सर्पोंके लिये प्रतापी होते हैं ॥ १३ ॥

अथ चत्वारिंशद्रश्मिफलम् ।

खाब्धिप्रमाणैः किरणैः प्रसूतः क्षोणीपतिस्तद्विजयप्रयाणे ।
भवंति सेनागजगर्जितानां प्रतिस्वनाः खे घनगर्जितानि ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चालीस रश्मियोंका योग होता है वह मनुष्य राजाओंको जीतनेवाला और उस राजाकी फौजसे हाथियोंकी गर्जनाके शब्द होते हैं जैसे आकाशमें मेघ गर्जते हैं ॥ १४ ॥

अथैकचत्वारिंशद्रश्मिफलम् ।

मयूखजालं परिसूतिकाले यस्यैकवेदाह्वयकं नरस्य ।
दुग्धांबुधिवेलामलमेखलाया भवेदिलायाः परिपालकः सः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें इकतालीस रश्मियोंका योग हो वह मनुष्य दो समुद्रकी है मेखला जिसकी ऐसे पृथिवीमण्डलका स्वामी, चक्रवर्ती राजा होता है ॥ १५ ॥

अथ द्विचत्वारिंशद्रश्मिफलम् ।

यमलजलधितुल्यो वा युगाब्धिप्रमाणो
भवति किरणयोगश्चेन्नराणां प्रसूतौ ।
अतुलबलविलासत्रासितारातिवर्गा-
स्त्रिजलधिवलयायाः पालकास्ते पृथिव्याः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बयालीस वा तेंतालीस रश्मियोंका योग हो वह मनुष्य बडे बलके विलाससे शत्रुओंको त्रास करनेवाला, तीन समुद्र हैं कंकण जिसके ऐसी पृथ्वीका पालन करनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ चतुश्चत्वारिंशद्रश्मिफलम् ।

सूतौ वेदयुगप्रमाणकिरणाश्चेत्स्युर्नृभौमः स वा
यत्सेनाजलधौ गलन्मदजला दंतावलाः शैलताम् ।
यांति ध्वजपिच्छिताः कमठतां मीनध्वजा मीनतां
नौकात्वं च रथास्तथा सुपतयः कल्लोलमालातुलाम् ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चौवालीस रश्मियोंका योग हो वह मनुष्य सार्वभौम नामका राजा होता है उस राजाकी फौज घोडा हाथी पैदल और चारों तरफ दिशाओंको विजय करनेवाली डंका निशान और मत्स्य ध्वजा सहित सेना-सभी हलचल करनेवाली आनन्दको करती हुई शत्रुओंको मूर्छित करती है॥ १७॥

अथ पञ्चचत्वारिंशद्रश्मियोगफलम्।

पञ्चाधिकाश्चेत्परतो भवंति गभस्तयो जन्मनि मानवानाम्।
ते देवतानामपि दुर्जयाः स्युर्द्वीपान्तरोद्गीतयशोविशेषाः॥ १८॥

इति श्रीढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
रश्मिजातकाध्यायः॥ १०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पैंतालीस रश्मियोंका योग हो अथवा इससे अधिक हो तो वह मनुष्य देवताओं करके भी कठिनतासे जीता जाय और द्वीपद्वीपान्तरोंमें उसका यश गाया जाता है॥ १८॥

इति श्रीबंसबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपण्डित-
श्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां
रश्मिजातकाध्यायः॥ १०॥

अथ ग्रहाणां दीप्ताद्यवस्थामाह-

दीप्तस्तुंगगतः स्वगो निजगृहे स्वस्थो हिते हर्षितः
शान्तः शोभनवर्गगश्च खचरः शक्तः स्फुरद्रश्मिभाक्।
लुप्तः स्याद्विकलः स्वनीचगृहगो दीनः खलः पापयुक्
खेटो यः परिपीडितश्च खचरैः स प्रोच्यते पीडितः॥ १॥

अब दीप्तादि ग्रह कहते हैं-जो ग्रह अपने उच्चमें बैठा हो वह दीप्त कहाता है और जो अपनी राशिमें बैठा हो वह स्वस्थ कहाता है और जो ग्रह मित्रकी राशिमें बैठा हो वह हर्षित कहाता है और जो ग्रह ग्रहोंके शुभ वर्गमें बैठा हो वह शान्त कहाता है और जो ग्रह पूर्ण किरणोंवाला हो वह शक्त कहाता है और जो ग्रह सूर्य करके अस्त हो वह विकल कहाता है। अपनी नीच राशिमें बैठा हुआ ग्रह दीन कहाता है और जो पापग्रहों करके युक्त हो वह ग्रह खल कहाता है, और ग्रहों करके पीडित हो वह ग्रह पीडित कहाता है॥ १॥

अथ दीप्तग्रहफलम् ।

दीप्ते प्रतापावृततापितारिर्गलन्मदालंकृतकुंजरेशः ।
नरो भवेत्तन्निलये सलीलं पद्मालयालंकुरुते विलासम् ॥ २ ॥

अथ दीप्तग्रहका फल कहते हैं—जो ग्रह दीप्त अवस्थामें बैठा हो वह अधिक प्रताप करता है और उसके शत्रु सन्तापको प्राप्त होते हैं और चुचिमान रहा है मद जिनके ऐसे हाथियोंका स्वामी होता है और उसके घरमें लक्ष्मी विलास करती है ॥ २ ॥

अथ स्वस्थग्रहफलम् ।

स्वस्थे महावाहनधान्यरत्नविशालशालाबहुलत्वयुक्तः ।
सेनापतिः स्यान्मनुजो महौजा वैरिव्रजावाप्तजयाधिशाली ॥ ३ ॥

अथ स्वस्थ ग्रहका फल कहते हैं—जो ग्रह स्वस्थ होता है वह बड़े वाहन और धान्यसहित बड़े स्थानोंमें रहनेवाला, फौजका मालिक, बड़ा पराक्रमी, शत्रुओंसे जय पानेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ हर्षितग्रहफलम् ।

हर्षिते भवति कामिनीजनोऽत्यन्तभूषणचयप्रजवित्तः ।
धर्मकर्मकरणैकमानसो मानसोद्भवचयो हतशत्रुः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हर्षित ग्रह होता है वह मनुष्य स्त्रियोंके करके हर्षको प्राप्त, अधिक भूषण और धनसहित होता है और धर्म कर्मका करनेवाला, शत्रुदलका नाश करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ शान्तग्रहफलम् ।

शांतोऽतिशांतो हि महीपतीनां मंत्री स्वतन्त्रो बहुपुत्रमित्रः ।
शास्त्राधिकारी सुतरां नरः स्यात्परोपकारी सुकृतैकचित्तः ॥ ५ ॥

अथ शांत ग्रहका फल कहते हैं—शांत ग्रह अत्यन्त शांत स्वभाव करनेवाला, राजाका मंत्री, खुद मुख्त्यार; बहुत पुत्र मित्रोंवाला, शास्त्रका अधिकारी, पराया उपकार करनेवाला और श्रेष्ठ कर्मोंमें चित्तयुक्त होता है ॥ ५ ॥

शक्तोऽतिशक्तः पुरुषो विशेषात्सुगंधमाल्याभिरुचिः शुचिश्च ।
विख्यातकीर्तिः सुजनः प्रसन्नो जनोपकर्ताऽरिजनप्रहन्ता ॥ ६ ॥

अथ शक्तग्रहका फल कहते हैं—शक्तग्रह अत्यन्त बलवान्, सुगन्ध और पुष्पोंकी मालाओंमें प्रीति करनेवाला, पवित्र प्रसिद्ध यशवाला, श्रेष्ठ मनुष्य, प्रसन्न, सबका उपकार करनेवाला, और शत्रुओंको मारनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ विकलग्रहफलम् ।

हतबलो विकलो मलिनः सदा रिपुकुलप्रबलश्च गलन्मतिः ।
सलसः स्थलसंचलितो नरः कृशतरः परकार्यगतादरः ॥७॥

अथ विकल ग्रहका फल कहते हैं–विकल ग्रहवाला मनुष्य बलहीन, मलिन, हमेशा उसके वैरी बलवान् हों, बुद्धिहीन, दुष्ट मित्रोंवाला, स्थानसे चलनेवाला, दुर्बल देह और पराये कार्यको बिगाडनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ दीनग्रहफलम् ।

दीनेऽतिदीनोऽपचयेन तप्तः संप्राप्तभूमीपतिशत्रुभीतिः ।
संत्यक्तनीतिः खलु हीनकीर्तिः स्वजातिवैरं हि नरः करोति॥८॥

अथ दीन ग्रहका फल कहते हैं–दीन ग्रहवाला मनुष्य अत्यन्त दीन, शत्रुओं करके संतापित, राजाकरके भयको प्राप्त, नीतिरहित, निश्चयकर कीर्तिरहित और अपनी जातिसे वैर करनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ खलग्रहफलम् ।

खलाभिधाने हि खलैःकलिः स्यात्कांतातिचिंतापरितप्तचित्तः ।
विदेशयानं धनहीनता च प्रकोपता लुप्तमतिप्रकाशः ॥ ९ ॥

अथ खलग्रहका फल कहते हैं–जो खलग्रह हो तो वह मनुष्य दुष्ट, स्त्रीकी चिन्तावाला, अत्यन्त सन्तापको प्राप्त, परदेशयात्रा करनेवाला, धनहीन, क्रोधसहित और बुद्धिहीन होता है ॥ ९ ॥

अथ पीडितग्रहफलम् ।

पीडिते भवति पीडितः सदा व्याधिभिर्व्यसनतोऽपि नितांतम् ।
याति संचलनतां निजस्थलाव्याकुलत्वनिजबंधुचिंतया ॥१०॥

इति श्रीदिवाकरदैवज्ञविरचिते जातकाभरणे
दीनादिग्रहफलाध्यायः ॥ ११ ॥

अथ पीडित ग्रहका फल कहते हैं–जिस मनुष्यके जन्मकालमें पीडित ग्रह हों वह मनुष्य पीडाको प्राप्त, हमेशा व्याधिसहित, व्यसनयुक्त, अपने स्थानसे चलनेवाला व्याकुलताको प्राप्त, और भाइयोंकी चिन्तावाला होता है ॥ १० ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिक-पण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां दीनादिग्रहफलाध्यायः ॥ ११ ॥

अथ स्थानादियुतग्रहफलम्।

तत्रादौ स्थानबलयुक्तग्रहफलम्।

धरां विभूतिं जनयत्यवश्यं बलाधिकत्वं महसः प्रवृद्धिम्।
नानाधनं कौशलगौरवादि कुर्याद्बलं स्थानबलोपपन्नः॥ १॥

अथ स्थान बलयुक्त ग्रहका फल कहते हैं—जिस मनुष्यके जन्मकालमें स्थानबली ग्रह हो वह मनुष्य धराकी विभूति करके सहित, अधिक बलवान्, उत्सवकी वृद्धिवाला, अनेक धन और कुशलतासहित, गौरवयुक्त होता है॥ १॥

अथ दिग्बलयुक्तग्रहफलम्।

आशाबलं यस्य भवेत्प्रकृष्टं खेटः स्वकाष्ठां नियमेन नीत्वा।
विशिष्टलाभं कुरुते दशायां पुंसां निजद्रव्यविमिश्रितं हि॥ २॥

अब दिग्बली ग्रहका फल कहते हैं—जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्रह दिग्बली हो वह मनुष्य अपनी दशाके नियमसे बडे लाभका करनेवाला, अपनी दशामें होता है और अपने धनको प्राप्त होता है॥ २॥

अथ कालबलयुक्तग्रहफलम्।

शत्रुक्षयं भूगजवाजिवृद्धिं शौर्यं च रत्नाम्बरसंपदं च।
लीलाविलासं विमलां च कीर्तिं कुर्याद्ग्रहः कालबलाधिशाली॥ ३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कालबली ग्रह हो वह मनुष्य शत्रुओंका नाश करनेवाला, धरती हाथी घोडोंकी वृद्धिवाला, वीरतासहित, रत्न और वस्त्रकी सम्पदाको प्राप्त, लीलाओंका विलास करनेवाला और निर्मल यशवाला होता है॥ ३॥

अथ सौम्यबलिग्रहफलम्।

आचारशौचक्षमसत्ययुताः सुरूपा-
स्तेजस्विनः क्रतुविदो द्विजदेवभक्ताः।
पुष्पाम्बरोत्तमविभूषणसादराश्च
सौम्यग्रहैर्बलयुतैः पुरुषा भवंति॥ ४॥

अब सौम्यग्रहका फल कहते हैं—जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रह बलवान् हो वह मनुष्य आचार करके पवित्र, क्षमा और सत्यसहित, सुन्दररूपवाला, तेजस्वी, वेदज्ञ और ब्राह्मणोंका भक्त, उत्तम पुष्प और वस्त्र आभूषणों करके सहित होता है॥ ४॥

लुब्धाः कुकर्मनिरता निजकार्यनिष्ठाः
साधुद्विषः स्वकुलहाश्च तमोगुणाढ्याः ।
क्रूरस्वभावनिरता मलिनाः कृतघ्नाः
पापग्रहे बलयुते पुरुषा भवंति ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह अधिक बली हों वह मनुष्य लोभी, खोटे कर्मोंमें तत्पर, अपने काममें निष्ठा रखनेवाला, साधुओंका वैरी, तमोगुण सहित, क्रूरस्वभाववाला, मलिन, कृतघ्न होता है ॥ ५ ॥ जिस मनुष्यके दो वा तीन ग्रह बलवान् हों तो पूर्वोक्त शुभाशुभ फल कहना चाहिये ॥

अथ नैसर्गिकबलक्रमाह ।

द्वौ वा त्रयो वा बलिनो भवंति फलप्रदानस्वमिति प्रकल्प्यम् ।
मंदारसौम्येज्यसितेंदुसूर्या यथोत्तरं स्युर्बलिनो निसर्गात् ॥ ६ ॥

अब ग्रहोंका नैसर्गिक बल कहते हैं—शनैश्चरसे अधिक बली मंगल और मंगलसे बुध और बुधसे बृहस्पति और बृहस्पतिसे शुक्र और शुक्रसे चन्द्रमा और चन्द्रमासे अधिक बली सूर्य नैसर्गिक बल पाता है ॥ ६ ॥

अथ चेष्टाबलयुक्तग्रहफलम् ।

कश्चिद्राज्यं कश्चित्पूजां कश्चिद्द्रव्यं कश्चिद्यशः ।
ददाति खेचरश्चित्रं चेष्टावीर्यसमन्वितः ॥ ७ ॥

अब ग्रहोंका चेष्टाबल कहते हैं—जो चेष्टा बलमें युक्तग्रह हो तो कभी राज्य और कभी पूजा, कभी धन, कभी यशको प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

अथ दृष्टिबलिग्रहफलम् ।

दुष्टप्रदः सौम्यनिरीक्षितश्चेद्दुष्टं फलं नो सकलं ददाति ।
क्रूरेक्षितः सत्फलदोऽपि चैवं विचारणीयं खलु दृग्बलस्य ॥ ८ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे स्थानादियुक्तग्रहफलाध्यायः ॥ १२ ॥

अब दृष्टिबली ग्रहोंका फल कहते हैं—जो बुरा फल देनेवाला ग्रह शुभग्रह करके दृष्ट हो तो वह मनुष्यको पूर्ण दुष्ट फल नहीं देता है और पापग्रह देखता हो तो अच्छे फलको देनेवाला ग्रह भी शुभ फल नहीं देता, यह दृष्टिबली ग्रहका विचार करना चाहिये ॥ ८ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषा-टीकायां स्थानादियुक्तग्रहफलाध्यायः ॥ १२ ॥

अथ सूर्ययोगाध्यायप्रारम्भः ।

अथादौ वोश्यादियोगाः ।

खेचराः हिमगणोर्विधुवर्ज्यं द्वादशे च धनभे शुभपे वा ।
वोशिवेश्युभयचर्यभिधानाः प्राक्तनैः समुदिता इति योगाः॥१॥

अब वोश्यादि योग कहते हैं—सूर्यसे चन्द्रमाको छोड़कर बारहें, दूसरे और दोनों तरफ ग्रह बैठनेसे वोशि वेशि उभयचरी योग होते हैं, यथा जहां कहीं सूर्य बैठा हो उस सूर्यसे चन्द्रमाके बिना कोई ग्रह बारहें बैठा हो तो वोशी योग होता है और दूसरे कोई ग्रह हों तो वेशी योग होता है और सूर्यसे बारहें दूसरे दोनों तरफ ग्रह बैठा हो तो उभयचरी नाम योग होता है ॥ १ ॥

अथ वोशियोगफलम् ॥

स्यान्मंददृष्टिर्बहुकर्मकर्ता पश्चाच्चनोन्नतपूर्वकायः ।
असत्यवादी यदि वोशियोगो प्रसूतिकाले मनुजस्य यस्य॥२॥

अब वोशियोगका फल कहते हैं—जिस मनुष्यके जन्मकालमें वोशि योग हो वह मनुष्य धुंधी आंखोंवाला, बहुत कार्य करनेवाला, नीचेको देखनेवाला, ऊंचे देहवाला और झूठ बोलनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ वेशियोगफलम् ।

चेत्संभवे यस्य च वेशियोगो भवेद्दयालुः पृथुपूर्वकायः ।
स्याद्वाग्विलासालसतासमेतस्तिर्यक्प्रचारःखलु तस्य दृष्टेः॥३॥

अब वेशियोगका फल कहते हैं—जिस मनुष्यके जन्मकालमें वेशी योग हो वह मनुष्य दयावान्, मोटी देहवाला, वाग्विलासमें कुशल, आलसी और तिरछी निगाहवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ उभयचरीयोगफलम् ।

सर्वंसहःस्थिरतरोऽतितरांसमृद्धःसत्त्वाधिकस्समशरीरविराजमानः ।
नात्युच्चकःसरलदृक्प्रबलामलश्रीयुक्तः किलोभयचरीप्रभवोनरःस्यात्
सूर्यस्य वीर्याल्पबलानु साराद्राश्यंशयोगात्प्रविचार्य सर्वम् ।
न्यूनं समं वा प्रबलं नराणां फलं सुधीभिःपरिकल्पनीयम् ॥४॥

अथ उभयचरी योगका फल कहते हैं-जिस मनुष्यके जन्मकालमें उभयचरी नाम योग होता है वह मनुष्य सबकी सहनेवाला, स्थिर स्वभाववाला, अत्यंत समृद्धियोंसहित, अधिक बलवान्, एकसी देहवाला, अत्यन्त ऊंचा नहीं सीधी दृष्टि और अधिक लक्ष्मीसहित होता है ॥ ४ ॥ सूर्यके वीर्यसे ग्रहोंके अनुसार राशि अंशके योगसे विचार करे, न्यून वा सम वा प्रबल फल पंडितजन कल्पना करें ॥ ५ ॥

अथ चन्द्रयोगाध्यायप्रारम्भः। तत्र-

सुनफानफादुरुधराकेमद्रुमयोगानाह-

द्विजपतेर्धनगैः सुनफा भवेद्व्ययगतैरनफा रविवर्जितैः।
दुरुधरा खचरैरुभयस्थितैर्मुनिवरैरुदिता महदादरात् ॥ १ ॥

चन्द्रमासे दूसरे भावमें ग्रह बैठे हों तो सुनफा योग होता है और चन्द्रमासे बारहवें कोई ग्रह बैठे हों तो अनफा योग होता है और चन्द्रमासे दूर और बारहवें दोनों तरफ ग्रह बैठे हों तो दुरुधरानाम योग होता है, ये मुनीश्वरोंने कहे हैं ॥ १ ॥

अथ केमद्रुमयोगमाह।

निशाकराज्जन्मनि खेचरेन्द्रा धनव्ययस्थानगता न चेत्स्युः।
वदंति केमद्रुमनामयोगं लक्ष्मीवियोगं कुरुते स नूनम् ॥ २ ॥

अथ केमद्रुमयोग कहते हैं-चन्द्रमासे धन और बारहवें दोनों तरफ ग्रह कोई नहीं हो तो मुनीश्वर केमद्रुम नाम योग कहते हैं इसमें पैदा हुआ मनुष्य लक्ष्मीहीन होता है ॥ २ ॥

अथ सुनफायोगफलम्।

निजभुजार्जितमानसमुन्नतो विशदकीर्तियुतो मतिमान्सुखी।
ननु नरः सुनफाप्रभवो भवेन्नरपतेः सचिवः सुकृती कृती ॥ ३ ॥

अथ सुनफा योगका फल कहते हैं-अपनी भुजाओं करके मानको इकट्ठा करने वाला, बड़े यशवाला, बुद्धिमान्, सुखी, राजाका मंत्री और श्रेष्ठ कृत्य करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ अनफायोगफलम्।

उदारमूर्तिर्गुणकीर्तिशाली कंदर्पकेलिः शुभवाग्विलासः।
सद्वृत्तियुक्तः सततं विनीतः प्रभुर्नरः स्यादनफाभिधाने ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अनफा योग हो वह मनुष्य उदारमूर्ति, गुणवान्, यशवाला, कामकलासहित, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, श्रेष्ठ वृत्ति करनेवाला, निरन्तर नम्रतासहित और स्वामी होता है ॥ ४ ॥

अथ दुरुधरायोगफलम् ।

द्रविणवाहनवाहनसंयुतं सततं कुरुते नृपम् ।
दुरुधरातितरां त्रिदशैरिव सुनयनानयनाञ्चलकाकलम् ॥ ५ ॥

अथ दुरुधरायोगका फल कहते हैं—जिस मनुष्यके जन्मकालमें दुरुधरा योग हो वह मनुष्य धन वाहन और घोड़े सवारीके निरंतर सुखवाला, राजा, शत्रुओंका जीतनेवाला और श्रेष्ठ स्त्रीके नेत्रांचलकी कटाक्षका जाननेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ केमद्रुमयोगफलम् ।

विरुद्धवृत्तिर्मलिनः कुवेषः प्रेष्यो मनुष्यो हि विदेशवासी ।
कान्तासुतस्वसुखधनैर्विहीनो केमद्रुमे भूमिपतेः सुतोऽपि ॥ ६ ॥

अथ केमद्रुमयोगका फल कहते हैं—केमद्रुमयोगमें पैदा हुआ मनुष्य उलटी वृत्तिवाला, मलिन, बुरे वेषवाला, परदेशका वासी और स्त्री मित्र पुत्र तथा धन करके हीन होता है चाहे राजाका पुत्र हो ॥ ६ ॥

अथ केमद्रुमभंगमाह—

केन्द्राधिगामी यदि यामिनीशः स्यात्पद्मिनीनायकतः करोति ।
विभ्राजमानोन्नतिनैपुणानि कनिष्ठमध्योत्तमतायुतानि ॥ ७ ॥

अथ केमद्रुमभंगयोग कहते हैं—जो सूर्यसे चन्द्रमा केन्द्रमें बैठा हो तो उस बालककी शान, मान, उन्नति, निपुणता अधम होती है और सूर्यसे पणफरमें चन्द्रमा हो तो पूर्वोक्त फल सम कहना और सूर्यसे आपोक्लिमस्थानमें चन्द्रमा बैठा हो तो पूर्वोक्त फल उत्तम कहना चाहिये ॥ ७ ॥

प्रालेयरश्मिः परिसूतिकाले निरीक्ष्यमाणः सकलैर्नभोगैः ।
नरं चिरंजीवितसार्वभौमं करोति केमद्रुममाशु हत्वा ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमाको सब ग्रह देखते हों वह मनुष्य बहुत काल-तक जीनेवाला, राजाके समान होता है और केमद्रुम योगको नाश करता है ॥ ८ ॥

चतुर्षु केन्द्रेषु भवंति खेटा दुष्टोऽपि केमद्रुमयोग एषः ।
विहाय केमद्रुमतां नितांतं कल्पद्रुमस्स्यात्किलसत्फलाप्त्यै ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चारों केन्द्रोंमें ग्रह बैठे हों तो दुष्ट केमद्रुम योग भी हो तो निश्चय केमद्रुम योगको दूर करके कल्पद्रुम नाम योग होता है और श्रेष्ठ फलको प्राप्त कराता है ॥ ९ ॥

क्षितिसुतयुतजीवे सूतिकाले तुलायां
विलसति नलिनीनां नायकः कन्यकायाम्।
विधुरपि यदि शेषैर्वीक्षितो मेषवर्ती
जनयति नृपतीन्द्रं हन्ति केमद्रुमं च ॥ १० ॥

इति श्रीवराहमिहिराचार्यविरचिते जातकाभरणे सुनफानफादियोगाध्यायः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगलकरके सहित बृहस्पति तुलाराशिमें बैठा हो और सूर्य कन्याराशिमें बैठा हो और मेषराशिगत चन्द्रमा हो और बाकीके कोई ग्रह उसको नहीं देखते हों तो वह श्रेष्ठ राजा होता है, केमद्रुम योगका नाश करता है ॥ १० ॥

इति श्रीवंशबरेलीनिवासिज्योतिर्विद्-पंडित श्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी भाषाटीकायां सुनफादियोगाध्यायः ॥ १२ ॥

अथ प्रव्रज्याध्यायप्रारंभः।

येषां सूतौ राजयोगा नराणां प्रव्रज्या चेत्तापसास्ते भवेयुः।
वक्ष्ये संक्षेपेण तांस्तापसानां योगोत्पन्नान्संमतान्प्राक्तनानाम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राजयोग हो और प्रव्रज्यायोग भी हो तो वह मनुष्य तपस्वी होता है, उन तपस्वी योगोंको मैं संक्षेपसे पूर्वाचार्योंकी सम्मति लेकर कहता हूं ॥ १ ॥

अथ चतुरादिभिर्ग्रहैः प्रव्रज्यायोगः।

ग्रहैश्चतुर्भिर्यदि पंचभिर्वा षड्भिस्तथैकालयसंस्थितैश्च।
नश्यंति सर्वे खलु राजयोगाः प्रव्राजको योग इति प्रदिष्टः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चार वा पांच अथवा छः ग्रह एक राशिमें बैठे हों तो उस मनुष्यके सम्पूर्ण राजयोग नष्ट हो जाते हैं, केवल वह संन्यास ही योग कहा जाता है ॥ २ ॥

अन्यग्रहालोकनवर्जितश्चेज्जन्मेश्वरो नैव शनिं प्रपश्येत्।
मन्दोऽपि नो जन्मपतिं विलग्नं दीक्षाविपक्षाप्रभुरो नरः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें और ग्रहोंकी दृष्टिसे जन्मलग्नका स्वामी रहित हो

और लग्नेश शनैश्चरको न देखता हो और शनैश्चर बलहीन लग्नेशको न देखता हो तो वह दीक्षा लेकर संन्यासी होता है ॥ ३ ॥

जन्माधिराजो रविजत्रिभागे कुजार्कजांशेऽर्कजवीक्षितश्च।
करोति जातं कुटिलं कुशीलं पाखण्डिकं मंडनतत्परं च ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नका स्वामी शनिश्चरके द्रेष्काणमें मंगल वा शनैश्चरके नवांशमें बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य कुटिल, कुशील, पाखण्डका मण्डन करनेवाला तपस्वी होता है ॥ ४ ॥

होराशीतकरामरेन्द्रसचिवाः सौरेण संवीक्षिताः
पुण्यस्थे सुरमंत्रिणि प्रणयकृत्तीर्थाटनैर्मानवः।
कोणे पुण्यगृहाश्रितेऽप्यखचरैर्नैवेक्षिते दीक्षितः
स्यान्नूनं तदपि प्रसूतिसमये सद्राजयोगोद्भवः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यका जन्म चन्द्रमा वा बृहस्पतिकी लग्नमें हो और शनैश्चर देखता हो और नवमभावमें बृहस्पति बैठा हो तो वह मनुष्य विख्यात तीर्थोंमें घूमनेवाला साधु होता है और नवम, पंचम, शुभग्रह बैठा नहीं देखता हो तो भी संन्यासी होता है, चाहे उसके जन्मकालमें राजयोग हो ॥ ५ ॥

अथ प्रव्रज्याभेदमाह–

प्राव्राजिकोऽर्कादिबलक्रमेण वैखानसः खर्परधृक्सलिंगी।
दण्डी यतिश्चक्रधरश्च नग्नस्तत्प्रच्युतो जन्मपतौ जिते स्यात् ॥६॥

अब प्रव्रज्याके भेद कहते हैं–सूर्यादिकोंके बलकरके संन्यासयोग कहना चाहिये। संन्यासयोगकारक ग्रहोंमें सूर्य अधिक बली हो तो वह मनुष्य वैखानस (वनमें रहा हुआ) संन्यासी होता है। वैखानस उन तपस्वियोंको कहते हैं जो तपस्वी अग्निहोत्र करनेवाला, पर्वत, वन, नदीके किनारे आश्रम बनाकर रहे, तपस्या करनेवाला, सूर्यका आराधन करता है और जो चंद्रमा संन्यासयोगकारक ग्रहोंमें अधिक बली हो तो वह मनुष्य कपाली संन्यासी होता है, वृद्धश्रावकमतके धारण करनेवाले, हिंसासे रहित, भस्म करके सफेदवर्ण देहवाले, और सोमसिद्धांतमें तत्पर, कपालोंको धारण करनेवाले, नंगे रहनेवाले, शिवजीकी दीक्षावाले, उपवास करनेवाले, शंख और कमलके समान शोभायमान, खर्परभृक् संन्यासी कहाता है और संन्यासयोगकारक ग्रहोंमें मंगल अधिक बली हो तो वह मनुष्य लिंगी, गेरुए वस्त्र धारण करनेवाला संन्यासी होता है. अपनी शुद्धि करके देवताओंकी उपासना करनेवाला, शिखारहित, पांडुवस्त्र पहिरनेवाला, भीख मांगनेवाला काले कपडे पहिरनेवाला, इंद्रियोंको जीतनेवाला, संन्यासी,

होता है और बुध बली हो तो दंडी संन्यासी होता है तथा कपटका करनेवाला गारुडी मंत्रोंका आराधन करे, मयूरतंत्रके मतमें स्थित, मांसका खानेवाला देडी कहाता है और जिसके संन्यास योगकारक ग्रहोंमें बृहस्पति बलवान् हो तो यती तपस्वी एक दंड अथवा तीन दंडोंको धारण करनेवाला, गेरुआ कपडे पहिरनेवाला, वानप्रस्थ धर्मस्थित, ब्रह्मचर्यको प्राप्त, तीर्थोंमें स्नान करनेवाला होता है और संन्यास योग करनेवाले ग्रहोंमें शुक्र अधिक बलवान् हो तो वह चक्रका धारण करनेवाला, पशुपतिपक्षकी दीक्षामें स्थित हमेशा व्रत करनेवाला होता है और संन्यास योगकारक ग्रहोंमें शनैश्चर अधिक बली हो तो वह नंगा संन्यासी पाखंडमतमें स्थित नग्नव्रत धारण करनेवाला, श्रावकमतमें स्थित, कठिन तपस्या करनेवाला होता है और जो संन्यास योगकारक ग्रह किसी ग्रहसे युद्धमें हारा हो, अथवा जन्मपति पराजित हो तो वह संन्याससे पतित हो जाता है ॥ ६ ॥

एकस्थानस्थितैः खेटैः सर्वैश्च बलसंयुतैः ।
निरम्बरा निराहारा योगमार्गपरायणाः ॥ ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक स्थानमें संपूर्ण बलयुक्त ग्रह बैठे हों व संन्यास योगकारक हों तो वह मनुष्य नंगा होकर भोजन त्याग कर योगमार्गमें तत्पर होता है ॥ ७ ॥

एकस्थाने खेचराणां चतुर्णां योगश्चेत्स्यान्मानवानां प्रसूतौ ।
ते स्युर्भूमीपालवंशेऽपि जाताः कांतारांतर्वासिनः सर्वथैव ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक राशिमें चार ग्रहोंका योग बलवान् हो वह मनुष्य राजाके वंशमें भी पैदा हुआ हमेशा वनमें वास करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

पंचखेचरपतिर्यदि सूतो भूपतेरपि सुतः स च नित्यम् ।
कंदमूलफलभक्षणचित्तोऽत्यंतशांतिविजितेन्द्रियशत्रुः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पांच ग्रह एक भावमें संन्यास योगकारक बैठे हो वह मनुष्य राजाका भी पुत्र हमेशा कन्द, मूल, फल भोजन करनेमें चित्त करनेवाला, अत्यन्त शान्त, इंद्रियोंका जीतनेवाला होता है ॥ ९ ॥

एकत्र षण्णां गगनेचराणां प्रसूतिकाले मिलनं यदि स्यात् ।
ते केवलं शैलशिलातलेषु तिष्ठंति भूपालकुलेषु जाताः ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक स्थानमें संन्यास योगकारक छः ग्रहोंका योग हो वह मनुष्य चाहे राजाके वंशमें पैदा हो तो भी पर्वतोंकी शिलाके तले वास करनेवाला होता है ॥ १० ॥

प्रव्राजितानामथ भूपतीनां योगद्वयं चेत्प्रबलं प्रसूतौ ।
फलं विरुद्धं ह्यनुभूय पूर्वं ततो भजेद्राज्यपदाधिकारम् ॥ ११ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे
प्रव्रज्याध्यायः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रव्रज्यायोग और राजयोग दोनों बलवान् हों तो वह मनुष्य विरुद्ध फल भोगकर साधु हो करके भी राजा होता है ॥ ११ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां
श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां प्रव्रज्यायोगाध्यायः ॥ १४ ॥

अथारिष्टाध्यायारंभः ।

रिष्टाध्यायाधीनमायुर्नराणां यस्मात्तस्माद्रिष्टमत्र प्रवच्मि ।
यस्याभावे साधितायुःप्रमाणे प्रामाण्यं स्यात्संभवे सर्वथैव ॥ १ ॥

मनुष्योंका आयुर्दाय अरिष्टयोगोंके आधीन होता है इसवास्ते पहिले अरिष्टयोग कहते हैं-जिसके अरिष्टयोग न हो उसका आयुर्दाय साधन किये हुए आयुके प्रमाणके तुल्य दीर्घायु होता है ॥ १ ॥

रिष्टयोगः १ अथारिष्टयोगाः ।

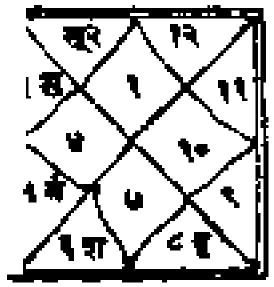

भौमालयेऽर्कारशनीन्दुदृष्टे गृहेऽष्टमे चित्रशिखण्डिसूनुः । अदृष्टमूर्तिर्भृगुणात्र योगे प्राणैर्वियोगं लभते मनुष्यः ॥ २ ॥

अब अरिष्टयोग कहते हैं-जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशि गत बृहस्पति अष्टममें बैठा हो और सूर्य, मंगल, शनैश्चर, चन्द्रमा करके दृष्ट हो और शुक्र नहीं देखता हो तो वह मनुष्य थोडे काल जीता है ॥ २ ॥

अथ त्रिभिर्वर्षैः रिष्टयोगः ।

त्रिभिर्वर्षैरिष्ट योगः ३

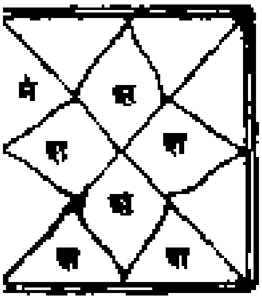

षष्ठाष्टमे वापि चतुष्टये वा विलोमगामी कुज-मंदिरस्थः । बलान्वितेनावनिजेन दृष्टो वर्ष-स्त्रिभी रिष्टकरः शनिः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे वा आठवें वा केंद्र १ । ४ । ७ । १० में वक्री होकर शनैश्चर बैठा हो और बल करके मंगल उसको देखता हो तो वह मनुष्य तीन वर्षमें रोग पाता है ॥ ३ ॥

नवमवर्षे मृत्युयोगः ४

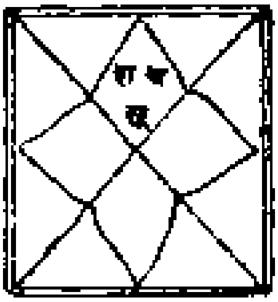

अथ नवमवर्षे मृत्युयोगः ।

चंद्रार्कयुग्जन्मनि भानुसूनुः करोति नूनं निधनं नवाब्दैः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा और सूर्य करके सहित शनैश्चर बैठा हो उस मनुष्यको नवम वर्षमें मृत्यु होता है ॥

अथ मासेन मृत्युयोगः ।

मासेन मृत्युयोगः ४

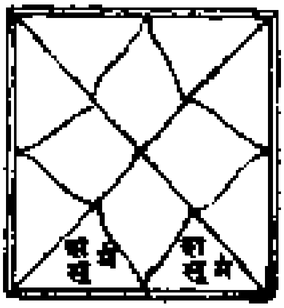

मासेन मंदावनिसूनुसूर्याश्छिद्रेऽरिगेहाश्रि-तताःसमेताः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर, मंगल और सूर्य मिलकर अष्टम वा छठे बैठे हों वह मनुष्य एक मासमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

पक्षाभ्यां मृत्युयोगः ५

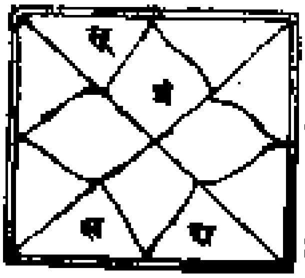

एकोऽपि पापोऽष्टमगोऽरिगेहे पापेक्षितो-ऽब्देन शिशुं निहन्यात् । सुधारसो यद्यपि येन पीतः किमत्र चित्रं न हि येन पीतः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक भी पापग्रह अष्टम वा छठे बैठा हो और पापग्रह करके देखा हुआ हो तो

उस बालकने चाहे अमृत क्यों नहीं पिया हो तो भी एक वर्षमें मृत्युको प्राप्त होगा, फिर क्या आश्चर्य है कि जिसने अमृत नहीं पिया है एक वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठवर्षे रिष्टयोगः ।

षष्ठवर्षे रिष्टयोगः ६

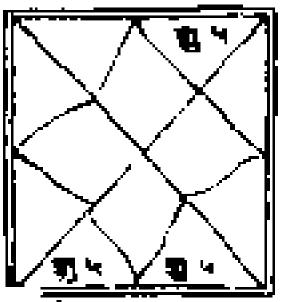

सूर्येन्दुगेहे दनुजेड्यमन्त्री
व्ययाष्टमारिस्थितसौम्य-
ः। सर्वैः प्रदृष्टः खलु
षड्भिरब्दैर्जातस्य जंतो-
र्वितनोति रिष्टम् ॥ ६ ॥

षष्ठवर्षे रिष्टयोगः ६

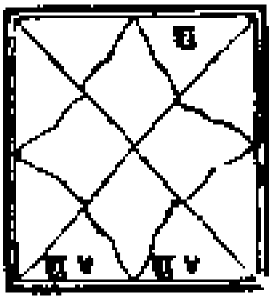

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंह वा कर्क राशिगत शुक्र वा छठे आठवें बारहवें बैठा हो और शुभ ग्रह उसको सब देखते हों तो उस बालकको छठे वर्ष रिष्ट होता है ॥ ६ ॥

अथ चतुर्भिर्वर्षैरिष्टयोगः ।

चतुर्थवर्षे रिष्टयोगः ७

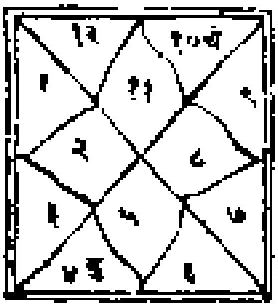

सोमस्य सूनुर्यदि कर्क-
टस्थः षष्ठेऽष्टमे वा भवने
विलग्नात् । चन्द्रेण दृष्टो
ऽब्दचतुष्टयेन जातस्य
जंतोः प्रकरोति रिष्टम्॥७॥

चतुर्थवर्षे रिष्टयोगः ७

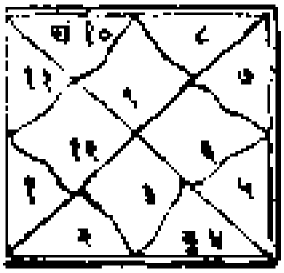

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुध लग्नसे छठे वा आठवें स्थानमें बैठा हो और चन्द्रमा करके दृष्ट हो तो उस बालकको चौथे वर्षमें, अरिष्ट करता है ॥ ७ ॥

केतूदयो मे प्रभवेच्च यस्मिंस्तस्मिन्प्रसूतिर्यदि यस्य जंतोः ।
स्यात्तस्य मासद्वितयेन नाशो विनिश्चयेनेति वदंति पूर्वे ॥८॥

जिस मनुष्यका जन्म धूमकेतु ताराके उदयके समयमें हो वह बालक दो मासमें निश्चय करके मरता है ॥ ८ ॥

अथ शीघ्रमृत्युयोगः ।

शीघ्रमृत्युयोगः ९

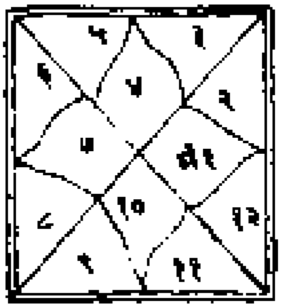

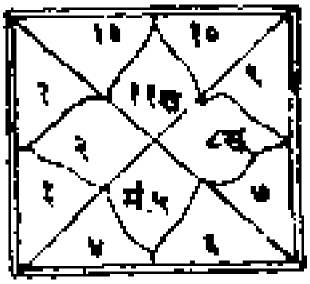

शीघ्रमृत्युयोगः ९

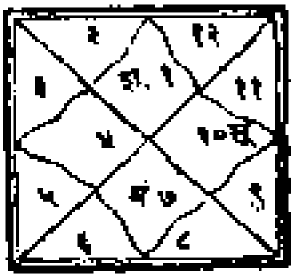

रणेऽर्को धरणीसुतस्य गेहेऽथवार्कात्मजधामसंस्थः ।
पापैरनेकैश्च निरीक्ष्यमाणः प्राणैर्वियोगं स तु याति तूर्णम् ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें सूर्य मेष वृश्चिक वा मकर कुम्भ राशिमें बैठा हो और पापग्रह देखते हों तो वह बालक शीघ्रही मृत्युको पाता है ॥ ९ ॥

अथ सप्तमवर्षे मृत्युयोगः ।

लग्ने भवंति द्रेष्काणाः शृंखलापाशपक्षिणाम् ।
सपापा मरणं कुर्युः सप्तवर्षैर्न संशयः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नमें निगड पाश पक्षि द्रेष्काण हो और पापग्रहयुक्त हों तो वह बालक सातवें वर्षमें मरता है इसमें संशय नहीं है ॥ १० ॥ मीन कर्क राशिका अंतिम और वृश्चिक राशिका प्रथम द्वितीय द्रेष्काण निगड संज्ञक होता है, वृष राशिका पहिला, मकरका पहिला द्वितीय द्रेष्काण पाश कहाता है और तुला राशिका द्वितीय और अंतिम, सिंह राशिका पहिला, कुम्भ राशिका पहिला द्रेष्काण पक्षिसंज्ञक होता है ॥ १० ॥

दशाब्दे षोडशाब्दे वा मृत्युयोगः ११

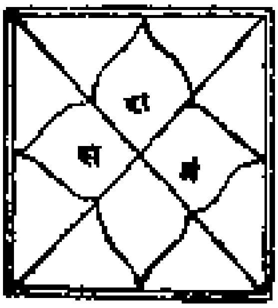

राहुर्भवेज्जन्मनि केंद्रवर्ती क्रूरग्रहैश्चापि निरीक्षितश्चेत् । करोति वर्षैर्दशभिर्विनाशं वदंति वा षोडशभिश्च केचित् ॥ ११ ॥

दशाब्दे वा यो० ११

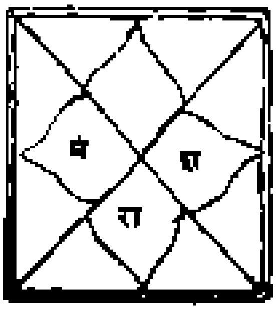

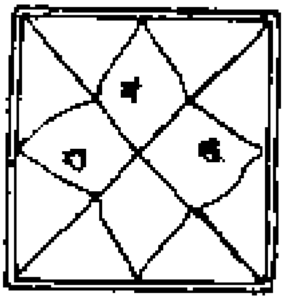

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहु केन्द्र १ । ४ । ७ । १० वर्षों बैठा हो और पापग्रह उसको देखते हों तो उस बालकका दशवें वर्षमें नाश करता है, किसी आचार्यके मतमें सोलहवें वर्ष मृत्यु करता है ॥ ११ ॥

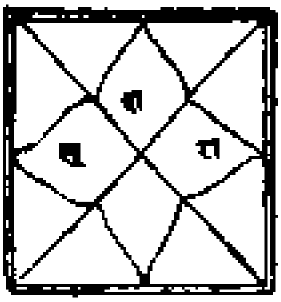

अथाष्टवर्षे मृत्युयोगः ।

षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेन्द्राः पापास्त्रिकोणे यदि जन्मलग्नात् । क्रूरेक्षितास्ते निधनं विदध्युर्वर्षाष्टकेनैव खलग्रहाः ॥ १२ ॥

अष्टवर्षे मृत्युयोगः १२

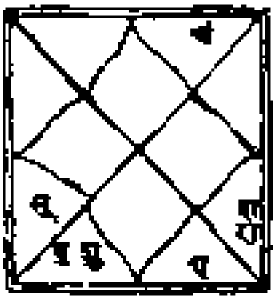

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे आठवें शुभ ग्रह बैठे हों और पापग्रह पञ्चम नवम बैठे हों और पापग्रहोंसे दृष्ट हों तो आठवें वर्षमें मृत्यु करते हैं ॥ १२ ॥

अथ शीघ्रमृत्युयोगः ।

शीघ्रमृत्युयोगः १३

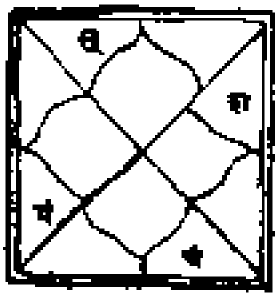

सूतिकाले भवेच्चंद्रः षष्ठो वाऽष्टमसंस्थितः । बालस्य कुरुते सद्यो मृत्युं पापविलोकितः ॥ १३ ॥

शीघ्रमृत्युयोगः १४

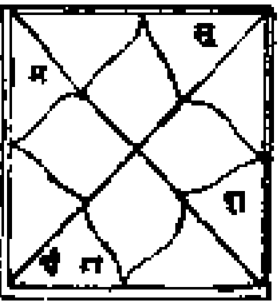

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा छठे वा आठवें बैठा हो और पापग्रह देखते हों तो वह बालक शीघ्र मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

शुभाशुभालोकनतुल्यतायां वर्षैश्चतुर्भिर्निधनं तदानीम् । न्यूनाधिकत्वे सुधिया विधेयस्त्रैराशिकेनैव विनिश्चयोऽयम् १४

जो षष्ठाष्टमस्थित चन्द्रमाको शुभ ग्रह और पापग्रह दोनों बराबर देखते हों तो वह बालक चौथे वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है और जो कमती शुभग्रह देखते हों पापग्रह ज्यादे देखते हों वा पापग्रह कमती देखते हों और शुभग्रह ज्यादे देखते हों तो त्रैराशिक गणितसे अरिष्टका विचार करना चाहिये ॥ १४ ॥

षष्ठेऽष्टमे मासि मरणयोगः १५ षष्ठेऽष्टमे मासि मरणयोगः १५

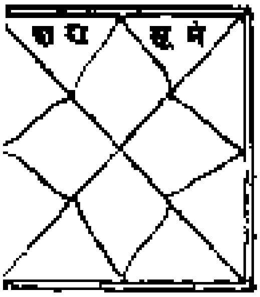

धनान्तगैर्वाऽरिमृतिस्थितैर्वा धर्माष्टमस्थैर्व्ययशत्रुगैर्वा। क्रूरग्रहे यो जननं प्रपन्नः षष्ठेऽष्टमे मासि मृतिं प्रयाति ॥ १५ ॥

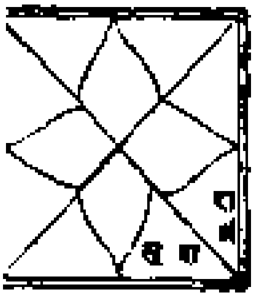

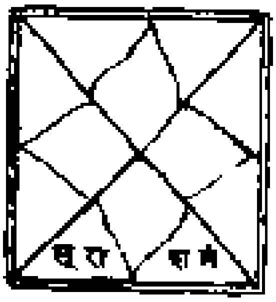

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह दूसरे बारहें बैठे हों 'प्रथमो योगः' अथवा छठे आठवें बैठे हों 'द्वितीयो योगः' अथवा अष्टम नवमें बैठे हों तो 'तृतीयो योगः' अथवा छठे बारहें स्थानमें बैठे हों तो वह बालक छठे वा आठवें महीनेमें मरता है ॥ १५ ॥

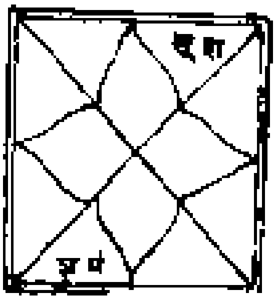

मासेन मृत्युयोगः १६

षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेन्द्रा विलोमगैः पापखगैः प्रदृष्टाः । शुभैरदृष्टा यदि ते भवंति मासेन नूनं निधनं तदानीम् ॥ १६ ॥

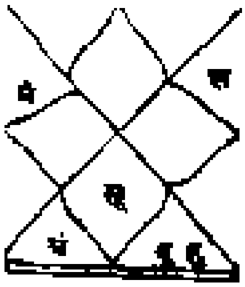

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे आठवें शुभ ग्रह बैठे हों और वक्री होकर पापी ग्रह देखते हों और शुभ ग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य एक मासमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अथ राशिसमानवर्षे मृत्युयोगः ।

समानवर्षे मृत्युयोगः १७

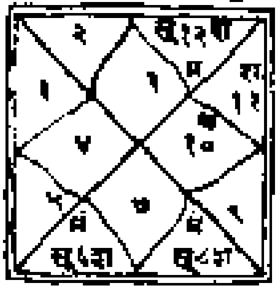

विलग्नजन्माधिपती भवेतामस्तंगतावष्टरिपुव्ययस्थौ । जातस्य जंतोर्मरणप्रदौ तौ वदंति राशिप्रमितैर्हि वर्षैः ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्न और जन्मराशिका स्वामी छठे आठवें बारहें अस्तगत होकर बैठे हों तो वह बालक राशिके तुल्य वर्षोंमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

अथ राशिसमानवर्षे मृत्युयोगः ।

चतुर्थमासे मरणयोगः १८

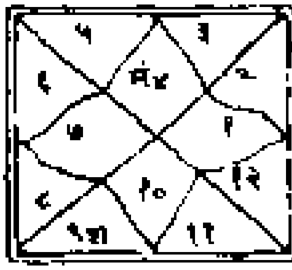

राशिसमानवर्षे मृत्युयोगः १८

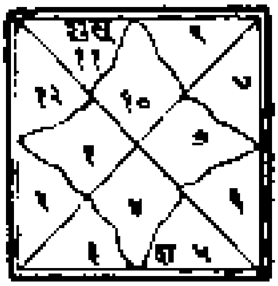

होराधिपः पापखगैः प्रदृष्टश्चतुर्थमासे मृतिकृन्मृतिस्थः । जन्मेश्वरस्त्रिधने दिनेशः शुक्रेक्षितोऽब्दैर्भवनप्रमाणैः ॥१८॥

मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नका स्वामी अष्टम बैठा हो और पापग्रहोंमें दृष्ट हो तो वह चौथे मासमें मृत्युको प्राप्त होता है और जन्मलग्नका स्वामी अष्टम बैठा हो और शुक्र सूर्यसे दृष्ट हो तो वह बालक राशिके समान वर्षोंमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

शीघ्रमृत्युयोग. १९

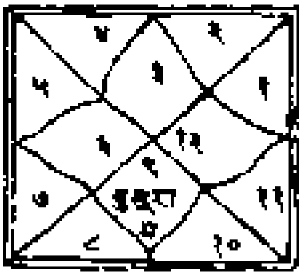

मासेन मरणयोगः १९

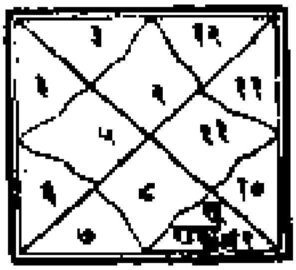

होराधिपः पापयुतः स्मरस्थः करोति नाशं खलु जीवितस्य । मासेन जन्माधिपतिस्तु तद्वत्पापारंध्रगृहाश्रितः ।

मनुष्यके जन्मकालमें लग्नका स्वामी पापग्रह सहित सप्तम बैठा हो तो वह बालक शीघ्र मर जाता है (एको योगः) और लग्नेश पापग्रहसहित अष्टम भावमें बैठा हो तो एक मासमें बालक मर जाता है ॥ १९ ॥

नवमाब्दे मृत्युयोगः २०

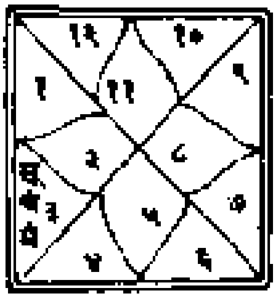

शुक्रो भवेदारदिवाकराभ्यां निशाकरश्चा-
स्तखगैर्न दृष्टः । स्वमृत्युगेहोपगतो विनाशं
करोति वर्षे नवमेऽर्भकस्य ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा सूर्य मंगल करके सहित पश्चिम स्थानमें बुधकी राशिमें बैठा हो तो वह मनुष्य नवम वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ २० ॥

शीघ्रमरणयोगः

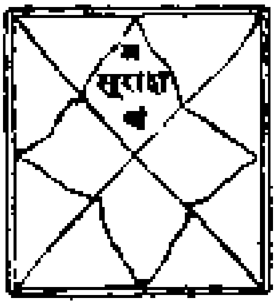

शीघ्रमरणयोगः

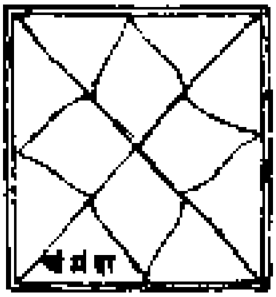

लग्नास्तरंध्रान्त्यगते शशांके पापान्विते सौम्यखगैरदृष्टे । केंद्रेषु सौम्यग्रहवर्जितेषु कीनाशदेशं हि शिशुः प्रयाति ॥ २१ ॥

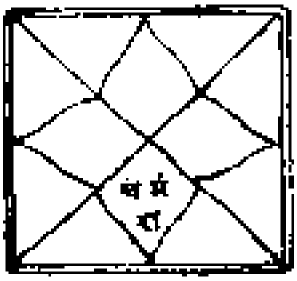

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न सप्तम अष्टम चन्द्रमा पापग्रहों करके सहित बैठा हो और शुभ ग्रहोंसे अदृष्ट हो और कोई शुभ ग्रह केन्द्रमें न बैठे हों तो वह बालक यमलोकको शीघ्र ही जाता है २१

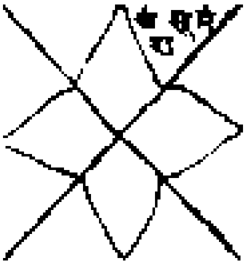

अथ शीघ्रमृत्युयोगः ।

रन्ध्रालये वाथ चतुष्टयेषु खलग्रहाणां मिलनं यदि स्यात् ।
कलानिधौ क्षीणकलाकलापे लग्नस्थिते नश्यति यः प्रसूतः २२

शीघ्रमृत्युयोगः २१

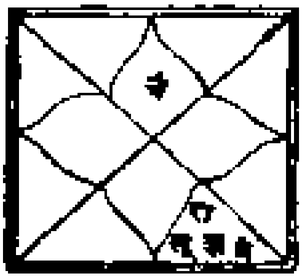

शी.

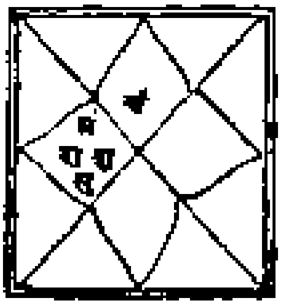

शी.

२२.

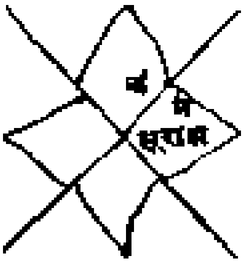

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टम वा केन्द्रस्थानमें पापग्रह बैठे हों और क्षीण चन्द्रमा लग्नमें बैठा हो तो वह बालक शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ॥ २२ ॥

२२.

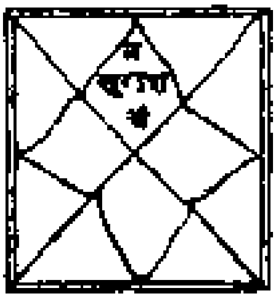

अथ वज्रमुष्टियोगः।

वज्रमुष्टियोगः २३

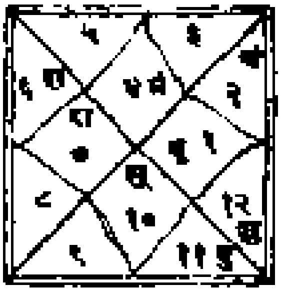

लग्ने कुलीरेऽप्यथवालिसंज्ञे खलग्रहाः पूर्वदले यदि स्युः। सौम्याः परार्धे खलु वज्रमुष्टियोगोऽयमुक्तः प्रकरोति रिष्टम् ॥ २३ ॥

वज्रमुष्टियोगः २३

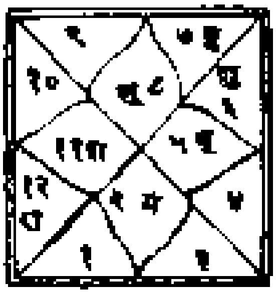

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्न कर्क वा वृश्चिक हो और पापग्रह लग्नसे लेकर सातवें भावतक बैठे हों और शुभग्रह सातवें घरसे लेकर लग्नपर्यन्त बैठे हों तो वज्रमुष्टि नाम योग होता है, इसमें पैदा हुआ बालक अरिष्टको प्राप्त होता है ॥२३॥

शीघ्रमृत्युयोगः २४

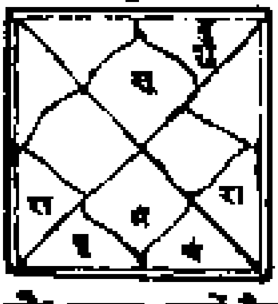

व्ययारिरंध्रेषु शुभाभिधानास्त्रिकोणकेन्द्रेषु भवंति पापाः। सरोजबन्धोरुदये प्रसूतिर्यस्याऽन्यलोकं त्वरया स याति ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें और छठे आठवें शुभ ग्रह बैठे हों और त्रिकोणी केन्द्रमें पापग्रह बैठे हों और चन्द्रमा लग्नमें बैठा हो तो वह बालक शीघ्र ही मृत्युको प्राप्त होता है २४

एकादशवर्षमृत्युयोगः २५

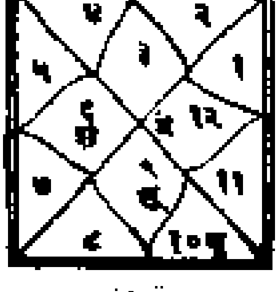

सौरस्यालयसंस्थो देवगुरुर्निधनभावगो लग्नात्। पापग्रहदृष्टतनुर्निधनायैकादशे हि तुल्यः स्यात् ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर वा कुंभराशिगत बृहस्पति अष्टम भावमें बैठा हो और पापग्रह उसको देखते हों तो वह बालक ग्यारहवें दिन मृत्युको प्राप्त होता है ॥ २५ ॥

शीघ्रमरणयोगः २६

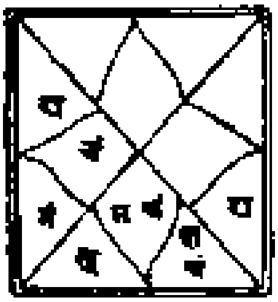

रंध्रांबुजायाभवनेषु खेटा विधौ च पापद्वय-
मध्ययाते। यस्य प्रसूतिः स तु याति कामं
यमस्य धाम प्रवदन्ति पूर्वे ॥ २६ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें अष्टम चतुर्थ सप्तम भावमें चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें बैठा हो वह बालक शीघ्र ही यमलोकको जाता है ॥ २६ ॥

संध्याद्वये भांत्यगताश्च पापाश्चंद्रस्य होरा यदि जन्मकाले।
चतुर्षु केंद्रेषु शशांकपापाः स याति बालः किल कालगेहम्॥२७॥

जिस बालकका सायं प्रातःकालकी सन्ध्यामें जन्म हो और पापग्रह राशिके अन्तमें बैठे हों और चन्द्रमाकी होरामें जन्म हो और चन्द्रमा करके सहित पापग्रह केन्द्रमें बैठे हों तो वह बालक शीघ्र मर जाता है ॥ २७ ॥

माता सह मरणयोगः २८

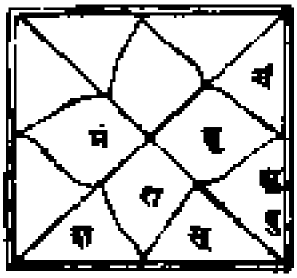

स्मराष्टमस्था यदि पापखेटाः पापेक्षिताः
साधुखगैर्न दृष्टाः। करोति रिष्टं त्वरयार्भ-
कस्य साकं जनन्याभिमतं बहूनाम् ॥२८ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें सातवें आठवें पापग्रह बैठे हों और पापग्रह देखते हों और शुभ ग्रह नहीं देखते हों तो वह बालक मातासहित अरिष्टको प्राप्त होता है ॥ २८ ॥

माता सह मरणयोगः २९ अथ माता सह मृत्युयोगः। माता सह शस्त्रघात०

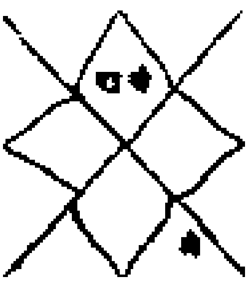

निशोपरागे स्वकुभान्विते-
न्दुर्लग्नस्थितो भूमिसुतोऽ-
ष्टमस्थः। ततो जनन्या
सह बालकस्य मृत्युस्तथा-
र्के सति शस्त्रघातः ॥२९॥

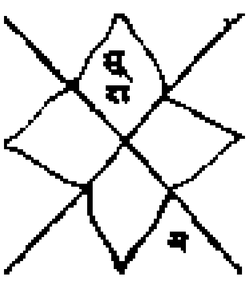

चन्द्रग्रहणके समय पापग्रहके सहित चन्द्रमा लग्नमें बैठा हो और मंगल अष्टम बैठा हो तो वह बालक मातासहित मृत्युको प्राप्त होता है और सूर्य पापग्रह सहित लग्नमें बैठा हो और मंगल अष्टम बैठा हो और सूर्यग्रहणके समयका जन्म हो तो वह बालक माताकरके सहित शस्त्रसे मारा जाता है ॥ २९ ॥

निश्चित मृत्युयोग: २०

अनिश्चित मृत्युयोग: २०

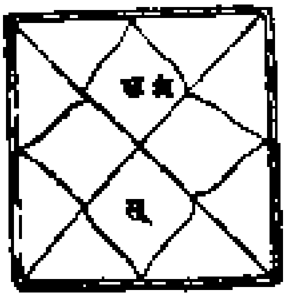

भूमीसुते वार्कसुते विलग्ने भानौ स्मरस्थानगतेऽन्यथा वा। शुक्रे तयोरन्यतमेन चन्द्रेऽस्मिरेण मृत्युःपरिवेदितव्यः ॥३०॥

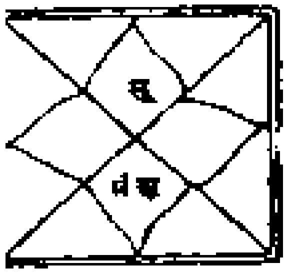

२०

२०

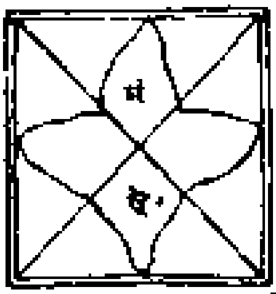

जिस बालकके जन्मकालमें मंगल वा शनैश्चर लग्नमें बैठा हो और सूर्य सातवें बैठा हो अथवा लग्नमें सूर्य, सातवें मंगल वा शनैश्चर बैठा हो और अन्य स्थानोंमें चन्द्रमा बैठा हो तो वह बालक थोड़े कालमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ३० ॥

पापैर्विलग्नाष्टमधामसंस्थैः क्षीणे विधौ द्वादशभावयाते। केंद्रेषु सौम्या न भवंति नूनं शिशोस्तदानीं निधनं प्रकल्प्यम् ॥ ३१ ॥

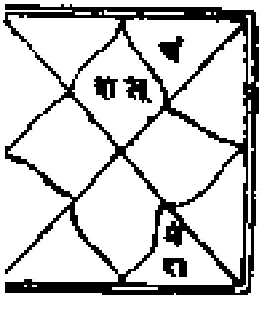

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह लग्न और आठवें बैठे हों और क्षीण चन्द्रमा बारहें बैठा हो और केंद्रमें शुभ ग्रह नहीं हो तो वह बालक शीघ्र मर जाता है ॥ ३१ ॥

शीघ्रमरणयोगः ११ शीघ्रमृत्युयोगः १२

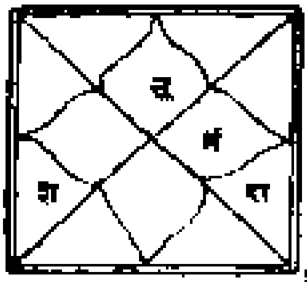

त्रिकोणकेंद्रेषु भवंति पापाः शुभग्रहालोकनवर्जिताश्चेत् । लग्नोपयाते सति भास्करे वा निशाकरेरिष्टसमुद्भवःस्यात् ३२

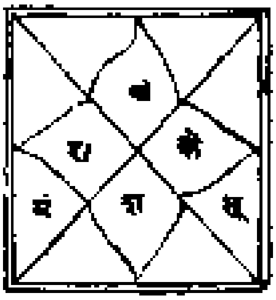

जिस बालकके जन्मकालमें पंचम नवम और केंद्रोंमें पापग्रह बैठे हों उनको शुभ ग्रह नहीं देखते हों और लग्नमें सूर्य अथवा चंद्रमा हो तो उस बालकको शीघ्र ही रोग होता है ॥ ३२ ॥

नवमेऽब्दे मृत्युयोगः १३

भानुभानुतनयोशनसःस्युश्चेत्प्रसूतिसमये खलयुक्ताः । यद्यपीन्द्रगुरुणा परिदृष्टा रिष्टदास्तनुभृतां नवमेऽब्दे ॥ ३३ ॥

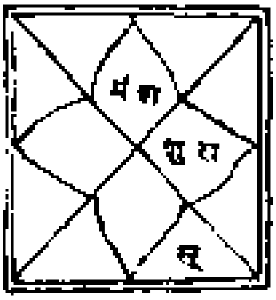

जिस बालकके जन्मकालमें सूर्य, शनैश्चर और शुक्र पाप ग्रहों करके युक्त हों और उनको बृहस्पति देखता हो तो उस बालकको नवमवर्षमें रोग होता है ॥ ३३ ॥

नवमवर्षे मृत्युयोगः १४

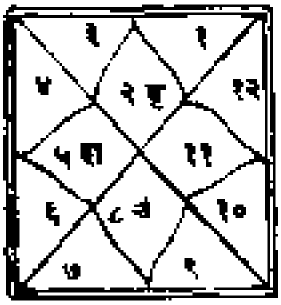

कामिनी भवनगस्तु हिमांशुर्लग्नगो मृतिपतिः शनिदृष्टः । रिष्टदो नवसमाभिरितीरितो जातकज्ञमुनिभिः पुरातनैः ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें चंद्रमा बैठा हो लग्नमें अष्टमभावपति बैठा हो, उसको शनैश्चर देखता हो तो उस बालकको नवमवर्षमें रोग होता है ॥ ३४ ॥

इष्टे रिष्टे नाम हष्टेऽस्यकाले शाल्यांशौ स्यालयं वा विलग्नम् । वीर्योपेतं संगते पापदृष्टे शस्या युक्ते मृत्युकालोऽब्दमध्ये ३५ ॥

नहीं कहे हुए रिष्टकालमें एक वर्षमें रिष्ट करता है और जिस रिष्ट योगमें समयका नियम नहीं कहा है उसमें योग करनेवाले ग्रहोंके बीचमें जो ग्रह बली हो उसकी राशिमें जब चंद्रमा आवे तब मृत्यु करता है अथवा चंद्रमा जन्म लग्नमें जिस राशिका है उसी राशिमें वा लग्नमें फिर अपने चारक्रमसे आवे तब मृत्यु करता है अथवा बलवान् पापग्रह देखते हों तब मृत्युको देता है ॥ १५ ॥

मृत्युयोगः १६

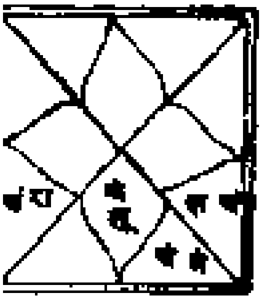

लग्नत्रिकोणाष्टमसप्तमस्थे चन्द्रे सपापेऽप-
चयं प्रयाते । शुभैर्न युक्ते यदि न प्रदृष्टे
रिष्टं भवेदत्र किमत्र चित्रम् ॥ १६ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्न और पंचम नवम सातवें अष्टम चंद्रमा पापग्रहों करके सहित हो तथा न शुभग्रह देखते हों और न शुभग्रह युक्त हों तो उसकी मृत्यु हो इसमें क्या आश्चर्य है ॥ १६ ॥

पंचमेऽब्दे मृत्युयोगः १७

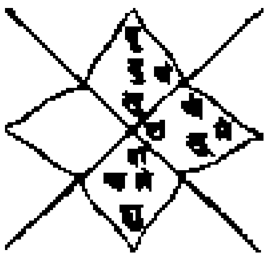

सूर्यज्ञजीवाः शशिभौमयुक्ताः सूर्यारमंदाश्च
यदीन्दुयुक्ताः । प्रसूतिकाले मिलिता यदि
स्युर्नाशः शिशोरब्दकपंचकेन ॥ १७ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें सूर्य, बुध, बृहस्पति चंद्रमा एक भावमें पड़े (एको योगः) अथवा शनि, मंगल, शुक्र चंद्रमा एक भावमें पड़े (द्वितीयो योगः) अथवा सूर्य, मंगल शनैश्चर चन्द्रमा एक भावमें बैठे हों तो वह बालक पांचवें वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

विलग्ननाथो भवनप्रमाणैर्वर्षैर्विनाशं कुरुते रिपुस्थः ।
मासैर्द्रेक्काणाधिपतिर्लवेशो दिनैर्मुनीन्द्राः प्रवदंति सर्वे ॥ १८ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्नका स्वामी छठे बैठा हो तो जिस राशिमें बैठा हो उस राशिसमान वर्षोंमें मृत्यु करता है और द्रेष्काणका स्वामी छठे बैठा हो तो उतने महीनोंमें मृत्यु करता है और नवांशपति छठे बैठा हो तो उतने दिनोंमें मृत्यु करता है यह सब मुनीश्वरोंने कहा है ॥ १८ ॥

षोडशाहे मृत्युयोगः ३८

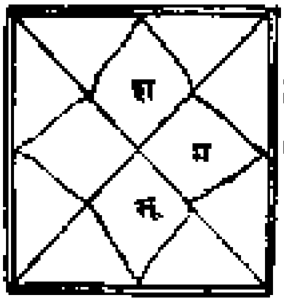

लग्ने शनिः क्रूरनिरीक्षितश्चेच्छिशोर्विनाशं खलु षोडशाहात्। करोति मासेन च पापयुक्तः पापैर्विनाशं खलु वत्सरेण ॥ ३९ ॥

षोडशाहे मृत्युयोगः ३९

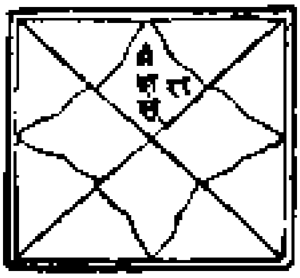

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें शनैश्चर बैठा हो और पापग्रह उसे देखते हों तो वह सोलवें दिनमें मरता है और लग्नमें पापग्रह करके युक्त शनैश्चर बैठा हो तो महीने भरमें मर जाता है और पापग्रहों करके युक्त न हो और न पापग्रह देखते हों तो सालभरमें मरता है ॥ ३९ ॥

रवीन्दुयुक्पापनिरीक्षितो ज्ञश्चैकादशाब्दैः कुरुते विनाशम्।
लग्नेऽर्कमन्दावनिजाः कृशेन्दुः स्मरे षडब्दैरथ सप्तभिर्वा ॥४०॥

सप्तमाब्दे मृत्युयोगः ४०

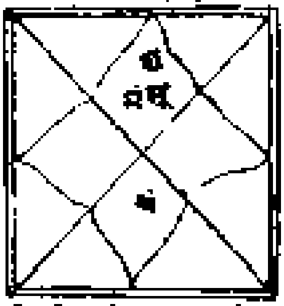

एकादशाब्दे मृत्युयोगः ४१

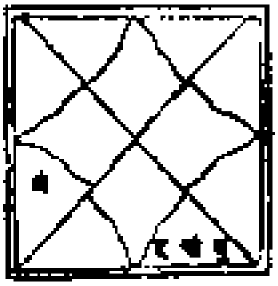

जिस बालकके जन्मकालमें सूर्य चन्द्रमा करके युक्त बुध पापग्रहों करके दृष्ट हो तो ग्यारहें वर्षमें वह बालक मरता है, जिसके जन्मलग्नमें सूर्य शनैश्चर मंगल बैठे हों और क्षीण चन्द्रमा सातवें बैठा हो तो छठे वा सातवें वर्षमें मृत्यु करता है ॥ ४० ॥

षष्ठाब्दे मृत्युयोगः।

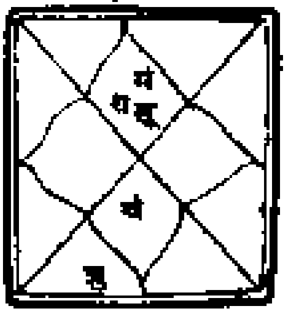

कृशः शशांकः स्मरगो विलग्ने मंदारशुक्रा गुरुदृष्टिहीनाः। विनाशने तेऽब्दकसप्तकेन कुर्वंति जातस्य विनिश्चयेन ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चन्द्रमा सातवें बैठा हो और लग्नमें शनि मंगल बैठे हों और शुक्र बृहस्पतिकी दृष्टिसे हीन हों तो वह बालक सातवें वर्षमें मरता है ॥ ४१ ॥

द्वितीयेऽब्दे मृत्युयोगः।

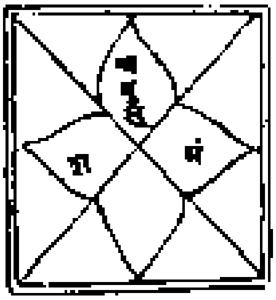

चन्द्रः सचान्द्रिर्यदि केन्द्रसंस्थः सूर्याल्लुप्तः कुजमंददृष्टः। वर्षद्वयेन प्रकरोति रिष्टं स्पष्टं वशिष्ठाद्य एवमूचुः ॥ ७२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा बुध केन्द्रमें बैठे हों और सूर्य करके लुप्त हों वह बालक दो वर्षमें मरता है, जो मंगल शनैश्चर देखते हों, यह स्पष्ट वशिष्ठादिक आचार्योंने कहा है ॥ ७२ ॥

वर्षद्वयान्ते रिष्टयोगः ७३

निशापतिर्लग्नपतेः सकाशाच्चेदष्टमस्थः कृशतां प्रयातः। क्रूरैश्च दृष्टश्च शुभैर्न दृष्टो वर्षद्वयान्ते स करोति रिष्टम् ॥ ७३ ॥

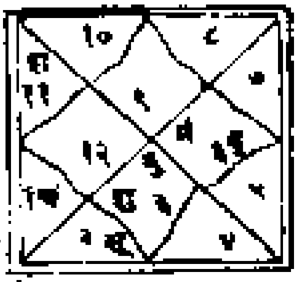

जिस बालकके जन्मकालमें चंद्रमा लग्नेशसे अष्टम बैठा हो और क्षीण हो और शुभग्रह नहीं देखते हों और पापग्रह देखते हों तो वह बालक दो वर्षमें मर जाता है ॥ ७३ ॥

नवमेऽब्दे मृत्युयोगः।

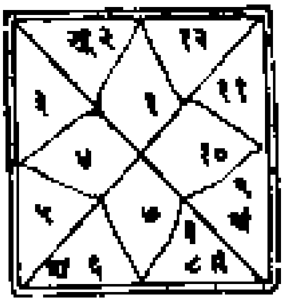

लग्नाधिपः पापखगो नवांशे चन्द्रस्य च द्वादशगः शशांकात्। पापेक्षितो मारयति प्रसूतौ शिशुं नवाब्दैः खलु कीर्तयंति ॥ ७४ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्नका स्वामी पापग्रह हो और चंद्रमाके नवांशमें बैठा हो और चंद्रमासे बारहें बैठा हो और पापग्रह देखते हों तो वह बालक नवम वर्षमें मरता है ॥ ७४ ॥

राशिसमानवर्षे मृत्युयोगः।

लग्नेश्वरः सूर्यमयूखलुप्तोऽष्टमेश्वरेण प्रविलोक्यमानः। रिष्टंकरो राशिसमानवर्षैः रुवाहारि नरस्य जन्म ॥ ७५ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्नका स्वामी करके लुप्त हो और अष्टमेश करके दृष्ट हो तो जिस

राशिमें लग्नेश बैठा हो उस राशिके समान वर्षोंमें उस बालकको रिष्ट होता है यह पंडितजन मनुष्योंके जन्मकालमें कहते हैं ॥ ७५ ॥

सप्तमाब्दे मृत्युयोगः।

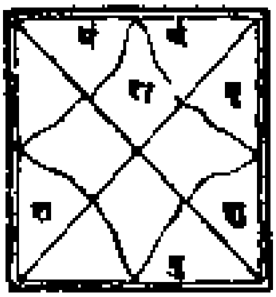

अदृश्यभागे यदि पापखेटा दृश्ये विभागे शुभदा भवंति। स्वभानुनामा तनुभावगामी जीवेत्प्रसूतोऽब्दकसप्तकं हि ॥ ७६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह लग्नसे सातवें भाव तक बैठे हों और शुभ ग्रह सातवें भावसे लग्नपर्यन्त बैठे हों और लग्नमें राहु बैठा हो तो वह बालक सातवें वर्षमें मरता है ॥ ७६ ॥

अथ द्वादशाब्दे मृत्युयोगः।

द्वादशाब्दे मृत्युयोगः।

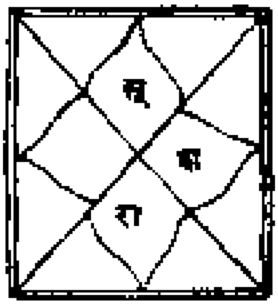

सिंहीसुतः सप्तमभावसंस्थः शनैश्चरादित्यनिरीक्षितश्चेत्। नालोकितः सौम्यखगैस्तु जीवेद्वर्षाणि हि द्वादश यः प्रसूतः ७७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहु सातवें बैठा हो उसको शनैश्चर और सूर्य देखता हो और शुभग्रह कोई नहीं देखता हो तो वह बालक बारहवें वर्षमें मर जाता है ॥ ७७ ॥

सप्तमाब्दे मृत्युयोगः ७७

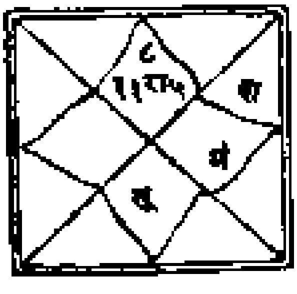

सिंहालिकुंभस्थितसैंहिकेयो विलोकितः क्रूरखगैर्यदि स्यात्। वर्षाणि सप्तैव तदीयमायुः प्रकीर्तितं जातकशास्त्रविद्भिः॥७८॥

जिस बालकके जन्मकालमें सिंह कुंभ वृश्चिक राशिमें राहु बैठा हो और उसको पापग्रह देखते हों तो वह बालक सात वर्षतक जीता है यह जातकग्रन्थोंके जाननेवाले कहते हैं ॥ ७८ ॥

केतूदयः स्यात् प्रथमं ततश्चेन्निर्घातवाताशनयो भवंति।
यो रौद्रसार्पाख्यमुहूर्तजन्मा प्राप्नोति कामं यममंदिरं सः ७९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धूमकेतु तारेका उदय हो और जन्मसे पहिले वा पीछे निर्घात शब्द हो अथवा प्रचंड वायु चले अथवा वज्रपात हो अथवा जन्म समयमें रौद्र,सार्प मुहूर्त हो ऐसे समयमें उत्पन्न बालक शीघ्र ही यमलोक जाता है॥

चन्द्रविशेषैर्मृत्युयोगः ५०

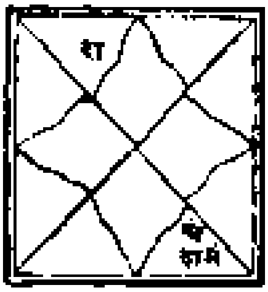

चन्द्रं क्रूरयुतं क्षीणं पश्येद्राहुर्यदा तदा। दिनैः स्वल्पतरैर्बालः कालस्यालयमाव्रजेत्॥५०॥

मनुष्योंके जन्मकालमें क्षीण चंद्रमा पापग्रहोंकरके युक्त हो, उसको राहु देखता हो, वह बालक थोड़े ही दिनोंमें यमलोक जाता है॥ ५०॥

मातंगै ८ र्नवभिश्च ९ रामनयनै २३ र्नेत्राश्विभिः२२ सायकै ५ रेकेना १ श्रुतिभि ४ स्त्रिलोचनमिते २३ र्धृत्या १८ ष विंश २० न्मितैः। भूनेत्रै २१ र्दशभि १० र्लवैर्यदि भवेन्मेषादिसंस्थो विधुर्वैर्भागसमैः करोति निधनं कालोऽयमत्रोदितः॥ ५१॥

इति श्रीदैवज्ञपण्डितढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे

रिष्टयोगाध्यायः॥ १५॥

जिस मनुष्यके जन्म मेषके आठवें अंशमें और वृषके नवम अंशमें और मिथुनके तेईसवें और कर्कके बाईसवें सिंहके पांचवें और कन्याके पहिले तुलाके चौथे और वृश्चिकके २३ धनके १८ मकरके २० कुंभके २१ और मीनराशिके दसवें अंशमें हो वह बालक मृत्युको प्राप्त होता है॥ ५१॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीरामस्वरूपात्मजपंडितश्यामलालकृतायां

श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां रिष्टयोगाध्यायः॥ १५॥

अथारिष्टभंगाध्यायप्रारंभः ।

होरागमज्ञैर्बहुविस्तरेण रिष्टाख्ययोगा यदपि प्रदिष्टाः ।
ते रिष्टभंगे यदि नो समर्थाः स रिष्टभंगोऽप्यभिधीयते ततः ॥ १ ॥

अब अरिष्टभंग योग कहते हैं—ज्योतिषशास्त्र जाननेवालोंसे बहुत प्रकार करके अरिष्ट योग कहे गये हैं—उन अरिष्टयोगोंके भंग करनेमें जो योग समर्थ हों उन अरिष्टभंग योगोंको कहते हैं ॥ १ ॥

अरिष्टनाशयोगः १

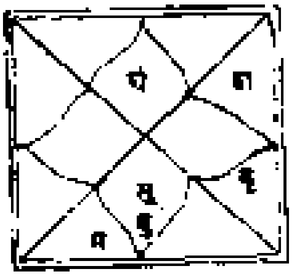

अरिष्टनाशयोगः १

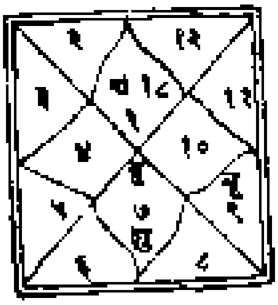

पूर्णे कैरविणीपतिर्दिविचरैः सर्वैः प्रदृष्टस्तदा रिष्टं हन्त्यथवा सुहृल्लवगतः सद्वीक्षितोऽतिप्रभः । क्षीणो वापि निजोच्चगः शुभखगैः शुक्रेण च प्रेक्षितो रिष्टं यः समुपागतं स तु हरेत्सिंहो यथा सिंधुरम् ॥ २ ॥

अरिष्टनाशयोगः २

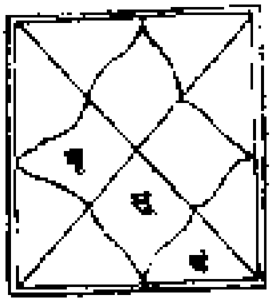

अरिष्टनाशयोगः २

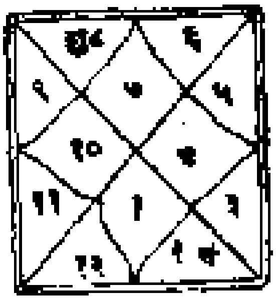

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्ण चन्द्रमाको सम्पूर्ण ग्रह देखते हों वह सब अरिष्टोंका नाश करता है (एको योगः) और जो चन्द्रमा मित्रग्रहके नवांशमें बैठा हो उसको शुभ ग्रह देखते हों तो भी अरिष्टोंका नाश करता है (द्वितीयोयोगः) और जो क्षीण चन्द्रमा भी हो उसको शुभग्रह देखते हों तो भी अरिष्टोंका नाश करता है और अपने उच्चमें प्राप्त चन्द्रमाको शुक्र देखता हो तो भी अरिष्टोंका नाश करता है ॥ २ ॥

अरिष्टनाशयोगः ३ — अरिष्टनाशयोगः ३

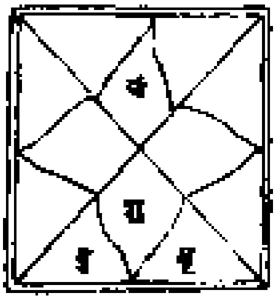

रिष्टं निहन्युः शुभदाः शशांकात्पापैर्विनास्तेऽष्टमशत्रुसंस्थाः । शुभान्वितः साधुदृकाणवर्तीपीयूषमूर्तिः शमयेत्स रिष्टम् ॥ ३ ॥

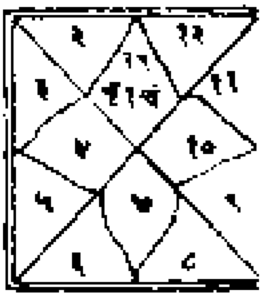

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमासे सातवें आठवें छठे शुभग्रह बैठे हों तो अरिष्टका भंग करते हैं अथवा शुभग्रहों करके सहित चन्द्रमा शुभग्रहके द्रेष्काणमें बैठा हो तो भी रिष्टयोगोंका भंग करता है ॥ ३ ॥

अरिष्टनाशयोगः ४ — अरिष्टनाशयोगः ४

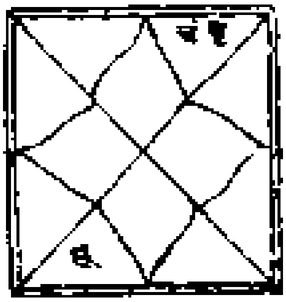

शुभग्रहाद्वादशभावसंस्थाः पूर्णः शशी रिष्टहरः प्रदिष्टः । लग्नेशदृष्टः शुभराशियातो नान्येक्षितो रक्षति रिष्टयोगात् ॥ ४ ॥

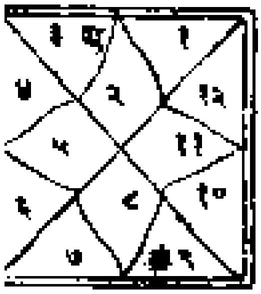

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रह और पूर्ण चन्द्रमा बारहें बैठे हों तो भी रिष्टयोगको नाश करता है अथवा पूर्ण चन्द्रमा शुभग्रहके द्वादशांशमें बैठा हो तो भी रिष्टनाश करता है और जो शुभग्रहकी राशिमें चन्द्रमा बैठा हो और उसको लग्नेश देखता हो तो भी रिष्टोंका नाश करता है ॥ ४ ॥

वलक्षपक्षे यदि जन्म रात्रौ कृष्णेदिवाष्टारिगतोऽपि चन्द्रः ।
क्रमेण दृष्टः शुभपापखेटैः पितेव बालं परिपालयेत्सः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यका जन्म शुक्ल पक्षमें रात्रिके समय हो और कृष्णपक्षमें दिनको हो और क्रमकरके शुभग्रह और पापग्रहों करके चन्द्रमा दृष्ट हो तो वह चन्द्रमा [illegible] बालकको पालता है ॥ ५ ॥

अरिष्टनाशयोगः ।

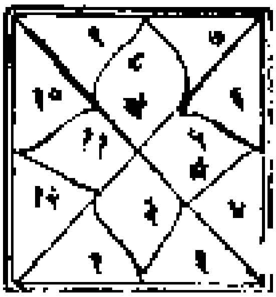

स्थितः शशी क्रूरखगस्य राशौ राशीश्वरेणापि विलोकितश्च । तद्वर्गगो वा यदि तेन युक्तः कुर्यादलं मंगलमेव नान्यत् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा पापग्रहकी राशिमें बैठा हो और राशीश्वर करके दृष्ट हो अथवा राशीश्वरकरके षड्वर्गमें बैठा हो वा राशीश्वर करके युक्त हो तो सब रिष्टोंका नाश करके मंगल करता है ॥ ६ ॥

रिष्टनाशयोगः ७ रिष्टनाशयोगः ७

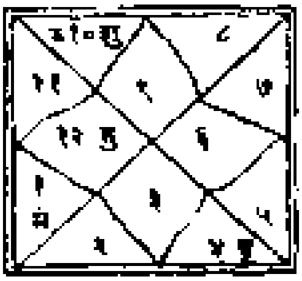

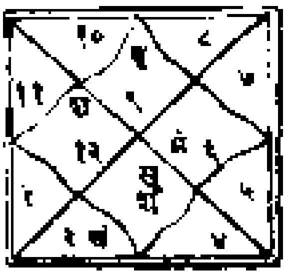

जन्माधिपालो बलवान्किल स्यात्सौम्यैः सुहृद्भिश्च निरीक्ष्यमाणः । यद्वा तनुस्थः सकलैः प्रदृष्टो रिष्टं हि चंद्रेण कृतं निहंति ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मलग्नको स्वामी बलवान् हो और शुभग्रह अथवा मित्र ग्रह करके दृष्ट हो (एको योगः) अथवा लग्नेश लग्नमें बैठा हो और सब ग्रहोंकरके दृष्ट हो तो चन्द्रकृत अरिष्टोंका नाश करता है ॥ ७ ॥

रिष्टनाशयोगः ।

स्वोच्चे स्वभे वा यदि वात्मवर्गे स्थितो हितानां च सतां ग्रहाणां । शुभैर्न पापारियुतेक्षितश्च रिष्टं हरेत्पूर्णकलः कलावान् ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अपने उच्चमें अथवा अपने राशिमें अथवा अपने षड्वर्ग या मित्रग्रहोंके घरमें चन्द्रमा बैठा हो और निरंतर मित्रग्रहों और शुभ ग्रहों करके दृष्ट हो किन्तु पापग्रह न देखते हों तो वह चन्द्रमा रिष्टोंका नाश करता है ॥ ८ ॥

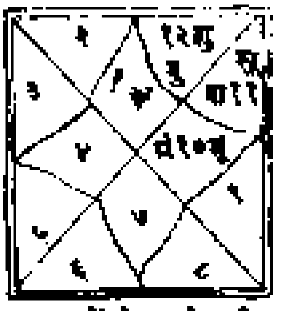

रिष्टभंगयोगः ९

वाचामधीशो दशमे शशांकाद्व्यये ज्ञशुक्रौ च खलः किलाये । विलग्नपस्त्र्यंबुदशान्त्यलाभे शुभेक्षितेंदुश्च हरेत्स रिष्टम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमासे बृहस्पति दशवें बैठा हो और बारहवें बुध शुक्र बैठे हों और पापग्रह ग्यारहें बैठे और लग्नका स्वामी तीसरे वा चौथे वा दशवें वा बारहें वा ग्यारहें बैठा हो और शुभग्रह चन्द्रमाको देखते हों तो रिष्टोंका नाश करता है ॥ ९ ॥

अरिष्टनाशयोगः १०

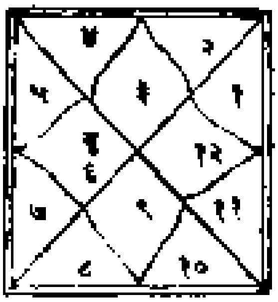

प्रसूतिकाले यदि जन्मपालः किलेक्षितो निर्मलखेचरैश्च । बलाधिशाली प्रलयं करोति रिष्टस्यशीतांशुसमुद्भवश्च ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नका स्वामी बलवान् हो और उसको शुभग्रह देखते हों तो चंद्रकृत रिष्टोंका नाश करता है ॥ १० ॥

भवेन्निशा जन्मनि पद्मिनीशः परोच्चगामी निजवेश्मगो वा ।
तदंशगो वापि शुभेक्षितश्च पूर्णः शशांको निधनं निहंति॥११॥

जिस बालकका रात्रिका जन्म हो और वृष वा कर्कराशिगत चन्द्रमा बैठा हो अथवा वृष कर्कके नवांशमें हो, शुभग्रहों करके दृष्ट पूर्ण चन्द्रमा हो तो अरिष्ट योगोंका नाश करता है ॥ ११ ॥

दास्रेऽग्निभे वा गुरुभे शशांके वर्गोत्तमे पूर्णकलाकलापे ।
त्रिपुष्करे शीतकरे हि रिष्टं प्रकृष्टमप्याशु लयं प्रयाति ॥१२॥

जिस बालकके जन्मकालमें चन्द्रमा अश्विनी कृत्तिका पुष्य नक्षत्रका हो अथवा वर्गोत्तमी हो अथवा त्रिपुष्कर योगका चन्द्रमा हो तो सब अरिष्टोंका नाश करता है ॥ १२ ॥

पादे द्वितीये यदि वा तृतीये पुष्यस्य ताराधिपतिर्यदि स्यात् ।
वा रोहिणीनां चरणे द्वितीये सौम्येक्षितो रक्षति मृत्युदोषात् १३

जिस बालकके जन्मकालमें चन्द्रमा पुष्य नक्षत्रके दूसरे वा तीसरे चरणका हो अथवा रोहिणी नक्षत्रके द्वितीय चरणका हो और शुभग्रहों करके दृष्ट हो तो वह चंद्रमा मृत्युदोषसे रक्षा करता है ॥ १३ ॥

रिष्टभंगयोग: १४

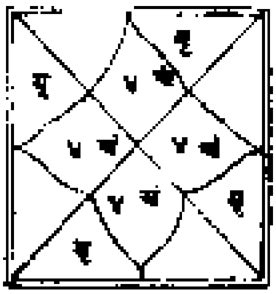

कुलीरमेषगश्चंद्रः केंद्रस्थः शुभवीक्षितः । प्रस्तोऽपि रिष्टभंगाय भवेदत्र न संशयः ॥ १४ ॥

रिष्टभंगयोग: १४

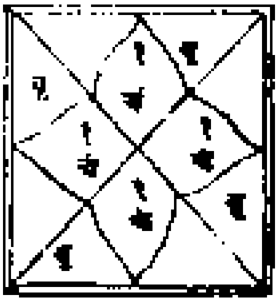

जिस बालकके जन्मकालमें कर्क व मेषराशिगत चन्द्रमा केंद्र १।४।७।१० में बैठा हो और शुभग्रह देखते हों तो वह बालकके बड़े रिष्टोंको दूर करता है ॥ १४ ॥

केन्द्रेषु चेदम्बरमार्गगानां द्वयं द्वयं सौम्यखगो विलग्ने ।
क्षीणोऽपि चंद्रः स्मरभावसंस्थः संप्राप्तरिष्टं शमयेदवश्यम् ॥ १५ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे
चंद्रकृतरिष्टभंगाध्यायः ॥ १६ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें केंद्र १।४।७।१० में दो दो ग्रह बैठे हों और लग्नमें शुभग्रह हो और क्षीण चंद्रमा भी सातवें बैठा हो तो अरिष्टका भंग करता है ॥ १५ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थपण्डितश्यामलालविरचितायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां चंद्रकृतरिष्टभंगवर्णनोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ सर्वग्रहरिष्टभंगाध्यायप्रारम्भः ।

मरीचिमालामलकांतिशाली प्रसूतिकाले प्रबलो यदि स्यात् ।
बृहस्पतिर्मूर्तिगतो निहंति रिष्टानि नूनं मुनयो वदंति ॥ १ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें निर्मल किरणोंवाला प्रकाशवान् बृहस्पति लग्नमें बैठा हो तो उस बालकके सम्पूर्ण अरिष्टोंका नाश करता है यह मुनीश्वर कहते हैं ॥ १ ॥

पापैरवीर्यैश्च शुभः सवीर्यैः शुभस्य राशौ तनुभावयाते।
निरीक्षिते व्योमचरैः शुभाख्यैः संक्षीयते रिष्टमुपागतं वै ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह बलहीन हों और शुभग्रह पूर्ण बली न हों और लग्नमें शुभ ग्रहोंकी राशि हो और लग्नको शुभग्रह देखते हों तो सम्पूर्ण रिष्टयोगोंका नाश होता है ॥ २ ॥

सौम्यवर्गाश्रिताः पापाः सौम्यवर्गाश्रितैः शुभैः।
दृष्टा अपि प्रकृष्ट ते रिष्टं नाशयितुं क्षमाः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रहोंकी राशिमें पापग्रह बैठे हों और शुभग्रह शुभराशियोंमें बैठकर उन पापग्रहोंको देखते हों तो अरिष्ट दूर हो जाता है ॥ ३ ॥

मूर्तेस्तु राहुस्त्रिषडायवर्ती रिष्टं हरत्येव शुभैः प्रदृष्टः।
शीर्षोदयस्थैर्विकृतिं न यातैरशेषखेटैः किल रिष्टभङ्गः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे छठे और ग्यारहें राहु बैठा हो और उसको शुभ ग्रह देखते हों तो सब रिष्टोंका नाश करता है और जिस मनुष्यके सम्पूर्ण ग्रह ३।५।६।७।८।११ राशियोंमें बैठे हों तो भी रिष्टोंका नाश करते हैं ॥ ४ ॥

प्रसूतिकाले विजयाधिशाली शुभो हरेद्रिष्टमपापदृष्टः।
कश्चिद्ग्रहश्चेत्परिवेषगामी क्रूरैः प्रदृष्टः किल रिष्टभङ्गः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रह जयको प्राप्त हों और उनको शुभग्रह देखते हों और कोई ग्रह अस्तको भी प्राप्त हो और पापग्रह देखते हों तो भी रिष्टभंग करता है ॥ ५ ॥

रजोविहीनं गगनं च खस्थाः स्वस्था भवेयुर्जलदा सुनीलाः।
मंदानिलाश्चेद्विमला मुहूर्ताः प्रसूतिकाले किल रिष्टभङ्गः ॥६॥

जिस बालकके जन्मकालमें आकाश साफ हो और ग्रह स्वस्थ हों और मेघ नील वर्णवाले साफ हों, मंद मंद पवन चलती हो और शुभ मुहूर्त हो ऐसे समयमें उत्पन्न बालकके सब रिष्ट भंग होते हैं ॥ ६ ॥

कुम्भयोनेर्मुनीनां चेदुद्गमे जननं भवेत्।
विलीयते तदा रिष्टं नूनं लाक्षेव वह्निना ॥ ७ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें अगस्त्यका तारा उदय हो ऐसे समयमें पैदा हो तो रिष्ट नाशको प्राप्त होते हैं जैसे अग्नि करके लाख गलता है ॥ ७ ॥

वृषजकर्कोन्त्यविलग्नसंस्थो राहुर्भवेदिष्टविनाशकर्ता ।
शुभाश्च योगा बहवो यदि स्युस्तथापि रिष्टं विलयं प्रयाति ८

जिस बालकके जन्मकालमें मेष वृष कर्क लग्न हो उसमें राहु बैठा हो तो रिष्टनाश करता है और जिसके जन्मकालमें बहुतसे शुभ योग हों तो भी रिष्ट नाशको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

नक्रत्रये लाभरिपुत्रिसंस्थः केतुस्तु हेतुर्निधनोपशांत्यै ।
परस्परं भार्गवजीवसौम्यास्त्रिकोणगास्तेऽपि हरन्त्यरिष्टम् ॥९॥

जिस बालकके जन्मकालमें मकर कुंभ मीन राशियोंमें केतु तीसरे वा छठे वा ग्यारहें बैठा हो तो रिष्टोंका नाश करता है और जिसके शुक्र बृहस्पति बुध पंचम नवम बैठे हों तो भी रोगोंका नाश करते हैं ॥ ९ ॥

संध्याभवा वैधृतिपातभद्रागण्डांतयुक्ता अपि जन्मकाले ।
भवंति रिष्टस्य विनाशनार्थं निरंतरा दृश्यदलेऽथ सर्वे ॥१०॥

जिस बालकका जन्म सायं वा प्रातः सन्ध्यामें हो, या वैधृति व्यतीपातमें हो अथवा भद्रा गंडांतकालमें जन्म हो और सब ग्रह लग्नसे लेकर सातवें भावतक बैठे हों तो सब रिष्टोंको नाश करते हैं ॥ १० ॥

त्र्यायारितुंगेषु गतः पतङ्गो नोपप्लुतो रिष्टविनाशकर्ता ।
एकर्क्षगाः षट्त्रिदशायसंस्थाः सर्वेऽपि रिष्टं शमयंति खेटाः ११

जिस बालकके जन्मकालमें तीसरे छठे ग्यारहें उच्चराशिगत सूर्य बैठा हो और पापग्रहों करके ग्रसित न हो तो रिष्टोंका नाश करता है और जिसके एक राशिमें छठे तीसरे ग्यारहें सब ग्रह बैठे हों तो रिष्टोंका नाश करते हैं ॥ ११ ॥

शीतभानोस्तनोर्वापि द्वौ त्रयो वाप्यनेकशः ।
एकांतस्थास्तदा रिष्टभंगो भवति निश्चयात् ॥ १२ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें चन्द्रमासे वा लग्नसे दो वा तीन वा अनेक ग्रह एक राशिमें बैठे हों तो रिष्टोंका निश्चयकर नाश करते हैं ॥ १२ ॥

पातालयातः प्रबलेन्दुदृष्टो निजालयस्थो यदि जन्मकाले ।
देवेंद्रमन्त्री दलयत्यवश्यमभद्रकं रिष्टभवं क्षणेन ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें धन वा मीन राशिमें बृहस्पति बैठा हो उसे बलवान् चन्द्रमा देखता हो तो रिष्टोंका नाश करता है ॥ १३ ॥

लग्नस्थितस्य खेटस्य व्यये वित्ते त्रयस्त्रयः ।
तत्कालसुद्भवाः खेटा रिष्टदारणकारिणः ॥ १४ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्नमें कोई ग्रह बैठा हो और दूसरे बारहवें तीन तीन ग्रह बैठे हों तो उस कालमें पैदा हुआ ग्रह रिष्टका नाश करता है ॥ १४ ॥

केन्द्रेष्वापोक्लिमेष्वेव यद्वा पणफरेषु च ।
शुभांशस्था ग्रहाः सर्वे रिष्टभंगकराः स्मृताः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केन्द्र १ । ४ । ७ । १० वा आपोक्लिम ३ । ६ । ९ १२ अथवा पणफर २ । ५ । ८ । ११ में जो सब ग्रह बैठे हों और शुभ ग्रहके नवांशमें बैठे हों तो सम्पूर्ण रिष्टोंका नाश करते हैं ॥ १५ ॥

अन्योन्यं हि चतुर्थस्था युग्मभावमुपागताः ।
स्वर्भानुसंयुताः खेटा रिष्टदोषापहारकाः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परस्पर चौथे ग्रह युग्मभावमें बैठे हों और राहु करके सहित हों तो रिष्टोंका नाश करते हैं ॥ १६ ॥

चतुष्टये श्रेष्ठबलाधिशाली शुभो नभोगोऽष्टमगो न कश्चित् ।
त्रिंशन्मितायुः प्रकरोति नूनं दशान्वितं तच्छुभखेटदृष्टः ॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बलकरके युक्त शुभ ग्रह केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में बैठे हों और आठवें कोई ग्रह न हो तो वह बालक तीस वर्ष जीता है और पूर्वोक्त योगकारक ग्रहोंको शुभ ग्रह देखते हों तो चालीस वर्षकी उमर होती है ॥ १७ ॥

निजत्रिभागेऽस्य गृहे गुरुश्चेदायुर्मितिः स्यात्खलु सप्तविंशत् ।
बृहस्पतिस्तुंगगतो विलग्ने भृगोः सुतः केन्द्रगतः शतायुः ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अपने द्रेष्काणमें बृहस्पति बैठा हो तो सत्ताईस वर्षकी आयु कहना चाहिये और जिसके बृहस्पति उच्चमें बैठा हो तो और शुक्र केन्द्रमें बैठा हो तो वह सौ वर्ष जीता है ॥ १८ ॥

लग्ने स्वतुङ्गे बलशालिनीन्दौ सौम्याः स्वभस्थाः खलु षष्टिरायुः ।
मूलत्रिकोणेषु शुभेषु तुङ्गे लग्ने गुरावायुरशीतिरेव ॥ १९ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्नमें उच्चका बलवान् चन्द्रमा बैठा हो और शुभ ग्रह अपनी राशिमें बैठे हों तो साठ वर्षकी आयु कहना चाहिये और जो शुभग्रह अपने मूल त्रिकोणमें वा उच्चमें बैठे हों तो अस्सी वर्षकी आयु कहनी चाहिये ॥ १९ ॥

लग्नाष्टमारीन्दुयुता न येस्युः क्रूराः स्वभस्था यदि खेचरौ द्वौ।
बलान्वितावंबरगौ भवेतां जातः शतायुः कथितो मुनीन्द्रैः ॥२०॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्न और अष्टम, छठे चंद्रमा न बैठा हो और पाप-ग्रह अपनी राशिमें बैठे हों और बलकरके सहित दो ग्रह दशममें बैठे हों तो वह बालक सौ वर्षतक जीता है ॥ २० ॥

शून्ये रन्ध्रे केंद्रगैः सौम्यखेटैर्लग्ने जीवे नैधनेन्दुर्दयश्चेत् ।
नो संदृष्टाः पापखेटैस्तदास्यादायुर्मानं सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥२१

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे सर्वग्रह-
रिष्टभंगाध्यायः ॥ १७ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें अष्टम स्थानमें कोई ग्रह नहीं हो और शुभग्रह केन्द्र १।४।७।१० में बैठे हों और लग्नमें बृहस्पति बैठा हो और अष्टममें पूर्ण चन्द्रमा बैठा हो और लग्नवर्ती बृहस्पतिको कोई पापग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य सत्तर वर्षकी आयुको पाता है ॥ २१ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी भाषाटीकायां सर्वग्रहकृतारिष्टभङ्गाध्यायः ॥ १७ ॥

अथ सदसद्दशाविचारणा ।

राजयोगगृहभावसंभवं रिष्टयोगजनितं च यत्फलम् ।
तद्दशाफलगतं यतो भवेत्तेन तत्फलमलं ब्रुवेऽधुना ॥ १ ॥

जो पूर्वमें राजयोग और भावस्थित ग्रहोंका फल अथवा भावोंका फल, रिष्टयोग-जनित फल कहा है सो दशाकालमें होता है सो दशाफल इस कालमें कहते हैं ॥१॥

अथ देवस्तुतिः ।

सर्वदेववरदो वरदो वः शारदापि वरदा वदनाब्जे ।
इंदिरा च खलु मंदिरसंस्था प्रस्थिता जलनिधीन्प्रतिकीर्तिः॥२॥

सब देवताओंके पूजनीय देव श्रीगणेश आपको वरदानको दें और सरस्वती मुखारविन्दमें वास करें और लक्ष्मीजी निश्चयकरके स्थानमें वास करें और समुद्रपर्यंत कीर्ति प्रयाण करे ॥ २ ॥

स्वोच्चे स्वगेहे यदि वा त्रिकोणे वर्गे स्वकीयेऽथ चतुष्टये वा।
नास्तंगतो नो शुभदृष्टियुक्तो जन्माधिपः स्याच्छुभदः स्वपाके॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मपति अपने उच्चमें वा अपनी राशिमें हो वा अपने मूलत्रिकोणी हो वा अपने षड्वर्गमें बैठा हो वा केन्द्र १। ४। ७। १० में स्थित हो न तो अस्तका हो और न पाप ग्रहोंकरके दृष्ट हो तो अपनी दशामें शुभ फलको देता है॥ ३॥

त्रिषष्ठलाभेषु गतैः समस्तैः सौम्यैः सुखार्थाश्च भवंति बाल्ये।
तत्रैव पापैर्वयसोऽन्त्यभागे जायार्थपुत्रादिसुखानि सम्यक्॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे छठे ग्यारहें सब पापग्रह बैठे हों और शुभ ग्रह द्वितीय चतुर्थ बैठे हों तो बाल्य अवस्थामें उस पुरुषको सुख देते हैं और पापग्रह उमरके अंत्यभागमें स्त्री धन पुत्रादिकोंके भले प्रकार सुखोंको देते हैं॥४॥

तुंगे स्वगेहे स्वसुहृद्ग्रहांशे नीचारिभस्थेऽपि च खेचरेन्द्रे।
मिश्रं फलं स्यात्खलु तस्य पाके होरागमज्ञैः परिकल्पनीयम्॥५॥

जो ग्रह अपने मित्रोंके नवांशोंमें बैठे हों अथवा नवांशोंमें उच्च वा स्वक्षेत्रमें बैठे हों और भवमें नीच वा शत्रुराशिमें बैठे हों तो वह अपनी दशामें मिश्र फलको देते हैं यह ज्योतिषशास्त्रवेत्ताओंने कहा है॥ ५॥

वाचां पतिर्लग्नगते स्वतुंगे स्वर्क्षे दशायत्रिगतश्च सूतौ।
करोति राज्यं स्वकुलानुमानं नानाविधोत्कर्षविशेषयुक्तम्॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति लग्नमें अपने उच्चमें बैठा हो अथवा अपनी राशिमें हो, दशमें ग्यारहें तीसरे बैठा हो तो वह बृहस्पति अपनी दशामें अपने कुलके समान अनेक प्रकारकी उत्कर्षतासहित राज्य देता है॥ ६॥

आरोहिणी दशा यस्य खेचरः सत्फलप्रदः।
सत्फलापचयं कुर्याद्दशा चेदवरोहिणी॥ ७॥

जो ग्रह अपनी उच्चराशिसे लेकर आगे पांच राशियोंमें बैठा हो उस ग्रहकी दशा आरोहिणी कहाती है, वह ग्रहकी दशा श्रेष्ठ फलको देती है और जो ग्रह अपनी नीचराशिसे लेकर आगेकी पांच राशिमें बैठा हो उस ग्रहकी दशा अवरोहिणी कहाती है, वह ग्रहको दशा नेष्ट फलको देती है॥ ७॥

अथ कर्कराशिगतचन्द्रदशाफलम् ।

स्त्रीपुत्रमित्रद्रविणोपलब्धिं कर्के हिमांशुः कुरुते दशायाम् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह अपनी दशामें स्त्री पुत्र और मित्र धनकी प्राप्ति करता है ।

अथ भौमराशिगतचन्द्रदशाफलम् ।

जायापशूनां हनने प्रवृत्तिं करोति पृथ्वीतनुजस्य गेहे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिका चन्द्रमा हो वह अपनी दशामें स्त्री और पशुओंके मारनेमें प्रवृत्त होता है ॥ ८ ॥

अथ बुधगुरुराशिगतचन्द्रदशाफलम् ।

सच्छास्त्रमित्राधिगमं करोति बुधस्य राशौ गुरुधामसंस्थः ।

जो बुध या बृहस्पतिकी राशिमें चंद्रमा बैठा हो तो श्रेष्ठ शास्त्र और मित्रोंकी प्राप्ति अपनी दशामें कराता है ॥

शुक्रराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

नृपप्रसादं विपुलां च लक्ष्मीं शुक्रस्य गेहे फलमेतदेव ॥ ९ ॥

और जो शुक्रकी राशिमें चंद्रमा हो तो राजाकी कृपासे बहुत धनका लाभ करता है ॥ ९ ॥

अथ शनिराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

तुषाररश्मिः शनिवेश्मसंस्थः प्रेष्यं मनुष्यं कुरुते दशायाम् ।
अरण्यदुर्गस्थितिमादधाति प्रीतिं मरुद्गोगृहनिर्मितौ च ॥ १० ॥
मित्रे सोपचयस्थाने त्रिकोणे सप्तमेऽपि वा ।
पाकेश्वरात्स्थितश्चन्द्रः कुरुते सत्फलां दशाम् ॥ ११ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे सदसद्दशाविचारणाध्यायः ॥ १८ ॥

जो शनैश्चरकी राशिमें चंद्रमा बैठा हो तो वह मनुष्य दूत होता है, वन और किला-कोटमें स्थितिको कराता है, वनवासियोंसे प्रीति करनेवाला और गौ तथा मकान बनानेवाला होता है ॥ १० ॥ जो चंद्रमा दशाधिपतिसे मित्रोंकी राशिमें ३ । ६ । १० । ११ स्थानमें अथवा ५ । ९ । ७ में बैठा हो तो वह अपनी दशामें श्रेष्ठ फलको देता है ॥ ११ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां सदसद्दशाविचारणाध्यायः ॥ १८ ॥

अथ रविदशाफलविचारो लिख्यते ।

भानोर्दशायां हि विदेशवासो भवेत्कदाचिन्ननु मानवानाम् ।
भूवह्निभूपद्विजपर्वशस्त्रभेषज्यतोऽतीव धनागमः स्यात् ॥ १ ॥
मंत्राभिचारेऽभिरुचिर्विचित्रा धात्रीपतेः सौख्यविधिर्विशेषात् ।
विख्यातकर्माभिरतिर्मतिः स्यादनल्पजल्पे चरणेन चिंता ॥२॥
व्ययश्च दंतोदरनेत्रबाधा कांतासुताभ्यां वियुतश्च चिंता ।
नृपाग्निचौराहितबंधुवर्गैः स्वगोत्रजैर्वा प्रबलः कलिः स्यात् ॥३॥

अब सूर्यकी दशाका फल कहते हैं-सूर्यकी दशामें परदेशमें वास निश्चय कर कभी कभी होता है और धरती, अग्नि, राजा, ब्राह्मण शस्त्र और दवाईसे बहुत धन प्राप्त होता है ॥ १ ॥ और मन्त्राभिचारमें विचित्र प्रीति करनेवाला और राजा करके विशेष मैत्री करनेवाला और प्रसिद्ध कर्मोंमें प्रीति करनेवाला, बुद्धिमान्, बहुत बोलनेवाला, संग्रामकी चिन्तासहित होता है ॥ २ ॥ खर्च करनेवाला, दाँत और पेट व नेत्रोंमें पीड़ा सहित, स्त्री पुत्रोंसे वियोगको प्राप्त, चिन्ता सहित, राजा, चोर, शत्रु और बन्धुवर्ग करके और अपने गोती भाइयोंसे प्रबल कलह होता है ॥ ३ ॥

अथ परमोच्चगतरविदशाफलम् ।

दशा दिनेशस्य निजोच्चगस्य स्वधर्मकर्माभिरुचिं करोति ।
तातार्जितद्रव्यगृहादिलाभं नानासुखानि प्रमदासुतेभ्यः ॥ ४ ॥

जिसके सूर्य अपने उच्चमें बैठा हो तो वह अपनी दशामें धर्मकर्ममें रुचि कराता है और पिता करके पैदा किये हुए धन और गृहादिकोंका लाभ कराता है और अनेक सुख स्त्री पुत्रोंका होता है ॥ ४ ॥

अथोच्चच्युतरविदशाफलम् ।

उच्चच्युतस्यातितरामरिष्टं कष्टं च रोगान्स्वजनैर्विरोधम् ।
रवेर्दशातीव चतुष्पदानां करोति हानिं ननु मानवानाम् ॥ ५ ॥

जो उच्चसे पतित हुआ सूर्य हो तो वह अपनी दशामें बहुत रोग और कष्ट तथा अरिष्टोंको देता है और अपने जनोंसे वैर कराते और चौपायोंकी अधिक हानि कराता है ॥ ५ ॥

अथ वृषराशिस्थितरविदशाफलम् ।

कांतासुतानां कृषिवाहनानां प्रपीडनं स्यान्नयनाननेषु ।
हृद्रोगबाधा बहुधा नराणां वृषाधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ॥ ६ ॥

जो वृष राशिमें सूर्य बैठा हो तो अपनी दशामें स्त्री और पुत्रोंको पीडा और खेती तथा वाहनोंको पीडा करता है और नेत्र, मुख तथा हृदयमें तकलीफ और अनेक तरहके रोगोंकी पीडा होती है ॥ ६ ॥

अथ मिथुनराशिगतरविदशाफलम् ।

स्यान्मन्त्रशास्त्रोत्तमकाव्यकर्ता प्रीतिः पुराणे च भवेन्नराणाम् ।
कृषिक्रियाधान्यधनैः सुखानि नृयुग्मसंस्थस्य रवेर्दशायाम् ॥ ७ ॥

जो मिथुन राशिमें सूर्य बैठा हो तो अपनी दशामें मंत्रशास्त्रमें और उत्तमकाव्यमें प्रीति करावे, पुराणोंमें प्रीति, खेतीकी क्रिया और अन्न धन करके सुख करता है ॥ ७ ॥

अथ कर्कराशिगतरविदशाफलम् ।

स्यातिर्नृपप्रीतिरतीव नित्यं स्त्रीनिर्जितत्वं च महान्प्रकोपः ।
सुहृज्जने नूनमनूनपीड़ा कर्काधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ॥ ८ ॥

जो कर्क राशिमें सूर्य बैठा हो तो वह प्रसिद्ध, राजासे प्रीतिवाला होता है और स्त्री करके जीता हुआ, बडे क्रोधवाला होता है और मित्रजनोंको बहुत पीडा होती है ॥ ८ ॥

अथ सिंहराशिगतरविदशाफलम् ।

दुर्गादरण्ये च कृषिक्रियायां धनान्यनेकानि भवंति नूनम् ।
स्यात्ख्यातिरुच्चै नृपगौरवं च कण्ठीरवस्थार्कदशाप्रवेशे ॥ ९ ॥

जिसके सिंहराशिगत सूर्य बैठा हो उसकी दशामें किले—कोटसे, जंगलसे, खेती करनेसे अनेक धन प्राप्त होते हैं और वह बडा प्रसिद्ध, राजासे गौरवताको प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अथ कन्याराशिगतरविदशाफलम् ।

स्यात्कन्यकानां जननं च भानौ देवद्विजानामनुपूजनं च ।
लब्धिः पशूनां च भवेद्दशायां कन्यागतस्याम्बुजबान्धवस्य ॥ १० ॥

जो कन्याराशिमें सूर्य बैठा हो तो अपनी दशामें कन्या संतानको पैदा करनेवाला, मानसहित देवता और ब्राह्मणोंका पूजन करनेवाला और पशुओंकी प्राप्ति कराता है ॥ १० ॥

अथ तुलाराशिगतरविदशाफलम् ।

क्लेशात्मजार्थप्रमदासु पीडा चोराग्निभीतिश्च विदेशयानम् ।
नीचत्वमुच्चैः खलु मानवानां तुलाधरस्थस्य रवेर्दशायाम् ॥११॥

और जो तुलाराशिमें सूर्य बैठा हो तो अपनी दशामें स्थान और पुत्र तथा धन और स्त्रियोंको पीडा करे और चोर तथा अग्निसे भय करावे और परदेशकी यात्रा करावे और नीच भावको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ नीचांशयुक्तरविदशाफलम् ।

नीचांशयुक्तस्य रवेर्दशायां सुखेन लाभः परवंचनं च ।
जायानिमित्तोत्थतदुःखलब्धिर्नीचैर्भवेत्सख्यविधिर्नितान्तम् ॥१२॥

जो सूर्य परम नीच अंशोंसे निकल गया हो तो अपनी दशामें सुख करके लाभ और दूसरोंको ठगना तथा धनका लाभ करे और स्त्रीके निमित्तसे दुःख प्राप्त और नीच पुरुषोंसे मित्रता कराता है ॥ १२ ॥

अथ नीचराशिगताष्टमस्थानरविदशाफलम् ।

नीचाष्टमस्थस्य रवेर्दशायामुद्विग्नतादोषसमुद्भवः स्यात् ।
षष्ठाश्रितस्य व्रणजन्यपीडा पित्रोश्च बाधा बहुधावगम्या ॥१३॥

जो नीचराशिगत सूर्य अष्टमभावमें बैठा हो तो अपनी दशामें उद्विग्नताको पैदा कराता है और नीचराशिगत छठे बैठा हो तो व्रणरोगकी पीडा करावे और पिताकी बहुत प्रकारसे बाधा करता है ॥ १३ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतरविदशाफलम् ।

तेजोविशेषाभियुतो नितान्तं विषाग्निशस्त्रैः परिपीडितश्च ।
पित्रा जनन्या गतचित्तशुद्धिः स्याद्वृश्चिकस्थस्य रवेर्दशायाम् ॥१४॥

जो वृश्चिकराशिमें सूर्य बैठा हो तो विशेष तेज करके सहित, विष अग्नि शस्त्र करके परिपीडित होता है और माता पितासे चित्त विकारको प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

अथ धनराशिगतरविदशाफलम् ।

कलत्रपुत्रद्रविणादिसौख्यं स्याद्गौरवं राजकुलाद्द्विजेभ्यः ।
संगीतशास्त्रागमसौख्यमुच्चैश्चापोपयातस्य रवेर्दशायाम् ॥१५॥

जो धनराशिमें सूर्य बैठा हो तो अपनी दशामें स्त्री, पुत्र और धनका सौख्य करावे और राजाके कुलसे तथा ब्राह्मणोंसे गौरवको प्राप्त करावे और संगीतशास्त्रमें प्रीति करावे और बडे सुखको प्राप्त होता है ॥ १५ ॥

अथ मकरराशिगतरविदशाफलम्।

जायात्मजद्रव्यसुखाल्पता स्याद्बन्धनपीडामयतो नितान्तम्।
भवेत्पराधीनतयातिचिन्ता नक्रोपयातस्य रवेर्दशायाम्॥१६॥

जो मीनराशिमें सूर्य बैठा हो तो स्त्री, पुत्र और धन व सुखकी कमी कराता और रोगसे बहुत पीडाको प्राप्त और पराधीनताकी विशेष चिन्ताको प्राप्त होता है॥ १६ ॥

अथ कुम्भराशिगतरविदशाफलम्।

हृद्रोगबाधा सुतवित्तकान्ताचिन्ताः पराब्रादिसुखं न किंचित्।
शत्रूद्भवभयात्यतिहीनता स्याद्घटाधिरूढस्य दशाप्रवेशे॥ १७॥

और जो कुम्भराशिमें सूर्य बैठा हो तो अपनी दशामें हृदयमें रोग और पीडा करता है और पुत्र धन, स्त्रीकी चिन्ताको प्राप्त, पराये अन्न आदिका सुख नहीं शत्रुओंका भय और अत्यन्त हीनताको प्राप्त होता है॥ १७ ॥

अथ मीनराशिस्थितरविदशाफलम्।

स्त्रीवित्तसौख्योपचयः प्रतिष्ठा ज्वरादिपीडा च सुतादिकानाम्।
वृथाटनत्वं ननु मानवानां मीने दिनेशस्य दशाप्रवेशे॥ १८ ॥

जिसके मीनराशिमें सूर्य बैठा हो तो वह अपनी दशामें स्त्री पुत्र धनके सौख्यसमूहको प्राप्त, बड़ी प्रतिष्ठासहित और पुत्रादिकोंको ज्वरकी पीडा हो तथा व्यर्थ भ्रमण करनेवाला होता है॥ १८ ॥

अथोच्चराशिस्थिताष्टमभावस्थितरविदशाफलम्।

स्वोच्चस्थितस्याष्टमभावगस्य दशा दिनेशस्य च दोषदा स्यात्।
नीचस्थितस्य व्रणजातपीडां करोति बाधां च पितुर्जनन्याः॥१९॥
पूर्वं भवेत्सूर्यदशाप्रवेशः पित्रोश्च बाधा विविधा तदानीम्।
लग्नाद्दशाक्लेशविशेषदात्री नक्षत्रनाथस्य दशाविशस्ता॥ २० ॥

जो उच्चराशिगत सूर्य अष्टम बैठा हो तो अपनी दशामें दोष करता है और जो नीचराशिगत सूर्य अष्टम बैठा हो तो व्रणरोगकी पीडा अपनी दशामें करे और माता पिताको बाधा करता है॥ १९ ॥ सूर्यकी दशा प्रवेशकालमें माता पिताको अनेक पीडा करती है और लग्नभावस्थित सूर्यकी दशा विशेष रोगोंको देनेवाली होती है और लग्नस्थित चन्द्रमाकी अत्यन्त श्रेष्ठ होती है॥ २० ॥

अथ चन्द्रफलानि ।

आरोहिणी चंद्रदशा नराणां सर्वार्थसिद्धिर्यैकथिता विशेषात् ।
तथावरोहात्कुरुते विलंबं सर्वेषु कार्येषु च बुद्धिमान्द्यम् ॥१॥
नक्षत्रनाथस्य दशाप्रवेशे भवेन्नराणां महती प्रतिष्ठा ।
मंत्रित्वमुच्चैर्नृपतेः प्रसादो भूदेवदेवार्चनताप्रवृत्तिः ॥ २ ॥
सन्मंत्रविद्या विविधा धनाप्तिर्नानाकलाकौशलशालिता च ।
गंधैस्तिलैश्चापि फलैः प्रसूनैर्वृक्षैरलं वा द्रविणोपलब्धिः ॥ ३ ॥
ख्यातिः सुकीर्तिर्विनयाधिकत्वं परोपकाराय मतिर्यशश्च ।
इतस्ततः संचलनप्रियत्वं कन्याप्रजासंजननं मृदुत्वं ॥ ४ ॥
जलस्य कर्मण्यतिसादरत्वमालस्यनिद्राकुलता क्षमा च ।
कृष्यादिकर्माभिरुचिः शुचित्वं कफानिलाधिक्यमतीवसत्त्वम् ५
भवेद्विरोधः स्वजनेन नूनं कलिप्रसंगो बहुजल्पता च ।
चित्तस्थितिर्नैव च साधुकार्ये सामान्यतः कीर्तितमेतदत्र ॥६॥

अब चन्द्रमाका फल सामान्यसे कहते हैं—जो चन्द्रमाकी आरोहिणी दशा हो तो सब प्रकारकी सिद्धि विशेषतासे करती है और जो चन्द्रमाकी अवरोहिणी दशा हो तो कार्यसिद्धिमें देर करे और सब कामोंमें मंद बुद्धिको करती है ॥ १ ॥ चन्द्रमाकी दशाके प्रवेशमें मनुष्य बडी प्रतिष्ठाको प्राप्त, राजाकी कृपासे वजीरकी पदवीको प्राप्त, ब्राह्मण और देवताओंके पूजनमें प्रवृत्ति करता है ॥ २ ॥ श्रेष्ठ मन्त्रविद्या और अनेक प्रकारके धनकी प्राप्ति और अनेक कलाओंमें कुशलताको प्राप्त और सुगन्ध तिल फल पुष्पोंकी वृद्धि और वृक्षों करके पूर्ण धनकी वृद्धिको प्राप्त होता है ॥ ३ ॥ प्रसिद्धता, श्रेष्ठ कीर्ति, नम्रता अधिक, पराये उपकारमें बुद्धि, यशको प्राप्त हो, इधर उधर भ्रमण करनेमें प्रीति, कन्याकी सन्तानको प्राप्त और कोमलता होती है ॥ ४ ॥ और जलके काममें बहुत प्रीति और आलस्य तथा निद्रा और व्याकुलता और क्षमाको प्राप्त होता है, खेतीके काममें प्रीति, पवित्रतायुक्त, कफ और वातकी अधिकताको प्राप्त, अधिक बलको प्राप्त ॥ ५ ॥ और अपने जनोंसे वैरको प्राप्त और लडाई करनेवाला, बहुत बोलनेवाला और अच्छे कामोंमें चित्तकी स्थिति नहीं होती यह सामान्य चन्द्रमाकी दशाका फल कहा है ॥ ६ ॥

अथ मेषराशिगतचन्द्रदशाफलम्

मेषे शशाङ्कस्य दशाप्रवेशे योषात्मजानन्दभरो जनानाम् ।
विदेशकर्माभिरतिर्व्ययः स्यात्कौर्यशिरोरुक्सहजारिबाधा ॥ ७ ॥

जो मेषराशिमें चन्द्रमा हो तो अपनी दशामें मनुष्यको स्त्री और पुत्रोंका आनन्द देता है और परदेशके कामोंमें प्रीति, ज्यादे खर्च करनेवाला, क्रोधसहित, भ्राता और शत्रुओंकी बाधा करता है ॥ ७ ॥

अथ वृषराशिगतचन्द्रफलम् ।

उच्चाधिरूढस्य दशा जडांशोः कुलानुसारं हि ददाति राज्यम् ।
योषाविभूषात्मजगोतुरंगगजाप्तिसौख्योपचयं जयं च ॥ ८ ॥

जो वृषराशिमें चन्द्रमा बैठा हो तो अपनी दशामें उस मनुष्यको कुलके समान राज्य देता है और स्त्री और आभूषण और पुत्र, गौ, घोड़ा, हाथी प्राप्त कराता है और सौख्यसमूह तथा जयको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ मूलत्रिकोणराशिस्थितचन्द्रदशाफलम् ।

मूलत्रिकोणाश्रितशीतरश्मेर्दशा विदेशाभिगमं करोति ।
कृषेः क्रयाद्विक्रयतो धनाप्तिं कफानिलार्तिं स्वजनैर्विरोधम् ९ ॥

और जो चन्द्रमा वृष राशिके तीन अंशोंसे अधिक अंशोंमें बैठा हो तो अपनी दशामें परदेशयात्रा करावे, खेती करके क्रय विक्रयसे धनकी प्राप्ति तथा कफ और वातकी पीडा करावे और मित्रोंसे विरोधको करता है ॥ ९ ॥

अथ वृषस्यपूर्वार्द्धपरार्द्धगतचन्द्रदशाफलम् ।

वृषस्य पूर्वाधिगतो हिमांशुः पापान्वितः संजनयेज्जनन्याः ।
मृत्युं परार्द्धे जनकस्य सौख्यसङ्क्षणान्मृत्युसमानरोगम् १० ॥

और जो वृषराशिके पन्द्रह अंशके भीतर चंद्रमा पापग्रहयुक्त हो तो माताकी मृत्यु कराता है और जो वृषराशिके पंद्रह अंसके ऊपर तीसके भीतर पापग्रहयुक्त चंद्रमा हो तो पिताकी मृत्यु करे और जो चंद्रमा शुभग्रहयुक्त हो तो माता वा पिताको मृत्युसमान रोग देता है ॥ १० ॥

अथ मिथुनराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

द्वंद्वाधिसंस्थेन्दुदशाप्रवेशे देवद्विजार्चाधनभोगसंस्थम् ।
स्थलांतरे संचलनं किल स्यात्सुखेन सम्यक्मतिवैभवं च ११ ॥

और जो मिथुनराशिमें चन्द्रमा हो तो अपनी दशामें देवता और ब्राह्मणका पूजन धनके भोग सुख कराता है और स्थानांतरमें यात्रा करनेवाला, सुख करके वृद्धि और वैभवको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ कर्कराशिगतचन्द्रदशाफलम्।

कुलीरसंस्थस्य कलानिधेः स्यात्पाके पशुद्रव्यकृषिप्रवृद्धिः।
कलाकलापाकलनं च शैले वने रुचिर्गुह्यगदप्रकोपः ॥ १२ ॥

जो कर्कराशिमें चन्द्रमा बैठा हो तो अपनी दशामें चौपाये और धन खेतीकी वृद्धि करावे, कलाओंके समूहकी रचना करनेवाला, पर्वत, और वनोंमें रुचि करनेवाला और गुप्त रोग कराता है ॥ १२ ॥

अथ सिंहराशिगतचन्द्रदशाफलम्।

कण्ठीरवस्थस्य निशाकरस्य पाके नरोऽर्थं लभते च नित्यम्।
श्रेष्ठां प्रतिष्ठां विकलत्वमंगेऽनंगेऽपि हीनत्वमनुप्रयाति ॥ १३ ॥

जिसके सिंहराशिमें चन्द्रमा बैठा हो तो अपनी दशामें उस मनुष्यको नित्य ही धन लाभ करावे और श्रेष्ठ प्रतिष्ठाको प्राप्त, शरीरमें विकलतायुक्त और कामदेवकी हीनताको प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

अथ कन्याराशिगतचन्द्रदशाफलम्।

कन्याश्रितेन्दोश्च दशाप्रवेशे विदेशयानं वनितोपलब्धिः।
कलाकलापामलबुद्धिवृद्धिः स्वल्पार्थसिद्धिश्च भवेन्नराणाम् १४

जिस मनुष्यके कन्याराशिमें चन्द्रमा बैठा हो तो परदेशकी यात्रा और स्त्रीकी प्राप्ति करावे, कलाओंके समूहमें निर्मल बुद्धिकी वृद्धि थोडे धनकी सिद्धि कराता है ॥ १४ ॥

अथ तुलाराशिगतचन्द्रदशाफलम्।

कलानिधेस्तौलिगतस्य पाके लोलं मनः स्याद्वनिताविषादः।
वादश्च कैश्चिद्धनहीनता च प्रोत्साहभंगः खलु नीचसंगः१५॥

जिस मनुष्यके तुलाराशिमें चन्द्रमा हो तो अपनी दशामें चञ्चलमन करावे, स्त्रीसे विषाद करावे, किसीसे झगडा करावे, धनहीनता हो, उत्साह भंग हो और निश्चयकर नीचोंका संग कराता है ॥ १५ ॥

नीचोपगतस्य विधोर्दशायां स्याद्व्याधिवृद्धिर्बहुधा नराणाम्।
वियोजनं वै स्वजनेन नूनं नानाल्पतामल्पविकल्पचिन्ता॥१६॥

जो परमनीचमें चन्द्रमा बैठा हो तो अपनी दशामें बहुत व्याधिकी वृद्धि मनुष्योंको करावे और मित्रोंसे वियोग करावे, मानकी हीनता और बहुत चिंताको कराता है ॥ १६ ॥

अथ नीचच्युतचंद्रदशाफलम् ।

विमुक्तनीचोडुपतेर्दशायां भवेदवाप्तिः क्रयविक्रयाभ्याम् ।
धर्मव्यथाधर्मविधानमल्पमल्पं च सख्यं जनमित्रवर्गैः ॥ १७ ॥

जो परमनीचसे पतित चन्द्रमा वृश्चिकराशिमें हो तो अपनी दशामें क्रय और विक्रयसे प्राप्ति कराता है, धर्मकी व्यथा, धर्मकी अल्पता और थोडी मित्रताका सौख्य होता है ॥ १७ ॥

अथ धनराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

चापोपयातस्य च शीतरश्मेर्दशाप्रवेशे गजवाजिवृद्धिम् ।
पूर्वार्जितार्थोपहतिर्नितांतमन्यत्र सौभाग्यसुखानि नूनम् ॥ १८ ॥

और जो धनराशिमें चन्द्रमा बैठा हो तो अपनी दशामें हाथी घोडोंकी वृद्धि करावे और पहिलेका पैदा किया धन नष्ट हो और दूसरे स्थानमें सौभाग्य सुख कराता है ॥ १८ ॥

अथ मकरराशिगतचन्द्रदशाफलम् ।

हिमकरश्च सदा मकरस्थितः सुतसुखानि धनागमनानि च ।
वितनुते तनुतामनिलात्तनोरनुदिनं गमनागमनानि वै ॥ १९ ॥

जो मकरराशिमें चन्द्रमा बैठा हो तो अपनी दशामें पुत्रोंका सुख, धनकी प्राप्ति करावे और वातविकारको बढावे और हरएक दिन जाना आना होता है ॥ १९ ॥

अथ कुम्भराशिगतचन्द्रदशाफलम् ।

क्रीडा च पीडा व्यसनानि नूनं स्युर्मानवानां तनुता शरीरे ।
ऋणोपलब्धिश्चलता नितान्तं दशाप्रवेशे कलशस्थितेन्दोः २० ॥

जो कुम्भराशिमें चन्द्रमा बैठा हो तो अपनी दशामें कामसे पीडा और खोटे व्यसनकी प्राप्ति कराता है और शरीरमें दुर्बलताकी प्राप्ति, कर्जकी प्राप्ति और चञ्चलताकी प्राप्ति करता है ॥ २० ॥

अथ वर्गोत्तमे कुम्भराशिगतचन्द्रदशाफलम् ।

वर्गोत्तमस्थस्य घटे हिमांशोर्दशाप्रवेशे बलिभिर्विरोधः ।
कलत्रमित्रद्रविणात्मजाद्यैर्भवेद्वियोगो दशनास्यपीडा ॥ २१ ॥

और जो कुम्भराशिगत वर्गोत्तमी चन्द्रमा हो तो अपनी दशामें किसी बल-

वान् मनुष्यसे वैर करावे, स्त्री और मित्र, धन, संतानका वियोग करावे, दांत और मुखमें पीडा कराता है ॥ २१ ॥

अथ मीनराशिस्थितचन्द्रदशाफलम् ।

मीनोपयातस्य च शीतभानोर्दशाप्रवेशे हि जलोद्भवार्थः ।
कलत्रपुत्रादिसुखानि नूनं शत्रुक्षयो बुद्धिविवृद्धिरुच्चैः ॥२२॥

जो मीनराशिमें चन्द्रमा बैठा हो तो अपनी दशामें जलके सम्बंधसे धनकी प्राप्ति करावे और स्त्री पुत्रादिकोंका सुख करावे, शत्रुओंका नाश करावे और बुद्धिकी बडी वृद्धि कराता है ॥ २२ ॥

अथ वर्गोत्तममीनराशिगतचन्द्रदशाफलम् ।

वर्गोत्तमस्थस्य झषे हिमांशोर्दशाप्रवेशे महिषीगजाश्वान् ।
पुत्रादितोषं रिपुनाशमुच्चैर्लभेन्मनुष्यो हि यशोमनीषाम् ॥२३॥

जो मीनराशिगत वर्गोत्तमी चन्द्रमा हो तो अपनी दशामें भैंस और हाथी, घोडोंका सुख, पुत्रादिकोंसे संतोषको प्राप्त और शत्रुओंका नाश करावे और बडे यशका लाभ कराता है ॥ २३ ॥

अथ व्ययभावस्थितचन्द्रदशाफलम् ।

दशाप्रवेशे व्ययभावगेन्दोः पापार्जितद्रव्यसमुद्गमः स्यात् ।
क्षीणे रिपुस्थानगते हिमांशौ सम्यक्फलं प्राग्गदितं तथैव ॥२४॥

जो व्ययभावस्थित चन्द्रमा हो तो अपनी दशामें पाप करके धन इकट्ठा करे और जो क्षीण चन्द्रमा छठे बैठा हो तो भी पहिलेका कहा फल होता है ॥ २४ ॥

अथ नीचराशिगताष्टमभावस्थचन्द्रदशाफलम् ।

नीचस्थितस्याष्टमभावगेन्दोर्दशाप्रवेशे हि गदोद्गमः स्यात् ।
चेत्पापयुक्तो निधनं तदानीं जातिच्युतिं वा लभते मनुष्यः ॥२५॥

जो नीचराशिगत अष्टमभावमें बैठा हो तो अपनी दशामें रोगकी वृद्धि करावे और जो नीचराशिगत पापग्रहयुक्त चन्द्रमा अष्टममें हो तो मृत्युको देता है अथवा जातिसे पतित होता है ॥ २५ ॥

अथ भौमदशाफलम् ।

ताराग्रहाः स्वोच्चगृहादिसंस्था वक्रास्तमानानुगता यदि स्युः ।
मिश्रं फलं ते निजपाककाले यच्छन्ति नूनं सुधिया विचिन्त्यम् ॥१॥

अब मंगलकी दशाका फल कहते हैं-जो भौमादि पांचताराग्रह अपने उच्चमें वा स्वक्षेत्र वा मूलत्रिकोण वक्रगत वा अस्तंगत हों तो अपनी दशामें मिश्रफलको देते हैं निश्चयकर इसका विचार बुद्धिमान् करें ॥ १ ॥

स्यात्पाके क्षितिनन्दनस्य च धनं शस्त्राच्च पानीपते-
र्भैषज्याच्च चतुष्पदादपि तथा नानाविधैरुद्यमैः।
पित्तासृग्ज्वरपीडनं क्षितिपतेर्भीतिं च नीतिच्युतिं
मूर्च्छाद्यं च निजालये कलिरिति प्रोक्तं फलं सूरिभिः॥२॥

मंगलकी दशामें राजासे, हकीमी करनेसे, चौपायोंसे और अनेक प्रकारके उद्यम करनेसे मनुष्यको धनकी प्राप्ति होती है और पित्तकरके रुधिरविकार, राजाका भय और नीतिसे भ्रष्ट करता है, मूर्च्छादिरोग और अपने घरमें कलह कराता है, इतने प्रकारका फल पंडित जनोंने कहा है॥ २॥

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके क्षोणीसुतस्यात्मजदारसौख्यम्।
अर्थोपलब्धिः खलु साहसेन रणाङ्गणे चारु यशो विशेषात्॥३॥

और जो मंगल मूलत्रिकोणी हो तो अपनी दशामें पुत्र और स्त्रीके सौख्यको प्राप्त और साहस करके धनकी प्राप्ति और संग्राममें सुन्दर यश पाता है॥ ३॥

अथ मेषराशिगतभौमदशाफलम्।

मेषोपयातस्य च भूसुतस्य स्युः पाककाले किल मंगलानि।
स्यात्संततिः साहसमग्निबाधा नानाविधारातिसमुद्भवः स्यात्॥४॥

जो मेषराशिमें मंगल बैठा हो तो अपनी दशामें मंगलको करे, सन्तान पैदा होती है और हठ करके अग्निबाधाको प्राप्त और अनेक प्रकारके शत्रु पैदा होते हैं॥ ४॥

अथ वृषराशिस्थितभौमदशाफलम्।

वृषस्थितस्यावनिनन्दनस्य पाकप्रवेशे पुरुषः सहर्षः।
अनल्पजल्पो गुरुदेवभक्तः परोपकारादरतासमेतः॥ ५॥

जो वृषराशिमें मंगल बैठा हो तो अपनी दशामें पुरुष हर्षको प्राप्त, बहुत बोलनेवाला, गुरु और देवताओंकी भक्ति और पराया उपकार करता है॥ ५॥

अथ मिथुनराशिस्थितभौमदशाफलम्।

युग्मस्थितोर्वीतनयस्य पाके प्रवासशीलोऽनिलपित्तकोपः।
बहुव्ययः स्यात्स्वजनैर्विरोधो नरः कलाज्ञो नितरां विधिज्ञः॥६॥

जो मिथुनराशिमें मंगल बैठा हो तो अपनी दशामें परदेश जानेकी इच्छावाला, वातपित्तका कोप, बहुत खर्च करावे, मित्रोंसे विरोध करावे, वह मनुष्य कलाओंका जाननेवाला और नितान्त विधानका जाननेवाला होता है॥ ६॥

अथ कर्कराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

कर्कस्थभौमस्य भवेद्दशायामुद्यानवह्निप्रभवार्थयुक्तः ।
नरो हि दारासुतदूरवर्ती क्लेशोपलब्धेर्बलहीनमूर्तिः ॥ ७ ॥

जो कर्कराशिमें परमनीचका मंगल बैठा हो तो अपनी दशामें बाग और बन-अग्निसे उत्पन्न धनको प्राप्त, स्त्री और पुत्रोंसे दूर रहनेवाला, क्लेशको प्राप्त और बलहीन होता है ॥ ७ ॥

अथ नीचांशच्युतभौमदशाफलम् ।

संत्यक्तनीचांशकुजस्य पाके ख्यातः पुमान्सर्वगुणोपपन्नः ।
चतुष्पदाढ्यो बलवानकस्मात्प्रजायते गुल्मरुजाभिभूतः ॥ ८ ॥

जो कर्कराशिगत मंगल परमनीच अंशोंके बाहर हो तो वह मनुष्य प्रसिद्ध, सब गुणोंसहित, चौपायोंकरके युक्त, बलवान् और अकस्मात् गुल्मरोगसे पीडित होता है ॥ ८ ॥

अथ सिंहराशिगतभौमदशाफलम् ।

सिंहाश्रितक्ष्मातनयस्य पाके नूनं भवेन्नायकता बहूनाम् ।
कान्तासुताद्यैश्च वियोगता च बाधा तथा हेतिहुताशजाता ॥९॥

जो सिंहराशिमें मंगल बैठा हो तो अपनी दशामें बहुत मनुष्योंका स्वामी करता है और स्त्री पुत्रों करके वियोगको प्राप्त और शस्त्र तथा अग्निकरके पीडित होता है ॥ ९ ॥

अथ कन्याराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

कन्यानुयातावनिनन्दनस्य पाके सदाचारपरो नरः स्यात् ।
यज्ञक्रियायामपि सादरश्च दारात्मजोर्वीधनधान्यसौख्यम् १०

जो कन्याराशिमें मंगल बैठा हो तो अपनी दशामें आचारमें तत्परताको प्राप्त और यज्ञक्रियाको आदरसे करनेवाला, स्त्री और पुत्र, धन धान्यके सौख्यवाला होता है ॥ १० ॥

अथ तुलाराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

तुलागतेलासुतपाककाले स्याद्द्रव्यभार्यावियुतो हि मर्त्यः ।
चतुष्पदाभावकलिप्रसंगैर्हतोत्सवो वै विकलांगयष्टिः ॥ ११ ॥

जो तुलाराशिमें मंगल बैठा हो तो अपनी दशामें धन और स्त्री करके रहित और चौपायोंसे हीन और कलहके प्रसंगमें उत्साहसे हीन, विकल अंगवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ वृश्चिकराशिस्थितभौमदशाफलम्।

पुमान्भवेद्वृश्चिकराशिगस्य भौमस्य पाके कृषिकर्मकर्ता।
स्वसंग्रहे आत्मनःप्रवृत्तिर्द्वेषी बहूनामतिजल्पकश्च॥ १२॥

जिसके वृश्चिकराशिमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य खेतीका काम करनेवाला और धनसंग्रह करनेवाला, बहुत जनोंका वैरी और बहुत बोलनेवाला होता है॥ १२॥

अथ धनराशिस्थितभौमदशाफलम्।

धनुर्द्धरस्थस्य धरासुतस्य पाकप्रवेशे द्विजदेवभक्तः।
नरो नरेन्द्राप्तमनोरथः स्यात्कलिप्रसंगोपहतोत्सवश्च॥ १३॥

जो धनराशिमें मंगल बैठा हो तो अपनी दशामें देवता और ब्राह्मणोंकी भक्ति कराता है और राजाकरके मनोरथको प्राप्त और कलहके संगसे उत्सवरहित होता है॥ १३॥

अथ मकरराशिस्थितभौमदशाफलम्।

मकरस्य नक्रोपगतस्य पाके राज्योपलब्धिःस्वकुलानुमानात्।
युद्धे विवादे विजयो नितांतं सद्रत्नचामीकरवाजिसौख्यम्॥१४॥

जो मकरराशिमें मंगल अपने परमोच्चमें बैठा हो तो अपनी दशामें राज्यकी प्राप्ति अपने कुलके समान करावे, संग्राममें और झगडेमें विजयको प्राप्त हो श्रेष्ठ रत्न और सुवर्ण तथा घोडोंका सौख्य देता है॥ १४॥

अथोच्चांशत्यक्तभौमदशाफलम्।

उच्चांशमुक्तस्य महीसुतस्य पाके प्रयत्नात्खलु कार्यसिद्धिः।
शस्त्राद्भवेच्चौपहतोऽपि भीतिः संतोषजल्पश्चमहाप्रयासः॥१५॥

जिसके उच्चांशसे रहित मंगल मकरमें बैठा हो तो अपनी दशामें यत्नसे कार्यकी सिद्धिको प्राप्त शस्त्रसे वा व्याघ्रादिसे भयको प्राप्त हो, संतोष हो और विवाद हो और बडा प्रयास कराता है॥ १५॥

अथ कुम्भराशिस्थितभौमदशाफलम्।

आचारहीनश्च सुतादिचिंता बहुव्ययोद्वेगसमाकुलत्वम्।
कुंभोपयातस्य च मंगलस्य स्यात्पाककाले फलमेतदेव॥१६॥

जो कुम्भराशिमें मंगल बैठा हो तो अपनी दशामें आचारसे रहित, पुत्र पौत्रादिकोंकी चिंताको प्राप्त, बहुत खर्च करनेवाला, उद्वेगको प्राप्त होता है॥ १६॥

अथ मीनराशिस्थितभौमदशाफलम्।

मीनोपयातावनिनंदनस्य दशाप्रवेशे हि सुतादिचिन्ता।
व्ययाप्रयत्नं च क्रमोपलब्धिर्मिषग्भिकावहुविदेशवासाः॥१७॥

मीनराशिवर्ती मंगलकी दशा पुत्र और पैसोंकी चिन्ताको प्राप्त, कलह खर्च, रोग, उद्यम करनेसे धनका लाभ, फोड़ा, फुनसी और वातका रोग व परदेशमें वास कराती है ॥ १७ ॥

अथ वर्गोत्तमभौमदशाफलम् ।

संग्रामसंप्राप्तजयाधिशाली बलान्वितोऽत्यंतगुणाभिरामः ।
वर्गोत्तमांशस्थितभूसुतस्य पाके च नानाविधवस्तुलब्धिः ॥ १८ ॥

जो मंगल वर्गोत्तमी हो तो अपनी दशामें संग्राममें जयको प्राप्त, बलबलके सहित, अत्यंत गुणोंकी सुन्दरताको प्राप्त, अनेक वस्तुओंका लाभ कराता है ॥ १८ ॥

अथ नीचांशस्थितभौमदशाफलम् ।

नीचांशसंस्थस्य कुजस्य पाके वृथाटनत्वं मनसो विषादः ।
फलोन्मुखं कार्यमतीवदूरे नीचत्वमुच्चैर्विगताधिकत्वम् ॥ १९ ॥

जो मंगल नीच नवांशमें बैठा हो तो अपनी दशामें वृथा भ्रमण करावे मनमें विषाद करावे, प्राप्त होनेवाली वस्तु अथवा कार्यसिद्धि होनेमें विघ्न पड़ता है और उच्चपदसे रहित अधिकारको नष्ट कराता है ॥ १९ ॥

अथ मूलत्रिकोणराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

मूलत्रिकोणोच्चगृहस्थितस्य कुजस्य कर्माधिगतस्य पाके ।
राज्योपलब्धिर्विजयो रिपुभ्यः सद्वाहनालंकरणानि नूनम् ॥ २० ॥

जो मंगल अपने मूलत्रिकोण वा उच्चराशिगत दशमभावमें बैठा हो तो अपनी दशामें राज्यकी प्राप्ति कराता है, शत्रुओंसे जयको प्राप्त, श्रेष्ठ सवारी और आभूषणोंको प्राप्त कराता है ॥ २० ॥

अथ बुधदशाफलम् ।

विद्याविवेकप्रभुतासमेतः कृषिक्रियायज्ञविधानचित्तः ।
महोद्यमावाप्तधनश्च नूनं भवेन्मनुष्यो शशिजस्य पाके ॥ १ ॥
शिल्पादिकर्मण्यतिकौशलं स्यान्मित्योत्सवोत्कर्षविशेष एव ।
सल्लापगीताभिरुचिर्नवीनसद्भांडभूषागृहनिर्मितत्वम् ॥ २ ॥
कुतूहलैर्भाषणहास्यहर्षैः कालक्रमत्वं विनयोपलब्धिः ।
आचार्यविद्वज्जनसंमतत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ॥ ३ ॥
पीडापि गाढा कफवातपित्तैः संचयोऽर्थस्य च सौम्यपाके ।
बलाबलत्वं प्रविचार्य सर्वं शुभाशुभत्वं सुधिया विचिन्त्यम् ४

अब बुधकी दशाका फल कहते हैं-विद्या, विवेक और प्रभुता करके सहित लेखकी काम, यज्ञविधान करनेमें चित्तवाला, बहुत उद्यम करे, धन करके पूर्णताको कराता है ॥ १ ॥ शिल्पादिकर्मोंमें कुशलताकी प्राप्ति, हमेशा उत्सवोंकी प्राप्ति, श्रेष्ठ बाजा और गीतिमें रुचि करावे, नवीन श्रेष्ठ वर्तन और आभूषण मकानोंका बनवाना होता है कुतूहल, वार्तालाभ और हँसी करके समयको व्यतीत करे, नम्रताको प्राप्त, आचार्य और गुरुसे सम्मानको प्राप्त, स्त्री पुत्रोंके सुखकी प्राप्ति होती है ॥ २ ॥ कफ, वात, पित्त करके बड़ी भारी पीड़ा करावे और धनसंग्रह नहीं होता है, बुधकी दशामें बलाबल विचार कर सम्पूर्ण शुभाशुभ पंडित जन विचार करके फल कहें ॥ ४ ॥

अथ मेषराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

मेषस्थशीतद्युतिशीतपाके नैकत्र संस्थानकरो नरः स्यात् ।
स्तेयानृतद्यूतशठत्वयुक्तो विमुक्तसौजन्यविधिस्तु निःस्वः ॥५॥

जो मेषराशिमें बुध बैठा हो तो अपनी दशामें एक जगह स्थिति नहीं करावे चोरी, झूठ, जुआ और शठताको करावे, स्वजनतारहित, धनहीन कराता है ॥ ५ ॥

अथ वृषराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

वृषाधिरूढस्य जडांशुसूनोर्दशाप्रवेशे व्ययकृन्मनुष्यः ।
मातुस्त्वनिष्टश्च कलत्रपुत्रमित्रादिचिंता गलरुग्भयार्तः ॥ ६ ॥

वृषराशिगत बुध स्वदशामें मनुष्यको धनका व्यय कराता है, माताको नष्ट फल कराता है, स्त्रीपुत्रादिकोंकी चिंताको करावे और गलेमें रोग करता है ॥ ६ ॥

अथ मिथुनराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

द्वंद्वाधिसंस्थस्य बुधस्य पाके त्वनेकवार्ता बहुजल्पकर्ता ।
दारात्मजज्ञातिसुखोपपन्नो नूनं जनन्याश्च सुखेन हीनः ॥ ७ ॥

जो मिथुनराशिमें बुध बैठा हो तो अपनी दशामें अनेक बातें करे, बहुत बकवाद बके, स्त्री पुत्र और ज्ञातिके सुखसहित हो और निश्चय कर माताके सुखके हीन होता है ॥ ७ ॥

अथ कर्कराशिगतबुधदशाफलम् ।

कर्काश्रितस्येंदुसुतस्य पाके विदेशवासाल्पसुखो विरोधी ।
मित्रैश्च सत्काव्यकलार्जितार्थोऽप्यर्थं मनुष्यो व्यवसाययुक्तः ८

जो कर्कराशिमें बुध बैठा हो तो अपनी दशामें परदेशका वास करावे, थोड़ा सुख और विरोध करावे और श्रेष्ठ काव्यसे धनलाभ करावे और बड़े व्यवसायसहित होता है ॥ ८ ॥

अथ सिंहराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

सिंहस्थितस्येंदुसुतस्य पाके लोलं भवेद्वैभवमेव धैर्यम् ।
स्वमित्रदारात्मजसौख्यहानिः स्यान्मानवानां मतिहीनता च ९

जो सिंहराशिमें बुध बैठा हो तो अपनी दशामें चञ्चल वैभव और धैर्य होता है, स्नेह मित्र और स्त्री पुत्रके सौख्यकी हानि करावै और मतिकी हीनताको कराता है ॥ ९ ॥

अथ परमोच्चराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

उच्चाश्रितस्येंदुसुतस्य पाके स्यान्मानवो वै बहुवैभवाढ्यः ।
लेखक्रियाकाव्यकलानुरक्तो जितारिपक्षश्च सुनीतियुक्तः ॥१०॥

जो बुध अपने परमोच्चमें बैठा हो तो मनुष्यको बहुत वैभवयुक्त कराता है, लेखक्रिया और काव्यकी कलामें तत्पर करावे, शत्रुओंको जीते और श्रेष्ठ नीतियुक्त होता है ॥ १० ॥

अथ मूलत्रिकोणांशस्थितबुधदशाफलम् ।

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके विवेकविद्यादिगुणैः प्रपूर्णः ।
विदेशयानानुरतो नरः स्यात्पराक्रमाद्वाप्तधनो विधिज्ञः ॥११॥

जो बुध कन्याराशिगत मूलत्रिकोणी हो तो अपनी दशामें विवेक, विद्या और अनेक गुणोंकरके पूर्ण होता है, परदेशकी यात्रा करनेवाला, पराक्रमसे धनको प्राप्त करे और विधिका जाननेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ स्वक्षेत्रे कन्याराशिस्थबुधदशाफलम् ।

तुंगत्रिकोणाक्रमणप्रकर्तुर्बुधस्य पाके पशुसौख्यहानिः ।
स्वबंधुवैरं विकलत्वमंगे कलिप्रसंगेऽतिविहीनता स्यात् ॥१२॥

जो बुध कन्याराशिमें स्वक्षेत्रमें हो तो अपनी दशामें पशुओंके सौख्यको हानि करावे, अपने भाईसे वैर करावे, शरीरमें विकलताको करावे, कलहके प्रसंगसे हीनताको प्राप्त कराता है ॥ १२ ॥

अथ तुलाराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

तुलागतस्येंदुसुतस्य पाके स्यात्क्षीणता दृक्मतिवाग्विलासे ।
शिल्पादिकर्मण्यतिनैपुणं च वाणिज्यतोऽर्थः पशुपीडनं च १३

जो तुलाराशिमें बुध बैठा हो तो अपनी दशामें दृष्टिकी क्षीणतासहित, बुद्धि और वाग्विलासमें भी क्षीणताको प्राप्त और शिल्पकर्ममें निपुणताको प्राप्त व्यवहारसे धनलाभ और पशुकी पीडा देता है ॥ १३ ॥

अथ वृश्चिकराशिस्थितबुधदशाफलम्।

पाके भवेद्वृश्चिकसंस्थितस्य मृगांकसूनोर्मनुजोऽल्पतुष्टः।
आचारकर्मक्रमणानुरक्तो व्ययेन युक्तः स्वजनैर्वियुक्तः ॥१४॥

जो वृश्चिकराशिमें बुध बैठा हो तो अपनी दशामें थोडे सन्तोषको प्राप्त, आचार कर्म करनेमें तत्पर, खर्च करके सहित और अपने जनोंसे रहित होता है ॥ १४ ॥

अथ धनूराशिस्थितबुधफलम्।

शरासनाभ्यासनतां गतस्य बुधस्य पाके बहुनायकः स्यात्।
मन्त्री च नामद्वयतासमेतः कृषिक्रियावित्तयुतो मनुष्यः ॥१५॥

जो धनराशिमें बुध बैठा हो तो वह मनुष्य बहुत पुरुषोंका स्वामी होता है और राजाका मंत्री, दो नामवाला हो, खेतीकी क्रिया और धनसहित होता है ॥ १५ ॥

अथ मकरराशिस्थितबुधदशाफलम्।

मृगांकसूनोर्हि मृगस्थितस्य पाके भवेद्भूरि ऋणं नराणाम्।
बह्वाटनं वै कपटत्वमुच्चैर्नीचैश्च सख्यं मतिहीनता च ॥१६॥

जो मकरराशिमें बुध बैठा हो तो अपनी दशामें बहुत कर्ज करे, बहुत भ्रमण करावे और ज्यादा कपट करावे और नीचबुद्धि कराता है ॥ १६ ॥

अथ कुम्भराशिस्थितबुधदशाफलम्।

सौम्यस्य कुंभोपगतस्य पाके विहीनतेजा मनुजोऽतिनिःस्वः।
मित्रादिपीडापरिपीडितात्मा विदेशयानव्यसनानुरक्तः ॥१७॥

जो कुम्भराशिमें बुध बैठा हो तो अपनी दशामें तेजहीन व धनहीन करे, मित्रोंको पीडा करे, पराधी आत्माको पीडा दे, परदेशयात्रा करे और व्यसनोंमें तत्पर होता है ॥ १७ ॥

अथ मीनराशिस्थितबुधदशाफलम्।

नीचांशसंस्थस्य बुधस्य पाके विवेकसत्योपहितो हि मर्त्यः।
स्थानांतरस्थो व्यवसायशीलःस्यादल्पलाभःकृशकायकांतिः१८

जो बुध मीनराशिगत अपने परमनीचांशमें बैठा हो तो वह मनुष्य विवेक और सत्यरहित और स्थानांतरको प्राप्त, उद्यम करनेमें स्वभाव जिसका, थोडे लाभवाला और दुर्बल देहवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ गुरुदशाफलम्।

दशाप्रवेशे त्रिदशार्चितस्य भूपप्रधानाप्तमनोरथः स्यात्।
सत्कर्मधर्मागमशास्त्रवेत्ता भवेन्मनुष्यः सततं विनीतः ॥१॥

यज्ञादिकर्मण्यतिसादरत्वं भवेत्प्रवृत्तिर्द्विजदेवभक्तौ ।
अत्यर्थमर्थो विभुताविशेषः पुत्रादितोषः पुरुषस्य नूनम् ॥ २ ॥
भूम्यम्बराश्वादिसुखोपलब्धिर्बलोपपन्नः कुलमुख्यता च ।
गतागतागामिविचारणोच्चैः सत्संगतिश्चारुमतिर्धृतिश्च ॥ ३ ॥
दाहादिपीडाऽपि गले कदाचिद्विरुद्धभावस्थितितो विचिन्त्यम् ।
सामान्यमेतत्फलमुक्तमार्यैर्वक्ष्येऽधुना यत्प्रतिराशिसूक्तम् ॥ ४ ॥

अब बृहस्पतिकी दशाका सामान्य फल कहते हैं—बृहस्पतिकी दशाप्रवेशमें राजाके मन्त्रीसे मनोरथको प्राप्त, श्रेष्ठ कर्म और धर्मका जाननेवाला, वेद-शास्त्रका वेत्ता, निरन्तर नम्रतासहित होता है ॥ १ ॥ यज्ञादिकर्मोंमें बहुत आदर पानेवाला ब्राह्मण देवताओंमें भक्तिकी प्रवृत्ति करनेवाला, बड़ाईको प्राप्त, धन वैभवकरके सहित और पुत्रोंसे सुख पानेवाला होता है ॥ २ ॥ धरती, वस्त्र और घोड़ोंके सुखको प्राप्त, बलसहित, कुलमें, अग्रगामी, तीनों कालका श्रेष्ठ विचार करनेवाला, सत्संग और धैर्यवान् होता है ॥ ३ ॥ दाहकी पीडा कभी गलेमें होती है और अपने घरमें विरोध करनेवाला होता है, यह बृहस्पतिकी दशाका सामान्य फल आचार्योंने कहा है । अब प्रत्येक राशिस्थित बृहस्पतिका फल कहते हैं ॥ ४ ॥

अथ मेषराशिगतगुरुदशाफलम् ।

दशाप्रवेशे त्रिदशार्चितस्य मेषोपयातस्य भवेन्नराणाम् ।
धनं धनेशाद्बहुनायकत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ॥ ५ ॥

जो मेषराशिमें बृहस्पति स्थित हो तो उसकी दशाके प्रवेशमें धनको प्राप्त, बहुत मनुष्योंका स्वामी और स्त्री पुत्रादिकोंके सुखको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

वृषोपयातस्य च गीष्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषोऽतिदुःखी ।
विदेशवासी बहुसाहसश्च पिशाल्पता वित्तगतोत्सवश्च ॥ ६ ॥

जो वृषराशिमें बृहस्पति हो तो उसकी दशामें मनुष्य अत्यन्त दुःखको प्राप्त, परदेशमें वास करनेवाला, बड़ा साहसी, पीछे चलनेवाला, धन खर्च करनेवाला और उत्सवरहित होता है ॥ ६ ॥

अथ मिथुनराशिगतगुरुदशाफलम् ।

युग्मोपयातस्य बृहस्पतेश्च दशाप्रवेशे पुरुषः सुखी स्यात् ।
[illegible]ज्ञा च गोत्रप्रभवैर्विरोधी कलत्रपाद्यातिविपत्प्रतप्तः ॥ ७ ॥

जो मिथुनराशिमें बृहस्पति स्थित हो तो मनुष्य पण्डितताको प्राप्त, माता तथा गोत्रके पुरुषोंसे वैरको प्राप्त और पीछे वाद करके विवादयुक्त होता है ॥ ७ ॥

अथ परमोच्चगतगुरुदशाफलम् ।

वाचस्पतेरुच्चसमाश्रितस्य स्यात्पाककाले कुलराज्यलब्धिः ।
विशिष्टनाम्ना प्रथितत्वमुच्चैरुच्चैश्च सख्यं बहुवैभवं च ॥ ८ ॥

जो अपने परमोच्चांशमें पांच अंशके भीतर कर्कराशिगत बृहस्पति बैठा हो तो अपनी दशामें राज्यकी प्राप्ति कराता है और विशेषसहित नामको प्राप्त होता है और बड़ा नामी, बड़े आदमियोंसे मित्रता करनेवाला, बहुवैभवको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथोच्चच्युतगुरुदशाफलम् ।

वाचांपतेरुच्चसमुत्थितस्य पाकप्रवेशे पितृमातृदुःखी ।
पूर्वार्जितद्रव्यपरिक्षयेण ततश्च नानाव्यसनाभिभूतः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति परमोच्चसे रहित उच्चराशिमें बैठा हो वह मनुष्य बृहस्पतिकी दशामें पितामाताके दुःखको प्राप्त, पहिले पैदा हुए धनके नाशसे सन्तापको प्राप्त और अनेक व्यसनों सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ सिंहराशिगतगुरुदशाफलम् ।

सिंहस्थितस्यामरपूजितस्य पाकप्रवेशे धनवान्वदान्यः ।
नृपात्तमानो ननु मानवः स्याज्जायातनूजानुजजातहर्षः ॥ १० ॥

जो सिंहराशिमें बृहस्पति बैठा हो तो उसकी दशामें धनवान् और उदार होता है तथा राजाकरके मानको प्राप्त और स्त्री पुत्र भ्राता करके हर्षको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

कन्याराशिगतगुरुदशाफलम् ।

कन्याधिरूढस्य गुरोर्दशायां भवेन्मनुष्यो नृपमानलब्धः ।
कान्तासुताप्तसुखः कदाचिच्छूद्रादिनीचैः कलहप्रसक्तः ॥ ११ ॥

जो कन्याराशिमें बृहस्पति बैठा हो तो अपनी दशामें मनुष्यको राजासे मानको प्राप्त, स्त्री पुत्रोंसे सुखको प्राप्त, शूद्रादि नीचों करके कलहको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ तुलाराशिगतगुरुदशाफलम् ।

तुलास्थदम्भोलिभिदिज्यपाके विवेकहीनः प्रमितान्नभोक्ता ॥
कलत्रपुत्रैः कृतशत्रुभावश्चोत्साहहीनो ननु मानवः स्यात् ॥ १२ ॥

जो कुंभराशिमें बृहस्पति बैठा हो तो वह मनुष्य विवेकरहित, बहुत अन्न खानेवाला, स्त्री पुत्रोंकरके शत्रुभावको प्राप्त और उत्साहरहित होता है ॥ १२ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतगुरुदशाफलम् ।

बृहस्पतेर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे मतिमान्समर्थः ।
प्राज्ञः सुतोत्साहयुतो विनीतोऽनृणी भवन्नो नियमेन हीनः॥१३॥

जो वृश्चिकराशिमें बृहस्पति बैठा हो तो वह मनुष्य बुद्धिमान्, सामर्थ्यवान्, चतुर, उत्साहसहित और नम्रता करके युक्त, ऋणसे रहित, नियमसे हीन होता है ॥ १३ ॥

अथ मूलत्रिकोणांशराशिगतगुरुदशाफलम् ।

मूलत्रिकोणांशगतस्य पाके गुरोर्दशायां मतिमान्मनुष्यः ।
स्यान्मांडलीको यदि वा प्रधानः पित्रान्वितः स्त्रीवचनाऽनुसक्तः १४

जो बृहस्पति धनराशिमें अपने मूलत्रिकोणांशमें बैठा हो तो अपनी दशामें बुद्धिमान् करता है, राजा मंडलका स्वामी अथवा वजीर, पिताकरके सहित और स्त्रीके वचनोंमें आसक्त होता है ॥ १४ ॥

अथ स्वक्षेत्रांशगतगुरुदशाफलम् ।

त्रिकोणांशकेभ्यः परतश्च चापे संस्थस्य देवेंद्रगुरोर्दशायाम् ।
कृषिक्रियायाञ्चचतुष्पदेषु भवेन्मनुष्यस्य मनःप्रवृत्तिः॥ १५॥

जो बृहस्पति धनराशिमें मूलत्रिकोणांशसे रहित अपने स्वक्षेत्रमें बैठा हो तो अपनी दशामें खेतीके काममें और पशुकर्मकरके चौपायोंमें मनकी प्रवृत्ति करनेवाला होता है ॥ १५ ॥

अथ नीचांशगतगुरुदशाफलम् ।

नीचांशसंस्थस्य मृगान्वितस्य गुरोर्दशायां परकर्मकर्त्ता ।
मर्त्यो भवेज्जाठरगुह्यरोगी सार्द्धं वियोगी धनबंधुभिश्च ॥१६॥

जो बृहस्पति मकरराशिमें नीचांशगत बैठा हो तो पराये कर्म करनेवाला, पेटमें और गुह्यस्थानमें रोगयुक्त, धन और सम्बन्धियों करके रहित होता है ॥ १६ ॥

अथ नीचांशच्युतगुरुदशाफलम् ।

वाचस्पतेर्नीचलवोज्झितस्य पाके निषादात्कृषितो धनाप्तिः ।
भूमीरुहेभ्यो धनवंचनाद्वा क्लेशोपलब्धिर्मनुजस्य ॥१७॥

नीचांशसे पतित मकरराशिगत बृहस्पतिकी दशामें निषादकरके खेती करके

धनप्राप्ति करनेवाला और दुर्लोकरके, ठगाई करके धन प्राप्त करनेसे क्लेशको प्राप्त करता है ॥ १८ ॥

अथ कुंभराशिगतगुरुदशाफलम् ।

पाकप्रवेशे कलशस्थितस्य वाचामधीशस्य नरः कलाज्ञः ।
विद्याप्रसिद्धश्च महामतिः स्यात्कांताविलासानुरतोनितांतम् १८

जो कुंभराशिमें बृहस्पति बैठा हो तो अपनी दशामें कलाओंका जाननेवाला और प्रसिद्ध विद्यावाला, बड़ा बुद्धिमान् और स्त्रीके विलासमें अत्यन्त तत्पर होता है ॥ १८ ॥

अथ मीनराशिगतगुरुदशाफलम् ।

झषोपयातस्य च गीष्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषो मनीषी ।
सन्मानसूनुप्रमदादिसंपद्राजान्वये यातमहासुखश्च ॥ १९ ॥

जो मीनराशिमें बृहस्पति बैठा हो तो अपनी दशामें श्रेष्ठताको प्राप्त और सन्मान, पुत्र, स्त्री और संपत्ति सहित राजाके वंशमें उत्पन्न मनुष्योंसे बड़े सुखको प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

अथ भृगुदशाफलम् ।

दैत्यामात्यः स्वीयपाकप्रवेशे योषाभूषारत्नवस्त्रोपलब्धिम् ।
नानामानं मानवानां प्रकुर्यात्कंदर्पस्याभ्युद्गमासौख्यसङ्घैः ॥१॥
गीते नृत्येऽत्यंतसंजातहर्षो विद्याभ्यासप्रीतिकृच्चारुशीलः ।
बुद्ध्याधिक्यश्चान्नदानप्रवृत्तिर्दक्षो मर्त्यो विक्रये वा क्रये वा ॥२॥
गोवाहनेभ्यो ननु नन्दनेभ्यः सौख्यं भवेन्नंदननन्दनेभ्यः ।
पूर्वार्जितस्य द्रविणस्य लब्धिः कलिः कुलेस्याबलनात्स्थलाच्च ॥३॥
कफानिलाभ्यां किल निर्बलं स्यात्कलेवरं नीचतरैश्च वैरम् ।
विप्रादिर्षितापरितप्तमेव चित्तं च सख्यं कुजनैः कदाचित् ॥ ४ ॥
सामान्यतः प्रोक्तमिदं सितस्य दशाफलं पूर्वमुनिप्रणीतम् ।
अथोच्यतेऽत्र प्रतिराशिजातं फलं प्रयोज्यं बलतारतम्यात् ॥५॥

अब सामान्यसे शुक्रकी दशाका फल कहते हैं:-शुक्र अपनी दशाके प्रवेशमें स्त्री और भूषण तथा रत्न और वस्त्रोंकी प्राप्ति कराता है और कामदेवकी वृद्धि एवं बड़ोंके द्वारा सुखकी प्राप्ति करता है ॥ १ ॥ गीत और नृत्यमें बड़े हर्षको प्राप्त,

विद्या पढनेमें प्रीति करनेवाला, सुन्दर स्वभावको करता है और चतुर बुद्धिमान्, अन्नदानमें प्रवृत्ति करनेवाला और चीजोंके क्रय विक्रय करनेमें चतुर होता है ॥२॥ और गायसे, सवारीसे, बेटे, पोतोंसे सुख पाता है और पहिलेके पैदा किये हुए धनको नाश और कुलमें कलहको प्राप्त और मार्गमें तथा घरमें कलह होता है ॥३॥ और कफ वातकरके निर्बलता होती है और नीचपुरुषोंसे प्रीति हो और मित्रादिकोंसे चिंताको प्राप्त, संतापयुक्त चित्त होता है और कभी कभी दुष्टोंसे मित्रताको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥ यह सामान्यतः शुक्रका फल बलाबल करके पहिले मुनीश्वरोंने कहा है, अब प्रत्येक राशिस्थित शुक्रकी दशाका फल कहते हैं-यह फल भी शुक्रका बलाबल देख कर कहना चाहिये ॥ ५ ॥

अथ मेषराशिगतभृगुदशाफलम् ।

शुक्रस्य पाके क्रियसंस्थितस्य स्त्रीवित्तसौख्यापचयो नराणाम् ।
सदाटनत्वं व्यसनानि नूनमुद्वेगता चञ्चलचित्तवृत्तीः ॥६॥

जो मेषराशिमें शुक्र बैठा हो तो अपनी दशामें स्त्री और धनके सौख्यका नाश हमेशा भ्रमण करनेवाला, दुर्व्यसनोंसहित उद्वेगतासहित और चञ्चल चित्तवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ वृषराशिस्थितभृगुदशाफलम् ।

वृषोपयातोशनसो दशायां कृषिक्रियासत्पशुसौख्यवृद्धिः ।
शास्त्रे मतिः स्यात्सुतां विचित्रा दातृत्वकन्याजननप्रसादाः ॥७॥

जो वृषराशिमें शुक्र बैठा हो तो अपनी दशामें खेती तथा श्रेष्ठ पशुओं करके सौख्यकी वृद्धिको प्राप्त, शास्त्रमें विचित्र बुद्धिवाला, दान करनेमें प्रीति, कन्याकी संतान पैदा करे और प्रसन्नताको प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

अथ मिथुनराशिगतभृगुदशाफलम् ।

युग्मगामिभृगुजस्य दशायां मानुषो भवति काव्यकलाज्ञः ।
हास्यविस्मयकथारुचिरुच्चैरन्यदेशगमनोत्सुकचित्तः ॥८॥

जो मिथुनराशिमें शुक्र बैठा हो तो अपनी दशामें मनुष्य काव्यकी कलाओंका जाननेवाला और हँसीमें, विस्मयमें, कथामें रुचि करनेवाला और परदेश जानेकी इच्छा करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ कर्कराशिगतभृगुदशाफलम् ।

कर्कोपयातस्य सितस्य पाके भवेन्मनुष्यो निजकार्यदक्षः ।
भार्यान्तरावाप्तिसमुत्सुकोऽपि नानाप्रकारोद्यमकृत्कृतज्ञः ॥९॥

जो कर्कराशिमें शुक्र बैठा हो तो अपनी दशामें अपने काममें चतुरताको प्राप्त, स्त्रीको प्राप्त, श्रेष्ठ उत्साहको प्राप्त, अनेक तरहके उद्यम करनेवाला और कृपण होता है ॥ ९ ॥

अथ सिंहराशिगतभृगुदशाफलम् ।

दैत्येन्द्रवन्द्यस्य मृगेंद्रगस्य पाकप्रवेशे वनितात्तवित्तः ।
नूनं भवेदन्यधनोपजीवी पश्वादिपुत्राल्पसुखो मनुष्यः ॥ १० ॥

जो सिंहराशिमें शुक्र बैठा हो तो अपनी दशामें स्त्री करके धनको प्राप्त, पराये धनकरके आजीविका करनेवाला और चौपाये आदि तथा पुत्रोंके थोडे सुखको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

अथ कन्याराशिगतभृगुदशाफलम् ।

पाके भवेद्दानववन्दितस्य कन्यास्थितस्यापचयः सुखानाम् ।
वित्ताल्पता भग्नमनोरथत्वं लोलं मनः स्वस्थलतश्चलत्वम् ॥ ११ ॥

जो कन्याराशिमें शुक्र बैठा हो तो अपनी दशामें सुखसमूहसहित होता है, धनकी अल्पतासहित और मनोरथ नष्ट, चञ्चलमन और अपने स्थानसे चलनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ तुलाराशिगतभृगुदशाफलम् ।

तुलाधरस्थाऽसुरपूजितस्य दशाप्रवेशे कृषिकृन्मनुष्यः ।
विशिष्टमानो धनवाहनाढ्यः स्वजातिसंप्राप्तमहासुखः स्यात् ॥ १२ ॥

जो तुलाराशिमें शुक्र बैठा हो तो उसकी दशामें खेती करनेवाला, श्रेष्ठ मानको प्राप्त, धन वाहनसहित और अपनी ज्ञातिकरके बडे सुखको प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतभृगुदशाफलम् ।

भवेद्भृगोर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे पुरुषः प्रवासी ।
परस्य कार्ये निरतः प्रतापी ऋणार्थयुक्तः कलहानुरक्तः ॥ १३ ॥

जो वृश्चिकराशिमें शुक्र बैठा हो तो अपनी दशामें परदेशयात्रा करनेवाला, पराये कार्यमें तत्पर, बडा प्रतापी, कर्ज करके सहित और कलहमें तत्पर रहता है ॥ १३ ॥

अथ धनराशिगतभृगुदशाफलम् ।

धनोपयातासुरपूजितस्य पाके प्रकामं नृपतेः प्रतिष्ठा ।
कलाकलापाकलनं किल स्यात्क्लेशाधिकत्वं द्विषतां प्रवृद्धिः ॥ १४ ॥

जो धनराशिमें शुक्र बैठा हो तो उसकी दशामें कामनासहित होता है, राजासे प्रतिष्ठाको प्राप्त, कलाओंके फलसहित, क्लेशकी अधिकता सहित और शत्रुताकी वृद्धिसहित होता है ॥ १४ ॥

अथ मकरराशिगतभृगुदशाफलम् ।

मकरस्थशुक्रस्य दशाप्रवेशे स्यात्पूरुषः शत्रुविनाशदक्षः ।
श्लेष्मानिलाभ्यां विबलः कदाचित्कुटुम्बचिन्तासहितः सहिष्णुः १५

मकरराशिगत शुक्रकी दशामें मनुष्य शत्रुओंके नाश करनेमें चतुर, कफवात होनेसे निर्बल, कभी कभी कुटुम्बकी चिंतासहित और सहनशीलतावाला होता है ॥ १५ ॥

अथ कुंभराशिगतभृगुदशाफलम् ।

उशनसः कलशस्थितिकारिणो यदि दशा पुरुषो व्यसनाकुलः ।
गदयुते वियुतः शुभकर्मणा व्रतहतोऽप्यनृतोक्तिरतो भवेत् १६॥

जो कुंभराशिगत शुक्रकी दशा हो तो पुरुष व्यसनों करके व्याकुल, रोगसहित, श्रेष्ठ कार्यरहित व्रतों करके रहित और झूठ बोलनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ मीनराशिगतभृगुदशाफलम् ।

दशाप्रवेशे भृगुनन्दनस्य मीनाधिसंस्थस्य नृपप्रधानः ।
स्यान्मानवोऽत्यंतधनप्रसन्नः कृषिक्रियाभोगभरोपपन्नः ॥१७॥

जो मीनराशिमें शुक्र बैठा हो तो अपनी दशामें राजाका मन्त्री, बहुत धनसे प्रसन्नताको प्राप्त और खेतीकी क्रियामें आसक्त भोगयुक्त होता है ॥ १७ ॥

अथोच्चांशगतभृगुदशाफलम् ।

स्वोच्चांशभाजो भृगुजस्य पाके विलग्नकर्मोपगतस्य मर्त्यः ।
क्षोणीहिरण्योत्तमवारणाद्यैर्युतो भवेद्वै निजवंशनाथः ॥ १८ ॥

जो अपने उच्चांशमें शुक्र बैठा हो और लग्न वा दशममें बैठा हो तो अपनी दशामें धरती, सोना और पेड़, श्रेष्ठ हाथी और घोडोंसे संपन्न और अपने वंशमें नाथ होता है ॥ १८ ॥

अथ शनिदशाफलम् ।

भवेद्दशायां हि शनैश्चरस्य नरः पुरग्रामकृताधिकारः ।
धीमांश्च दानाधिकृतातिशाली नानाकलाकौशलसंयुतश्च ॥१॥
तुरंगहेमाम्बरकुञ्जराद्यैः संपन्नतां याति विनीततां च ।
देवद्विजार्चाभिरतो विरोधात्पुरातनस्थानकलत्रसौख्यः ॥२॥

देवद्विजेंद्रालयकृत्सुशीलो विशालकीर्तिः स्वकुलावतंसः।
आलस्यनिद्राकफवातपित्तजनाङ्गनादद्रुविचर्चिकार्तः॥ ३॥
सामान्यमेतत्फलमुक्तमत्र शनेर्दशायां गदितं हि पूर्वैः।
अथाभिधास्ये प्रतिराशिजाते फलं सुधीभिर्बलतो विचिन्त्यम्॥४॥

अब सामान्यरूपसे शनैश्चरका फल कहते हैं—शनैश्चरकी दशामें मनुष्य नगर और ग्रामके अधिकारको प्राप्त होता है, बुद्धिमान, दानकी अधिकतासहित, अनेक-कलामें कुशल होता है॥ १॥ घोड़े, सोना, वस्त्र, हाथियों करके युक्त, नम्रतासहित, देवब्राह्मणोंके पूजनमें तत्पर, पुराने स्थानोंका सौख्य प्राप्त करनेवाला होता है॥ २॥ देवता और ब्राह्मणोंके स्थानोंका बनानेवाला, श्रेष्ठशील, बडी कीर्तिवाला, अपने कुलमें मनार्थी होता है और आलस्य करके सहित, निद्रायुक्त, कफ, वात पित्तसहित और उसकी स्त्री दाद और फुन्सियोंके रोगसे पीडित होती है॥ ३॥ यह सामान्यतः फल शनैश्चरकी दशाका पूर्वाचार्योंने कहा है। अब अगाडी हरएक-राशिस्थित शनैश्चरके फलका बलाबलके अनुसार विचार करना चाहिये॥ ४॥

अथ मेषराशिगतशनिदशाफलम्।

मेषोपयातस्य शनैश्चरस्य दशाप्रवेशे पुरुषो विशेषात्।
क्लेशाभिभूतः पतनात्सदुःखो विचर्चिकाद्यामयतः कृशांगः॥५॥

जो मेषराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो अपनी दशामें विशेष करके मनुष्य क्लेशों करके सहित और ऊपरसे गिरकर दुःखको प्राप्त और फोडे फुंसीके रोगसे युक्त तथा दुर्बल शरीरवाला होता है॥ ५॥

अथ वृषराशिगतशनिफलम्।

वृषोपयातस्य दिनेशसूनोः पाकप्रवेशे मतिमान्मनुष्यः।
नरेंद्रसम्मानविराजमानः संग्रामसंप्राप्तयशोविशेषः॥ ६॥

जो वृषराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो अपनी दशामें मनुष्यको बुद्धिमान करता है और राजाके सन्मानसे शोभायमान और युद्धमें यशको प्राप्त विशेष करके होता॥ ६॥

अथ मिथुनराशिगतशनिदशाफलम्।

शनेर्दशायां मिथुनाश्रितस्य नरो भवेत्खार्कविलासशीलः।
चोरोग्रवारादिजनाद्धनाप्ती रणप्रसंगाच्च परोपकारी॥ ७॥

जो मिथुनराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशामें भोग विलासमें शीलवाला

और चोरोंसे वा चोरीसे धनकी प्राप्ति करनेवाला, संग्राममें वीर और पराया उपकार करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

कर्कस्थितार्कात्मजपाककाले लोलं मनः पुत्रकलत्रमित्रैः ।
श्रोत्रे च नेत्रे परिपीडनं स्यात्कलेवरं निर्बलतां प्रयाति ॥ ८ ॥

अथ कर्कराशिगतशनिदशाफलम् ।

जो कर्कराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशामें पुत्र स्त्री, मित्रोंकरके, चञ्चल [illegible] और कान, आंखोंमें पीडाको प्राप्त और निर्बलताको प्राप्त शरीर होता है ॥ ८ ॥

अथ सिंहराशिगतशनिदशाफलम् ।

पञ्चाननस्थस्य शनेर्दशायां बाधा भवेद्वै विविधा नराणाम् ।
दारात्मजाद्यैः कलहप्रसंगस्तुरंगगोदासजनेष्वसौख्यम् ॥ ९ ॥

जो सिंहराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशामें अनेक तरहकी बाधाको प्राप्त होता है और स्त्री पुत्रादिकों करके कलहको प्राप्त और घोड़े, गौ तथा दासजनों करके क्लेशको प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अथ कन्याराशिगतशनिदशाफलम् ।

कन्योपयातस्य शनेर्दशायां भवेत्क्रमेण द्रविणोपलब्धिः ।
जलाच्च भूमीरुहतस्तथोच्चप्रदेशतश्चापि महाप्रमोदः ॥ १० ॥

जो कन्याराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशामें क्रमसे धनकी प्राप्ति करनेवाला और जलसे, वृक्षोंसे, उच्चस्थानोंसे और उत्तमदेशसे आनन्दको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

अथ तुलाराशिगतशनिदशाफलम् ।

काले दशायां नलिनीशसूनोस्तुलागतस्योत्तमराज्यलक्ष्मीः ।
गजाश्वहेमाम्बररत्नपूर्णो भवेन्नराणां करुणाधिकत्वम् ॥ ११ ॥

जो तुलाराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशामें उत्तम राज्यलक्ष्मीको प्राप्त हाथी, घोड़े, सोना, कपड़ा और रत्नोंकरके पूर्ण, अधिक दयावान् मनुष्य होता है ॥ ११ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतशनिदशाफलम् ।

सरीसृपस्थस्य शनैश्चरस्य पाके नरः साहसकर्मयुक्तः ।
[illegible] मेऽनुरतश्च नीचानुरक्तश्च दयाविहीनः ॥ १२ ॥

जो वृश्चिकराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशामें दुष्कर्मों [illegible] वाला, कृपण, झूठ बोलनेवाला, नीचोंमें आसक्त और दयारहित होता [illegible]

अथ धनराशिगतशनिदशाफलम्।

धनुर्धरस्थस्य शनैश्चरस्य पाके नरः स्यात्सचिवो [illegible]
संग्रामधीरश्चतुरंगियुक्तः कान्तासुतानन्दविनोदयुक्तः ॥ १३ ॥

जो धनराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो अपनी दशामें राजाका मंत्री होता है, संग्राममें धैर्यवाला, चौपायों सहित, स्त्री और पुत्रोंके आनंद सहित होता है ॥ १३ ॥

अथ मकरराशिगतशनिदशाफलम्।

शनेर्दशायां मकराश्रितस्य बहुश्रमोत्पन्नधनं नराणाम्।
नपुंसकस्त्रीजनसेवनत्वं विश्वासघातेन धनक्षतिश्च ॥ १४ ॥

जो मकरराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशामें बहुत परिश्रम करके धन पैदा करे, नपुंसक और स्त्रीजनोंकी सेवा करनेवाला, विश्वासघात करके धनकी हानि करता है ॥ १४ ॥

अथ कुम्भराशिगतशनिदशाफलम्।

शनेर्दशायां कलशाश्रितस्य सुखानि भूपे महती प्रतिष्ठा।
श्रेष्ठत्वमुच्चैः स्वकुले नरस्य कृषिक्रियापुत्रधनादिलब्धिः ॥ १५ ॥

जो कुम्भराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशामें मनुष्य सुख और बडी प्रतिष्ठाको प्राप्त होता है और बडोंकरके कुलमें श्रेष्ठताको प्राप्त होता है, खेती करके लाभ, पुत्र और धनकी प्राप्तिको करता है ॥ १५ ॥

अथ मीनराशिगतशनिदशाफलम्।

भवेद्दशायां ननु भानुसूनोर्मीनोपयातस्य च मानवस्य।
नानापुरग्रामधनागमाभ्यः सुखं तपोत्साहविवर्जिता च [illegible]

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे
दशाफलाध्यायः ॥ १९ ॥

जो मीनराशिमें शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशामें मनुष्यको, अनेक पुर और ग्राम, धन, स्त्रियोंके सुखको प्राप्त और उत्साहहीन करता है ॥ १६ ॥

इति श्रीबंसबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलाल-कृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां दशाफलवर्णनं नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

अथ महादशाफलाध्यायः ।

दशा द्रकाणेश्च तनोः क्रमेण स्यादुत्तमा मध्यतमाधमा च ।
स्थिरे च कष्टाशुभदा च मध्या मिश्रेऽधमा मध्यतमोत्तमा च ॥ १ ॥

अब महादशाका फल कहते हैं:-लग्नकी दशा द्रेष्काण करके श्रेष्ठ मध्यम अधम फलको देती है । जो स्थिर लग्नमें पहिला द्रेष्काण हो तो श्रेष्ठ और मध्यम द्रेष्काणमें मध्यम और तीसरे द्रेष्काणमें नेष्ट फलको देती है और द्विस्वभावलग्नमें पहिला द्रेष्काण नेष्ट और दूसरा द्रेष्काण श्रेष्ठ और तीसरा द्रेष्काण मध्यम फल देता है और चरलग्नमें पहिला द्रेष्काण मध्यम और दूसरा द्रेष्काण श्रेष्ठ और तीसरा द्रेष्काण नेष्ट होता है ॥ १ ॥

शुभानि मध्यानि च निंदितानि फलानि लग्नेशदशोदितानि ।
तान्येव कल्प्यानि सुधीभिरत्र बलानुमानात्तनुनायकस्य ॥ २ ॥
संशालते यः किल दिग्बलेन खेटः स्वकाष्ठां पुरुषं च नीत्वा ।
महाप्रतिष्ठां कुरुते दशायां नानाधनाभ्यागमनानि नूनम् ॥ ३ ॥

पहिले श्रेष्ठ मध्यम अधम ये तीनो प्रकारके फल जो लग्नदशाके कहे हैं सो सब लग्नेशके बलाबल करके कहने चाहिये ॥ २ ॥ जो ग्रह दिग्बलकरके सहित हो वह ग्रह अपनी दशामें बड़ी भारी प्रतिष्ठा और अनेक तरहका धनलाभ कराता है ॥ ३ ॥

विलोमगामिग्रहपाककाले स्थानार्थसौख्यान्यतिचंचलानि ।
प्रवासशीलत्वमतीव जंतोर्लोके महत्त्वापचयत्वमेव ॥ ४ ॥
ऋजुप्रयातग्रहचरस्य पाके सम्मानसौख्यार्थयशःप्रवृद्धिः ।
षष्ठाष्टमद्वादशवर्जितस्य ग्रहस्य पाकेऽभिमतार्थसिद्धिः ॥ ५ ॥

जो ग्रह वक्रगति हो उसकी दशामें स्थान-धन-सौख्य, अति चंचल होता है और परदेश जानेकी इच्छा करे और संसारमें बड़ी हानिको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥ और मार्गी ग्रहकी दशामें सम्मान और सौख्य धन यशकी वृद्धि होती है व छठे आठवें बारहवें स्थानसे रहित ग्रहकी दशामें इच्छाफलकी प्राप्ति होती है ॥ ५ ॥

नीचारिभस्थस्य च वक्रिणो वा पाके कुकर्माभिरतिर्मनुष्यः ।
विदेशवासी निजबंधुवर्गैस्त्यक्तो भवेद्व्यसनाभियुक्तः ॥ ६ ॥

स्वर्भानुयुक्तस्य च खेचरस्य दशा यरिष्टाप्यतिरिष्टदा स्यात् ।
पाकावसाने ननु मानवानां दुःखानि हानिश्च विदेशयानम् ॥७॥

जो ग्रह नीचराशिगत शत्रुक्षेत्रमें बैठा हो अथवा वक्री हो उस ग्रहकी दशामें खोटे कर्ममें प्रीति होती है और परदेशमें वास, अपने बन्धुजनसे रहित, दुःख करके सहित होता है ॥ ६ ॥ जो राहुयुक्त ग्रह बैठा हो तो अपनी दशामें मङ्गलयोग देता है और दशाके अन्तमें दुःख और हानि तथा परदेशयात्रा कराता है ॥ ७ ॥

जननराशिजनुस्तनुनाथयो रिपुदशासमये मतिविभ्रमः ।
भयमरेरपि राज्यपरिच्युतः खलजनैः कलहो बलहीनता ॥८॥
लग्नेश्वरस्याष्टमभावगस्य भवेद्दशायामतिपीडनं हि ।
दशावसानेऽपि च मानवानां भवेत्समाप्तिः खलु जीवितस्य ॥९॥
क्रूराख्यखेटस्य दशांतराले क्रूरग्रहस्यांतरजा दशा चेत् ।
शत्रूद्गमोऽर्थस्य परिक्षयः स्यादायुःक्षयो वेति नरोत्तमानाम् ॥१०॥

जन्मराशि और जन्मलग्नके स्वामीके शत्रुग्रहकी दशामें बुद्धिको भ्रम और शत्रुका भय, राज्यसे पतित होना है, दुष्टजनोंसे कलह, बलकी हीनता होती है ॥ ८ ॥ और जो लग्नका स्वामी अष्टम भावमें बैठा हो तो उसकी दशामें अत्यन्त पीड़ा हो और दशाके अन्तमें मनुष्योंके जीवनकी समाप्ति करता है ॥ ९ ॥ और पापग्रहकी दशाके बीचमें और पाप ग्रहके अन्तरमें शत्रुकी उत्पत्ति, धनका नाश और आयुका नाश होता है ॥ १० ॥

दशाप्रवेशेऽपि खगाः सलग्नाः कार्य्याः स्फुटास्तत्र दशापतिश्चेत् ।
लग्नत्रिलायारिगतोऽथ लग्ने तन्मित्रवर्गः शुभदा दशा सा ॥११॥
श्रेष्ठा प्रविष्टेष्टफलाधिकस्य दुष्टा दशा कष्टफलाधिकस्य ।
यस्येष्टकष्टे भवतः समाने मूलत्रिकोणे यदि वा स्वगेहे ।
दशाप्रवेशे खचरः स्वतुंगे मूलत्रिकोणे यदि वा स्वगेहे ।
शुभेष्टवर्गस्थितिकृच्छुभेऽष्टे दशारिष्टहरो भवेत्सः ॥ १२ ॥

इति श्रीवैद्यनाथविरचिते जातकाभरणे
ग्रहदशाफलाध्यायः ॥ २० ॥

दशाके प्रवेशकालमें जब ग्रह उच्चराशि स्थित करना और जो दशापति लग्नमें, तीसरे, दशम, ग्यारहें, छठे स्थित हो और दशापतिके मित्रका वर्ग लग्नमें हो वहें दशा शुभफलको देती है ॥ ११ ॥ इष्ट फल ज्यादे हो तो उस ग्रहकी दशा श्रेष्ठ होती है और जिस ग्रहका कष्टफल अधिक हो उस ग्रहकी दशा नेष्ट होती है और जिस ग्रहका इष्ट कष्ट दोनों बराबर हों उस ग्रहकी दशामें समानफल कहना चाहिये ॥ १२ ॥ दशाके प्रवेशकालमें जो ग्रह अपने उच्चमें वा मूलत्रिकोणमें अथवा अपने क्षेत्रमें वा शुभग्रहके षड्वर्गमें और मित्रके वर्गमें बैठा हो और शुभमित्रोंकरके दृष्ट हो तो उस ग्रहकी दशामें अरिष्टहरण कहना चाहिये ॥ १३ ॥

इति श्रीमद्दैवज्ञवर्यश्रीढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे ज्योतिषिके—पंडितश्यामलाल कृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां दशाफलाध्यायः ॥ ९ ॥

अथांतर्दशाफलाध्यायप्रारंभः ।

अथ प्रवेशे खलु खेचराणामन्तर्दशासूक्ष्मफलप्रसिद्ध्यै ।
विचारपूर्वं सदसत्प्रकल्प्यं फलं सुधीभिर्विधिनोदितेन ॥ १ ॥
अंतर्दशा चेदशुभग्रहाणामेकर्क्षगानां कुरुते सदैव ।
गदं विवादं रिपुभूपभीतिं दैन्यं धनस्यापचयं विशेषात् ॥२॥
अंतर्दशायां मदनस्थितस्य खेचारिणः स्यान्मरणं गृहिण्याः ।
रोगः कुभोगः कलहादिभंगः सङ्गश्च नीचैर्हरणं धनस्य ॥ ३ ॥

अब अंतर्दशाध्याय कहते हैं:—अब दशाफलके उपरांत सूक्ष्मफल जाननेके लिये ग्रहोंकी अन्तर्दशाका विचार कर अच्छा बुरा फल विद्वानोंने कहा है सो यहां कहते हैं ॥ १ ॥ जो एकराशिमें पापीग्रह बैठे हों और उन्हींकी अन्तर्दशा हो तो उस ग्रहकी अन्तर्दशामें रोग और झगड़ा, शत्रुभय, दीनता, धनका नाश विशेष कर होता है ॥ २ ॥ जो ग्रह सप्तम बैठे हों उनकी अन्तर्दशामें स्त्रीका मरण कहना चाहिये और रोग, निंद्यभोग और कलहादि भंग, नीचोंका संग, और धनका नाश होता है ॥ ३ ॥

खेचारिणामष्टमभावगानामन्तर्दशा संजनयेदरिष्टम् ।
धनस्य नाशं व्यसनानि पुंसां पदोपगस्यापि गदप्रवृद्धिम् ॥४॥

त्रिकोणमेषूरणनेश्मगानामंतर्दशा सौख्यमतीव नित्यम् ।
करोति लाभं विविधं नराणामारोग्यतां मानसमुन्नतिं च ॥५॥

जो ग्रह अष्टमभावमें बैठा हो उसकी अंतर्दशामें रोग होता है और धनका नाश, खोटे व्यसन होते हैं और जो ग्रह छठे बैठा हो उसकी अंतर्दशामें रोगकी वृद्धि होती है ॥ ४ ॥ और पंचम, नवम, दशम भावमें जो ग्रह बैठा हो उसकी अंतर्दशामें अत्यंत सौख्य और अनेक प्रकारके लाभ आरोग्य मानकी उन्नति होती है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यमहादशामध्ये चंद्रांतर्दशाफलम् ।

करोति चंद्रस्तरणेर्दशायां सुवर्णभूषाम्बरविद्रुमाप्तिम् ।
समुन्नतिं मानसुखाभिवृद्धिं विरोधिवर्गापचयं जयं च ॥ १ ॥
पङ्क्तिदेशस्य चरन्विपाके कुर्यान्मृगांको यदि लाभमुच्चैः ।
प्रमादभङ्गो ग्रहणीं च पाण्डुं केषांचिदेतन्मतमत्र चोक्तम् ॥२॥

जो सूर्यकी महादशामें चंद्रमाका अंतर हो तो वह मनुष्य सोना और आभूषण मूँगाकी प्राप्तिसहित, ऊँचे मानकी उन्नति अर्थात् बड़े अधिकारको प्राप्त, सुखकी वृद्धिसहित, शत्रुवर्गोंसे जयको प्राप्त होता है ॥ १ ॥ सूर्यकी दशामें चंद्रमा अंतरमें पड़े तो लाभको प्राप्त होता है और जलके प्रमादसे संग्रहणीरोग और पांडुरोगकी पीड़ा होती है । जो क्षीण चंद्रमा हो तो ऐसा फल जानना चाहिये यह किसी किसी आचार्यका मत है ॥ २ ॥

अथ सूर्यमहादशामध्ये भौमांतर्दशाफलम् ।

सत्प्रवालकलधौतसुचैलं मङ्गलानि विजयं च विधत्ते ।
मङ्गलः कमलिनीशदशायां भूमिपालकुलतः किल पुंसः ॥३॥

सूर्यमहादशामें जब मंगलका अंतर होता है तो मनुष्यको मूँगा और सोना श्रेष्ठ वस्त्र, अनेक मंगल विजयकी प्राप्ति और राजाके कुलमें मान होता है ॥ ३ ॥

अथ सूर्यदशामध्ये बुधांतर्दशाफलम् ।

विचर्चिकादद्रुविकारपूर्वैः पामामयैर्देहनिपीडनं स्यात् ।
धनव्ययश्चापि हतोत्सवश्च विधोः सुते भानुदशां प्रयाते ॥४॥

जो सूर्यकी दशामें बुधका अंतर हो तो खुजलीका विकार, दाद और कंडूरोगसे पीड़ाको प्राप्त होता है और धनका खर्च व उत्साह नाशको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यमहादशामध्ये गुरोरंतर्दशाफलम् ।

सद्वस्त्रधान्यादिषु संग्रहेच्छा स्वच्छा मतिर्विप्रसुरार्चनेषु ।
भूषाप्तिसम्मानधनानि नूनं भानोर्दशायां चरतीज्यवन्द्ये ॥ ५ ॥

जो सूर्यकी दशामें बृहस्पतिकी अंतर्दशा हो तो श्रेष्ठ वस्त्र और अन्नादिकोंके संग्रहको करनेकी इच्छा करे और ब्राह्मण देवताओंके पूजनमें श्रेष्ठ बुद्धि करे, आभूषणोंको प्राप्त, सन्मान और धनको प्राप्त करता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यमहादशामध्ये भृगोरंतर्दशाफलम् ।

विदेशयानं कलहाकुलत्वं शूलं च मौलिस्थलकर्णपीडाम् ।
गाढज्वरं चापि करोति नित्यं दैत्यार्चितो भानुदशां प्रयातः ६॥

जो सूर्यकी महादशामें शुक्रका अंतर हो तो परदेशयात्रा, लडाई करके व्याकुल और शिर तथा कानमें पीडा और बडा भारी ज्वरका रोग होता है ॥ ६ ॥

अथ सूर्यदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम् ।

नीचारिभूमीपतिभीतिरुच्चैः कण्डूयनाद्यामयसंभवः स्यात् ।
मित्राण्यमित्राणि भवंति नूनं शनैश्चरे भानुदशांतरस्थे ॥ ७ ॥

जो सूर्यकी दशामें शनैश्चरका अंतर हो तो नीचजनोंसे वैर करावे, राजासे बडा भय करावे और कण्डूआदि रोगपैदा हों और मित्र निश्चय कर शत्रु हो जाते हैं ॥७॥

अथ चंद्रदशामध्ये रवेरंतर्दशाफलम् ।

नरेश्वराद्गौरवमर्थलाभं क्षयामयार्तिं प्रकृतेर्विकारम् ।
चोराग्निवैरिप्रभवां च भीतिं शीतांशुपाके कुरुते दिनेशः ॥१॥

जो चंद्रमाकी दशामें सूर्यका अंतर हो तो राजा करके गौरव और धनका लाभ हो और क्षयरोग करके पीडित, चित्तमें भ्रम और चोर, अग्नि तथा शत्रुओंका भय होता है ॥ १ ॥

अथ चंद्रदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम् ।

कोशभ्रंशं रक्तपित्तादिदोषं रोगोत्पत्तिं स्थानतः प्रच्युतिं च ।
कुर्य्यात्पीडां मातृपित्रादिवर्गैर्भूमीसूनुर्यामिनीनाथपाके ॥ २ ॥

जो चन्द्रमाकी दशामें मंगलका अन्तर हो तो इकठे किये हुए धनका नाश, रक्तपित्तादिरोगोंकी प्राप्त, स्थानसे पतित और मातापिताके कुलके मनुष्योंसे पीडा होती है २ ॥

अथ चन्द्रदशामध्ये बुधांतर्दशाफलम् ।

उदारतामांतरलब्धमुच्चैर्लक्ष्मगोभूमिगजाश्ववृद्धिम् ।
विद्याधनैश्वर्यसमुन्नतत्वं कुर्याद्बुधश्चंद्रदशांतराले ॥ ३ ॥

जो चन्द्रमाकी दशामें बुधका अन्तर हो तो उदारताकरके विशेषपदको प्राप्त, ध्वजा, गौ, छत्र, धरती, हाथी एवं घोड़ोंकी वृद्धिको प्राप्त, विद्या धन ऐश्वर्यकी उन्नतिको प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

अथ चन्द्रदशामध्ये गुरोरंतर्दशाफलम् ।

विशिष्टधर्मो धनधान्यभोगानन्दाभिवृद्धिर्गजवाजिसंपत् ।
पुत्रोत्सवश्चापि भवेन्नराणां गुरौ सुराणां शशिपाकसंस्थे ॥४॥

जो चन्द्रमाकी दशामें बृहस्पतिका अन्तर हो तो श्रेष्ठधर्म और धन अन्न वा भोगोंकी वृद्धि करता है और हाथी घोड़ोंकी संपदाको प्राप्त और पुत्रोत्सव करके सहित होता है ॥ ४ ॥

अथ चन्द्रदशामध्ये शुक्रांतर्दशाफलम् ।

नानाङ्गनाकेलिविलासशीलो जलोद्भवैर्धान्यधनैश्च युक्तः ।
मुक्ताफलाद्याभरणैरपि स्यादिन्दोर्दशायां हि सिते मनुष्यः५

जो चन्द्रमाकी दशामें शुक्रका अन्तर हो तो अनेक स्त्रियोंके साथ विलास करनेमें शील हो और जलसे पैदा पदार्थ धन करके सहित, मोती और आभूषणोंको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ चन्द्रदशामध्ये शनेरंतर्दशाफलम् ।

नरेंद्रचौराहितवह्निभीतिं कलत्रपुत्रासुखरुग्भवृद्धिम् ।
करोति नानाव्यसनानि नूनं शनिर्निशानाथदशां प्रविष्टः ॥६॥

जो चन्द्रमाकी दशामें शनैश्चरका अन्तर हो तो राजा और चोर, शत्रु, अग्निका भय होता है और स्त्री पुत्रोंका दुःख और रोगों करके सहित अनेक तरहके दुर्व्यसनोंको प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

अथ भौमदशामध्ये सूर्यान्तर्दशाफलम् ।

नानाधनाभ्यागमनानि नूनं सम्मानवृद्धिं मनुजाधिराजात् ।
चण्डत्वमाजौ विजयं विदध्याद्भानुर्धरासूनुदशांतरस्थः ॥१॥
दुर्गशैलवनसंचलनेच्छा बन्धुतातजनितातिविरोधः ।
मानवो भवति भूतनयान्तर्भास्करे चरति केऽपि वदन्ति ॥२॥

जो मंगलकी दशामें सूर्यका अन्तर हो तो अनेक तरहके धनोंकी प्राप्ति, राजासे सम्मानकी वृद्धि होती है और रणमें बड़ा बल तथा जयको प्राप्त होता है ॥१॥

किसी किसी आचार्यका ऐसा भी मत है कि मंगलकी दशामें सूर्यके समानमें किला-कोट पर्वत वनमें जानेकी इच्छा करे और भ्राता, पिता और मनुष्योंसे विरोध करता है ॥ २ ॥

अथ भौमदशामध्ये चन्द्रान्तर्दशाफलम्।

नित्योत्सवानन्दमहापदानि मुक्ताफलस्वर्णविभूषणानि।
मित्रोद्गमं श्लेष्मविकारमिन्दुर्भौमस्य पाके वितनोति सौख्यम् ॥ ३ ॥

जो मंगलकी दशामें चन्द्रमाका अन्तर हो तो नित्य उत्सव और आनन्द, बड़े पदको प्राप्त, मोती और सुवर्ण आभूषणोंको प्राप्त हो और मित्रोंकी प्राप्ति और कफका विकार होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमदशामध्ये बुधान्तर्दशाफलम्।

अरातिभूपामयतस्करेभ्यः पीड़ा वियोगं सुतदारमित्रैः।
स्वल्पोत्सवो यच्छति चन्द्रसूनुर्भौमस्य पाके यदि संप्रविष्टः ॥ ४ ॥

जो मंगलकी दशामें बुधका अन्तर हो तो शत्रुसे, राजासे, रोगसे और चोरसे पीड़ा और पुत्र, स्त्री तथा मित्रोंकरके वियोग, थोड़ा उत्सव होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमदशामध्ये गुरोरन्तर्दशाफलम्।

बलाधिकत्वं नृपतेर्धनाप्तिं कलत्रमित्रात्मजवाहसौख्यम्।
सत्कर्मधर्मातुरतत्वमुच्चैर्बृहस्पतिर्भौमदशां प्रविष्टः ॥ ५ ॥

जो मंगलकी दशामें बृहस्पतिका अन्तर हो तो बलकी अधिकता, राजा करके धनप्राप्ति, स्त्री और मित्र तथा पुत्र और वाहनका सौख्य, श्रेष्ठकर्म और धर्ममें तत्पर होता है ॥ ५ ॥

अथ भौमदशामध्ये भृगोरन्तर्दशाफलम्।

विदेशयानव्यसनामयाद्यैः कुटुंबवादद्रविणव्ययश्च।
नानाप्रवासैश्चलचित्तवृत्तिर्भौमान्तरे दानवराजपूज्ये ॥ ६ ॥

जो मंगलकी दशामें शुक्रका अन्तर हो तो परदेशकी यात्रा, अनेक व्यसन और रोगोंकरके पीड़ित, कुटुंबियोंसे झगड़ा, धनका खर्च और अनेक देशोंमें चित्तकी वृत्ति चलायमान होती है ॥ ६ ॥

अथ भौमदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम्।

कलत्रपुत्रात्मजनेषु बाधा भागप्रयाणांतशरीरपीडा।
स्वस्थानयानं यदि भानुसूनोरंतर्दशा भौमदशांतराले ॥ ७ ॥

जो मंगलकी दशामें शनैश्चरका अन्तर हो तो स्त्री, पुत्र, मित्र शत्रुओंकी बाधा अत्यन्त देहको पीड़ा और अपने स्थानसे यात्रा कराता है ॥ ७ ॥

अथ बुधांतर्दशामध्ये रवेरंतर्दशाफलम् ।

तुरंगहेम्नां च सुविद्रुमाणां सदंबराणामपि वारणानाम् ।
भवेदवाप्तिर्बहुवैभवानां सौम्यस्य पाके तपने प्रपन्ने ॥ १ ॥
स्वस्थानतः संचलनं कदाचिद्रुक्प्रकोपात्मजजन्मवित्तम् ।
धर्मे प्रवृत्तिं कुरुते ज्ञपाके पङ्केरुहेशः प्रवदंति केचित् ॥ २ ॥

जो बुधकी दशामें सूर्यका अंतर हो तो घोडा, सोना, मूंगा, श्रेष्ठवस्त्र और हाथियोंकी प्राप्ति कराता है और बहुत वैभवसहित होता है ॥ १ ॥ कोई ऐसा भी कहते हैं कि अपने स्थानसे यात्रा हो, रोग हो, पुत्रका जन्म हो और धनका लाभ तथा धर्ममें प्रवृत्ति होती है ॥ २ ॥

अथ बुधदशामध्ये चन्द्रांतर्दशाफलम् ।

पामादिनानामयसंभवः स्यान्मृतप्रजानां जननं विवाहः ।
पित्तप्रकोपः खलु यानपीडा यदा जडांशुर्ज्ञदशां प्रपन्नः ॥ ३ ॥

जो बुधकी दशामें चन्द्रमाका अंतर हो तो कंडू आदि अनेक रोगोंको पैदा करे, संतानकी मृत्यु हो और झगडा हो, पित्तका प्रकोप हो व यात्रामें पीडा होती है ॥ ३ ॥

अथ बुधदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम् ।

गुह्यामयार्थव्यसने युतः स्यात्कांतासुतप्रीतिविमुक्तचित्तः ।
विलुप्तधर्मो मनुजः प्रविष्टे बुधस्य मध्ये वसुधातनूजे ॥ ४ ॥

जो बुधकी दशामें मंगलका अंतर हो तो गुह्यस्थानमें रोग हो, व्यसनों करके सहित, स्त्री पुत्रसे प्रीतिरहित चित्त और धर्मका लोप होता है ॥ ४ ॥

अथ बुधदशामध्ये गुरोरंतर्दशाफलम् ।

कांतासुतानंदयुतोऽरिहन्ता सत्कर्मकृच्चारुमतिर्विनीतः ।
मंत्री नरः स्यात्पितृमातृदुःखी बृहस्पतौ सौम्यदशां प्रयाते ॥ ५ ॥

जो बुधकी दशामें बृहस्पतिका अन्तर हो तो स्त्री और पुत्रोंसहित आनंदको प्राप्त, शत्रुओंका नाश करे, श्रेष्ठकर्म करे, सुन्दर, बुद्धि, नम्रतासहित, राजाका मंत्री हो और पितामातासे दुःखी होता है ॥ ५ ॥

अथ बुधदशामध्ये भृगोरंतर्दशाफलम् ।

विबुधसाधुजनातिथिसादरः सुकृतकर्मसमुत्सुकमानसः ।
विविधवस्त्रविभूषणभाङ्नरो बुधदशांतरगे सति भार्गवे ॥ ६ ॥

नानामयासैश्च निरोधनैर्वा शिरोरुजा वापि शरीरभाजाम् ।
करोति बाधां विबुधांतराले सितः प्रयातः प्रवदंति केचित् ॥ ७ ॥

जो बुधकी दशामें शुक्रका अंतर हो तो अनेक साधुजन और अतिथियोंका आदर करे, श्रेष्ठ कार्योंमें उत्साही हो, अनेक वस्त्र और आभूषणोंको भोगता है ॥ ६ ॥ कोई ऐसा भी कहते हैं-अनेक आयास करनेसे और वेगको रोकनेसे, मस्तकपीडा और अनेक प्रकारकी शारीरिक पीडा होती है ॥ ७ ॥

अथ बुधदशामध्ये शनेरंतर्दशाफलम् ।

सत्कर्मधर्मद्रविणानुकंपा कंदर्पहीनो मनुजः प्रलापी ।
वातामयार्तोऽतिमृदुस्वभावः सौम्यांतराले नलिनीशसूनौ ॥ ८ ॥

जो बुधकी दशामें शनैश्चरका अंतर हो तो श्रेष्ठकर्म और धर्म, धन और दया करके रहित, कामदेवकरके हीन, प्रलाप करनेवाला, वातरोगकरके पीडित और अत्यंत कोमल स्वभाव होता है ॥ ८ ॥

अथ गुरुदशामध्ये सूर्यांतर्दशाफलम् ।

सुतीर्थनानाविधवस्तुलाभं विशिष्टनामांतरमाधिपत्यम् ।
मानं नरेशात् कुरुते दिनेशो वाचामधीशस्य दशां प्रपन्नः ॥ १ ॥

जो बृहस्पतिकी दशामें सूर्यका अन्तर हो तो श्रेष्ठ तीर्थ, अनेक वस्तुओंका लाभ, श्रेष्ठनामको प्राप्त और हुकूमतको प्राप्त हो और राजासे मान पाता है ॥ १ ॥

अथ गुरुदशामध्ये चन्द्रांतर्दशाफलम् ।

नानाङ्गनाक्रीडनजातचित्तः श्रीराजचिह्नैश्च विराजमानः ।
विद्यानवद्यार्थयुतो नरः स्याज्जीवांतरे शीतकरप्रचारे ॥ २ ॥

जो बृहस्पतिकी दशामें चन्द्रमाका अन्तर हो तो अनेक स्त्रियोंके साथ क्रीडा करनेमें आसक्तचित्त और छत्र चामरादि राजचिह्नोंकरके विराजमान तथा श्रेष्ठ विद्या और धनकरके सहित होता है ॥ २ ॥

अथ गुरुदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम् ।

रणांगणप्राप्तयशोविशेषः सद्भोगसौख्यार्थसमन्वितश्च ।
प्रौढप्रतापोऽतितरां नरः स्याद्धरासुते जीवदशां प्रयाते ॥ ३ ॥
शीर्षे गुदे वापि भवेत्कदाचित्पीडा नराणामरिभीतियुक्ता ।
बलक्षयः संचलनं कुजस्य जीवांतराले प्रवदंति केचित् ॥ ४ ॥

जो बृहस्पतिकी दशामें मंगलका अन्तर हो तो युद्धमें जयको प्राप्त हो और श्रेष्ठ भोग सुख धनसहित और बड़ा प्रतापी हो ॥ ३ ॥ कोई ऐसा भी कहते हैं कि सिरमें, गुदामें कभी पीडा हो, शत्रुओंसे भय हो और बलका नाश हो और स्थानांतरमें यात्रा करता है ॥ ४ ॥

अथ गुरुदशामध्ये बुधांतर्दशाफलम्।

सद्बुद्धिकौशल्यसुरार्चनानि सदिंदिरामन्दिरवाहनानि।
कलत्रपुत्रादिसुखानि नूनं कुर्याद्बुधो जीवदशां प्रपन्नः ॥५॥
विदेशयानं चलचित्तवृत्तिर्जलात्प्रमादः शिरसि प्रपीडा।
गुरोर्दशायां चरतीन्दुपुत्रे केषांचिदेवात्र मतं निरुक्तम् ॥६॥

जो बृहस्पतिकी दशामें बुधका अन्तर हो तो श्रेष्ठ बुद्धि और चतुरता हो, देवताओंका पूजन करे, श्रेष्ठ लक्ष्मी, वाहन, स्थान और स्त्रीपुत्रादिकोंके सुखको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥ कोई ऐसा भी कहते हैं कि परदेशकी यात्रा करे, चलायमान चित्तवाला और जलसे प्रमाद और शिरमें पीडा होती है ॥ ६ ॥

अथ गुरुदशामध्ये शुक्रांतर्दशाफलम्।

निजैर्वियोगोऽर्थविनाशनं च श्लेष्मानिलश्चापि कलिप्रसंगः।
स्यान्मानवानां व्यसनोपलब्धिर्भृगोः सुते जीवदशां प्रयाते ॥७॥

जो बृहस्पतिकी दशामें शुक्रका अन्तर हो तो अपने सम्बन्धियोंके वियोगसे धनका नाश करे और कफवातकी पीड़ा हो, कलहका संग हो और व्यसनोंकी प्राप्ति करता है ॥ ७ ॥

धर्मक्रियायां निरतत्वमुच्चैर्विद्याम्बराम्नादिकसंग्रहश्च।
द्विजाश्रयः स्याद्भृगुपाकयाते सिते वदंतीज्यबलं तु केचित् ॥८॥

कोई ऐसा भी कहते हैं कि, बृहस्पतिकी दशामें शुक्रके अन्तरमें धर्मकी क्रियाओंमें तत्पर, विद्या और वस्त्र तथा अन्नादिकोंका संग्रह हो और ब्राह्मणोंका आश्रित होता है ॥ ८ ॥

अथ गुरुदशामध्ये शनेरंतर्दशाफलम्।

वेश्यासवद्यूतकृषिक्रियाभिर्विलुप्तधर्मार्थयशाः कृशांगः।
खरक्रमेलादियुतो नरः स्याद्गुरोर्दशायां चलितेऽर्कसूनौ ॥ ९ ॥

जो बृहस्पतिकी दशामें शनैश्चरका अन्तर हो तो वेश्या, शराब, जुआ तथा खेतीसे नाश किये हैं धर्म, अर्थ और यश जिसने ऐसा और दुर्बल शरीर हो और गधे और ऊंटोंसे सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये रव्यन्तर्दशाफलम् ।

भूपभीतिरपि बन्धुनिमित्तं वित्तनाशनमरात्युदयः स्यात् ।
क्रोडगण्डनयनेष्वपि पीडा भार्गवे यदि रवेर्विनिवेशः ॥१॥

जो शुक्रकी दशामें सूर्यका अन्तर हो तो राजासे भय और सम्बन्धियोंसे धनका नाश और वैरी पैदा हों तथा दोनों हाथोंके मध्यभागमें और गण्डस्थलमें और नेत्रोंमें पीड़ा हो ॥ १ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये चन्द्रान्तर्दशाफलम् ।

शीर्षदंतनखपीडनमुच्चैः कामला च प्रबला किल पित्तम् ।
श्वापदादपि भयं च नराणां भार्गवान्तरगते हिमरश्मौ ॥२॥
भूदेवदेवाग्निमनःप्रवृत्ती रणांगणे स्याद्विजयो नराणाम् ।
मातंगकार्याद्वनिताश्रयाद्वा लाभः सिते चन्द्रदशेति केचित्॥३॥

जो शुक्रकी दशामें चन्द्रमाका अन्तर हो तो शिर दांत और नाखूनोंमें बड़ी पीड़ा हो, निश्चयकर पित्तका कोप ज्यादे हो और व्याघ्रादिकोंका भय हो ॥ २ ॥ कोई ऐसा भी कहते हैं कि ब्राह्मण, देवता और अग्निपूजनमें मनकी प्रवृत्ति हो और युद्धमें जय और हाथियोंके कर्मसे अथवा स्त्रियोंके आश्रयसे लाभ होता है ॥ ३ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये भौमान्तर्दशाफलम् ।

पित्तास्रताम्रवतविकारतो वा वैकल्यमङ्गे प्रभवेन्नराणाम् ।
उत्साहहीनत्वमतीव याते भूमीसुते दैत्यगुरोर्दशायाम् ॥४॥
सम्माननानाविधवस्तुसौख्यं भूमीपतेः स्यात्खलु भूमिलाभः ।
अङ्गारके भार्गवपाकसंस्थे केषांचिदेवं मतमस्ति शस्तम्॥५॥

जो शुक्रकी दशामें मंगलका अन्तर हो तो पित्तसे, रुधिरसे, अग्निविकारसे शरीरमें विकलता होती है और उत्साहहीन होता है ॥ ४ ॥ कोई ऐसा भी कहते हैं कि अनेक तरहसे सम्मान, नानाप्रकारकी वस्तुओंके सौख्यको पाता और राजा करके धरतीका लाभ होता है ॥ ५ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये बुधान्तर्दशाफलम् ।

वृक्षैः फलैश्चापि चतुष्पदाद्यैर्वित्तं भवेत्सख्यमिभिर्नृपेण ।
दुरंतकार्याभिरतिर्नितांतं भृगोर्दशायां चरतीन्दुसूनौ ॥६॥

जो शुक्रकी दशामें बुधका अन्तर हो तो वृक्षों,फलों और चौपायोंकरके धन होता है राजासे मित्रता होती है और बड़े कठिन कार्यमें नितान्त प्रीति होती है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये जीवांतर्दशाफलम् ।

यज्ञादिसत्कर्मणि सादरत्वं गतार्थसिद्धिः सुतदारसौख्यम् ।
महापदानेकविभूषणाप्तिर्भृगोर्दशायां चरतीन्द्रवन्द्ये ॥ ७ ॥

जो शुक्रकी दशामें बृहस्पतिका अन्तर हो तो यज्ञादि श्रेष्ठ कर्ममें प्रीति हो और गये हुए धनकी प्राप्ति होती है, पुत्र और स्त्रीके सौख्यकी प्राप्ति व अनेक आभूषणोंकी प्राप्ति होती है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये शनेरंतर्दशाफलम् ।

मित्रोन्नतिर्ग्रामपुराधिपत्यं वृद्धांगनाकेलिरतीव नित्यम् ।
स्याद्वैरिनाशो भृगुनंदनदशायां शनैश्चरस्यांतरजा दशा चेत् ॥८॥

जो शुक्रकी दशामें शनैश्चरका अन्तर हो तो मित्रोंकी उन्नति, ग्राम और नगरका अधिकार, वृद्धा औरतके साथ नित्य ही क्रीडा और शत्रुओंका नाश करता है ॥८॥

अथ शनिदशामध्ये सूर्यांतर्दशाफलम् ।

धनांगनानन्दनबन्धुपीडा गाढापि बाधात्मकलेवरे स्यात् ।
रिपूद्गमः संचलनं नलिन्याः पत्यौ स्थिते मंददशांतराले ॥१॥

जो शनैश्चरकी दशामें सूर्यका अन्तर हो तो धन, स्त्री, पुत्र और भाइयोंको पीडा हो और देहमें बडी भारी पीडा हो और शत्रुओंकी उत्पत्ति होती है ॥ १ ॥

अथ शनिदशामध्ये चंद्रांतर्दशाफलम् ।

नित्यं कलिर्बन्धुजनैर्वियोगो हृतिर्मृतिर्वापि भवेद्गृहिण्याः ।
उत्साहसौख्योपहतिर्नितांतं शीतद्युतौ मन्ददशांतरस्थे ॥ २ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें चन्द्रमाका अन्तर हो तो हमेशा कलह, आत्मजनोंसे वियोग हो या तो कोई स्त्रीका हरण कर ले या मर जावे उत्साह और सौख्यका नितांत नाश होता है ॥ २ ॥

अथ शनिदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम् ।

स्वस्थानयानं विकलत्वमंगे धनांगनानां च वियोजनं स्यात् ।
सम्मानहानिर्ननु सूर्यसूनोर्दशांतरे भूमिसुतप्रचारे ॥ ३ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें मंगलका अन्तर हो तो अपने स्थानसे यात्रा करावे, शरीरमें विकलता करावे, धन और स्त्रीका वियोग हो व सम्मानकी हानि होती है ॥ ३ ॥

अथ शनिदशामध्ये बुधांतर्दशाफलम् ।

धनाङ्गनासूनुसुखोपपन्नः सद्राजमानेन विराजमानः ।
विद्वज्जनानंदकरः कफार्तो मर्त्यो भवेज्ज्ञे शनिपाकसंस्थे ॥ ४ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें बुधका अन्तर हो तो धन और पुत्र तथा स्त्रीके सुख सहित, श्रेष्ठ राजमानकरके शोभायमान, विद्वानोंके संगसे आनन्द करै और कफकी पीडा करके दुःखी होता है ॥ ४ ॥

अथ शनिदशामध्ये जीवांतर्दशाफलम्।

कलाकलापे कुशलो विलासी पद्मालयालंकृतचारुशीलः।
भूपालभूलाभयुतो नरः स्याद्बृहस्पतौ मंददशां प्रयाते ॥ ५ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें बृहस्पतिका अन्तर हो तो कलाओंके समूहमें कुशल, विलासयुक्त, लक्ष्मी करके शोभायमान, श्रेष्ठशील व राजासे धरतीका लाभवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ शनिदशामध्ये शुक्रांतर्दशाफलम्।

योषाविभूषासुतसौख्यलब्धिः श्रीग्रामदेशाधिकृतत्वमुच्चैः।
यशःप्रकाशोऽरिकुलस्य हंता शनेर्दशायामुशनःप्रवेशः ॥ ६ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें शुक्रका अन्तर हो तो स्त्री और आभूषण और पुत्रोंके सौख्यकी वृद्धि और लक्ष्मी तथा ग्राम देशाधिकारकी बडी प्राप्ति कराता है, बडे यशकी प्राप्ति और शत्रुओंका नाश होता है ॥ ६ ॥

अथ शनिदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम्।

अंतर्दशा चेन्नलिनीशसूनोर्दशांतराले किल मंगलस्य।
भवेत्तदानीं निधनं नराणां यद्यप्यहो दीर्घमवाप्तमायुः ॥ ७ ॥
लग्ननाथरिपुलग्नदशायां प्रविशेद्यदि।
अकस्मान्मरणं कुर्यात्प्राणिनां सत्यसंमतम् ॥ ८ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे
अंतर्दशाध्यायः ॥ २१ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें मंगलका अन्तर हो तो उस मंगलकी अन्तर्दशामें मृत्युको प्राप्त होता है—चाहे बडी उमरवाला क्यों न हो ॥ ७ ॥ और लग्नकी दशामें और लग्नेशके शत्रुग्रहकी अन्तर्दशामें अकस्मात् मरण होता है यह सत्याचार्यका मत है ॥ ८ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां
श्यामसुंदरीभाषाटीकायां अंतर्दशाध्यायः समाप्तः ॥ २१ ॥

अथ दानाध्यायप्रारंभः।

ये खेचरा गोचरताऽष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाऽप्यशुभा भवंति।
दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवक्ष्ये॥१॥

अब दानाध्याय कहते हैं–जो ग्रह गोचर, अष्टकवर्ग अथवा दशाक्रमसे बुरे फल देनेवाले हों वे दानादिसे नितान्त प्रसन्न होते हैं इससे उन ग्रहोंकी दानविधि अब कहते हैं॥१॥

अथ सूर्यदानमाह–

माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुकौसुम्भवासोगुडहेमताम्रम्।
आरक्तकं चन्दनमम्बुजं च वदन्ति दानं हि विरोचनाय॥२॥

अब सूर्यका दान कहते हैं–माणिक, गेहूं, बछडा सहित गाय, लाल कपडा, गुड, सोना, तांबा, लालचन्दन, कमल, यह सूर्यके निमित्त दान करना चाहिये॥२॥

अथ चन्द्रदानमाह–

सद्वंशपात्रस्थिततण्डुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम्।
युगोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्याद्घृतपूर्णकुम्भम्॥३॥

अब चन्द्रमाका दान कहते हैं–बांसकी डलियामें स्थित चावल, कपूर, मोती, सफेद कपडा, जुआ सहित बैल और चांदी ये सब चीजें चन्द्रमाके अर्थ दान करे और घीका भरा घडा देवे॥३॥

अथ भौमदानमाह–

प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोऽरुणश्चापि गुडः सुवर्णम्।
आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं हि भौमाय वदंति दानम्॥४॥

अब मंगलका दान कहते हैं–मूंगा, गेहूं, मसूर लाल बैल, गुड, सोना, लाल कपडा, कनेरके फूल और ताम्र ये सब चीजे मंगलके निमित्त दान दे॥४॥

अथ बुधदानमाह–

चैलं च नीलं कलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मकसर्वपुष्पम्।
दासी च दंतो द्विरदस्य नूनं वदंति दानं विधुनन्दनाय॥५॥

अब बुधका दान कहते हैं–हरा कपडा, सोना, चांदी, कांसीका पात्र और मूंग, घी, पन्ना सब तरहके फूल, दासी और हाथीदांत ये सब चीजें बुधके वास्ते दान करनी चाहियें॥५॥

अथ गुरुदानमाह-

शर्करा च रजनी तुरंगमः पीतधान्यमपि पीतमम्बरम् ।
पुष्परागलवणे च कांचनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ॥ ६ ॥

अब बृहस्पतिका दान कहते हैं-खांड हलदी, घोडा चनेकी दाल, पीला कपडा, पुष्पराजमणि, नोन और सोना ये सब चीजें बृहस्पतिकी प्रसन्नताके वास्ते दान करनी चाहिये ॥ ६ ॥

अथ भृगुदानमाह-

चित्राम्बरं शुभ्रतरस्तुरंगो धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णम् ।
सुतंडुलाज्योत्तमगंधयुक्तं वदंति दानं भृगुनन्दनाय ॥ ७ ॥

अब शुक्रका दान कहते हैं-चित्र-कम्बर कपडा, सफेद घोडा, गाय हीरा और चांदी, सोना, चावल, घी और सुगंधयुक्त पुष्प ये सब चीजें शुक्रके निमित्त दान करना चाहिये ॥ ७ ॥

अथ शनिदानमाह

माषाश्च तैलं विमलेंद्रनीलस्तिलाः कुलित्था महिषी च लोहम् ।
सदक्षिणं चेति वदंति नूनं दुष्टाय दानं रविनन्दनाय ॥ ८ ॥

अब शनैश्चरका दान कहते हैं-उडद, तेल और नीलमणि, तिल, कुलथी, भैंस, लोहा और दक्षिणा विरुद्ध शनैश्चरके वास्ते दान करना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ राहुदानमाह

गोमेदरत्नं च तुरंगमश्च सुनीलचैलानि च कंबलानि ।
तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदंति ॥ ९ ॥

अब राहुका दान कहते हैं-गोमेदरत्न, काला घोडा, नीला कपडा कंबल तिल, तेल और लोहा ये सब चीजें राहुके निमित्त दान करनी चाहिये ॥ ९ ॥

अथ केतुदानमाह

वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलश्चापि मदो मृगस्य ।
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोरुदीरितं दानमिदं मुनीन्द्रैः ॥ १० ॥

इति श्रीदैवज्ञपण्डितढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे दानाध्यायः ॥ २२ ॥

अब केतुका दान कहते हैं वैडूर्यमणि, तिल, तेल, कंबल, कस्तूरी और तलवार ये सब चीजें केतुग्रहकी तुष्टिके वास्ते मुनीश्वरोंने दानकी कही हैं ॥ १० ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसराजज्योतिषिपण्डितश्यामलालकृतायां
श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां दानाध्यायः ॥ २२ ॥

अथ नष्टजातकाध्यायप्रारम्भः ।

आधानकालोऽप्यथ जन्मकालो न ज्ञायते यस्य नरस्य नूनम् ।
प्रसूतिकालं प्रवदंति तस्य नष्टाभिधानादपि जातकाच्च ॥ १ ॥
तज्जातकं येन शुभाशुभाप्तिर्जातस्य जन्तोर्जननोपकालात् ।
तस्मिन्प्रनष्टे सति जन्मकालो येनोच्यते नष्टकजातकं तत् ॥२॥

अब नष्ट जातकाध्याय कहते हैं:-जिन मनुष्योंका गर्भाधानकाल और जन्मकाल निश्चय कर नहीं मालूम हो उन मनुष्योंका प्रसूतिकाल नष्टजातक करके कहते हैं ॥ ॥ १ ॥ जिस जातक करके जन्मकालमें मनुष्योंको अच्छे और बुरे फलकी प्राप्ति होती है उसको जातकशास्त्र कहते हैं । उस जन्मकालके नष्ट हो जानेसे फिर जिससे जन्मकालका ज्ञान हो उसको नष्टजातक कहते हैं ॥ २ ॥

अथ राशिगुणकविधिमाह-

मेषादितः प्रश्नविलग्नलिप्ताः कार्याः क्रमात्ता मुनिभिः ७ खचंद्रैः १० । गजैश्च ८ वेदै ४ र्दशभि १० श्च बाणैः ५ शैलै ७ र्भुजंगैः ९ खचरैः ९ शरैश्च ५ ॥ ३ ॥ शिवैः ११ पतंगै १२ र्निहताः पुनस्ता विलग्नगाश्चेद्भृगुभौमजीवाः । तदा तुरंगैः ७ करिभिः ८ खचंद्रै १० र्गुण्याः शरैरन्यखगा यदि स्युः ॥ ४ ॥

पहले प्रश्नसमयकी तात्कालिक लग्नको स्पष्ट करके उसकी कलाओंका पिंड बनाना चाहिये और जो प्रश्नलग्न मेष हो तो उस कलात्मकपिंडको सातसे गुणना चाहिये । वृषको १० दशगुणा करे, मिथुनको ८ से, कर्कको ४ से, सिंहको १० से, कन्याको ५ से, तुलाको ७ से, वृश्चिकको ८ से, धनको ९ से, मकरको ५ से ॥ ३ ॥ कुम्भको ११ से और मीनलग्नको १२ से गुणना चाहिये ॥

अथ ग्रहगुणकविधिमाह-

जो लग्नमें-प्रश्नलग्नमें सूर्य बैठा हो तो उस गुणे हुए कलात्मकपिंडको फिर पांचसे गुणना चाहिये और जो चन्द्रमा हो तो भी ५ से गुणे, जो प्रश्नलग्नमें मंगल बैठा हो तो उसको ८ से गुणना चाहिये, जो बुध बैठा हो तो भी ५ से

गुणना और जो बृहस्पति बैठा हो तो उस गुणे हुए कलापिंडको १० से फिर गुणना चाहिये और जो शुक्र बैठा हो तो ७ से गुणना चाहिये । जो शनैश्चर बैठा हो तो वह राशिके गुणकांकोंसे गुण्य हुआ, जो कलापिंड है उसको फिर ५ से गुणना चाहिये ॥ ३ ॥ ४ ॥

राशिगुणकांकचक्रम्.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशी
७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२	गुणांक.

अथ ग्रहगुणकांकचक्रम् ।

> ग्रहद्वयं वा बहवो विलग्ने तदा तदीयैर्गुणकैश्च गुण्याः ।
> एवं कृते कर्मविधानयोग्यो राशिः पृथक्स्थः परिरक्षणीयः ॥५॥

जो प्रश्नकालकी लग्नमें दो अथवा तीन या बहुतसे ग्रह बैठे हों तो कहे हुए गुणकांकोंसे वारंवार उस कलापिंडको गुणना चाहिये । इसी तरह राशिके अंकोंसे गुणा हुआ कलापिंड, फिर ग्रहके अंकोंसे गुणा हुआ कलापिंड, कर्म-विधान की हुई राशिके सम्पूर्ण अंकको अलग एक जगह बड़ी रक्षाके साथ स्थित करना चाहिये ॥ ५ ॥

अथ ग्रहगुणकांकचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह.
५	५	८	५	१०	७	५	गुणकांक.

अथ नष्टज्ञानमाह–

> पृथक्स्थराशिर्मुनिभिर्विनिघ्नस्त्वाद्ये दृकाणे नव ९ युक्द्वितीये ।
> यथास्थितोऽयं नव९ वर्जितोऽन्त्ये भसंख्ययाप्तो हि विशेषभूसम्॥६॥

और जो कर्मविधानकी हुई राशि अर्थात् कलापिंड बनाकर राशिके अंकोंसे गुणी हुई और ग्रहोंके अङ्कोंसे गुणी हुई जो राशि उसको सातसे गुणकर जो लग्नमें पहला द्रेष्काण हो तो उसमें ९ कला और जोड़ना चाहिये और जो मध्य द्रेष्काण

हो तो कलापिण्डको जैसाका तैसा रहने देना और अंत्य द्रेष्काण हो तो ९ कलारहित करना चाहिये। फिर उसमें २७ सत्ताईसका भाग देकर जो बाकी बचे वह अश्विनीसे गिनकर जन्मनक्षत्र जानना चाहिये ॥ ६ ॥

अथ स्त्रीपुत्रमित्रशत्रूणां नष्टजातकप्रकारमाह–

स्त्रीपुत्रमित्रारिनिमित्तकं चेत्पृच्छाविलग्नं स्मृतुभिश्च वेदैः।
त्रिभिः शरैर्युक्तमनुक्रमेण ततो विलग्नस्य कला विधेया ॥७॥
लग्नस्य राशेर्गुणकेन गुण्याश्चेत्संभवो लग्नगतग्रहस्य।
पुनस्तदीयेन गुणेन गुण्याः प्रागुक्तवद्भं परिवेदितव्यम् ॥ ८ ॥

जो कोई मनुष्य स्त्री पुत्रादिके नष्टजन्मपत्र बनवानेका प्रश्न करे प्रश्नलग्नकी राशिमें छः मिलानेसे स्त्रीका और चार मिलानेसे पुत्रका और प्रश्नलग्नकी राशिमें तीन मिलानेसे मित्रका और पांच मिलानेसे शत्रुका नष्टलग्न जानो। प्रश्नलग्नकी राशिमें पूर्वोक्त अंक मिलाकर उस लग्नका कलात्मक पिण्ड बनाना चाहिये ॥ ७ ॥ फिर उस कलात्मक पिंडको राशिमें अंकोंसे गुणकर और जो उस राशिमें ग्रह बैठा हो उसके अंकोंसे उस कलापिंडको गुणकर फिर उसको सातसे गुणकर नवयुक्त वा स्थिति ९ हीनकर २७ का भाग देकर शेष जन्मनक्षत्र जानना चाहिये परंतु लग्न स्पष्ट स्वदेशी मानसे करना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ वर्षज्ञानमाह–

दशाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन्।
खार्केर्हृते शेषमिताब्दसंख्यामायुर्गतं तत्खलु पृच्छकस्य ॥ ९ ॥

अब वर्षका ज्ञान कहते हैं:–जो पहिले राशिके अंकोंसे और ग्रहोंके अंकोंसे गुणी हुई राशि हो उसमें पहलेकी तरह नौ घटाकर वा मिलाकर उस कलापिंडको १० से गुणकर उसमें १२० का भाग देकर जो बाकी बचे उतने ही वर्षकी उमर प्रश्नकर्ताकी होती है ॥ ९ ॥

अथ ऋतुज्ञानमाह–

षड्भिर्विभक्ते ऋतवो भवंति शेषांकतुल्याः शिशिरादयः स्युः।

पूर्वोक्तकर्मविधान की हुई राशिको दशसे गुणकर ६ का भाग देकर जो बाकी बचे सो शिशिरको आदि लेकर ऋतु कहना चाहिये।

अथ मासज्ञानमाह–

द्विभाजिते शेषकमेकमग्रं पूर्वापरौ तदृतुजौ तु मासौ ॥ १० ॥

यह जो कर्मविधान की हुई राशि है उसको १० से गुणकर २ से भाग दे, जो

एक बाकी बचे तो ऋतुका पहिला महीना और शून्य शेष बचे तो ऋतुका द्वितीय मास कहना (यहां ऋतुके मासकी गणना मासले जानना) ॥ १० ॥

अथ पक्षज्ञानमाह–

अष्टाहते कर्मविधानराशौ प्रागवन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रंतुल्येऽस्ति पूर्वापरपक्षको स्तः ॥११॥

पहिले कर्मविधान की हुई राशिको आठसे गुणकर पहिलेकी तरह नौ घटाकर वा मिलाकर दोका भाग देकर जो एक बाकी बचे तो मासका पहला पक्ष और शून्य बचे तो मासका द्वितीयपक्ष जानना चाहिये ॥ ११ ॥

अथ तिथिज्ञानमाह–

पंचेन्दुभक्ते सति शेषतुल्याः पक्षे च तस्मिंस्तिथयो भवंति ।
नक्षत्रतिथ्यानयनाय योग्यादहर्गणाद्वारविचारणात्र ॥ १२ ॥

जो कर्मविधान की हुई राशिमें १५ पंद्रहका भाग दे. जो बाकी बचे सो पक्षकी तिथि जानना चाहिये और नक्षत्रतिथिके योगसे ग्रहलाघवादिक ग्रंथोंसे वार लाना चाहिये वा उस संवत्‌का पत्रा देखकर वार जाने ॥ १२ ॥

अथ दिवारात्रिजन्मज्ञानम् ।

सप्ताहते कर्मविधानराशौ प्रागवन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रं दिवा च रात्रौ जननं तदानीम् ॥१३॥

और उस कर्मविधान की हुई राशिको सातसे गुणकर नौ घटाकर वा मिलाकर दोका भाग दे. एक बाकी बचे तो दिनका जन्म कहना और शून्य बाकी रहे तो रात्रिका जन्म कहना चाहिये ॥ १३ ॥

अथ जन्मसमये इष्टकालज्ञानमाह–

पंचाहते कर्मविधानराशौ प्रागवन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
दिनस्य रात्रेरथवा प्रमित्या भक्तेऽवशिष्टं दिनरात्रिनाड्यः ॥१४॥

इति श्रीदेवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे नष्टजातकाध्यायः २१ ॥

अब कर्मविधानकी हुई राशिको पांचसे गुणकर पहलेकी तरह नौ घटाकर वा मिलाकर दिन वा रात्रिमानसे भाग देना, जो बाकी बचे वह दिनरात्रिकी इष्टकी घड़ियां जान लेना चाहिये ॥ १४ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थराज्यज्योतिषिक-पंडित श्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी-भाषाटीकायां नष्टजातकनिरूपणं नामैकोविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अथ निर्य्याणाध्यायप्रारम्भः ।

दिनकरप्रमुखैर्निधनस्थितैर्भवति मृत्युरिति प्रवदेत्क्रमात् ।
अनलतो जलतो करवालतो ज्वरभवो गदतः क्षुधया तृषा ॥ १ ॥

अब निर्याणाध्याय कहते हैं:-जो सूर्य अष्टममें बैठा हो तो अग्निकरके और चन्द्रमा अष्टममें बैठा हो तो जलकरके और मंगल अष्टम हो तो हथियारसे और बुध अष्टममें हो तो ज्वरकरके और बृहस्पति अष्टममें हो तो रोग करके और शुक्र अष्टममें हो तो क्षुधाकरके और शनैश्चर अष्टममें हो तो प्यासकरके मनुष्यकी मृत्यु कहनी चाहिये ॥ १ ॥

अथ मरणदेशज्ञानम् ।

स्थिरश्चरो द्व्यंगसमाह्वयश्च राशिर्यदा जन्मनि चाष्टमस्थः ।
स्वकीयदेशे विषयान्तरे च मार्गे प्रकुर्य्यान्मरणं क्रमेण ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टम स्थिरराशि २ । ५ । ८ । ११ हो वह मनुष्य अपने ही देशमें मृत्युको प्राप्त होता है और चर राशि १ । ४ । ७ । १० इनमेंसे कोई अष्टमभावमें राशि हो तो उस मनुष्यका मरण परदेशमें होता है और जो द्विस्वभावराशि ३ । ६ । ९ । १२ । इनमेंसे कोई अष्टमभावमें हो तो उसकी मृत्यु रास्तेमें होती है ॥ २ ॥

आयुर्गृहं खेटविवर्जितं च विलोकयेद्वा बलवान्ग्रहेन्द्रः ।
तद्धेतुजातं प्रवदंति मृत्युं बहुप्रकारं बहवो बलिष्ठाः ॥ ३ ॥

जो अष्टमभावमें कोई ग्रह नहीं बैठा हो तो उस अष्टमभावको जो ग्रह अधिक बलकरके देखता हो उसी ग्रहके हेतुसे मृत्यु कहना चाहिये और जो अष्टमभावमें बहुतसे ग्रह बैठे हों या बलवान् होकर बहुतसे ग्रह अष्टमभावको देखते हों तो अनेक कारणोंसे मृत्यु कहनी चाहिये ॥ ३ ॥

अथ मरणहेतुज्ञानम् ।

पित्तं कफः पित्तमथ त्रिदोषः श्लेष्मानिलौ वाप्यनिलः क्रमेण ।
सूर्यादिकेभ्यो मरणस्य हेतुः प्रकल्पितः प्राक्तनजातकज्ञैः ॥ ४ ॥

जो सूर्य अष्टम हो तो पित्त करके, चंद्रमासे कफ करके, मंगलसे पित्त करके और बुधसे त्रिदोष करके और बृहस्पतिसे श्लेष्मा करके और शुक्र शनैश्चर अष्टम हों तो वातविकारसे मृत्यु होती है, यह प्राचीन ज्योतिर्वेत्ताओंने कहा है ॥ ४ ॥

युक्तं नैवालोकितं खेचरेन्द्रैर्मृत्युस्थाने यो विलग्ने दृकाणः ।
द्वाविंशोऽस्मात्सोऽपि तस्यापि भर्ता कुर्यान्मृत्युं हेतुनास्वेन नूनम् ॥५॥
अनलतो जलतो यदुदीरितं भवति तन्निलयाधिपहेतुकम् ।
अथ दृकाणफलानि सविस्तरं मुनिवरैरुदितानि वदाम्यहम् ॥६॥

जो अष्टम भावको कोई ग्रह नहीं देखता हो और न अष्टममें कोई ग्रह बैठा हो तो जन्मलग्नमें जो द्रेष्काण हो उसमें बाईसवाँ जो द्रेष्काण है उसके स्वामीके हेतुसे मरण कहना चाहिये ॥ ५ ॥ अनल वा जल करके जो कहा है सो द्रेष्काणके स्वामीके हेतु करके कहना चाहिये । अब द्रेष्काणका फल विस्तार पूर्वक जो मुनीश्वरोंने कहा है सो मैं कहता हूं ॥ ६ ॥

अथ मेषस्य द्रेष्काणफलम् ।

मेषस्य पूर्वत्रिलवेन दृष्टे शुभग्रहैः पापनिरीक्ष्यमाणैः ।
प्लीहोद्भवो वा विषपित्तजो वा मृत्युस्तदानीं परिवेदितव्यः ॥७॥

जो मेषराशिमें पहला द्रेष्काण हो और शुभग्रह उसको नहीं देखते हों, किन्तु पापग्रह देखते हों तो तापतिल्ली रोगकरके अथवा विष वा पित्तरोग करके उसकी मृत्यु कहनी चाहिये ॥ ७ ॥

अथ मेषस्य द्वितीयद्रेष्काणफलम् ।

मेषे द्वितीये जलजो वनांते तृतीयके कूपतडागजातः ।

जो मेषका द्वितीय द्रेष्काण हो तो जलजीवोंसे या वनके बीच मृत्यु होता है और जो मेषराशिमें तृतीय द्रेष्काण हो तो कुएँ वा तालाबसे मृत्यु होती है ॥ ७ ॥

अथ वृषस्य प्रथमद्रेष्काणमृत्युकारणम् ।

वृषस्य पूर्वे त्रिलवे खराश्वकमेलकादिप्रभवो हि मृत्युः ॥ ८ ॥

जो वृषराशिका द्वितीय द्रेष्काण हो तो गधे, घोड़े वा ऊँटों करके मृत्यु होती है ॥ ८ ॥

अथ वृषद्वितीयतृतीयद्रेष्काणफलम् ।

द्वितीयके पित्तहुताशचौरैरुच्चस्थलाश्वादिभवस्तृतीये ।

जो वृषराशिमें द्वितीय द्रेष्काण हो तो पित्तप्रकोपसे, अग्निसे अथवा चोरसे मृत्यु होती है और जो वृषमें तृतीय द्रेष्काण हो तो ऊंचे स्थल वा घोड़े आदिसे मृत्यु कहनी चाहिये ॥

अथ मिथुनस्य प्रथमद्वितीयद्रेष्काणफलम् ।

आद्ये दृकाणे मिथुने च वातश्वासैर्द्वितीये नृपतश्चिदोषैः ॥ ९ ॥

जो मिथुनका प्रथम द्रेष्काण हो तो वातविकार और श्वासविकारसे मृत्यु होती है और द्वितीय द्रेष्काण हो तो बैल करके और त्रिदोषकरके मृत्यु होती है ॥ ९ ॥

अथ मिथुनस्य तृतीयद्रेष्काणफलम् ।

गजादितः पर्वतपाततो वा भवेदरण्ये मिथुनान्त्यदृक्के ।

जो मिथुनराशिमें तृतीय द्रेष्काण हो तो हाथी आदि वाहनोंसे वा पहाडके गिरनेसे जंगलमें मरता है ॥

अथ कर्कस्य प्रथमद्रेष्काणफलम् ।

अपेयपानादपि कण्टकाच्च स्वभाच्च कर्कप्रथमे दृकाणे ॥ १० ॥

जो कर्कका पहला द्रेष्काण हो तो जो पीनेलायक नहीं उसके पीनेसे और कांटा लगनेसे व स्वप्न देखनेसे मृत्यु होती है ॥ १० ॥

अथ कर्कस्य द्वितीयद्रेष्काणफलम् ।

विषादिदोषादतिसारतो वा कर्कस्य मध्यत्रिलवे मृतिः स्यात् ।

जो कर्कराशिका द्वितीय द्रेष्काण हो तो विषादिके दोषसे वा अतिसारदोषसे मृत्यु होती है ॥

अथ कर्कस्य तृतीयद्रेष्काणफलम् ।

महाभ्रमप्लीहकगुल्मदोषैः कर्कांशदृक्के निधनं निरुक्तम् ॥ ११ ॥

जो कर्कका तृतीय द्रेष्काण हो तो बडे भ्रम करके, तापतिल्ली करके अथवा गुल्मरोगसे मरता है ॥ ११ ॥

अथ सिंहस्य त्रिद्रेष्काणफलम् ।

विषाम्बुरोगैः श्वसनाम्बुरोगैरपानपीडाविषशस्त्रकैश्च ।
क्रमेण सिंहस्थदृकाणकेषु नूनं मुनीन्द्रैर्मरणं प्रदिष्टम् ॥ १२ ॥

जो सिंहमें पहला द्रेष्काण हो तो विषसे वा जलसे वा रोगकरके मृत्यु कहनी चाहिये और द्वितीय द्रेष्काण हो तो वातरोगसे वा जलरोगसे मृत्यु कहनी चाहिये और जो सिंहमें तृतीय द्रेष्काण हो तो गुदाके रोगसे विष शस्त्रसे मृत्यु कहनी चाहिये ॥ १२ ॥

अथ कन्याराशेस्त्रिद्रेष्काणफलम् ।

कन्याद्यदृक्केऽनिलमौलिरुग्जो दुर्गाद्रिपाताच्च नृपैर्द्वितीये ।
सरोरुहाक्षाम्बुनिपातकान्तानिमित्तजातं निधनं तृतीये ॥ १३ ॥

जो कन्याराशिमें पहला द्रेष्काण हो तो वातरोग और शिरके रोगसे मरता है और द्वितीय द्रेष्काण हो तो किला कोटके गिरनेसे वा पर्वतके गिरनेसे मृत्यु

होती है और तृतीय द्रेष्काण हो तो गधे, ऊंट, हथियार, जलमें गिरनेसे और स्त्रीके निमित्तसे मरण कहना चाहिये ॥ १३ ॥

अथ तुलाराशेस्त्रिद्रेष्काणफलम्।

तुलादृकाणे प्रथमे निपातात्कलत्रतो वा पशुतोऽपि मृत्युः।
मृत्युर्द्वितीये जठरामयैश्च व्यालाज्जलाच्चापि भवेत्तृतीये ॥ १४ ॥

जो तुलाराशिमें पहला द्रेष्काण हो तो गिरनेसे वा स्त्रीकरके वा पशुओंकरके मृत्यु होती है और जो द्वितीय द्रेष्काण हो तो उदररोगकरके मृत्यु कहना और तृतीय द्रेष्काण हो तो सर्पकरके वा जलकरके मरता है ॥ १४ ॥

अथ वृश्चिकस्य त्रिद्रेष्काणफलम्।

पूर्वे दृकाणे खलु वृश्चिकस्य मृत्युर्विषाज्ञास्रभवोऽस्वगम्यः।
भारश्रमाद्वा कटिबस्तिरोगैर्भवेद्द्वितीये त्रिलवे तु मर्त्ये ॥ १५ ॥
जङ्घास्थिभङ्गाश्मकलोष्टकाष्ठैर्भवेत्तृतीये त्रिलवेऽलिराशेः।

जो वृश्चिकराशिमें पहला द्रेष्काण हो तो विषसे, अजीर्णसे, वा रुधिरपातसे मृत्युको प्राप्त होता है और जो द्वितीय द्रेष्काण हो तो बोझके श्रमसे, कमर वा बस्तिके रोगसे मरता है ॥ १५ ॥ और जो तृतीय द्रेष्काण हो तो जांघकी हड्डी टूटनेसे, लोहेकी कीलसे वा काष्ठसे मृत्यु होती है ॥

अथ धनस्य त्रिद्रेष्काणफलम्।

आद्ये दृकाणे धनुषो मृतिः स्याद्गुदामयैश्चापि मरुद्विकारैः ॥ १६ ॥
विदाहतो वा विषतः शराद्वा नाशो दृकाणे धनुषो द्वितीये।
भवेज्जलाद्वा जलचारिणो वा क्रोडामयाद्वा धनुषस्तृतीये ॥ १७ ॥

जो धनराशिमें पहला द्रेष्काण हो तो गुदाके रोगसे अथवा वातविकारसे मरता है ॥ १६ ॥ और जो धनमें द्वितीय द्रेष्काण हो तो दाहरोगसे, विषकरके, बाण करके मृत्यु होती है और मिथुनमें तृतीय द्रेष्काण हो तो जलसे वा जलचारी जीवोंसे अथवा क्रोड स्थानीय रोगसे मृत्यु होती है ॥ १७ ॥

अथ मकरस्य त्रिद्रेष्काणफलम्।

पूर्वे दृकाणे मकरस्य सिंहाद्व्याघ्राद्वराहाद्वृकतो द्वितीये।
[illegible] अजकैश्च तथा तृतीये चौराग्निशस्त्रज्वरतो हि मृत्युः ॥ १८ ॥

जो मकरमें पहिला द्रेष्काण हो तो शेरसे वा व्याघ्रसे वा सूअरसे वा चूहेसे मृत्युको प्राप्त होता है और जो दूसरा द्रेष्काण हो तो जलचरसे वा सर्पसे मरता है और तृतीय द्रेष्काण हो तो चोर वा अग्नि वा शस्त्र वा ज्वरसे मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

अथ कुम्भस्य त्रिद्रेष्काणफलम् ।

कुम्भस्य पूर्वे त्रिलवेषु पत्नीसुतोदरव्याधिकृतो द्वितीये ।
गुह्यामयात्पर्वतपातनाद्वा त्रिधा तृतीये मुखरुक्पशुभ्यः ॥१९॥

जो कुम्भराशिमें पहिला द्रेष्काण हो तो स्त्री करके, पुत्रकरके वा उदरव्याधिसे मरता है और जो द्वितीय द्रेष्काण हो तो गुह्यरोग वा पर्वतके गिरनेसे या विषसे मृत्यु होती है और जो तृतीय द्रेष्काण हो तो मुखरोगसे वा चौपायोंसे मृत्यु होती है ॥ १९ ॥

अथ मीनस्य त्रिद्रेष्काणफलम् ।

मीनाद्यदृक्के ग्रहणीप्रमेहगुल्माङ्गनाभ्यश्च भवेद्द्वितीये ।
जलोदराद्यैश्च गजग्रहैर्वा जलस्य मध्येपि च नौप्रभेदात् ॥२०॥
प्रान्त्ये दृकाणे पृथुरोगसंस्थे मृत्युः कुरोगैः परिवेदितव्यः ।
एवं नराणां निधनं नियुक्तं नैव ग्रहर्क्षं गगनेचरेन्द्रैः ॥ २१ ॥

जो मीनराशिका पहिला द्रेष्काण हो तो संग्रहणी और प्रमेहरोग, गुल्मरोग वा स्त्री करके मृत्युको प्राप्त होता है और जो द्वितीयद्रेष्काण हो तो जलोदर आदि रोगसे, हाथीके ग्रहणसे वा जलमें स्नान करनेसे वा नौकादिप्रभेदसे मरता है ॥२०॥ जो मीनराशिका अंतिम द्रेष्काण हो तो बुरे रोगोंकरके मरता है, इस प्रकार मनुष्योंका मरण कहना चाहिये, जो अष्टमभावमें कोई ग्रह न बैठा हो और न अष्टमभावको कोई ग्रह देखता हो ॥ २१ ॥

अथ शोषान्मृत्युयोगः ।

शोषान्मृत्युयोगः २१

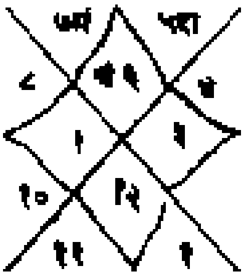

पापांतरे शीतकरे कुमार्याः शोषान्मृतिर्वा रुधिरप्रकोपात् ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा कन्याराशिगत पापी ग्रहोंके बीचमें बैठा हो उस मनुष्यकी मृत्यु शोषरोगसे वा रुधिरप्रकोपसे होती है ॥

अथ पाशहुताशनाभ्यां मृत्युयोगः ।

पाशहुताशनाभ्यां मृत्यु० २२

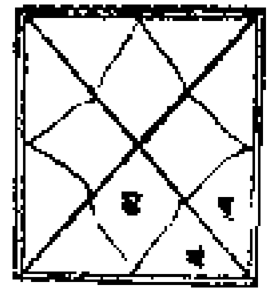

शुभान्तरे शीतकरेऽष्टमस्थे पातेन पाशेन हुताशनेन ॥ २२ ॥

जो मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रहोंके बीचमें अष्टमभावमें चंद्रमा बैठा हो तो वह मनुष्य गिरनेसे वा फाँसीसे वा अग्निसे मरता है ॥ २२ ॥

अथ भुजंगपाशान्मृत्युयोगः ।

भुजंगपाशान्मृत्युयोगः २३

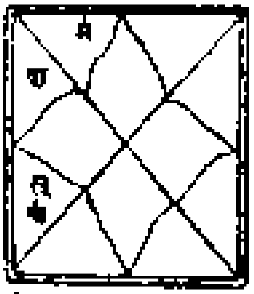

पापेक्षितो पापखगौ त्रिकोणे यद्वाष्टमे बंधभुजंगपाशात् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके दृष्ट पापग्रह रहित चन्द्रमा पंचम, नवम अथवा अष्टममें बैठा हो तो बंधनसे वा सर्पसे या फाँसीसे वह मनुष्य मरता है ॥

दृक्काणकाः स्युर्जनने हि यस्य कारागृहे स्यान्मरणं हि तस्य २३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमनवमस्थानमें पापग्रह बैठा हो, एक पंचम एक नवम हो तो वह प्राणी बन्धनमें मरता है अथवा किलेमें वा हवालातमें मरता है। जिसके अष्टमभावमें पाश या निगड वा सर्प द्रेष्काण हो उसमें पापग्रह बैठा हो तो वह मनुष्य द्रेष्काणके समान बन्धनसे मरता है, पाश द्रेष्काणमें फांसीसे निगडमें बेडी करके, सर्प द्रेष्काणमें सर्पसे मृत्युको प्राप्त होता है ॥

अथ भार्याकृतमरणयोगः ।

भार्याकृतमरणयोगः २४

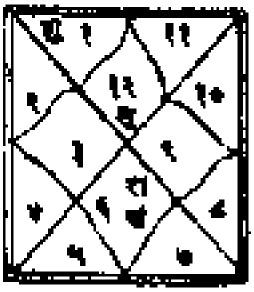

मीनोदयेऽर्केऽस्तगते मृगांके सपापकेचारफुजिति क्रियस्थे । भार्याकृतं स्यान्मरणं स्वगेहे वदंति सर्वे मुनयः पुराणाः ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनलग्न हो, उसमें सूर्य बैठा हो और सातवें भावमें चन्द्रमा पापग्रह सहित बैठा

हो और शुक्र मेषराशिमें बैठा हो तो वह मनुष्य स्त्रीकृत दोषसे अपने घरमें मरता है, यह सम्पूर्ण पुराने मुनीश्वरोंने कहा है ॥ २४ ॥

अथ शूलेन मृत्युयोगः ।

शूलेन मृत्युयोगः २५

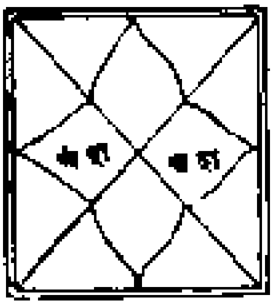

क्षीणेन्दुमंदौ गगने चतुर्थे दिनाधिराजोऽवनिजोऽथवा स्यात् । मूर्तित्रिकोणायगताः खलाख्याः शूलस्य मोलो प्रलयं प्रयांति ॥ २५ ॥

शूलेन मृत्युयोगः २५

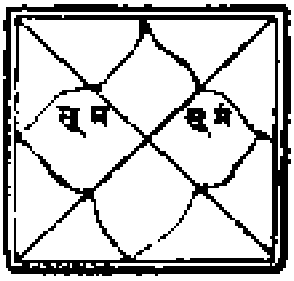

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चन्द्रमा और शनैश्चर दशम चतुर्थभावमें बैठे हों अथवा सूर्य मंगल बैठे हों तो वह प्राणी शूलसे मरता है अथवा लग्न, पंचम, नवम, ग्यारहवें पापग्रह बैठे हों और चन्द्रमाकरके युक्त हो तो वह मनुष्य शूलयोगसे मरता है ॥ २५ ॥

अथ काष्ठेन मृत्युयोगः

काष्ठेन मृत्युयोगः २६

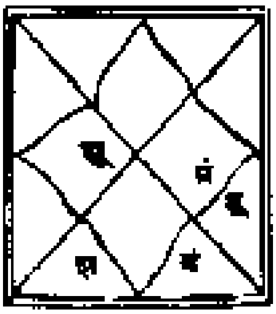

मेषूरणस्थे धरणीतनूजे दिवामणौ भूतलभावसंस्थे । क्षीणेंदुमन्दप्रविलोकयमाने काष्ठाभिघातेन वदंति मृत्युम् ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें मंगल बैठा हो, सूर्य चतुर्थमें बैठा हो और क्षीण चन्द्रमा शनैश्चर करके दृष्ट हो तो वह मनुष्य काष्ठके लगनेसे मरता है ॥ २६

अनेकरोगैर्मृत्युयोगः ।

अनेकरोगैर्मृत्युयोगः २७

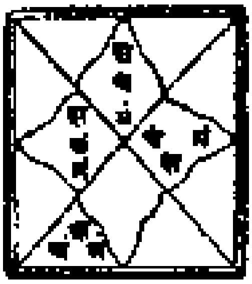

शूलादिविषभयेन मृत्युयोगः २७

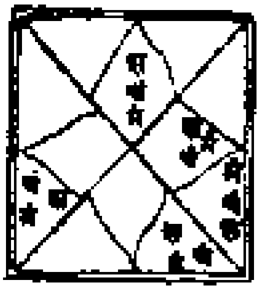

क्षीणेन्दुभौमार्किदि स्याद्यायुःखलग्नाम्बुगतैर्गदाद्यैः । मृत्युःखशुण्यो- विषकुहनेन ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चन्द्रमा, मंगल, शनैश्चर, सूर्य अष्टम, दशम, लग्न, चतुर्थ बैठे हों तो वह मनुष्य अनेक रोगोंसे मरता है (एको योगः) और जो पूर्वोक्त ग्रह अष्टम, दशम, नवम, लग्नमें पंचम बैठे हों तो वह मनुष्य अनेक प्रकारके शूलादिविषसे मरता है ॥ २७ ॥

अथ शस्त्राग्निनृपकोपेन मृत्युयोगः ।

अथ शस्त्राद्युत्पन्नको मृत्युयोगः २८

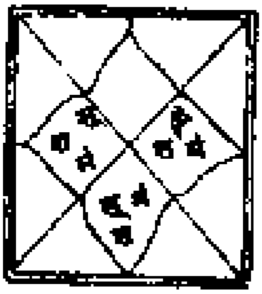

भूसूनुसूर्यार्कसुता यदि स्युश्चतुर्थआमित्रनभोगृहस्थाः । कुर्वंति ते शस्त्रहुताशभूपप्रकोपजातं नियमेन मृत्युम् ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल, सूर्य, शनैश्चर चौथे सातवें दशम भावमें बैठे हों, वह मनुष्य हथियार वा अग्नि वा राजाके कोपसे निश्चयकरके मरता है ॥ २८ ॥

अथ प्रवासेऽग्निदाहेन मृत्युयोगः ।

कृमिदाहेन मृत्युयोगः २९

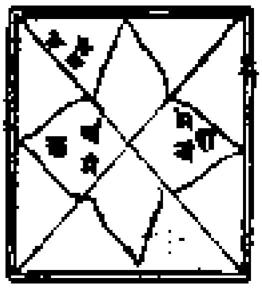

अग्निदाहेन मृत्युयोगः ३०

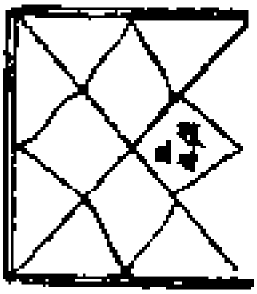

कुजेन्दुमंदाः खजलद्विसंस्थाः कृमिकृतैस्ते मरणं प्रकुर्युः । मेषूरणस्थे रविभौमसोमैर्भवेत्प्रवासेऽनलवाहनाद्यैः ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल, चन्द्रमा, शनैश्चर दशम, चतुर्थ, दूसरे बैठे हों

तो वह मनुष्य कीडों करके वा घावकरके मरता है और जो दशम भावमें सूर्य, मंगल, चन्द्रमा बैठे हों तो वह मनुष्य परदेशमें अग्नि या वाहनादिकोंकरके मरता है ॥ २९ ॥

अथ यन्त्रोत्पीडनेन मृत्युयोगः ।

यन्त्रोत्पीडनेन मृत्युयोगः ३०

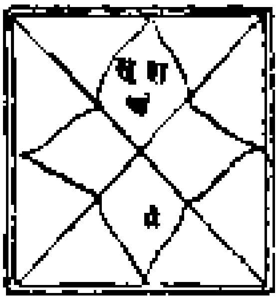

क्षीणेंदुमन्दार्कयुते विलग्ने भूमीसुते सप्तमभावयाते । विनाशनं यंत्रनिपीडनेन भवेदवश्यं परिवेदितव्यम् ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीणचंद्रमा, शनैश्चर, सूर्य लग्नमें बैठे हों और मंगल सातवें बैठा हो तो वह मनुष्य यन्त्रसे पिचकर मरता है ॥ ३० ॥

अथ विण्मूत्रप्रदेशे मृत्युयोगः ।

विण्मूत्रप्रदेशे मृत्युयोगः ३१

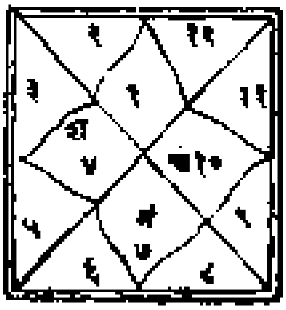

भौमे तुलायां च यमे च कर्के प्रालेयरश्मौ द्विजालयस्थे । विण्मूत्रितासंकुलितप्रदेशेऽवश्यं विनाशः परिवेदितव्यः ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल तुलाराशिमें बैठा हो, शनैश्चर कर्कराशिमें, चन्द्रमा मकर, कुंभमें बैठा हो तो वह मनुष्य विष्ठामूत्रके स्थानमें मरता है ॥ ३१ ॥

अथ वनांतराले मृत्युयोगः ।

वनांतराले मृत्युयोगः ३२

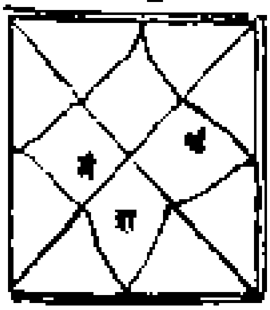

मेषूरणास्तम्बुगृहैः क्रमेण क्षीणेंदुमन्दाऽवनिपुत्रयुक्तैः । दुर्गांतराले च शिलोच्चये वा वनांतराले प्रलयः किल स्यात् ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशम, सातवें, चतुर्थ, स्थानोंमें क्षीण चन्द्रमा शनैश्चर मंगल क्रमकरके बैठे हों तो वह मनुष्य किलेकोटमें, या पहाड़पर अथवा जंगलमें मरता है ॥ ३२ ॥

अथ गुह्यरोगान्मृत्युयोगः ।

गुह्यरोगान्मृत्युयोगः ३३

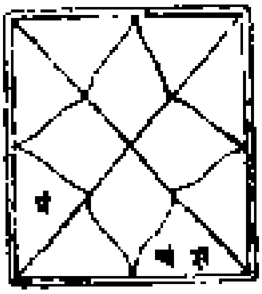

बलोपपन्नावनिसूनुदृष्टे क्षीणे विधौ रंध्रगतेऽर्कपुत्रे ॥ गुह्यामयाद्वा कृमितस्ततो वा भवेदवश्यं मरणं रणाद्वा ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चन्द्रमा और शनैश्चर अष्टममें बैठे हो और बलकरके मंगल देखता हो तो वह मनुष्य गुह्यरोगकरके, कीडोंके हेतुसे अथवा संग्राममें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ३३ ॥

अथ विहंगेन श्वापदकारणेन च मृत्युयोगः ।

विहंगेन मृत्युयोगः ३४

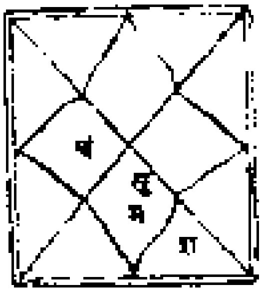

मित्रे कलत्रोपगते सभौमे मंदेऽष्टमस्थे च विधौ चतुर्थे । विहंगमश्वापदकारणेन निर्याणमाहुर्मुनयः पुराणाः ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें मंगल सूर्य बैठे हों और शनैश्चर आठवें और चंद्रमा चौथे बैठा हो तो वह मनुष्य पक्षियोंकरके वा घोडेकी लातकरके मरता है ॥ ३४ ॥

अथ भित्तिपतनेन मृत्युयोगः ।

भित्तिपतनेन मृत्युयोगः ३५

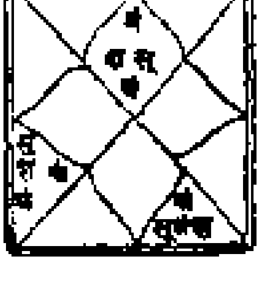

लग्नाष्टमत्रिकोणेषु भानुभौमार्कजेन्दुभिः । पार्वतीयो भवेन्मृत्युर्भित्तिपातभवोऽथवा ३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, पंचम, नवम वा अष्टम भावमें सू० मं० शनैश्चर चन्द्रमा बैठे हों तो वह मनुष्य पर्वतपर वा दिवालके गिरनेसे मरता है ॥ ३५ ॥

अथ तीर्थे मरणयोगः ।

सौम्येऽष्टमस्थे शुभदृष्टियुक्ते धर्मेश्वरे वा शुभखेचरेंद्रे ।
तीर्थे मृतिः स्यादिति योगयुग्मं तीर्थे हि विष्णुस्मरणेन मृत्युः ३६

तीर्थे मरणयोगः ३५

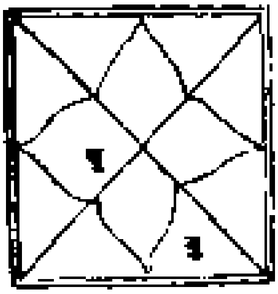

तीर्थे मरणयोगः ३६

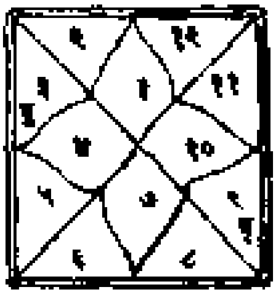

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टम भावमें शुभग्रह बैठे हों और शुभग्रहों करके दृष्ट हों तो वह मनुष्य तीर्थमें मरता है अथवा नवमभावका स्वामी नवममें हो और शुभग्रहों करके दृष्ट हो तो भी विष्णुका स्मरण करके तीर्थमें मरता है ॥ ३६ ॥

अथ अग्निप्रवेशेन मृत्युयोगः ।

अग्निना मरणयोगः ३७

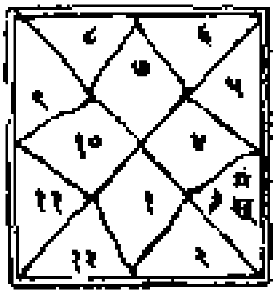

धर्मस्वामी धर्मगो धर्मसंस्थौ सूर्यक्ष्माजौ चेत्तदाग्निप्रवेशम् । कुर्यात्पत्नी लग्नजामित्रनाथौ मित्रे स्यातां नान्यथा सद्भिरुक्तम् ॥ ३७ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे निर्याणाध्यायः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमका स्वामी नवममें बैठा हो और सूर्य, मंगल भी नवममें बैठे हों तो वह अग्निमें प्रवेश करके मरता है और जिसके लग्न और सप्तमभावके स्वामी आपसमें मित्र हों अथवा शुभग्रहों करके युक्त हों तो उसकी स्त्री अग्निमें प्रवेश कर मरती है ॥ ३७ ॥

इति श्रीबंसबरेलीस्थपराजज्योतिर्विद्पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां निर्याणाध्यायः ॥ २१ ॥

अथ चन्द्रकृतनिर्य्याणाध्यायप्रारंभः ।

इति प्रणीतं निर्य्याणं प्राचीनमुनिसंमतम् ।
यवनेश्वरैर्यदुक्तं यत्र सविस्तरमथोच्यते ॥ १ ॥

यह जो निर्याणाध्याय प्राचीनमुनीश्वरोंने सम्मति करके कहा है और मध्याचार्यने कहा है उसको विस्तारपूर्वक कहते हैं ॥ १ ॥

अथ मेषराशिस्थितचन्द्रफलनिर्याणमाह-

धनवान्पुत्रवानुग्रः परोपकरणे रतः ।
सर्वकर्मसमायुक्तः सुशीलो राजवल्लभः ॥ २ ॥
गुणाभिरामः सततं देवब्राह्मणपूजकः ।
कोष्णशाकाल्पभोक्ता च ताम्रविस्तृतलोचनः ॥ ३ ॥
शूरः शीघ्रप्रमादी च कामी दुर्बलजानुकः ।
शिरोव्रणयुतो दाता कुनखी सेवकप्रियः ॥ ४ ॥
द्विभार्यः संगरे भीरुश्चपलो नितरां भवेत् ।
प्रथमे सप्तमे वर्षे त्रयोदशमिते ज्वरः ॥ ५ ॥
षोडशे वा सप्तदशे वर्षे स्यात्तु विषूचिका ।
तृतीये द्वादशे वापि जलाद्भीतिः प्रजायते ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चन्द्रमा हो वह मनुष्य धनवान्, पुत्रवान्, उग्र, पराया उपकार करनेमें तत्पर, सम्पूर्ण कर्मोंसहित, श्रेष्ठ शीलवाला, राजाका प्यारा होता है ॥ २ ॥ गुणोंकरके शोभित, देवता ब्राह्मणोंकी पूजा करनेवाला, थोड़े गरम शाकका थोड़ा भोजन करनेवाला, ताम्बेके समान लाल नेत्रोंवाला ॥ ३ ॥ शूरवीर, जल्दी मत्तवाला होनेवाला, कामी और दुर्बलजानुवाला शिरमें व्रण हो, दाता, कुनखी, सेवकोंका प्यारा होता है ॥ ४ ॥ दो स्त्रियोंवाला, संग्राममें डरनेवाला, निरन्तर चपल हो, पहिले, सातवें व तेरहवें वर्षमें ज्वरकी पीड़ा हो ॥ ५ ॥ सोलहवें व सत्रहवें वर्षमें विषूचिका रोग कहना तीसरे बारहवें वर्षमें जलसे भय होता है ॥ ६ ॥

पञ्चविंशन्मिते वर्षे संताने च निशापते ।
द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे शस्त्रघातः प्रजायते ॥ ७ ॥
कार्यारंभप्रलापी च विदेशगमने रतः ।
कृतांगः शीघ्रगो मानी शुभलक्षणसंयुतः ॥ ८ ॥
वाताधिक्यः शुभैर्दृष्टे चन्द्रे नवतिसंमिते ।
आयुस्तस्य विनिर्देश्यं कार्तिकस्य सितेतरे ॥ ९ ॥

पक्षे बुधे नवम्यां च निशीथे च शिरोरुजा।
निधनं जायते नूनं जन्मनीन्दावजस्थिते॥ १०॥

छब्बीसवें वर्षमें संतान पैदा हो, रतौंधरोग हो और बत्तीसवें वर्षमें हथियारसे घात हो॥ ७॥ और कामके आरम्भ करनेमें प्रलाप करनेवाला, परदेश जानेमें तत्पर, दुर्बलदेह, जल्दी चलनेवाला, मानी, श्रेष्ठ लक्षणोंसहित होता है॥ ८॥ वातरोग अधिक हो, जो चन्द्रमा शुभग्रहोंकरके दृष्ट हो तो नब्बे बरसकी आयु कहना और कार्तिकके महीनेमें कृष्णपक्षमें॥ ९॥ बुधवार नवमी तिथि रात्रिको शिरमें रोगसे मृत्यु होती है॥ १०॥

अथ वृषराशिस्थितचंद्रनिरूपणम्।

अल्पतेजा नरः स्तब्धः कर्मशुद्धिविवर्जितः।
सत्यवागर्थवान्कामी कामिनीवचनानुगः॥ १॥
चिरायुरल्पकेशश्च परोपकरणे रतः।
पितुर्मातुर्गुरूणां च भक्तो भूपतिवल्लभः॥ २॥
सभायां चतुरो नित्यं संतुष्टो येन केनचित्।
पीडा स्यात्प्रथमे वर्षे तृतीयेऽग्निभयं दिशेत्॥ ३॥
विषूचिकाभयं विद्यात्सप्तमे नवमे व्यथा।
दशमे रुधिरोद्गारो द्वादशे पतनं तरोः॥ ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य थोडे तेज-वाला, नम्रतासहित, कर्मशुद्धिसे रहित, सच बोलनेवाला, धनवान् और कामी, स्त्रियोंकी आज्ञामें चलनेवाला॥ १॥ बडी उमरवाला, थोडे केशोंवाला, पराये उपकारमें तत्पर, पिता, माता, गुरुओंका भक्त, राजाका प्यारा होता है॥ २॥ सभाके बीचमें हमेशा चतुर, जिस किसी तरह संतुष्ट, पहिले वर्षमें पीडा, तीसरे वर्षमें अग्निका भय होता है॥ ३॥ और सातवें वर्षमें विषूचिकारोग और नवमवर्षमें व्यथा हो और दशवें वर्षमें रुधिरविकार और बारहें वर्षमें पेडसे गिरता है॥ ४॥

सर्पाच्च षोडशे भीतिः पीडा चैकोनविंशके।
पञ्चविंशन्मिते तोयाद्भयं भवति निश्चितम्॥ ५॥
त्रिंशन्मिते तथा पीडा द्वात्रिंशत्प्रमितेऽपि च।
श्लेष्मलः शांतिभाक्शूरः सहिष्णुर्बुद्धिमान्नरः॥ ६॥

सौम्यग्रहेक्षिते चन्द्रे षण्णवत्यब्दसंख्यया ।
आयुर्जन्तोर्विनिर्देश्यमवश्यं वचनात्सताम् ॥ ७ ॥
माघमासे नवम्यां च शुक्लपक्षे भृगोर्दिने ।
रोहिण्यां निधनं विद्याज्जन्मनीन्दौ वृषस्थिते ॥ ८ ॥

और सोलहवें वर्षमें सर्पसे भय हो और उन्नीसवें वर्षमें पीड़ा हो, पच्चीसवें वर्षमें जलसे भय जरूर हो ॥ ५ ॥ तीसवें वर्षमें और बत्तीसवें वर्षमें पीड़ा होती है, श्लेष्माकी प्रकृतिवाला, क्रांतिमान्, शूरवीर, सहन करनेवाला, बुद्धिमान् होता है ॥ ६ ॥ जो चन्द्रमाको शुभग्रह देखते हों तो छियानवें वर्षकी उमर पावे यह सत्पुरुषोंका मत है ॥ ७ ॥ माघमास नवमी तिथि शुक्लपक्ष शुक्रवारको रोहिणी नक्षत्रमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ मिथुनराशिस्थितचन्द्रनिर्णयम् ।

ग्रामणीश्चतुरः प्राज्ञो दृढसौहृदकारकः ।
मिष्टान्नाशी सुशीलश्च छिन्नवाक्चललोचनः ॥ १ ॥
कुटुम्बवत्सलः कामी कुतूहलरतिप्रियः ।
वयसः पूर्वभागे तु सुखी मध्ये तु मध्यमः ॥ २ ॥
चरमेऽतितरां दुःखी द्विभार्यो गुरुवत्सलः ।
स्वल्पापत्यो गुणैर्युक्तो नरो भवति निश्चितम् ॥ ३ ॥
वृक्षाद्भीः पंचमे वर्षे षोडशेऽरिकृतं भयम् ।
अष्टादशप्रमाणे तु कर्णरुक्परिपीडनम् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य ग्रामाधीश बड़ा चतुर, पक्की मित्रता करनेवाला, मीठा भोजन करनेवाला, श्रेष्ठशीलवान्, छिन्न वाणी बोलनेवाला, चञ्चल नेत्रोंवाला होता है ॥ १ ॥ और कुटुंबका प्यारा, कामी, हर्षसहित, मैथुनमें प्रीति करनेवाला, बालकपनेमें सुखी और जवानीमें मध्यम सुख हो ॥ २ ॥ और बुढ़ापेमें दुःखी, दो स्त्रियोंवाला, गुरुका प्यारा, थोड़ी संतानवाला, गुणोंकरके सहित होता है ॥ ३ ॥ पांचवें वर्षमें वृक्षसे भय और सोलहवें वर्षमें शत्रुसे भय और अठारह वर्षकी अवस्थामें कानके रोगकी पीड़ा होती है ॥ ४ ॥

विंशत्या प्रमिते वर्षे पीडात्यन्तं प्रजायते ।
अष्टत्रिंशन्मिते नूनं पीडा स्यान्मृत्युना समा ॥ ५ ॥

भोगी दानरतो नित्यं सत्यधर्मपरायणः ।
सुभगो विषयासक्तो गीतनृत्यप्रियः सुधीः ॥ ६ ॥
शास्त्रज्ञः शुभवाग्जीवेद्विंशति शरदां नरः ।
वैशाखे शुक्लपक्षे च द्वादश्यां बुधवासरे ॥ ७ ॥
मध्याह्ने हस्तनक्षत्रे निर्याणं खलु निर्दिशेत् ।
इत्युक्तं मिथुनस्थे तु जन्मकाले कलानिधौ ॥ ८ ॥

और तीसरे वर्षमें बड़ी पीड़ा हो और अडसीठ वर्षकी उमरमें मृत्युसमान पीड़ा हो ॥ ५ ॥ भोगी, दानमें तत्पर, सत्य धर्ममें तत्पर, श्रेष्ठ भाग्यवाला, विषयमें आसक्त गायन नाचना प्रिय जिसको, बुद्धिमान होता है ॥ ६ ॥ शास्त्रका जाननेवाला, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला और अस्सीवर्षकी उमरतक जीता है वैशाखमहीना, शुक्लपक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार ॥ ७ ॥ मध्याह्नके समय हस्तनक्षत्रमें उसकी मृत्यु होती है यह मिथुनराशिस्थित चन्द्रमाका फल कहा है ॥ ८ ॥

अथ कर्कराशिस्थितचन्द्रनिर्याणमाह ।

परोपकृतिकर्ता च सर्वसंग्रहतत्परः ।
पुत्रवान्गुणवान्साधुर्भक्तः पित्रोः स्त्रिया जितः ॥ १ ॥
अल्पायुः प्रथमे भागे निःस्वो मध्ये सुखी भवेत् ।
तृतीये धर्मसंसक्तस्तीर्थयात्रापरायणः ॥ २ ॥
रेखा तस्य भवेन्नूनं ललाटे मध्यगामिनी ।
वामांगेऽग्निभयं विद्याच्छीर्षरुक्परिपीडितः ॥ ३ ॥
बांधवैर्बहुभिर्युक्तो बहुभार्यः प्रजायते ।
भगदस्थितिवेत्ता च बहुमित्रः प्रियंवदः ॥ ४ ॥

अब कर्कराशि स्थित चन्द्रमाका निर्याण कहते हैं—पराये उपकारका करनेवाला, सब चीजोंका संग्रह करनेवाला, पुत्रवान्, गुणी, साधु, पितामाताका भक्त, स्त्रियों-करके जीता हुआ ॥ १ ॥ अल्पायु होती है और पहली उमरमें धनहीन होता है और ज्वानीमें सुखी होता है और बुढापेमें धर्ममें आसक्त, तीर्थयात्रामें तत्पर होता है ॥ २ ॥ और उसके माथेमें रेखा होती है, बायें अंगमें अग्निका भय होता है, शिरमें रोगकरके पीडित हो ॥ ३ ॥ बहुत बन्धुगणोंसहित, बहुत स्त्रियोंवाला, भगदोंकी स्थितिका जाननेवाला, बहुत मित्रोंवाला प्यारी वाणी बोलनेवाला होता है ॥ ४ ॥

रोगी स्यात्प्रथमे वर्षे तृतीये लिंगपीडनम् ।
एकत्रिंशन्मिते वर्षे सर्पतो भयमादिशेत् ॥ ५ ॥
द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे बहुपीडोद्भवो भवेत् ।
पंचाशीतिमितं ब्रूयादायुः षण्णवतिश्च वा ॥ ६ ॥
माघे मासि सिते पक्षे नवम्यां भृगुवासरे ।
रोहिणीनामनक्षत्रे व्रजेदायुः प्रपूर्णताम् ॥ ७ ॥
प्रसूतौ कर्कराशिस्थे कुमुदानन्दने सति ।
पुराणैर्मुनिभिः प्रोक्तं निर्याणमिति निश्चितम् ॥ ८ ॥

पहिले वर्षमें रोगी हो, तीसरे वर्षमें लिंगपीडा हो और एकतीसवें वर्षमें सर्पसे भय होता है ॥ ५ ॥ और बत्तीसवें वर्षमें बहुत पीडा हो और पचासी वर्ष अथवा छानवे वर्षकी आयु कहनी चाहिये ॥ ६ ॥ माघका महीना, शुक्लपक्ष, नवमी तिथि, शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्रमें आयु पूर्ण होती है ॥ ७ ॥ जन्मकालमें कर्कराशिगत चन्द्रमाका यह फल पूर्वाचार्योंने वर्णन किया है ॥ ८ ॥

अथ सिंहराशिस्थितचन्द्रनिर्याणमाह ।

धनधान्यसमायुक्तः श्रीमांश्च समरप्रियः ।
विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो विदेशगमने रतः ॥ १ ॥
विशालः पिंगलाक्षश्च क्रोधी स्वल्पात्मजो नरः ।
सर्वगः शत्रुहन्ता च शिरोरुङ्निष्ठुरो महान् ॥ २ ॥
भूताद्बाधादिमे वर्षे पंचमेऽब्देऽग्नितो भयम् ।
सप्तमे ज्वरबाधा च नृणां भवति निश्चितम् ॥ ३ ॥
विषूचिकोद्भवा पीडा नृणां भवति निश्चितम् ।
विंशे वर्षे भयं सर्पादेकविंशे प्रपीडनम् ॥ ४ ॥

अब सिंहराशिगत चन्द्र निर्याण कहते हैं-धनधान्यकरके सहित, लक्ष्मीवान, संग्राम जिसको प्यारा, विद्वान, सब कलाओंका जाननेवाला, परदेशगमनमें इच्छा करनेवाला होता है ॥ १ ॥ बडे और पीले नेत्रोंवाला, क्रोधी, थोडे पुत्रोंवाला, सर्व जगह जानेवाला, शत्रुओंका नाश करनेवाला, शिरमें रोग, बडा कठोर होता है ॥ २ ॥ पहिले वर्षमें भूतबाधा हो, पांचवें वर्षमें अग्निभय, सातवें वर्षमें ज्वरकी बाधा मनुष्यको जरूर होती है ॥ ३ ॥ विषूचिका रोगकी पीडा जरूर हो, बीसवें वर्षमें सर्पका भय हो, इक्कीसवें वर्षमें पीडा होती है ॥ ४ ॥

अष्टाविंशन्मिते वर्षे वादवादभयान्वितः ।
द्वात्रिंशत्प्रमिते नूनं वत्सरे परिपीडनम् ॥ ५ ॥
उदरे सव्यभागे तु वातगुल्मादि संभवः ।
सुशीलः कृपणोऽत्यंतं सत्यवादी विचक्षणः ॥ ६ ॥
शुभग्रहेक्षिते चंद्रे शतायुर्जायते नरः ॥
फाल्गुनस्यासिते पक्षे पंचम्यां भौमवासरे ॥ ७ ॥
मध्याह्ने जलमध्ये च मृत्युर्नूनं न संशयः ।
सिंहराशिस्थिते चंद्रे निर्याणमिदमीरितम् ॥ ८ ॥

अट्ठाईसवें वर्षमें झगडेका भय हो, बत्तीसवें वर्षमें बडी पीडा हो ॥ ५ ॥ पेटके दाहिनी तरफ वातरोग, गुल्मरोग होता है, श्रेष्ठ शीलवाला, अत्यन्त कृपण, सत्य बोलनेवाला चतुर होता है ॥ ६ ॥ जो चन्द्रमाको शुभग्रह देखते हों तो सौवर्षकी उमर हो, फागुनके महीनेमें शुक्लपक्षमें पंचमी मंगलवारको ॥ ७ ॥ मध्याह्नके समय पानीके बीचमें मृत्यु होती है । यह सिंहराशिस्थितचन्द्रका निर्याण कहा है ॥ ८ ॥

अथ कन्याराशिस्थितचंद्रफलनिर्याणम् ।

स्वजनानंदकृन्नित्यं धनवान्बहुसेवकः ।
प्रवासी च कलाभिज्ञो गुरुभक्तः प्रियंवदः ॥ १ ॥
देवताद्विजवर्याणां भक्तौ तत्परमानसः ।
धर्मकर्मसमायुक्तो जनानामतिदुर्लभः ॥ २ ॥
कन्यकाल्पत्वमापन्नो भूरिपुत्रो भवेन्नरः ।
शिश्ने कण्ठप्रदेशे च लाञ्छनं निश्चितं भवेत् ॥ ३ ॥
वह्निपीडा तृतीयेऽब्दे पंचमे लोचनव्यथा ।
नवमे दारबाधा च त्रयोदशमितेऽपि च ॥ ४ ॥

अब कन्याराशिस्थित चन्द्रनिर्याण कहते हैं—अपने जनोंको हमेशा आनन्द करनेवाला, धनवान्, बहुत नौकरोंवाला, परदेश जानेवाला, कलाओंका जाननेवाला, गुरुओंका भक्त, प्यारी वाणी बोलनेवाला होता है ॥ १ ॥ देवता और ब्राह्मणोंकी भक्तिमें तत्पर मनवाला, धर्मकर्मसहित, मनुष्योंको दुर्लभ मनुष्य होता है ॥ २ ॥ थोडी कन्याकी सन्तानवाला, बहुत पुत्रोंवाला हो, उसके लिंग और कंठमें चिह्न

हो ॥ ३ ॥ तीसरे वर्षमें अग्निकी पीडा हो, पांचवें वर्षमें नेत्रोंका रोग हो और नवम वर्ष और तेरहवें वर्षमें गुह्यदेशमें रोग हो ॥ ४ ॥

तथा पंचदशे वर्षे सर्पतो भयमादिशेत् ।
एकविंशन्मिते वर्षे पतनं वृक्षभित्तितः ॥ ५ ॥
अरण्ये शस्त्रघातः स्याद्वर्षे त्रिंशन्मिते ध्रुवम् ।
अशीत्यब्दं भवेदायुश्चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षिते ॥ ६ ॥
चैत्रकृष्णत्रयोदश्यां निधनं रविवासरे ।
शीतद्युतौ स्थिते सूतौ कन्यायामिति संस्मृतम् ॥ ७ ॥

पंद्रहवें वर्षमें सर्पसे भय हो। और इक्कीसवें वर्षमें वृक्षसे गिरता है वा भीतसे गिरता है ॥ ५ ॥ तीसवें वर्षमें जंगलमें हथियारका घात हो और अस्सी वर्षकी आयु हो जो चन्द्रमाको शुभग्रह देखते हों ॥ ६ ॥ चैत्रवदी तेरस रविवारके दिन मृत्यु हो। यह कन्याराशिगत चन्द्रमाका फल कहा है ॥ ७ ॥

अथ तुलाराशिस्थितचंद्रफलनिर्याणमाह ।

मान्यः सर्वजनैर्नूनं वस्तुसंग्रहतत्परः ।
भोगी धर्मपरः श्रीमान्बहुभृत्यो विचक्षणः ॥ १ ॥
वापीकूपतडागादिनिर्मितौ सादरः सदा ।
प्राज्ञः सर्वकलाभिज्ञो नृपाणामतिवल्लभः ॥ २ ॥
मधुरान्नरसप्रीतिर्द्विभार्यः पितृभक्तिकृत् ।
स्वल्पापत्याल्पबन्धुश्च कृषिकर्मविचक्षणः ॥ ३ ॥
क्रयविक्रयसंप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजकः ।
भार्यावचोऽनुगामी च सप्तमेऽब्देऽग्निजं भयम् ॥ ४ ॥

अब तुलाराशिगतचंद्रमाका निर्याण कहते हैं—सब जनों करके माननीय, वस्तुओंके संग्रहमें तत्पर होता है, भोगी, धर्ममें तत्पर, बहुत नौकरोंवाला, बडा चतुर होता है ॥ १ ॥ बावडी कुआ, तालाब आदि स्थानोंको बनानेवाला, चतुर, सम्पूर्ण कलाओंका जाननेवाला, राजाओंका अत्यंत प्यारा होता है ॥ २ ॥ मीठे अन्न और रसोंमें प्रीति करनेवाला हो, दो स्त्रियोंवाला, पिताकी भक्ति करनेवाला, थोडी सन्तानवाला थोडे भाइयोंवाला, खेती करनेमें चतुर होता है ॥ ३ ॥ क्रयविक्रय करके धन पैदा करनेवाला, देवता और ब्राह्मणोंका पूजनेवाला, स्त्रीके वचनमें चलनेवाला हो, सातवें वर्षमें अग्निभय होता है ॥ ४ ॥

अष्टमे ज्वरजा पीडा द्वादशे च जलाद्भयम् ।
तरोस्तुरगतः पातः सर्पभीर्वापि विंशके ॥ ५ ॥
एकविंशन्मिते पीडा चंद्रे सौम्यग्रहे स्थिते ।
पंचाशीतिर्भवेदायुर्वैशाखस्याद्यपक्षके ॥ ६ ॥
सार्पेऽष्टम्यां भृगोर्वारे निधनं पूर्वयामके ।
तुलाराशिस्थिते चन्द्रे निर्याणमिति सूचितम् ॥ ७ ॥

आठवें वर्षमें ज्वरकी पीडा, ग्यारहें वर्षमें जलसे भय होता है और वृक्षसे वा घोडेसे गिरना, सर्पका भय बीसवर्षकी उमरमें कहना चाहिये ॥ ५ ॥ इकीसवें वर्षमें पीड़ा होती है, जो चंद्रमाको शुभग्रह देखते हों तो पचासीवर्षकी उमर कहना, वैशाखमासके कृष्णपक्षमें ॥ ६ ॥ आश्लेषानक्षत्रमें शुक्रवारको पहिले प्रहरमें मृत्यु होती है । यह तुलाराशिस्थितचन्द्रका निर्याण है ॥ ७ ॥

अथ वृश्चिकराशिस्थितचन्द्रनिर्म्याणमाह ।

परतापपरः क्रोधी विद्वेषी कलहप्रियः ।
विश्वासघातकश्चापि मित्रद्रोही विचक्षणः ॥ १ ॥
असंतुष्टो नृपैः पूज्यो विघ्नकर्तान्यकर्मणि ।
शुभलक्षणसंयुक्तो गुप्तपापश्च विक्रमी ॥ २ ॥
बहुभृत्यश्चतुर्बंधुर्द्विभार्यो जायते पुमान् ।
प्रथमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तृतीये भयमग्नितः ॥ ३ ॥
पंचमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तथा पंचदशेऽपि च ।
पंचविंशन्मिते वर्षे पीडा स्यान्महती ध्रुवम् ॥ ४ ॥
चन्द्रे सौम्यग्रहैर्दृष्टे नवत्यब्दान्स जीवति ।
ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुधवासरे ॥ ५ ॥
हस्तनक्षत्रसंयुक्ते मध्यरात्रे गते सति ।
चन्द्रे वृश्चिकराशिस्थे निर्याणमिति कीर्तितम् ॥ ६ ॥

अब वृश्चिकराशिस्थित चन्द्रमाका निर्म्याण कहते हैं—शत्रुओंसे तपनेवाला, वैर करनेवाला, कलह जिसको प्यारा, विश्वासघात करनेवाला, मित्रोंसे द्रोह करनेमें चतुर होता है ॥ १ ॥ और संतोषरहित, राजपूज्य, पराये कामोंमें विघ्न करनेवाला,

श्रेष्ठ लक्षणसहित, पराक्रमी होता है ॥ २ ॥ बहुत नौकरोंवाला, चार भाइयोंवाला, दो स्त्रियोंवाला पहिले वर्षमें ज्वरकी पीड़ा, तीसरे वर्षमें अग्निसे भय होता है ॥ ३ ॥ पांचवें वर्षमें ज्वरसे भय और पंद्रहवें वर्षमें ज्वरका भय और पचीसवें वर्षमें बड़ी पीड़ा हो ॥ ४ ॥ जो चन्द्रमा शुभ ग्रहोंकरके दृष्ट हो तो अस्सी वर्ष जीता है, ज्येष्ठमास शुक्लपक्ष दशमी बुधवारको ॥ ५ ॥ हस्तनक्षत्रमें आधी रातको मरता है ॥ ६ ॥

अथ धनराशिस्थितचन्द्रफलनिर्णयमाह ।

प्राज्ञो धर्मी सुपुत्रश्च राजमान्यो जनप्रियः ।
द्विजदेवार्चने प्रीतिर्वस्तुसंग्रहतत्परः ॥ १ ॥
सभायां च भवेद्वक्ता सुनखी सुमतिः शुचिः ।
स्थूलदंताधरग्रीवः काव्यकर्ता प्रगल्भकः ॥ २ ॥
कुलशाली वदान्यश्च सभाग्यो दृढसौहृदः ।
निम्नपादतलः क्लेशी साहसी विनयान्वितः ॥ ३ ॥
शांतः क्षिप्रप्रकोपी च तापसः स्वल्पभुङ्नरः ।
स्वल्पापत्यः सुबंधुश्च पूर्वे वयसि वित्तवान् ॥ ४ ॥

अथ धनराशिगत चन्द्रमाका निर्णय कहते हैं—चतुर, धर्मवान्, श्रेष्ठपुत्रोंवाला, राजमान्य, मनुष्योंका प्यारा, ब्राह्मण देवताओंके पूजनमें प्रीति करनेवाला, वस्तुओंके संग्रह करनेमें तत्पर होता है ॥ १ ॥ सभाके बीचमें बोलनेवाला, सुन्दर नखोंवाला, पवित्र मोटे दांत और ओंठ गर्दनवाला, पवित्र, श्रेष्ठबुद्धिवाला, काव्यका करनेवाला, प्रगल्भ होता है ॥ २ ॥ श्रेष्ठकुलवाला, भाग्यसहित, दृढ मित्रता करनेवाला, पैरोंके तलुए जिसके गहरे, क्लेश पानेवाला, साहसी, नम्रता-सहित होता है ॥ ३ ॥ शांतस्वभाव, जल्दी क्रोध करनेवाला, तपस्वी, थोड़ा खानेवाला, थोड़े पुत्रोंवाला, श्रेष्ठ भाइयोंवाला और पहली उमरमें धनवान् होता है ॥ ४ ॥

सबाधः प्रथमे वर्षे महापीडा त्रयोदशे ।
अष्टषष्टिमितं प्राहुरायुर्वा पंचसप्ततिः ॥ ५ ॥
चन्द्रे सर्वशुभैर्दृष्टे शतवर्षाणि जीवति ।
आषाढस्यासिते पक्षे पंचम्यां भृगुवासरे ॥ ६ ॥

निशायां हस्तनक्षत्रे निधनं सर्वथा भवेत् ।
निर्य्याणमिति संप्रोक्तं चंद्रसूतौ धनस्थिते ॥ ७ ॥

पहिले वर्षमें बाधा, तेरहवें वर्षमें बड़ी पीड़ा होती है और अड़सठ वा पचहत्तर वर्षकी उमर होती है ॥ ५ ॥ जो चन्द्रमा सम्पूर्ण शुभग्रहों करके दृष्ट हो तो सौ वर्ष जीता है, आषाढ़का महीना शुक्लपक्ष पंचमी शुक्रवार ॥ ६ ॥ रात्रिमें हस्त नक्षत्रमें सर्वथा मृत्यु होती है, यह धनराशिगत चन्द्रमाका निर्य्याण कहा है ॥ ७ ॥

अथ मकरराशिगतचन्द्रनिर्य्याणमाह—

धीरो विचक्षणः क्लेशी पुत्रवान्नृपतिप्रियः ।
कृपालुः सत्यसम्पन्नो वदान्यो शुभगोऽलसः ॥ १ ॥
कृष्णतालुः पुमान्नूनं विस्तीर्णकटिकृद्भवेत् ।
पंचमे वत्सरे पीडा सप्तमे च जलाद्भयम् ॥ २ ॥
दशमे पतनं वृक्षाद्द्वादशे शस्त्रपीडनम् ।
विंशन्मिते ज्वराद्बाधा शाखासु पंचविंशके ॥ ३ ॥
पंचत्रिंशत्समाकाले वामांगेऽग्निभयं दिशेत् ।
अब्दानां नवतिर्नूनमायुस्तस्य प्रकीर्तितम् ॥ ४ ॥
श्रावणस्य सिते पक्षे दशम्यां भौमवासरे ।
ज्येष्ठायां निधनं नूनं चंद्रे मकरसंस्थिते ॥ ५ ॥

अब मकरराशिगत चन्द्रमाका निर्य्याण कहते हैं—धीर, चतुर, क्लेशयुक्त, पुत्रोंवाला, राजाका प्यारा, दयावान्, सत्यसहित, श्रेष्ठ भाग्यवाला, आलसी होता है ॥ १ ॥ काले तालुवाला, लम्बी चौड़ी कमरवाला, पांच वर्षमें पीड़ा और सातवें वर्षमें जलसे भय होता है ॥ २ ॥ दशवें वर्षमें वृक्षसे गिरे, बारहवें वर्षमें शस्त्रसे भय, बीसवें वर्षमें ज्वरकी बाधा, पचीसवें वर्षमें अंगोंमें पीड़ा होती है ॥ ३ ॥ पैंतीसवें वर्षकी उमरमें बायें अंगमें अग्निका भय होता है और नव्वे वर्षकी उमर होती है ॥ ४ ॥ श्रावणका महीना शुक्लपक्षमें दशमी मङ्गलवार ज्येष्ठा नक्षत्रमें मरता है, यह मकरस्थ चन्द्रका फल है ॥ ५ ॥

अथ कुंभराशिगतचन्द्रनिर्य्याणमाह—

दाता मिष्टान्नभोक्ता च धर्मकार्येषु सत्वरः ।
प्रियवक्तृत्वसंयुक्तो नरः क्षीणकलेवरः ॥ १ ॥

स्वल्पापत्यो द्विभार्यश्च कामी द्रव्यविवर्जितः ।
वामहस्ते भवेल्लक्ष्म पीडा प्रथमवत्सरे ॥ २ ॥
पंचमेऽग्निभयं विद्यादथ द्वादशवत्सरे ।
व्यालाद्वा जलतो भीतिरष्टाविंशतिमे क्षतिः ॥ ३ ॥
चौरेभ्यश्च भवेदायुर्वर्षाणां नवतिर्ध्रुवम् ।
भाद्रे मास्यसिते पक्षे चतुर्थ्यां शनिवासरे ॥ ४ ॥
भरणीनामनक्षत्रे गृणन्ति मरणं नृणाम् ।
एवमुक्तं मुनिश्रेष्ठैश्चन्द्रे जन्मनि कुंभगे ॥ ५ ॥

अब कुंभराशिगत चन्द्रमाका निर्याण कहते हैं—दानी, मिष्टान्न भोजन करनेवाला, धर्मकार्यको जल्दी करे और प्यारा बोलनेवाला, एवं क्षीणशरीर होता है ॥ १ ॥ थोड़ी सन्तानवाला, दो स्त्रियोंवाला, कामी, धनहीन, बायें हाथमें उसके चिह्न हो, पहिले वर्षमें पीड़ा होती है ॥ २ ॥ पांचवें वर्षमें अग्निभय हो, अथवा बारहवें वर्षमें हो, सर्पसे वा जलसे भय, अट्ठाईसवें वर्षमें घाव ॥ ३ ॥ चोरों करके होता है, नब्बे वर्षकी आयु पाता है, भादोंका महीना, कृष्णपक्ष, चतुर्थी, शनैश्चरवार ॥ ४ ॥ भरणी नक्षत्रमें मनुष्यका मरण होता है । यह श्रेष्ठ मुनीश्वरोंने कुम्भके चन्द्रमाका फल कहा है ॥ ५ ॥

अथ मीनराशिगतचन्द्रनिर्याणमाह—

धनी मानी विनीतश्च भोगी संहृष्टमानसः ।
पितृमातृसुराचार्यगुरुभक्तियुतो नरः ॥ १ ॥
उदारो रूपवान्छ्रेष्ठो गंधमाल्यविभूषणः ।
पंचमेऽब्दे जलाद्भीतिरष्टमे ज्वरपीडनम् ॥ २ ॥
द्वाविंशे महती पीडा चतुर्विंशन्मितेऽब्दके ।
पूर्वाशागमनं चायुरब्दानां नवतिः स्मृता ॥ ३ ॥
आश्विनस्यासिते पक्षे द्वितीयायां गुरोर्दिने ।
कृत्तिकानामनक्षत्रे सायं मृत्युर्न संशयः ॥ ४ ॥

इतीरितं तु निर्याणं यवनाचार्यसंमतम् ।
मीनस्थे यामिनीनाथे भवेदत्र न संशयः ॥ ५ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे प्रत्येक-
राशिस्थचंद्रनिर्याणाध्यायः ॥ २५ ॥

अथ मीनराशिगत चन्द्रमाका निर्याण कहते हैं-बलवान्, मानी, नम्रतासहित, भोगी, प्रसन्नचित्त होता है और पिता माता देवताओंका पूजन करनेवाला, गुरुका भक्त होता है ॥ १ ॥ उदार, रूपवान्, श्रेष्ठ गंध और पुष्पोंकी माला करके सुशोभित, पांचवें वर्षमें जलसे भय, आठवें वर्षमें ज्वरकी पीडा होती है ॥ २ ॥ बाईसवें वर्षमें बड़ी पीडा और चौबीसवें वर्षमें पूर्वकी यात्रा करे और नव्वे वर्षकी उमर होती है ॥ ३ ॥ आश्विनका महीना, कृष्णपक्ष, द्वितीया तिथि, बृहस्पतिवार, कृत्तिकानाम नक्षत्रमें सायंकालके समय मृत्यु होती है ॥ ४ ॥ यह निर्याणाध्याय यवनाचार्यके मतका मीनराशिगत चन्द्रमाका कहा है ॥ ५ ॥

इति श्रीवरबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपंडित-
श्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी-भाषाटीकायां प्रत्येकराशिस्थ चन्द्र-
निर्याणनिरूपणं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

अथ स्त्रीजातकाध्यायप्रारम्भः ।

यज्जन्मकालादुदितं नराणां होराप्रवीणैः फलमेतदेव ।
स्त्रीणां प्रकल्प्यं खलु चेदयोग्यं तन्नायके तत्परिवेदितव्यम् ॥ १ ॥

जो जन्मकालसे पुरुषोंको ज्योतिषशास्त्र जाननेवालोंने कहा है वही फल स्त्रियोंको भी कहना चाहिये, जो फल स्त्रियोंके कहने योग्य नहीं है सो सम्पूर्ण फल स्त्रियोंके स्वामीको कहना चाहिये ॥ १ ॥

अथ स्त्रीणां वैधव्यसौभाग्यसुतसौख्यविचारस्थानमाह

लग्ने शशाङ्के च वपुर्विचिन्त्यं तयोः कलत्रे पतिवैभवानि ।
सुतस्य भावे प्रसवोऽवगम्यो वैधव्यमस्याः किल कालगेहे ॥ २ ॥

स्त्रियोंके जन्मकालमें लग्न और चन्द्रमासे देहका विचार करना चाहिये और लग्न चंद्रमासे सातवें भावसे पतिका वैभव कहना चाहिये और पंचमभावसे संतानका विचार करना और अष्टमस्थानसे वैधव्ययोगका विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

अथ स्त्र्याकृतियोगः ।

स्त्र्याकृतियोगः ।

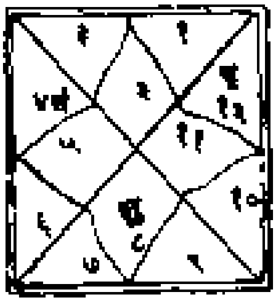

लग्ने च चंद्रे समराशियाते कांता नितांतं प्रकृतिस्थिता स्यात् । सद्रत्नभूषासहिताथ सौम्यैर्निरीक्षितौ तौ यदि चारुशीला ॥३॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें जन्मलग्न और चंद्रमा दोनों २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ इन राशियोंमें हों तो वह स्त्री स्त्रियोंकी प्रकृतिवाली होती है और जो पूर्वोक्तयोगोंको शुभग्रह देखते हों तो वह स्त्री श्रेष्ठरत्नों युक्त आभूषणसहित श्रेष्ठशीलवाली होती है ॥ ३ ॥

अथ पुरुषाकृतियोगः ।

पुरुषाकृतियोगः

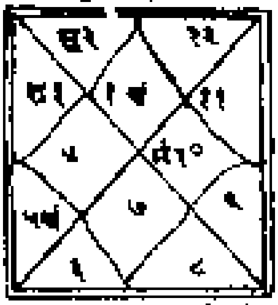

तयोः स्थितिश्चेद्विषमाख्यराशौ नारी नराकारधरा कुरूपा । पापग्रहालोकनयोगयातौ तौ चेत्कुशीला गुणवर्जितालम् ॥ ४ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें जन्मलग्न और चंद्रमा दोनों विषमराशिमें हों १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ और पूर्वोक्त लग्नोंको पापग्रह देखते हों तो वह स्त्री पुरुषोंकेसे आकारवाली, बुरे रूपवाली, दुष्टशीलवाली तथा गुणरहित होती है ॥ ४ ॥

अथ त्रिंशांशवशात्फलम् ।

लग्नेन्द्वोर्बलवान्कुजस्य भवने शुक्रस्य त्र्यंशके कन्या स्यादतिनिंदिता सुरगुरोः साध्वी नितांतं भवेत् । दुष्टा भूतनयस्य नूनमुदिता सौम्यस्य मायाविनी दासी तिग्ममरीचिसूनुगगनाद्यंशे फलानि क्रमात् ॥ ५ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चन्द्रमामें जो अधिकबली हो और मंगलकी राशि शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या बड़ी निंद्य होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो पतिव्रता होती है और मंगलके त्रिंशांशमें हो तो दुष्टा होती है और बुधके त्रिंशांशमें हो तो माया करनेवाली होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें होतो दासी होती है ॥ ५ ॥

अथ बुधभवने लग्ने त्रिंशांशवशात्फलम् ।

तारानायकपुत्रभेऽवनिसुते त्रिंशांशके कापटा
शौके हीनमनोभवा शशिसुतस्यातीव युक्ता गुणैः ।
देवाधीशपुरोहितस्य हि भवेत्साध्वी नितांतं तथा
स्वाग्न्यंशेऽर्कसुतस्य सा निगदिता क्लीबस्य भार्या बुधैः ॥६॥

जो लग्न व चन्द्रमा बुधकी राशिमें मंगलके त्रिंशांशमें हों तो वह कन्या कपट-स्वभाव करनेवाली होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो कामरहित होती है और बुधके त्रिंशांशमें हो तो बहुत गुणोंवाली होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो निरन्तर पतिव्रता होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें नपुंसककी स्त्री होती है ॥ ६ ॥

अथ गुरुभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम् ।

देवाचार्यगृहेऽमृतांशुरथवा लग्नं खमद्व्यंशके
भूसूनोर्गुणशालिनी सुरगुरोः ख्याता गुणानां गणैः ।
तारास्वामिसुतस्य चारुविभवा शुक्रस्य साध्वी भवे-
न्नूनं भानुसुतस्य चाल्पसुरता कांता बुधैः कीर्तिता ॥ ७ ॥

और जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चन्द्रमा बृहस्पतिके घरमें मंगलके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या गुणवती होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो गुणोंके गण करके प्रसिद्ध होती है और बुधके त्रिंशांशमें हो तो सुन्दर वैभवशाली होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो पतिव्रता होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या सुरतमें थोडी प्रीति करनेवाली होती है ॥ ७ ॥

अथ भृगुभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम् ।

दैत्याचार्यगृहे सुरेंद्रसचिवस्याकाशवह्न्यंशके
लग्ने वाप्युडुनायको गुणवती भौमस्य दौष्ट्याधिका ।
सौम्यस्यातिकलाकलापकुशला शुक्रस्य चञ्चद्गुणै-
र्युक्तार्थैर्निपुणैर्दिवामणिसुतस्यांशे पुनर्भूरिति ॥ ८ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्रके भवनमें लग्न वा चन्द्रमा हो और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या गुणवती होती है और मंगलके त्रिंशांशमें हो तो अत्यन्त दुष्ट होती है और बुधके त्रिंशांशमें हो तो कलाओंके समूहमें कुशल

होती है और गुरुके त्रिंशांशमें हो तो प्रकाशगुणवाली होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें हो तो वह पुनर्भू होती है अर्थात् विवाहके बाद दूसरेके घरमें रहती है ॥ ८ ॥

अथ शनिभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम्।

मदालयेवाभिलग्ने कुजस्य दासी च सौम्यस्य खला हि बाला।
बृहस्पतेः स्यात्पतिदेवता सा वंध्या भृगोर्नीचरतार्कसूनोः ॥९॥

और जो कन्याके जन्मकालमें शनैश्चरकी राशि लग्न वा चन्द्रमा हो और मंगलका त्रिंशांश हो तो वह कन्या दासी होती है और बुधके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या दुष्टा होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो पतिको ही देवता माननेवाली होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो बांझ होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें हो तो नीचमें रति करनेवाली स्त्री होती है ॥ ९ ॥

अथ रविभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम्।

लग्ने वा विधुरर्कमंदिरगतो भौमस्य खाग्न्यंशके
स्वेच्छासंचरणोद्यता शशिसुतस्यातीव दुष्टाशया।
देवाधीशपुरोधसो निगदिता सा राजपत्नी भृगोः
पौंश्चल्याभिरता शनेरतितरां पुंवत्प्रगल्भाङ्गना ॥ १० ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चन्द्रमा सूर्यकी राशिमें हो और मंगलके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या अपनी इच्छानुसार विचरनेवाली होती है और बुधके त्रिंशांशमें हो तो दुष्टचित्तवाली होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या राजाकी रानी होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो व्यभिचारिणी होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या पुरुषोंके समान प्रगल्भ होती है ॥ १० ॥

अथ चन्द्रभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम्।

चंद्रागारे स्वांशभागे कुजस्य स्वेच्छावृत्तिर्ज्ञस्य शिल्पे प्रवीणा।
शाप्यापत्युः सद्गुणा भार्गवस्य साध्वी मंदस्याप्रियप्राणहंत्री ॥ ११ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चन्द्रमा कर्कराशिके हों और मंगलके त्रिंशांशमें बैठे हों तो वह कन्या अपनी इच्छानुसार चलनेवाली होती है और बुधके त्रिंशांशमें बैठे हों तो शिल्पकलामें प्रवीण होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें बैठे हों तो श्रेष्ठ गुणवाली होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हों तो पतिव्रता होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें बैठे हों तो पतिके प्राण लेनेवाली होती है ॥ ११ ॥

अथ स्त्रीणांमैथुनयोगमाह–

अन्योन्यभागेक्षणगौ सितार्कौ यद्वा सितर्क्षे तनुगे घटांशे ।
कंदर्पशांतिं कुरुते नितांतं नारी नराकारकरांगनाभिः ॥ १२ ॥

अब शुभाशुभयोग कहते हैं–जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्रके नवांशमें शनैश्चर और शनैश्चरके नवांशमें शुक्र बैठा हो और आपसमें देखते हों (एकोयोगः) अथवा जन्मलग्न तुला हो, उसमें कुंभके नवांशका उदय हो तो वह कन्या नराकार स्त्रियाँ अन्यस्त्रियों करके अर्थात् किसी प्रकारका लिंग उनकी कमरमें बँधाकर उनके द्वारा अपनी कामाग्निकी शांति कराती है ॥ १२ ॥

अथ कापुरुषयोगः ।

शून्ये मन्मथमंदिरे शुभखगैर्नालोकिते निर्बले ।
बालायाः किल नायको मुनिवरैः कापुरुषः कीर्तितः ।

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें स्थानमें कोई ग्रह नहीं हो और शुभग्रह नहीं देखते हों और सप्तमभाव निर्बल हो तो उस कन्याका पति बेवकूफ आलसी होता है अर्थात् निरुद्यमी होता है ॥

अथ क्लीबपतियोगः ।

जामित्रं बुधमंदयोर्यदि गृहं षण्ढो भवेन्निश्चितम् ।

जिस कन्याके जन्मकालमें सप्तमभावमें ३ । ६ । १० । ११ ये राशियें हों उस कन्याका पति नपुंसक होता है ॥

अथ प्रवासशीलभर्तृयोगः ।

राशौ तत्र चरे विदेशनिरतो द्व्यंगे च मिश्रस्थितिः ॥ १३ ॥

और जिस कन्याके जन्मकालमें सप्तमभावमें १ । ४ । ७ । १० ये राशि हों तो उसका पति परदेशमें रहता है और जो द्विस्वभावराशि ३ । ६ । ९ । १२ सातवें हों तो उस कन्याका पति कभी परदेश, कभी घर रहनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ पतित्यक्तायोगः ।

सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता

जिस कन्याके सातवें भावमें सूर्य बैठा हो वह कन्या पति करके त्यागी जाती है ।

अथाक्षताया एव रंडायोगः ।

शोणिजे च विधवा खलु बाल्ये ।

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें मंगल बैठा हो वह कन्या बालविधवा होती है ॥

अथ विवाहविहीनतायोगः ।

विवाहविहीनतायोगः ।

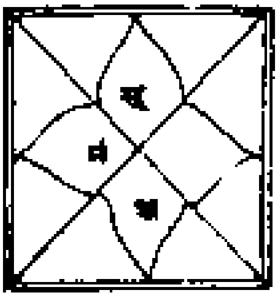

पापखेचरविलोकनयाते मंदगे च युवतिर्जरती स्यात् ॥ १४ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें शनैश्चर बैठा हो और उसको पाप ग्रह देखते हों तो वह कन्या कुमारी ही रहकर वृद्धा हो जाती है ॥ १४ ॥

अथ गतालकायोगः ।

ःः कलत्रे च गताल्का स्यात्

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें पापग्रह बैठे हों तो उस कन्याकी मांग नष्ट होती है ॥

अथ पुनर्भूयोगः ।

कांतापिमिश्रैश्च भवेत्पुनर्भूः ।

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें शुभाशुभ ग्रह बैठे हों उस कन्याका दो बार विवाह होता है ॥

अथ पतित्यक्तायोगः ।

कलत्रसंस्थे विबले सखाल्ये सौम्यैरदृष्टे विभुना विमुक्ता ॥१५॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें बलहीन पापग्रह बैठे हों और शुभ ग्रहोंकरके अदृष्ट हों तो वह कन्या पतिकरके त्यागी जाती है ॥ १५ ॥

अथ परपुरुषगामिनीयोगः ।

अन्योन्यांशावस्थितौ भौमशुक्रौ स्यातां कांता संगतान्येन नूनम् ।

जिस कन्याके जन्मकालमें मंगल शुक्रके नवांशमें बैठा हो और शुक्र मंगलके नवांशमें बैठा हो तो वह कन्या परपुरुषगामिनी होती है ॥

अथ पत्याज्ञया कुलटायोगः ।

चंद्रोपेतौ शुक्रवक्रौ स्मरस्थावाज्ञैव स्यात्स्वामिनश्चासमंतात् ॥ १६ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें चन्द्रमा शुक्र मंगल सातवें बैठे हों वह कन्या पतिकी आज्ञासे परपुरुषसे रमण करती है ॥ १६ ॥

परपुरुषरतायोगः ।

परपुरुषरतायोगः १७

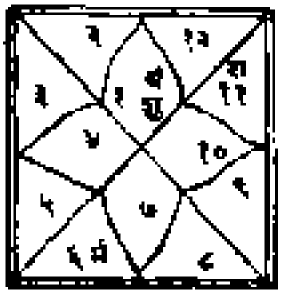

लग्ने सितेन्दू कुजमंदभेस्थौ क्रूरेक्षितौ सान्यरता जघन्या ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्नमें शुक्र चंद्रमा और मंगल शनैश्चरकी राशिमें बैठे हों और पापग्रहोंकरके दृष्ट हों तो वह कन्या परपुरुषगामिनी होती है ॥

परपुरुषरतायोगः ।

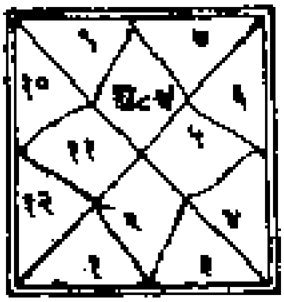

परपुरुषरतायोगः ।

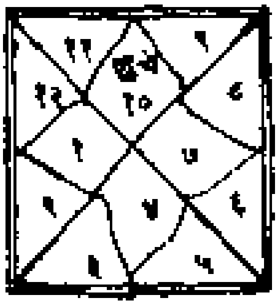

परपुरुषरतायोगः ।

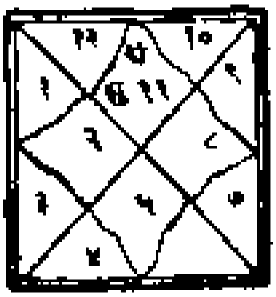

विनष्टयोनियोगः ।

स्मरे कुजे सार्कसुतेन दृष्टे विनष्टयोनिश्च शुभाशुभांशे ॥ १७ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें मंगल बैठा हो और शनैश्चरकरके दृष्ट हो और शुभ ग्रह पापग्रहोंके नवांशमें बैठे हों तो उस कन्याकी योनि नष्ट होती है ॥ १७ ॥

अथ सप्तमभावस्थनवांशफलमाह–

भानोर्भे यदि वा लवः स्मरगृहे संभोगमंदः पतिश्चन्द्रस्यातिमलो मृदुः क्षितिसुतस्यस्त्रीप्रियःकोपयुक् । विद्वान्सुस्य गुरो-

वैशी गुणयुतः शुक्रस्य भाग्यान्वितो मंदस्य प्रवयास्तु जड-
मतिरित्युक्तो बुधैर्होरिकैः ॥ १८ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें सूर्यकी राशि नवांश हो उस कन्याका पति संभोगमें मंद होता है और चन्द्रमाकी राशि और नवांश हो तो कन्याका पति मदयुक्त कोमल होता है और मंगलकी राशि नवांश हो तो उसका पति स्त्रीका प्यारा क्रोधसहित होता है, जो सातवें बुधकी राशि नवांश हो तो उसका पति पंडित होता है, और बृहस्पतिकी राशि नवांशमें हो तो पति वशी, गुणोंसहित होता है और शुक्रकी राशि नवांश सातवें हो तो उसका पति भाग्यवान् होता है और शनैश्चरकी राशि और नवांश सातवें हो तो उस कन्याका पति वृद्ध, जड़मति, होराशास्त्रके जाननेवालोंने कहा है ॥ १८ ॥

अथ ईर्ष्यान्वितयोगः ।

ईर्ष्यान्वितयोगः ।

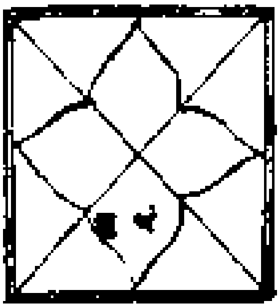

शुक्रेन्दू स्मरगौ स्त्रियं प्रकुरुतः सेर्ष्यांसुखे-
च्छान्विताम्

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र चंद्रमा बैठे हों तो वह कन्या ईर्ष्यासहित और सुखकरके सहित होती है ॥

अथ कलावतीयोगः ।

कलावतीयोगः ।

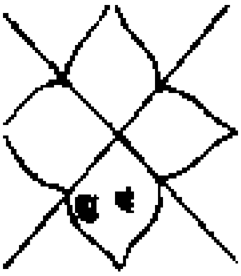

सौम्येंदू च कलासुखोत्तमगुणाम्-

और जिस कन्याके सातवें भावमें चंद्रमा बुध बैठे हों तो वह कन्या कलावती, सुखसहित, उत्तम गुणोंवाली होती है ॥

अथ भाग्यवतीयोगः ।

भाग्यवतीयोगः ।

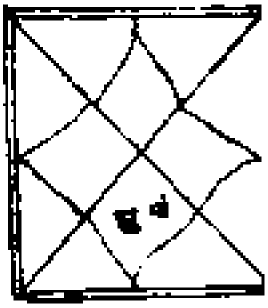

शुक्रदुघ्नावथ । चंचद्भाग्यकलाश्रिताभि-
रुचिराम्–

और जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र-चन्द्रमा बैठे हों तो वह कन्या बड़े भाग्यफलके सहित कला-ओंकी जाननेवाली शोभायमान होती है ॥

अथ भूषणाढ्यायोगः ।

भूषणाढ्यायोगः ।

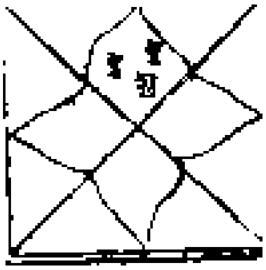

सौम्यग्रहैर्लग्नस्तनौ नानाभूषणसद्गुणांबर-
सुखा पापग्रहैस्त्वन्यथा ॥ १९ ॥

और जिस कन्याके जन्मकालमें शुभग्रह लग्नमें बैठे हों तो वह कन्या अनेक आभूषणोंसहित, श्रेष्ठ गुणवती, वस्त्रोंके सुख पानेवाली होती है और जो पापग्रह सातवें बैठे हों तो दुर्भगा, दुःशीला, नेष्टा-दुष्टा होती है ॥ १९ ॥

अथ वैधव्ययोगः ।

वैधव्यं स्यात्पापखेटेऽष्टमस्थे रंध्रस्वामी संस्थितो यस्य चांशे । मृत्युः पाके तस्य वाच्योऽङ्गनायाः सौम्यैरर्थस्थानगैः स्यात्स्वयं हि ॥ २० ॥

जिस कन्याके अष्टमभावमें पापग्रह बैठे हों तो वह विधवा होती है और अष्टम-भावका स्वामी जिसके नवांशमें बैठा हो उस ग्रहकी दशामें मृत्यु कहना चाहिये और जिसके दूसरे भावमें शुभग्रह बैठे हों वह कन्या अपने ही दोषसे मरती है ॥ २० ॥

अथ शैलाग्रपातान्मृत्युयोगः ।

शैलाग्रपातान्मृत्युयोगः ।

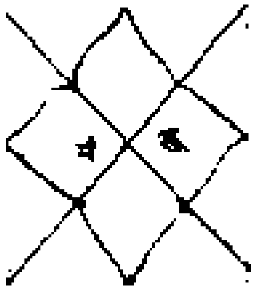

सूर्यारौ स्वजलाश्रितौ हिमवतः शैलाग्रपा-
तान्मृतिः–

जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्य, मंगल सप्तम, अथवा चतुर्थ बैठे हों तो वह कन्या हिमालयपर्वतसे गिरकर मरती है ॥

अथ कूपवापीतो मरणयोगः ।

कूपवापीतो मरणयोगः ।

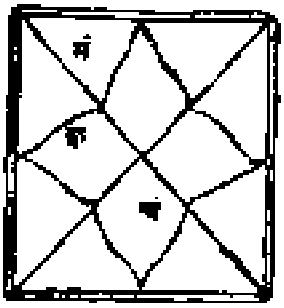

भौमेन्द्वर्कसुताः स्वसप्तजलगाः स्यात्कूप-वाप्यादितः ।

जिस कन्याके जन्मकालमें मङ्गल चन्द्रमा शनैश्चर द्वितीय, सप्तम, चतुर्थ बैठे हों तो वह कन्या कूपमें वा बावड़ीमें गिरकर मरती है ।

अथ बन्धनान्मृत्युयोगः ।

बन्धनान्मृत्युयोगः ।

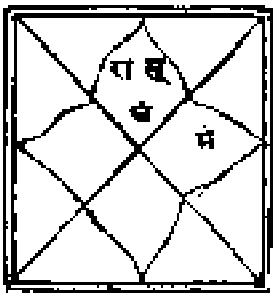

सूर्याचन्द्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यास्थितौ बंधनात्–

जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्रमा पापग्रहों करके युक्त और दृष्ट हों और कन्याराशिमें बैठे हों तो वह कन्या बन्धनसे मरती है ।

अथ जले मृत्युयोगः ।

जले मृत्युयोगः ।

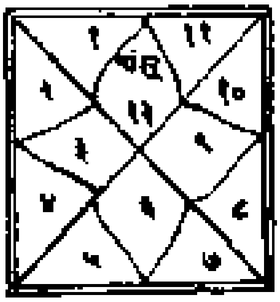

तौचेद्व्यंगविलग्नसंस्थितिकरौ तोये विलग्नाः स्वतः ॥ २१ ॥

और जो सूर्य, चन्द्रमा लग्नमें द्विस्वभावराशिमें बैठे हों तो वह कन्या जलमें डूबकर मरती है ॥ २१ ॥

अथ जलोदरेण मृत्युयोगः

जलोदरेण मृत्युयोगः ।

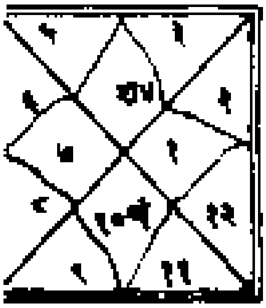

रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् । किल जलोदरसंजनिता तदा निधनता वनितासु च कीर्तिता ॥ २२ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें शनैश्चर कर्कमें बैठा हो और चन्द्रमा मकर राशिमें हो तो वह कन्या जलोदररोगसे मरती है ॥ २२ ॥

अथ शस्त्राग्निना मृत्युयोगः ।

शस्त्राग्निना मृत्युयोगः

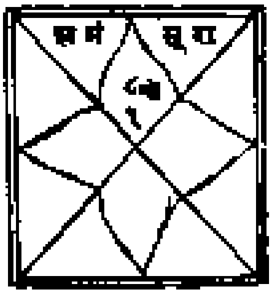

निशाकरः पापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति ।

जिस कन्याके जन्मकालमें चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें और मेष या वृश्चिकराशिमें हो तो वह कन्या शस्त्र वा हथियारकरके मरती है ॥

अथ संन्यासिनीयोगः ।

सन्यासिनीयोगः

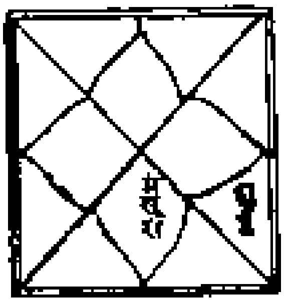

पापे स्मरस्थेऽन्यखगे च धर्मे किलांगना प्रव्रजितत्वमेति ॥ २३ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें पापी ग्रह सातवे बैठे हो और शुभग्रह नवमें बैठे हों तो वह कन्या संन्यासिनी होती है वा घर छोडकर परदेशमें रहती है ॥ २३ ॥

अथाल्पपुत्रायोगः ।

कन्यालिगे सिंहगते शशांके पंकेरुहाक्षी खलु स्वल्पपुत्रा ।

जिस कन्याके जन्मकालमें कन्या, वृश्चिक, सिंहराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह कन्या थोडे पुत्रोंवाली होती है ।

बहुपुत्रायोग:

पुत्रालये चेच्छुभखेचरेन्द्रैर्दृष्टं युतं वा बहुता च तेषाम् ॥२४॥

और जिस कन्याके जन्मकालमें पंचम भावमें शुभग्रह बैठे हों और शुभग्रहों करके दृष्ट हों तो वह कन्या बहुत पुत्रोंवाली होती है ॥ २४ ॥

अथ पुरुषस्वभावप्रगल्भायोगः।

शुक्रेन्दुसौम्या विबला भवेयुः शनैश्चरो मध्यबलो यदि स्यात्।
शेषाः सवीर्या विषमे च लग्ने योषा विशेषात्पुरुषप्रगल्भा ॥२५॥

जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्र, चन्द्र, बुध निर्बल हों और शनैश्चर मध्यबली हो, बाकीके ग्रह सब बलवान् हों और लग्न विषमराशिकी हो वह पुरुषोंके स्वभाववाली प्रगल्भा होती है ॥ २५ ॥

अथ ब्रह्मवादिनीयोगः।

समे विलग्ने यदि संस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः।
स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना ॥२६॥

जिस कन्याके जन्मकालमें समलग्न हो उसमें बलकरके सहित शुक्र, बुध, चन्द्रमा, बृहस्पति बैठे हों तो वह स्त्री ब्रह्मविचार करनेवाली और ब्रह्मज्ञानमें तत्पर होती है ॥ २६ ॥

पूर्वैर्यन्मुनिभिः सविस्तरतया स्त्रीजातके कीर्तितं
सम्यग्वाप्यशुभं च यन्मतिमता वाच्यं विदित्वा बलम्।
योगानां च नियोजयेत्फलमिदं पृच्छाविलग्ने तथा
पाणिग्रहणे तथा च वरणे संभूतिकालेऽपि च ॥ २७ ॥

जो पहिले मुनीश्वरोंने स्त्रीजातकमें विस्तारपूर्वक अच्छा बुरा फल कहा है सो बुद्धिमानोंने ग्रहोंका बलाबल विचार करके कहना चाहिये। पहिले कहे हुए स्त्रियोंके योग उनका विचार प्रश्न कालमें विवाहके समयमें अथवा सगाईके समय अथवा जन्म समयमें विचार करना चाहिये ॥ २७ ॥

अथ नारीचक्रमाह–

नारीचक्रे मस्तके त्रीणि भानि वक्त्रे भानां सप्तकं स्थापनीयम्।
प्रत्येकं स्युर्वेदतारा उरोजे तिस्रस्तारा हृत्प्रदेशे निवेश्याः ॥२८॥
नाभौ देयं भत्रयं त्रीणि गुह्ये भानोर्धिष्ण्याच्चांघ्रिधिष्ण्यावधीत्थम्।
दुस्संतापः शीर्षभे मृत्युसंस्थे नित्यं मिष्टान्नाप्तिसौख्योपलब्धिः॥२९

अथ नारीचक्र कहते हैं:—स्त्रियोंके आकारस्वरूप बनाकर मस्तकमें तीन नक्षत्र दे और मुखमें सात नक्षत्र दे और कूंचियोंमें चार चार नक्षत्र दे और हृदयपर तीन नक्षत्र दे ॥ २८ ॥ और तीन नक्षत्र ढूंढीमें दे और तीन नक्षत्र गुह्यस्थानपर दे, यह सूर्यके नक्षत्रसे लेकर क्रमसे दे। चंद्रनक्षत्रतक विचार करे, जो चंद्रनक्षत्र शिरमें पडे तो सन्ताप करे और मुखके नक्षत्रमें पडे तो हमेशा मिष्टान्न खाया करे और सुखको प्राप्त हो ॥ २९ ॥

कामं स्वामिप्रेमवृद्धिः स्तनस्थे वक्षोदेशावस्थितेऽत्यंतहर्षः ।
पत्युश्चिन्तानन्तवृद्धिश्च नाभौ गुह्यस्थे स्यान्मन्मथाधिक्ययुक्ता ॥ ३० ॥

और कूंचियोंके नक्षत्रमें चंद्रनक्षत्र पडे तो स्वामीमें यथेच्छ प्रेमकी वृद्धि करे और छातीके स्थानमें चंद्रनक्षत्र पडे तो अत्यंत हर्षको देता है, और ढूंढीके नक्षत्रमें पडे तो पतिको चिंता अधिक कराबे और गुह्यस्थानमें चन्द्रनक्षत्र पडे तो वह स्त्री अत्यंत कामवती होती है ॥ ३० ॥

अथ ग्रन्थकारस्य देशवर्णनम् ।

गोदावरीतीरविराजमानं पार्थाभिधानं पुटभेदनं यत् ।
सद्गोलविद्यामलकीर्तिभाजां मत्पूर्वजानां वसतिस्थलं तत् ॥ ३१ ॥

गोदावरीनदीके किनारे शोभायमान पार्थनामक नगरमें श्रेष्ठ गोलगणितमें निर्मल है यश जिनका ऐसे मेरे पूर्वजोंके रहनेकी जगह है ॥ ३१ ॥

तत्रास्य दैवज्ञनृसिंहसूनुर्गजाननाराधनजाभिमानः ।
श्रीढुण्ढिराजो रचयांबभूव होरागमेऽनुक्रममादरेण ॥ ३२ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
स्त्रीजातकाध्यायः ॥ २६ ॥

वहां नृसिंह दैवज्ञका पुत्र श्रीगणेशजीका आराधन करनेवाला ढुण्ढिराज इस जातकाभरणनामक ग्रन्थको रचते हुए । जिसमें जन्मपत्रिका क्रम आदरसे लिखा है ॥ ३२ ॥

अथ भाषाकारकृतग्रन्थसमाप्तिः ।

[…]बाणनिधिः
पंचम्यां चंद्रवारे च भाषापूर्तिमगाच्छुभम् ॥
वंशबरेलीत्यभिधे नगरे गौडान्वये सुजनिः ।
व्यतनोदिममनुवादं दैवज्ञः श्यामलालाख्यः ॥ २ ॥

श्रीविक्रमादित्यसंवत् १९५९ फाल्गुन मास शुक्लपक्षमें पंचमी तिथि चन्द्रवारको यह श्रेष्ठ भाषा पूर्ण हुई ॥ १ ॥ बांसबरेलीनामकनगरके विषे गौडवंशमें प्राप्त किया है जन्म जिसने सो श्यामलाल ज्योतिषीने यह भाषा विस्तार की ॥ २ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिक-पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां श्रीजातकनिरूपणं नाम षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

इति जातकाभरण समाप्त ।